निवेदन.

सर्व साधर्मी भाइयां से प्रार्थना है कि इस पुस्तक को उघाड़ मुंह तथा दीपक के प्रकाश में तथा अविनय आशातना से नहीं पढें कारण ये कर्म बंध के हेतु हो जाते हैं; इसलिये लिखना है कि सुख जतना करके इस को पढ पढावें ॥

यह पुस्तक जोधपुरवासी सिंघ सुलतानमल के नामसे रजिस्टर किया है

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

पण्डित रामकर्ण मोतीचोक

जोधपुर—मारवाड

हंसराज किसनलाल.

चंपागली—मुंबई

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना ।

आहारनिद्राभयमैथुनानि
तुल्यानि सार्धं पशुभिर्नराणाम् ।
ज्ञानं विशेषः खलु मानुषाणां
ज्ञानेन हीनाः पशवो मनुष्याः ॥ १ ॥

इस अपार संसार समुद्रमें जैन धर्मकी प्राप्ति बड़ी दुर्लभ है; कारण प्रथम तौ निमित्त उपादानका मिलना १ आर्य क्षेत्र२उत्तम कुल ३ शरीर नीरोग ४ सत्संगति ५ शुद्धाचारी, शुद्ध तत्व प्ररूपक, शुद्ध परंपराके ज्ञाता गुरुका संयोग६ ऐसी सामग्रीका संयोग मिलना परम दुर्लभ है। और ऐसी सामग्री पानेपरभी जो देव गुरु धर्मका निर्णय नही करते, और सम्यक् दर्शन ज्ञान चारित्र को पहिचाननेके लिये यत्न नहीं करते उनका जन्म पशुवत् निरर्थक जाता है॥ आहार, निद्रा, भय और मैथुन ये तौ मनुष्योंमें और पशुओंमें समान ही है। मनुष्यमें और पशुमें विशेष केवल ज्ञान का ही है। मनुष्य ज्ञानके वलसे धर्मको समझकर धर्मके मार्ग में प्रवृत्त हो सकता है, पशु उस मार्ग चल नही सकता; सो यदि मनुष्य जन्म पाकर धर्माचरण न करै तौ वह विना सींग पूंछका पशु ही है॥धर्म वह है कि जिससे मुक्तिकी प्राप्ति होवे,और आवागमन मिट जावे। वह धर्म दो प्रकारका है। श्रुतधर्म और चारित्र धर्म॥श्रुतधर्मसे ही चारित्र धर्म होता है। श्रुत धर्मके विना चारित्र धर्म नहीं होता। श्रुतधर्म वह है कि जो सर्वज्ञ सर्वदर्शी, अनंत-

य साधन पुस्तक है। पहिले सूत्र, टीका ग्रंथ वहुतसे विद्यमान हैं; परंतु वे अति गहन हो- ष्योंके समझमें नहीं आ सकते और साधा- नही होती. राग रागनी में हरेक मनुष्यकी ति स्वभावसे होती है और मन भी उसमें है, इससे सर्व साधारणकी रुचिके लिये सु- तत्वका वोध करानेके निमित्त लोक भाषामें ग्रह" नामक पुस्तक कि जिसमें मारवाड़ आदि समय के राग रागनियों के समयोपयोगी अत्यंत त्र प्रकारके स्तवन, स्वाध्याय, लावनी, ढाळ आ- बारह १२ प्रकरण में किया गया है वह पूज्यजी १००८ श्रीश्री "जयमल्लजी" महाराज के संप्रदाया- नुपाट प्रवर पण्डित अनेक गुणालंकृत साधुवर्ग शिरो- चूडामणि व्याकरण काव्य कोष छंद न्यायांभो- सिद्धांत पारगामि शुद्धोपदेशक वृत्तिवाचक शुद्ध श्रद्धा मिथ्यात्व खंडन दया धर्म मंडन श्रीश्रीश्री १००८ "रामचन्द्रजी" महामुनि कि जिनकी जन्मभूमि मारवाड़में राज्यांतर्गत "जसरासर" ग्राम है। जन्म सरावगी कुलीय जी बाकलीवाल के घरमें संवत १८८३ का है। और संवत्१९००के वैशाख शुदी दशमीके दिन पूज्यजी श्री सव- जी महाराजके समीप हुई है, उन्होंने लोकोपकारार्थ नचंद्रजी कि जिनकी जन्मभूमि जसरासर ग्राम से ६ कोस नागोरसे उत्तर दिशामें १३ कोस "मैनसर" ग्राम, सरावगी

जाति, गंगबाल रामसुखजी गृहे केसर बाई कुक्षी जन्म, गाम
राम साहिब के मासियाई भाई, जन्म संवत् १९२० में, दीक्षा
संवत् १९३१ ज्येष्ठ सुदी द्वितीयाको नागोर में, उन की आज्ञा
से बनाया है; क्योंकि वे महाराज साहिब के मुख्य शिष्य और
अच्छे विद्वान् हैं।

इस "अमृत रस संग्रह" के आदि में सामायिक और प्रतिक्र
(६ आवश्यक) दश पचक्खाण पर्यंत छपवाये गये हैं। जि
पठन पाठनकी शैलीके अनुसार १२ व्रत अतिचार,
की वंदना और भी उपयुक्त पाटी प्रथम पाटी थी ऐसी ही
है; कारण पढ़नेका प्रचार वैसा ही है। परंतु सामायि
तथा इच्छामि खमासमणो इत्यादि जो सूत्रपाठ है वह पद
गुरु, लघु, सर्व अक्षर पृथक् पृथक् गिनकर परम शुद्ध
है। सूत्रपाठ की शुद्धि आवश्यक वृत्ति, भाष्य और
की टीकामें देख कर की गई है॥

महाराज की जोड़की रचना अत्यंत चमत्कृत है, इस
साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका मिलने की बड़ी उत्कंठा
तौभी समय जोड़ कब मिल सकती है; जिससे श्री संघके
से उस उत्कंठाको पूर्ण करनेके लिये तथा ज्ञान वृद्धिके वास्ते
महाराज से बहुत विनय पूर्वक प्रार्थना करके मुश्किलसे
को प्राप्त किया है। इस ग्रंथको जो एकबार देख लें वा सुन
मैं जानता हूं कि फिर यह मंगाये बिना कभी नहीं रहेगा;
इस में ऐसा अद्भुत रस भराहुआ है कि एक बेर चखने से फिर छू
टता। मैं इस ग्रंथकी बढ़ाई नहीं करता वास्तवमें यह ऐसा

है, सो देखनेसे स्वयं विदित हो जायगा। इन ग्रंथकर्त्ता महाराजकी केवल इतनी ही कविता नहीं है, और भी यशोधर धर्मदत्त हरिवल–नर्वदा–गजसिंह–रत्नदत्त आदिके रास अनुमान पन्द्रह हजार ग्रंथ चौपाई है॥ और इससे अतिरिक्त चौढालिया, षट् ढालिया, अठ नव ढालिया आदि व्याख्यान संवंधी है। जिसकी रचना अत्यंतही मनोहर अद्भुत रसभरी अनुमान पन्द्रह हजार ग्रंथ होगा। उसको छपानेकाभी हमारा इरादा है, सो फिर देखा जायगा.

जिनको यह पुस्तक लेनेकी इच्छा हो वे मेरे समीपसे नीचे लिखे पतेसे मंगा लें॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

पण्डित रामकर्ण

मोतीचौक जोधपुर मारवाड़

॥ श्री ॥

ग्रंथकर्त्ता का गुणवर्णन

लावणी ॥

श्रीराम मुनीका पाय वंदो नर नारी
रतनांरी श्राम बडे उपगारी; सब शासनके
जावे हारी ॥ पा० ॥ ब्रह्मचारी मिष्ट
प्यारी, सब संतनके बीच छमा सुखकारी ॥
जिन शासनके थंभ दंम नहिं इनके ॥ थं० ॥
महाराज क्रोध नहीं जिनको; आतम तत्व पाई
मीठाई ॥ क० ॥ सबसें मैत्रीभाव नहीं कपटाई
बोले बोल सदा हितकारी ॥ स० श्री० ॥ १ ॥
महाराज अरज एक मोरी॥ अ०॥ सदा रखो
कहूंकर जोरी; प्रसमचंद ए अरज जोरि कर
मोय करो विद्यामें पूर सुनो गुरु दाता; करे
महाराज माफ करो सारी ॥ मा० श्री० ॥ २ ॥

२ लावणी ॥

वृद्धिचंद स्वामीके चेला, रामचंद शिष अधिक
किरपा कीजी दर्शन दीजै, तुम दर्शनकी बलिहारी ॥
॥ १ ॥ पूज्य सपलेशना पोता चेला, धन्य धन्य मुन
मुनि गुण धारी; शास्त्रांमांहे छो तुम ज्ञाता,
कंठा धारी ॥ वृ० ॥ २ ॥ न्याय शास्त्र और

इस में ऐसा अद्भुत
मनता । मं इस ग्रंथकी बडाई न

पढि या, तुमसा विरला अणगारी; टीकावाचक तुर्तेज-यावी, पाखंड मत जावे हारी ॥ वृ० ॥ ३ ॥ पंच महात दुःकर पाळो, प्रभुनी शिर आज्ञाधारी; सुरधर देशेचरो मुनिवर, वखांणतणी छिव है भारी ॥ वृ० ॥४॥ हनी मूरत सोहनी सूरत, देखतही लागे प्यारी; जब ां जब पुस्तक हाथे, ज्ञानतणो उद्यम भारी ॥ वृ० ॥ एकवेर तुम दर्शन कीना, फेर न भूले नर नारी; ि नर कोई अवगुण बोले, जिणकी मत जांणो ॥ वृ० ॥ ६ ॥ जिण वस्तीमें आप पधारो, सो है धन्यकारी; म्हांरे शैरमें क्यूं नहीं आवो, छो भी उपगारी ॥ वृ० ॥ ७ ॥ समत उगणीसे तेरे ेर सोभत है सुखकारी; मुनालाल ब्राह्मण तुम दर्शन अलपाहारी ॥ वृ० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ लावणी ॥

। ऋषि उत्तम आचारी रे, राम ऋषि उत्तम आचा-गम कल्पवृक्ष इण जगमें, सद्गति दातारी ॥ टेर ॥ ा पापनके त्यागी, जती धर्मधारी, कामिनि और नहीं वंछे, बाल ब्रम्हचारी ॥ रा० ॥ १ ॥ दूषण संजम पाळे, सतरे परकारी; करै तपस्या द्वादश-मुनि महाव्रतधारी ॥ रा० ॥ २ ॥ जल भरिये दरि-जिसा मुनि, लैहर छवी भारी; नय परिमाण न्याय शोभते, ज्ञान रूप धारी ॥ रा० ॥३॥ पुनमादिक परि-मनोहर, प्रसनचंद लारी; वाणी अमृत धारावरसो, छो उपगारी ॥ रा० ॥ ४ ॥ मलयाचंदन घसतां सो-देवे अनपारी; म्हारी करणी मूल म पेखो, आप दया

धारी ॥ रा० ॥ ५ ॥ धोवृ पुरके आव स
अघधारी; कृपा करके गुरुजी पधारो, दे
॥ ६ ॥ अमर धाम देखणको कामी, आ ॥
सविता ज्ञान उदय कर घटमें मिथ्या तम
॥ ७ ॥ इति ॥

३ असी रुपया लो कलदार

राम मुनीसें लागो प्यार,
पणामें संजम आदर्यो, दोय पचालीस
॥ १ ॥ कोटे नगरी आप विराजो,
लार ॥ रा० ॥ २ ॥ कायारा पीहर तुम
मोटा अणगार ॥ रा० ॥ ३ ॥ पंडित ज्ञानी
मी, घणा सुधका जाणणहार ॥ रा० ॥ ४
तजके सुमतिकूं भजके, तीन गुपतकूं हियके
॥ ५ ॥ मुरधर देशमें फिरपा कीजे, वाट
नर नार ॥ रा० ॥ ६ ॥ तुम दर्शनकी वडी
र्शन योनी वेग पधार ॥ रा० ॥ ७ ॥
अरज छे, वेग पधारो म्हांरा सैर मंझार ॥
समत उगणीसे बरस अठतीसे, आपाढ
सार ॥ रा० ॥ ९ ॥ इति ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

पण्डित रामकर्ण

मोतीचोक जोधपुर मारवाड

सूचीपत्रम्.

सामायिक.

अथ प्रतिक्रमण. ५

विषय पृष्ठांक

लावणी ४

गाल ८

दोहा ३

ढाल ३—

४ स्तवन ४२

गीत २७

ढाळ ५—

ढाल ७–

लावणी १४—

विषय पृष्ठांक

दोहो १

ख्याल १९ –

गाळ २३

विषय. पृष्ठाङ्क

७ मंदिरपंथीकी चरचा

लावणी १

८ निश्चय व्यवहारकी चरचा

गाळ २

---

९ नेमनाथ चरित्र ४८

सिलोको १

होरी १

गीत २४

विषय पृष्ठांक

चौमासो १

गाळ ५

ढाळ १

ख्याल २

राग ३

---

१० रामचरित २२

विषय पृष्ठांक

छावणी ६

बारामास्यो ४

विषय. पृष्ठांक.

११ ढाळ सागर ७

पांडव चरित्र ३

---

१२ व्याख्यान ३८

१ विजयाकुमारनो चौढाळियो ५

विषय. पृष्ठांक.

९ सत्यघोष १

१० चन्दनवाला १

११ सुलसा रेवंती संवाद १

१२ जयंती १

१३ भ्रम निवर्तन २

१४ चेलणा २

१५ अरणक १

१६ विद्याविलास १

१७ चंद चरित्र २

१८ पंचक सेठ १

इति

श्रीः॥

अथ नमस्कार॥



णमो अरिहंताणं (१) णमो सिद्धाणं (२) णमो आयरियाणं (३) णमो उवज्झायाणं (४) णमो लोये सव्वसाहूणं (५) एसो पंच णमुकारो (६) सव्वपावप्प णासणो (७) मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं (८)॥

इति नमस्कार समाप्त॥

(पद ९ संपदा ८ गुरु अक्षर ७ लघु अक्षर ६१ सर्व अक्षर ६८)

अथ तिक्खुत्तोकी पाटी॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं, वंदामि, णमंसामि, सक्कारेमि, संमाणेमि, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि॥

इति तिक्खुत्तोकी पाटी समाप्ता॥

अथ इरियावहियाएकी पाटी॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं.

इच्छामि, पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए (१) गमणागमणे (२) पाणक्कमणे (३) बीयक्कमणे, हरियक्कमणे (३) ओसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमणे (४) जे मे जीवा विराहियां (५) एगिंदियां, बेइंदियां, ते इंदियां, चउरिंदियां, पंचिंदियां (६) अभि-

इयाँ, वत्तियाँ, लेसियाँ, संघाइयाँ, संघट्टियाँ, परिया वियाँ, किलामियाँ, उद्दवियाँ, ठाणाउ ठाणं संकामियाँ, जीवियाउ ववरोवियाँ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं (७) ॥

इति इरियावहियाएकीपाटी समाप्त ॥

अथ तस्स उत्तरीकी पाटी ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं णिग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं (८)

(दोना सूत्रों के—पद ३२ संपदा ८ गुरु अक्षर २४ लघु अक्षर १७५ सर्व अक्षर १९९)

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए (१) सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं(२) एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गेो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो (३) जावं, अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं, न पारेमि (४) ताव, कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं, वोसिरामि ॥ ५ ॥

इति तस्स उत्तरीकी पाटी समाप्त ॥

(पद २८ संपदा ५ गुरु १३ लघु १२७ सर्व अक्षर १४०)

३ अथ लोगस्सकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्त ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥[आर्यावृत्त उसभ१ मजियं २ च वंद, संभव ३ मभिणंदणं ४ च सुमइं ५ च । पउमप्पहं ६ सुपासं ७, जिणं च चंदप्पहं ८ वंदे ॥ २ ॥

सुविहिं च पुप्फदंतं ९, सीअल १० सिज्जंस ११ वासु पुज्जं१२ च । विमल १३मणंतं१४ च जिणं, धम्मं१५सं तिं १६ च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं १७ अरं १८ च मल्लिं १९, वंदे मुणिसुव्वयं२० नमिजिणं २१ च । वंदामि रिट्ठनेमिं २२,पासं २३ तह वद्धमाणं २४ च ॥ ४ ॥ एवं मए अभि-थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहि-लाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इति चतुर्विंशति स्तवनामक लोगस्सकी पाटी समाप्ता ॥

(पद २८ संपदा२८गुरु २७ लघु २२९सर्व अक्षर२५६)

४ अथ सामायिक लेनेकी पाटी ॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि,जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, न करेमि, नकार-वेमि, मणसा, वयसा, कायसा, तस्स भंते, पड़िक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥

इति सामायिक लेनेकी पाटी समाप्ता ॥

५ अथ शक्रस्तवनामक नमुत्थुणंकी पाटी ॥

नमोत्थुणं, अरिहंताणं भगवंताणं (१) आइगराणं, तित्थगराणं, सयं संबुद्धाणं (२) पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवरपुंडरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं (३) लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं,लोगहियाणं,लोगपईवाणं, लो-गपज्जोयगराणं; (४) अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्ग-

दयाणं, सरणदयाणं, (जीवदयाणं) बोहिदयाणं (५) धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं, धम्मसार हीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं (६) (दीवोताणं सरणगइपइट्ठा) अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउ माणं (७) जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं (८) सव्वन्नूणं सव्वदरि सीणं, सिव मयल मरुअ मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुण रावित्ति सिद्धिगइ नामधेय ठाणं संपत्ताणं, नमो जि णाणं जिअभयाणं (९) ॥

इति शक्रस्तवनी पाटी समाप्ता ॥

(पद ३३ संपत् ९ गुरु ३० लघु २३३ सर्व अक्षर २९३॥) "जीयदयाणं, दीवोताणं सरणगइपइट्ठा" इसको शा मिल लें तो गुरु ३० लघु २४९ सर्व अक्षर २७९ होते हैं॥

५ अथ सामायिक पारनेकी पाटी ॥

नवमो सामायिक व्रत विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं ॥ मन, वचन, कायारा जो माठुचे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय ४ अणपूगी पाळी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ दस मनरा, दस वचनरा, बारे कायारा, बत्तीस दोषामायलो कोइ दोष लागो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ सा मायिकमें स्त्री कथा, भत्त कथा, देशकथा, राजकथा, ए चार कथा मांयली कोइ विकथा कीधी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिक पारने की पाटी समाप्ता ॥

सामायिक पारवा पछे एवु पाठ कहवु—

सामायिक सम्मकाएणं, फासियं, पालियं, सोहियं,

तीरियं, कित्तियं, आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति सामायिककी छ पाटियां समाप्त ॥

अथ सामायिक लेने की विधि ॥

असणोट छोड, दो हात जोड़, श्रीगुरुदेवकी आज्ञा मांग, "इरियावही" की पाटी "जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं" पर्यंत भणवी ॥ पछे "तस्सुत्तरी" की पाटी भणने काउस्सग्ग करवो. काउस्सग्गमें "इरियावही" की पाटी "जीविया ओ ववरोविया" पर्यंत मनमेंही गुणणी "नमो अरिहंताणं" मनमें कहीनें काउस्सग्ग पाड़वो. पछे "लोगस्स" की पाटी कहवी ॥ पछै "करेमि भंते" की पाटी "जाव नियमं" सुधी कहीनें आगल मुहूर्त्त घालणा हुवे तिके घालणा ॥ पछे "पज्जुवासामि" थी ले "अप्पाणं वोसिरामि" सुधी पाठ कहवुं ॥ पछे डावो गोडो ऊभो राखी दोनुं हाथ जोडी "नमुत्थुणं" नी पाटी दोय बार कहवी ॥ दूजा नमुत्थुणं रे अंते "ठाणं संपाविउं कामस्स णं णमो जिणाणं जिअभयाणं" एम कहवुं ॥ पछे आसण माथे वेसीनें, सामायिक कालमें" नमोकार, तथा वोलचाल" गुणणा, पढणा ॥

इति सामायिक लेनेकी विधि समाप्त ॥

अथ सामायिक पारवाकी विधि ॥

सामायिक पाड़ती वगत "इरियावही" की पाटी और "तस्स उत्तरी" की पाटी कही काउस्सग्ग करवो । काउस्सग्गमें "लोगस्स" की पाटी मनमें कहवी "नमो अरि-

इतार्ण" कही काउस्सग्ग पारवो ॥ फेर "लोगस्स" प्रगट कहणो ॥ दोय नमुत्थुणं पूर्ववत् कहणा ॥ पछे नवमो सामायिक पारवाकी पाटी "न भवइ तस्स मिच्छामि दुक्कडं" सुधी कहवी ॥ अंतमें तीन नवकार कही ऊठवुं ॥

इति सामायिक पारवाकी विधि समाप्त ॥

अथ प्रतिक्रमण ॥

अथ इच्छामिण भंतेकी पाटी ॥

इच्छामिणं भंते तुम्भेहिं अभणुंणायसमाणे देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि, देवसियं णाण दंसण चरित्ताचरित्त तप अतिचार चिंतवणार्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

इति इच्छामिणं भंतेकी पाटी समाप्त ॥

अथ इच्छामि ठामिकी पाठी ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसियो अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो,असावग पाउग्गो नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसायाणं पंचन्हमणु व्वयाणं तिन्हं गुणव्वयाणं चउन्हं सिक्खा वयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इति इच्छामि ठामिकी पाटी समाप्त ॥

अथ आगमे तिविहे की पाटी ॥

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा, सुत्तागमे, अत्थागमे तदुभयागमे; एहवा श्रीज्ञानके विषे जे कोई अतिचार

लागो होय ते आलोउं; जं वाइद्धं १ वच्चामेलियं २ हीण क्खरं ३ अच्चक्खरं ४ पयहीणं ५ विणयहीणं ६ जोगहीणं ७ घोसहीणं ८ सुट्ठुदिन्नं ९ दुट्ठुपडिच्छियं१०अकाले कओ सज्झाओ ११ काले न कओ सज्झाओ १२ असज्झाए सज्झाइयं १३ सज्झाये न सज्झायं १४ भणतां गुणतां चिंतवतां ने विचारतां ज्ञान अने ज्ञानवंतकी आशातना कीनी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति आगमें तिविहे की पाटी समाप्त

अथ दंसण श्रीसमकित की पाटी ॥

आर्यावृत्तम् ॥

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो । जिणपण्णत्तं तत्तं, ए सम्मत्तं मए गहियं ॥ १ ॥ परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वावि । वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २ ॥ एवा श्री समकितके विषै जे कोई अतिच्यार लागो हुवे तौ आलोउं । जिन वचनमें शंका आणी होय १ परदर्शनरी वांछा कीधी होय २ फल प्रति संदेह आण्यो होय ३ पर पाखंडीरी प्रशंसा कीधी होय ४ पर पाखंडीरो संस्तव परिचय कीधो होय ५ तौ म्हारा समकित रूप रत्नरे विषै मिथ्यात्व रूप रज,मैल,खेह लागो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इति दंसण श्रीसमकितकी पाटी समाप्त ॥

अथ बारे व्रत और उनके अतिचार ॥

१ पहिलो अणुव्रत– थूलाओ पाणाइवायाओ, विरमणं, त्रस जीव, बेइंदिय, ते इंदिय, चउरिंदिय, पंचेंदिय,

विन अपराधे जाणी मीछी आकुटी सकल्पी हणवारी बुद्धि करीन हण हणायणका पचक्खाण जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा॥ [एवा पहिला थूल प्राणातिपात विरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होवे तौ आलोउ। रीस वशे गाढा बंधण बांध्या होय, गाढा भाव घाल्या होय, चाम ना छेद कीधा होय, अति भार घाल्या होय, भात पांणीना विच्छेद कीधा होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

२ दूजो अणुव्रत–थूलाओ मोसावायाओ विरमणं कन्नालियं, गोवालियं, भोमालियं, थापणमोसो, कूड़ छे कूडी साख, इत्यादिक मोटका झूठ बोलणका पचक्खाण। जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा॥[एवा दूजा थूल मृषावाद विरमण व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तौ आलोउं। सह सात्कारे किणी प्रति कूडो आल दीधो होय १ रह छांनी बात प्रगट कीधी होय २ पोतानी स्त्रीका मर्म प्रकाश्या होय ३ मृषा उपदेश दीधा होय ४ कूडा लेख लिख्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥ २ ॥

३ तीजो अणुव्रत–थूलाओ अदिन्नादाणाओ विरमणं, खातर खिणी, गांठ छोडी, ताळो पर कूंची, वाट पाड़ी, पड़ी वस्त मोटकी धणियां सेती आंणीने लेवणका पच्चक्खाण ॥ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा ॥ [एवा तीजा थूल अदत्तादान विरमणा व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। चोराई वस्तु लीधी होय १ चोरने साम्ह दीधो होय २ राज्य विरुद्ध कारज कीधो होय ३

कूड़ा तोला कूड़ा मापा कीधा होय ४ वस्तमें भेल समेल सखरी दिखाय नखरी आपी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ ॥ ३ ॥

४ चोथो अणुव्रत—थूलाओ मेहुणाओ विरमणं, पोता-री स्त्री उपरांत मैथुन सेवणका पचक्खाण । जावज्जीवाए देवता संबंधी दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मनसा वयसा कायसा, मिनख तिर्जंच संबंधी इकविहं इकविहेणं न करेमि कायसा ॥ [एवा चौथा थूल स्वदारा संतोष विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। इत्तर थोड़ा काल राखीसूं गमन कीधा होय १ अपगृहीसूं गमन कीधा होय २ अनंग क्रीडा कीधी होय ३ पराया व्याव नातरा जोडिया होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषा सेविया होय ५ तस्स मिच्छामि दुकडं ॥ ४ ॥

५ पांचवों अणुव्रत—थूलाओ पारिग्गहाओ विरमणं, खेत घरको, रूपा सोनाको, धन धान्यको, दुपद चौपदको, घर विखराको यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत आपको करी परिग्रह राखणका पचक्खाण जावज्जीवाए एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा पांचवां थूल परिग्रह विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं। खेत घरको १ रूपा सोनाको २ धन धान्यको ३ दुपद चौपदको ४ घर विखराको ५ यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय तस्स मिच्छामि दुकड़ं ॥ ५ ॥

६ छट्ठो दिशिविरमण व्रत— ऊंची नीची तिरछी दिशाकों यथा परिमाण कीधो छै ते उपरांत स्वइच्छायें जाई-

नें पांच भाश्रव द्वार सेवणका पचक्खाण, जावज्जीवाए एकविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा छट्ठा दिशिविरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं ॥ ऊंची नीची तिरछी दिशको यथा परिमाण कीधो छै ते अतिक्रम्यो होय ३ एक दिश घटाइ होय एक दिश वधाई होय ४ संदेह पड़ियां पच आगे चाल्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ६ ॥

७ सातमो उपभोग परिभोग विरमण व्रत–उल्लणि याविहं १ दंतणविहं २ फलविहं ३ अब्भंगणविहं ४ उव ट्टणविहं ५ मज्जणविहं ६ वत्थविहं ७ विलेवणविहं ८ पुप्फविहं ९ आभरणविहं १० धूपविहं ११ पेजविहं १२ भक्खणविहं १३ ओदनविहं १४ सूपविहं १५ विगय विहं १६ सागविहं १७ माहुरविहं १८ जीमणविहं १९ पाणीविहं २० मुखवासविहं २१ वाहनविहं २२ सयणविहं २३ पन्नीविहं २४ सचित्तविहं २५ द्रव्यविहं २६ इत्यादिक छाईस बोलाकी मरजाद कीधी छै ते उपरांत उपभोग परिभोग भोगणका पचक्खाण जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा सातवां उपभोग परिभोग विरमण व्रतके विषै जे कोइ अतिचार लागो होय तो आलोउं। पचक्खाण उपरांत सचित्तको आहार कीधो होय १ सचित्त प्रतिबद्धको आहार कीधो होय २ अपक्कको आहार कीधो होय ३ दुपक्कको आहार कीधो होय ४ तुच्छ ओषधि भक्षण कीधा होय; थोड़ो खाय घणो नाखियो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ५ भोजनथकी कहा तिम कर्म थकी पनरे कर्म... श्रावकन जांणवा

जोग छै पिण आदरवा जोग नथी. तं जहा, ते कहे छै. इंगालकम्मे १ वणकम्मे २ साडीकम्मे ३ भाडीकम्मे ४ फोडीकम्मे ५ दंतवाणिज्जे ६ लक्खवाणिज्जे७रसवाणिज्जे ८ केसवाणिज्जे ९ विसवाणिज्जे १० जंतपिल्लणकम्मे ११ निल्लंछणकम्मे १२ दवग्गिदावणया १३ सर दह तलाय परिसोसणया १४ असईजणपोस णया १५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

८ आठमो अनर्थ दंड विरमण व्रत–चउव्विहे पण्णत्ते तं जहा, अवज्झाणाचरियं पमायाचरियं, हिंसपयाणं, पावकम्मोवएसं, एवा अनर्थ दंड सेवणरा पचक्खाण, जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ॥ [एवा आठवां अनर्थदंड विरमण व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय ते आलोउं। कंदर्पकी कथा कीधी होय १ भंड कुचेष्टा कीधी होय २ मुखर वचन बोल्या होय ३ अधिकरण जोडी मूक्या होय ४ उपभोग परिभोग अधिका वधार्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ८ ॥

९ नवमो सामायिक व्रत–सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मनसा वयसा कायसा एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥ [एवा नवमा सामायिक व्रतके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तौ आलोउं । मन वचन कायरा जोग पाडवे ध्यान प्रवर्ताया होय ३ सामायिकमें संभालना नहीं कीधी होय ४ अणपूगी पाडी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ९ ॥

१० दसमो देसावगासिक व्रत–दिन प्रति प्रभात थकी

प्रारंभीनैं पूर्वादिक छ' दिशकी जेटली भूमिका मोकळी राखी छै ते उपरांत स्वइच्छायें कायायें जईनें पांच आ श्रयद्वार सेवणका पचक्खाण । जाव अहोरत्तं दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, ते मांहि द्रव्यादिक नेमकी मरजादा कीधी छै ते उप रांत भोगणरा पचक्खाण । जाव दिवसं पज्जुवासामि, एगविहं तिविहेणं न करेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥ [एवा दसमा देसावगासि व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं । नेमी भूमिकाथी वस्तु बाहरथी मगाई होय १ मोकलाई होय २ शब्द करी रूप करी, पुद्गल नांखी आपो जणायो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १० ॥

११ इग्यारमो पोषध व्रत–असणं पाणं खाइमं साइमं का पचक्खाण, अब्रंम सेवणका पचक्खाण, अमुक मणि सोवनका पचक्खाण, माला वन विलेपणका पचक्खा ण, सत्थ मुसलादिक सावद्य जोगका पचक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेण न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा, एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा इग्यारमा पोषध व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, पोसाम सज्या संथारो न जो यो होय, माठी तरे जोयो होय १ न पूंज्यो होय, माठी तरे पूंज्यो होय २ उचार, पासवण, भूमिका न जोई होय, माठीतरे जोई होय ३ न पूंजी होय माठीतरे पूंजी होय ४ पोसामें निद्रा, विकथा, प्रमाद कीधो होय ५ तस्स

मिच्छामि दुक्कडं ॥ जावतां अवसही आवसही नहीं कीधुं होय, आवतां निसिही निसिही नहीं कीधुं होय, इंद्र महाराजरी आज्ञा नहीं लीधी होय, थोड़ी दूर पूंज्यो होय, घणी दूर परठी होय, परठने तीन वार वोसरे वोसरे नहीं कीधुं होय, आयनें चोईस थव नहीं कीधुं होय, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ ११ ॥

१२ बारमो अतिथि संविभाग व्रत–साधु निग्रंथनें पासु एषणीक शुद्ध, असणं १ पाणं २ खाइमं ३ साइमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६ कंबल ७ पायपुच्छणेणं ८ (पाडिहारिय) पीढ ९ फलग १० सिज्जा ११ संथारो १२ ओषध १३ भेषज १४ प्रतिलाभतो थको विचरूं एवी म्हारी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवा बारमा अतिथि संविभाग व्रतके विषे जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, सूजती वस्तु सचित्त ऊपर मूकी होय १ सचित्त करी ढांकी होय२पोतेरी वस्तु पारकी कही होय ३ अहंकारभावे दान दीधुं होय, थोड़ो दे घणो पोमायो होय४ भोजन वेला टाळीनें निमंत्रणा कीधी होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ १२ ॥

इति बारे व्रत तथा उनके अतिचार समाप्त ॥

अथ संलेखणाकी पाटी ॥

अहभंते अपच्छिम मरणांतिय संलेहणा झूसणा आराहणा पोषध साला पूंजीनें,उच्चार पासवण भूमिका पड़िलेहीनें, गमणागमणे पडिक्कमीनें,दर्भादिक संथारो संथारीनें, दर्भादिक संथारे दुरुहीनें, पूर्व तथा उत्तर दिशि पल्यंकादिक आसणें बैसीनें, करयलसंपरिग्गहियं सिर

सावर्त्त मत्थए अंजली त्ति कट्टु, एवं वयासी, नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जावसंपत्ताणं, एम अनंता सिद्ध जीनें वंदना नमस्कार करीनें नमोत्थुणं अरिहंताणं भग वंताणं जाव ठाणं सपाविउं कामे, इम वूजो नमोत्थुणं गुणीनें जयवंता वर्तमान तीर्थंकर महाराजनें वंदना नम स्कार करीनें, पोतेका धर्माचार्यजीनें नमस्कार करीनें, साधु प्रमुखचारे तीर्थ खमावीनें, सर्वजीव राशि खमा वीनें, पूर्वे जे व्रत आदर्यां छे, तेना जे अतिचार दोष लागा छे, ते सर्व आलोइ, पडिक्कमी, निंदी, नि' शल्य थई, सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि । सव्व मोसावायं पच्चक्खामि । सव्वं अदिन्नादानं पच्चक्खामि ।सव्वं मेहुणं पच्चक्खामि । सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि । सव्वं कोहं माणं जावमिच्छा दंसणसल्लं, सव्वं अकरणिज्जं पच्च क्खामि । जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं न करेमि म कारवेमि, करतं पि नाणुजाणामि, मणसा वयसा का यसा, एम अठारे पाप स्थानक पच्चक्खीनें, सव्वं असण पाण खाइमं साइमं चउव्विहंपि

आहारं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए। एम चारे आहार पच्चक्खीनें, जं पीयं, इमं सरीरं इट्ठं कंतं, पियं मणुन्नं मणामं थिज्जं विसासियं समयं अणुमयं बहुमयं भंड करंडगसमाणं रयण करंडगभूयं माणसियं माणं उन्हं, माणं खुहा,माणं पीवासा,माणं वाला,माणं चोरा, माणं दंसा, माणं मसग्ग, माणं वाहियं, पित्तियं, कप्फियं, संभीमं सन्निवाहियं, विविहा रागायंका, परिसहोवसग्ग फासा फुसंति, एवं पियणं, चरमेहिं उस्सास निस्सासे हिं, वोसिरामि त्ति कट्टु।एम शरीर वोसिरावीनें, काउ

अणवकंखमाणे विहरामि। एवी श्रद्धा प्ररूपणा तो छै फरसणा करूं तेवारे सिद्ध ॥

एवी संलेखणाके विषै जे कोई अतिचार लागो होय तो आलोउं, इहलोगासंसप्पउ गे१ परलोगासंसप्पउ गे२ जीविया संसप्पओगे ३ मरणासंसप्पओगे ४ कामभोगासंसप्पओगे ५ मा मज्ज हुज्ज मरणं ते। श्रद्धा प्ररूपणामें फरक आयो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति संलेखणासातिचार समाप्त ॥

अथ तस्स धम्मस्स की पाटी ॥

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स अब्भुट्ठिउ मि आराहणाए, विरउ मि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कं तो वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥

इति तस्स धम्मस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ तस्स सव्वस्सकी पाटी ॥

तस्स सव्वस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासियं दुच्चिंतियं आलोयंते पड़िक्कमामि ॥

इति तस्स सव्वस्सकी पाटी समाप्त ॥

अथ चत्तारि मंगलं की पाटी ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं; चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो, चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहं ते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि॥

अरिहंतारो सरणो, सिद्धारो सरणो, साधांरो सरणो, केवलि प्ररूपित दया धर्मरो सरणो ॥ च्यार सरणा दुर्गति हरणा, और सरणो नहीं कोय; जे भव्य प्राणी आदरे तो अक्षय अमर पद होय ॥

इति चयारि मगलं की पाटी समाप्त ॥

अथ अठारे पाप स्थानककी पाटी ॥

अठारे पाप स्थानक आलोउं । पैलो प्राणातिपात १ दूजो मृषावाद २ तीजो अदत्तादान ३ चौथो मैथुन ४ पांचमो परिग्रह ५ छट्ठो क्रोध ६ सातमो मान ७ आठमो माया ८ नवमो लोभ ९ दसमो राग १० इग्यारमो द्वेष ११ बारमो कलह १२ तेरमो अभ्याख्यान १३ चवदमो पैशुन्य १४ पनरमो पर परिवाद १५ सोळमो अरति रति १६ सतरमो माया मोसो १७ अठारमो मिथ्या दर्शन शल्य १८ ए अठारे पाप स्थानक सेव्या होय, सेवाया होय, सेवता प्रति भलो जाण्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

इति अठारे पाप स्थानककी पाटी समाप्त ॥

अथ खमासणाकी पाटी ॥

इच्छामि, खमा समणो, वंदिउं जावणिज्जाए, णिसीहिआए (प्रथम स्थान) अणुजाणह, मे, मिउग्गहं (द्वितीय स्थान) णिसीही, अहो काय काय संफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो अप्प किलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कतो (तृतीय स्थान) जत्ता, भे, (चतुर्थ स्थान) जवणिज्जं, चं, भे (पंचम स्थान) खामि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कम (षष्ठ स्थान) आव

सिं[२९]याए, पड़िक्क[३०]मामि, खमा[३१]समणाणं, देवसियाए[३२] आसा[३३]-यणाए, ते[३४]त्तीसंणयराए, [३५]जंकिंचि, मिच्छा[३६]ए, मणदु[३७]क्क-ड़ाए, वयदु[३८]क्कड़ाए, कायदु[३९]क्कड़ाए, कोहा[४०]ए, माणा[४१]ए, मा-[४२]याए, लोहा[४३]ए, सव्वका[४४]लियाए, सव्व[४५]मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्क[४६]मणाए; आसायणा[४७]ए [४८]जो, मे,[४९] अइयारो,[५०] कओ[५१], तस्स[५२], खमास[५३]मणो, पडिक्कमा[५४]मि, निंदा[५५]मि, गरि-हा[५६]मि, अप्पा[५७]णं, वोसिरा[५८]मि, (सप्तम स्थान)

(स्थान ७ पद ५८ गुरु २५ लघु २०१ सर्व अक्षर २२६॥)

इति खमासमणाकी पाटी समाप्ता ॥

अथ पंच पदांकी वंदना ॥

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्व साहूणं, अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः। पहिले पद णमो अरिहंताणं कहतां सर्वश्री अरिहंत भगवंतजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो। अरिहंतजी महाराज कैवा छै। उप्पन्न नाण दंसणधरा अरहा जिन केवली, जघन्य वीस तीर्थंकर, उत्कृष्टा एक सौ सित्तर देवाधिदेव ते मांहे वर्तमान काले वीस विहरमाण श्रीसीमंधर स्वामी १ युगमंधर स्वामी २ बाहु स्वामी ३ सुबाहु स्वामी ४ सुजात स्वामी ५ स्वयंप्रभ स्वामी ६ ऋषभानन स्वामी ७ अनंतवीर्य स्वामी ८ सूरप्रभ स्वामी ९ विशाल स्वामी १० वज्रधर स्वामी ११ चन्द्रानन स्वामी १२ चन्द्रबाहु स्वामी १३ भुजंग स्वामी १४ ईश्वर स्वामी १५ नेमिप्रभ स्वामी १६ वीरसेन स्वामी १७ महाभद्र स्वामी १८ देवजस स्वामी १९ अजितवीर्य स्वामी २०।

चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी करी विराजमान, १००८ लक्षणका धरणहार, त्रिलोक महिया, त्रिलोक वंदनीक, चौसठ इन्द्रारा पूजनीक, अठारे दोषा रहित, द्वादश गुणा करके विराजमान अनंतो ज्ञान १ अनंतो दरसण२ अनंतो चारित्र ३ अनंतो वीर्य ४ अशोक वृक्ष ५ सुर पुष्प वृष्टि ६ दिव्य ध्वनि ७ चामर ८ सिंहासन ९ भामंडल १० देव दुंदुभि ११ छत्रधारै १२। जघन्य दोय कोड़ केवली, उत्कृष्टा नवकोड़ केवली, वैरै, विचरै, जां महापुरुषांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड़ मान मोड़ खमाड़ छूं, आप खमबा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुई जो॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिण वंदामि णमंसामि सक्कारेमि संमाणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि॥ ऐसे तिक्खुत्ताको पाठ तीन वार कहिये॥ १॥

२ दूजे पद नमो सिद्धाणं कहता सर्व सिद्धजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो। सिध्दजी महाराज कैवा छैं सकल कार्य सिद्ध करीने आठ कर्म खपाय, पनरे भेदे सिद्ध सिद्धा॥ तीर्थसिद्धा १ अतीर्थसिद्धा २ तीर्थंकरसिद्धा ३ अतीर्थंकरसिद्धा ४ स्वयं बुद्ध सिद्धा ५ प्रत्येक बुद्धसिद्धा ६ बुद्ध बोहिय सिद्धा ७ इस्त्री लिंग सिध्दा ८ पुरुष लिंग सिद्धा ९ नपुसक लिंग सिद्धा १० स्वलिंगी सिध्दा ११ अन्य लिंगी सिद्धा १२ गृहस्थ लिंग सिद्धा १३ एक सिद्धा १४ अनेक सिद्धा १५॥ आठ गुणां करीनें विराजमान–

अनंतो ज्ञान १ अनंतो दर्शन २ अनंतो सुख ३ क्षायिक समकित ४ अटल अवगाहना ५ अमूर्तिपणो ६ अगुरु-लघु७अनंत अकरण वीर्य ॥ ८ ॥

अडिल छंद ॥

अविनाशी अविकार परम रसधाम है, समाधान सरवंग सहज अभिराम है। शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध अनादि अनंत है, जगत शिरोमनि सिद्ध सदा जयवंत है ॥ १ ॥ जठै जन्म नहीं, जरा नही, मरण नहीं, रोग नहीं, सोग नहीं, भूख, नहीं, तृषा नहीं, चाकर नही, ठाकर नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं, एकमें अनेक, जोतमें जोत विराजमान, एवा अनंता सिद्ध भगवंत छै, जांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो। कोई अविनय आशातना हुई होय तौ वारंवार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ पछे तिक्खुत्ताका पाठ ३ कहिजे ॥ २ ॥

३ तीजे पद नमो आयरियाणं कहतां सर्व आचारज-जी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ आचारजजी महाराज कैवा छै ॥ ज्ञानाचार १ दंस-णाचार २ चारित्राचार ३ वीर्याचार ४ तप आचर ५ ए पांच आचार पाळै; पांच महाव्रत पाळै ५ पांच इंद्रि-य वश करै ५ चार कषाय टाळै ४ नव वाड़ सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य पाळै ९ पंच समित ५ तीन गुप्त ३ शुद्ध आराधै ॥ छत्तीस गुणां करके विराजमान आचारजजी महा-

राज अर्थका दातार, आठ संपदा सहित, जां महापुरुषां में म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हाथ जोड मान मोड खमाऊ छू, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी जुजो जुजो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ तिक्खुतो तीन वार कहणो ॥ ३ ॥

४ चौथे पद नमो उवज्झायाणं कहतां सर्व उपाध्यायजी महाराज भणी म्हारो वनणा नमस्कार हुईजो ॥ उपाध्याय जी महाराज कैसा छै उपाध्यायजी, गणधरजी, स्थविरजी बहुश्रुतजी, इग्यारे अंग-आचारांग १ सुयगडांग २ ठाणांग ३ समवायांग ४ भगवती ५ ज्ञाता ६ उपासकदसा ७ अंतगडदसा ८ अनुत्तरोववाईदसा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक ११ ॥ बारे उपांग-उव्यवाई १ रायप्पसेणी २ जीवाभिगम ३ पन्नवणा ४ जंबूद्वीपपण्णत्ती ५ चन्द्र पण्णत्ती ६ सूरपण्णत्ती ७ निरयावलिया ८ कप्पवडंसिया ९ पुप्फिया १० पुप्फचूलिया ११ वन्हिदसा १२॥ मूल सूत्र चार-उत्तराध्ययन १ दसवैकालिक २ नंदी सूत्र ३ अनुयोगद्वार ४ छेद च्यार-दशा श्रुतस्कंध १ बृहत्कल्प २ व्यवहार ३ निशीथ ४ ॥ बत्तीसमो आवश्यक ॥ आदि देई अनेक ग्रंथका जाणणहार, इग्यारे अंग बारे उपांग चरणसित्तरी करण सित्तरी भणे भणावे ए पचीस गुणे करी विराजमान, तथा चउदे पूर्व इग्यारे अंग भणे भणावे, सात नय, निश्चय व्यवहार प्रत्यक्ष ने परोक्ष दोय प्रमाणके जाणणहार, मनुष्य अथवा देवता कोईपण जेमें विवादमें छलवानें समर्थ नहीं, सूत्र पाठका दातार उपाध्यायजी महाराज, जांनें म्हारो वनणा नमस्कार हुई

जो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड़ मान मोड़ खमाऊं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी भुजो भुजो वनणा नमस्कार हुई जो ॥ पछै तिक्खुत्तोरो पाठ तीनवार कहणो ॥ ४ ॥

५ पांचवें पद नमो लोए सव्वसाहूणं कहतां लोकरे विषै सर्व साधुजी महाराजभणी म्हारो वनणा नमस्कार हुई जो ॥ साधुजी महाराज कैवा छै। स्व पर कार्यका साधनहार, पोतारा धर्माचार्यजी महाराज श्री श्री श्री १००८ श्री श्री स्वामीजी श्रीरामचंद्रजी श्रीप्रसन्नचंद्रजी महाराज (तथा इण ठिकांणे आपजी आपके गुरुका नाम कैणा ॥) जघन्य दोय हजार क्रोड साधुजी, उत्कृष्टा नव हजार क्रोड साधुजी, पांचे समिते समिता, तीने गुप्ते गुप्ता, बयांळीस दोष टाळीनें आहार पांणीका लेणहार, छ कायके पीर, छ कायके रक्षक, बावीस परिसहांरा जीतणहार, बावन अनाचारके टालनहार, तेड्या जाय नहीं, नूंत्या जीमे नहीं, निर्लोभी, निर्लालची, सूरा वीरा धीरा मोक्ष मार्ग साधै, भगवान्‌की आज्ञामें विहरै विचरै, शुद्ध संयम पाळै, सत्ताईस गुणां करी विराजमान पंच महाव्रत पाळै ५ पांच इंद्रिय वश करै १० च्यार कषाय टाळै १४ भाव सच्चे १५ करण सच्चे १६ जोग सच्चे १७ क्षमावंत १८ वैराग्यवंत १९ मन समाधारणीया २० वय समाधारणीया २१ कायसमाधारणीया २२ नाण संपन्ने २३ दंसण संपन्ने २४ चारित्त संपन्ने २५ वेदनी समा अहियासणिया २६ मरणांतिसमा अहियासणिया २७ ॥ इसा साधुजी महाराजनें म्हारो वनणा नम-

स्कार हुईजो। कोई अविनय आशातना हुई होय तो वारंवार हात जोड मान मोड खमाऊं छूं, आप खमवा जोग्य छो। १००८ वार मन वचन कायाए करी मुजो मुजो वनणा नमस्कार हुईजो। पछै तिक्खुत्तारो पाठ तीन वार कहणो॥ ५॥

ए पंच पद लोकमें महा मंगलिक छै, महा उत्तम छै, शरण लेवा योग्य छै, वारंवार इण भवमें तथा भव भवमें म्हनें सरणो हुईजो।

इति पंच पदांकी वंदना समाप्त॥

अथ आयरिय उवज्झाए की पाटी॥

आयरिय उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि॥ १॥ सव स्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिय सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि॥ २॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहियनियचित्तो। सव्वं खमावइत्ता खमामि सव्वस्स अहयं पि॥ ३॥

पद १२ गुरु १९ लघु ९१ सर्व अक्षर ११०॥

इति आयरिय उवज्झाएकी पाटी समाप्त॥

अथ खमत खामणा॥

अढाई द्वीप, पनरे क्षेत्र मांहे तथा बारे श्रावक श्रा विका दान देवे, शील पाळे तपस्या करे; भावना भावे, संवर करे, सामायिक करे, पोसह करे, पडिक्कमणा करे, तीन मनोरथ चउद नियम चिंतवे, एक व्रत धारी, तथा बारे व्रत धारी, मूल गुण उत्तर गुण सहित ते मांहे

मोटांनें हात जोड़ मान मोड़ पगे लागी खमाऊं छूं, छोटांनें समुच्चय खमाऊं छूं ॥

इति खमत खामणा समाप्ता ॥

अन चौरासी लाख जीवाजोनि ॥

सात लाख पृथ्वी काय, सात लाख अप् काय, सात लाख तेउ काय, सात लाख वाउ काय, दस लाख प्रत्येक वन स्पति काय, चउदे लाख साधारण वनस्पति काय, दोय लाख वे इंद्री, दोय लाख ते इंद्री, दोय लाख चउरिंद्री, च्यार लाख देवता, च्यार लाख नारकी च्यार लाख तिर्जंच पंचेंद्री, चउदे लाख मिनखरी जात, च्यार गत चौरासी लाख, जीवाजूण सूक्ष्म वादर पर्याप्तक अपर्याप्तक जाणतां अजाणतां कोई जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतानें भलो जाण्यो होय मन कर वचन कर काया कर अठारे लाख, चोईस हजार एक सौ वीस १८२४१२० मिच्छामि दुक्कडं ॥

इति चौरासी लाख जीवाजोनि समाप्ता ॥

अथ खामेमि सव्वे जीवाकी पाटी ॥

अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

खामेमि सव्वजीवा, सव्वेजीवा खमंतु मे । मेत्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ ण केणइ ॥ १ ॥ [आर्या वृत्तम् । [एव महं आलोइय, णिंदिय गरहिय दुगंछियं सम्मं । तिवि हेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ २ ॥

इति खामे मि सव्वजीवाकी पाटी समाप्ता ॥

दैवासिक प्रायश्चित्तविशोधनार्थं करोमि काउस्सग्गं ॥

अथ समुच्चय पच्चक्खाण ॥

गंठि सहियं मुट्ठिसहियं नवकारसी पोरसी साढा पो-

रसी आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहंपि चऊव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अनत्थणाभोगेणं सह सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

इति समुचय पचक्खाण समाप्त ॥

अथ पडिक्कमणाकी विधि ॥

पैली "चौईस तथ" कीजै । पछै ऊभो होय आसण छोड "तिक्खुतो" कहीजे । पछे देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई, वडा साधर्मी भाइयांकी आज्ञा मांगी "देवसिक पडिक्कमणा करण की आज्ञा है " इसो कही "इच्छामि णं भंते" की पाटी कहणी । पछै "नवकार" कहणो । फेर "तिक्खुतो" को पाठ कही, पैला आवश्य ककी आज्ञा मागी "करेमि भंते" की पाटी कहणी । पछे 'इच्छामि ठामि काउस्सग्गं" की पाटी कहणी । पछै "तस्स उत्तरी" की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोथको करणो । शक्ति नहीं होय तौ बैठ सिध्धासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो । काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार "जं वाइध्दं" आदि अर्थरूप चिंतवणा । पछै समकितका ५ अतिचार "जिन वचनमें शंका आंणी होय" इत्यादि चिंतवणा । पछे बारे व्रतांरा दूजा भाग रा एयाई लगाय एक एक व्रतरा पांच पांच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा १५ संलेहणारा ५ एवं ९९ अति चार । १८ पापस्थानक तथा "इच्छामि ठामि" की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमें "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" कठेई नहीं कहणो ॥ ने "इच्छामि ठामि" की पाटीमें "ठामि काउस्सग्गं" की जगह "इच्छामि पडिक्कमिउं" कहणो॥

पछै नवकार मनमें गुणीनें "नमो अरिहंताणं" काउस्सग्ग पाड़ती वगत प्रकट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक संपूर्ण ॥ १ ॥

पछै "तिक्खुत्ताको पाठ कही दूजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही प्रकट "लोगस्स" की पाटी पढणी ॥

इति दूजो चउविसत्थो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

"तिक्खुत्तो" कही तीजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही दोय वार "इच्छामि खमासमणा" की पाटी कहणी। साधु श्रावक दोनुं कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोटो ऐ तीन सिवाय कांई नही राखै ॥ पाटीमें प्रथम "निसीही" शब्द आवे जद मितावग्रहमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कने बैठणो। पछे गुरुका चरणांके हाथ लगाय आपके माथे लगावणा. ने छ आवर्तकरणा. "अहोकायंकाय" इणं अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे है। यथा–दोनुं हात लंबा कर हातरी दसूं आगलियां जमी माथे धर मुंखसूं "अ" अक्षर नीचा स्वरसूं कहणो। पछै यूंही दसूं आंगलियां आंखियां ऊपर धरतां "हो" अक्षर ऊंचा स्वरसूं कहणो। ओ पैलो आवर्त हुवो। यूंहीज "का" ने "यं" उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे। तथा "का" ने "य" उच्चारतां तीनो आवर्त हुवे ॥ पछै "जत्ता भे जवणिज्जं च भे" इणां अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे ॥ यथा–प्रथम "ज" मंद स्वरसूं, "त्ता" मध्यम स्वरसूं "भे" ऊंचा स्वरसूं, ऊपरली रीते दोनुं हाथ जमी माथे, विचमें (आरती रूप) ने आंख्यां माथे, एक एक अक्षर क्रमसूं बोलता लगावणा ॥ ओ पैलो आवर्त हुवो। "ज. व. णि." ऐ तीन अक्षर त्रिविध स्वरसूं

रसी आप आपनी धारणा प्रमाणें तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सह सागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥

इति समुच्चय पच्चक्खाण समाप्त ॥

अथ पडिक्कमणाकी विधि ॥

पैली "चौईस सत्थ" कीजै । पछै ऊभो होय आसण छोड "तिक्खुत्तो" कहीजै । पछै देव गुरु तथा साधुजी कनें आज्ञा लेई, वडा साधर्मी भाइयांकी आज्ञा मांगी "देवसिक पडिक्कमणा करण की आज्ञा है" इसो कही "इच्छामि णं भंते" की पाटी कहणी । पछै "नवकार" कहणो । फेर "तिक्खुत्ता" को पाठ कही, पैला आवश्य ककी आज्ञा मांगी "करेमि भंते" की पाटी कहणी । पछे "इच्छामि ठामि काउस्सग्गं" की पाटी कहणी । पछै "तस्स उत्तरी" की पाटी कहनें काउस्सग्ग ऊभोथको करणो । शक्ति नहीं होय तो बैठ सिध्दासन लगाय जिनमुद्राए काउस्सग्ग करणो । काउस्सग्गमें १४ ज्ञानका अतिचार "जं वाइध्दं" आदि अर्थरूप चिंतवणा । पछै समकितका ५ अतिचार "जिन वचनमें शंका आंणी होय" इत्यादि चिंतवणा । पछे बारे व्रतांरा दूजा भाग, रा एयासुं लगाय एक एक व्रतरा पांच पांच अतिच्यार कुल ६० कर्मादानरा १५ संलेहणारा ५ एवं ९९ अति चार । १८ पापस्थानक तथा "इच्छामि ठामि" की पाटी चिंतवणी ॥ काउस्सग्गमे "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" कठेई नहीं कहणो ॥ नै "इच्छामि ठामि" की पाटीमें "ठामि काउस्सग्गं" की जगह "इच्छामि पडिक्कमिउं" कहणो॥

पछै नवकार मनमें गुणीनें "नमो अरिहंताणं" काउस्सग्ग पाड़ती वगत प्रकट कहणो ॥

इति प्रथम सामायिक आवश्यक संपूर्ण ॥ १ ॥

पछै "तिक्खुत्ताको पाठ कही दूजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही प्रकट "लोगस्स" की पाटी पढणी ॥

इति दूजो चउविसत्थो आवश्यक संपूर्ण ॥ २ ॥

"तिक्खुत्तो" कही तीजा आवश्यककी आज्ञा है ऐसो कही दोय वार "इच्छामि खमासमणा" की पाटी कहणी। साधु श्रावक दोनुं कने रजोहरण, मुखपत्ती और चलोटो ऐ तीन सिवाय कांई नहीं राखै ॥ पाटीमें प्रथम "निसीही" शब्द आवे जद मितावग्रहमें प्रवेश कर ऊभा गोडा राख हाथ जोड गुरु कने बैठणो। पछे गुरुका चरणांके हाथ लगाय आपके माथे लगावणा. ने छ आवर्तकरणा. "अहोकायंकाय" इणं अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे है। यथा—दोनुं हात लंबा कर हातरी दसूं आगलियां जमी माथे धर मुंखसूं "अ" अक्षर नीचा स्वरसूं कहणो। पछै यूंही दसूं आंगलियां आंखियां ऊपर धरतां "हो" अक्षर ऊंचा स्वरसूं कहणो। ओ पैलो आवर्त हुवो। यूंहीज "का" ने "यं" उच्चारतां दूजो आवर्त हुवे। तथा "का" ने "य" उच्चारतां तीनो आवर्त हुवे ॥ पछै "जत्ता भे जवणिज्जं च भे" इणां अक्षरांसूं तीन आवर्त हुवे ॥ यथा—प्रथम "ज" मंद स्वरसूं, "त्ता" मध्यम स्वरसूं "भे" ऊंचा स्वरसूं, ऊपरली रीते दोनुं हाथ जमी माथे, विचमें (आरती रूप) ने आंख्यां माथे, एक एक अक्षर क्रमसूं बोलता लगावणा ॥ ओ पैलो आवर्त हुवो। "ज. व. णि." ऐ तीन अक्षर त्रिविध स्वरसूं

ऊपर मुजब उचारता दूजो आवर्त हुवे। "जं व मे" ऐ तीन अक्षरांसूं पूर्वोक्त रीतिसूं तीजो आवर्त हुवे। ऐसे६आवर्त एकवार गुणतां हुवे।दोय वार पाटी गुणतां वारे आवर्त हुवे। पेले खमासमणामें "वइक्कम" ताई कहीने "आवसियाए" इण पद ऊपर ऊभो हुवणो और गुरु चरणासूं पाछले पगां सरकणो, मितावग्रह वारे अर्थात् तीन हात अलगो गुरुके सन्मुख ऊभो रही शेष पाठ पढणो। दूजा खमासमणामें पूर्वरीत थोडो शरीर नमावी "इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीही "ए पाठ कही गुरुके समीप जाय बैसीनें पूर्वोक्त रीतिसूं छ आवर्त देणा सांरो पाठ बैठो २ पढणो, गुरुके सांमें दृष्टि राखणी दूजा खमासमणामें आवसियाए पडिक्कमामि" ए दस अक्षर नहीं कहणा॥

इति तीजो बंदनावश्यक सपूर्ण॥

"तिक्खुत्तो" को पाठ कही चौथा आवश्यककी आज्ञा है ऐसे कही ऊभो होय "आगमें तिविहे" की पाटी सूं लेयने "इच्छामि ठामि" की पाटी पर्यंत ९९ अतिचार काउस्सग्गम कथा सो प्रगटपणे कहणां "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" देणो॥ पछे "तस्स सव्वस्स" की पाटी कहणी॥ पछे नीचो बैठ जीवणो गोडो ऊभो राख "नवकार"कहणो। पछे "करेमि भंते"की पाटी कहणीपछे "चत्तारि मंगलं" की पाटी कहणी॥ पछे "इच्छामि ठामि" की पाटी, पछे "इरिया वहियाए" की पाटी कहणी पछे "तिक्खुत्तो" गुणी, हात जोडी, व्रत अतिचार मेला करणकी आज्ञा लेणी। पछ "आंगमे तिविहे" की पाटी क

हणी। पछें "दंसण श्रीसमकित" की पाटी कहणी ॥ पछे बारे व्रत अतिचार सहित कहणा ॥ पछे संलेखणाको पाठ अतिचारां समेत कहणो॥पछे अठारे पाप स्थानककी पाटी कहणी ॥ पछै "इच्छामि ठामि" की पाटी कहणी ॥ अठा तांई जीवणो गोडो ऊंचो राखियां बैठो रैणो । पछै ऊभो होय हात जोड़ "तस्स धम्मस्स" की पाटी कहणी ॥ पछै " इच्छामि खमासमणा " की पाटी पूर्वोक्तरीतिसूं दोय वार कहणी ॥ पछै आज्ञा लेई, ऊंदा गोडां बैसी, दोनुं हाथ जोड़ी, मस्तक जमीके लगावी, पांच पदांकी वंदना करणी ॥ पछे ऊभो होय "आयरिय उवज्झाए" की पाटी कहणी ॥ पछे "अढाई द्वीप" को पाठ कहणो॥ पछै "चौरासी लाख जीवा जोनि सात लाख पृथ्वीकाय" इत्यादि पाठ कहणो ॥ पछै "खामेमि सव्वजीवा"को पाठ कहणो ॥ पछै अठारे पापस्थानक कहणा ॥

इति चौथो प्रतिक्रमण आवश्यक संपूर्ण ॥

"तिक्खुत्तो" को पाठ पढी, पांचवां आवश्यककी आज्ञा है ऐसे कही, "दैवसिकप्रायश्चित्तविशोधनार्थ करेमि काउस्सग्गं" ॥ ओ पाठ कहणो ॥ पछै "नककार" कहणो । पछै "करेमि भंते" की पाटी कहणी । पछै "इच्छामि ठामि काउस्सग्गं" की पाटी कहणी ॥ पछै "तस्स उत्तरी" की पाटी कहणी ॥ पछै काउस्स करणो । काउसग्गमें "देवसि, राइ" पडिक्कमणामें लोगस्स ४ कहणा । पक्खी पडिक्कमणामें लोगस्स ८ कहणा । चौमासीपड़िक्कमणामें लोगस्स १२ कहणा ॥ संवत्सरी पड़िक्कमणामें लोगस्स १६ कहणा ॥ यातो पूज्य जयमल्लजी रुघनाथजी की संप्रदायकी परंपरा है । सूत्रमें पक्खीका

१२, चौमासीका २०, संवत्सरी का४०लोगस्स काउसग्ग करणाई। जयमल्लजी महाराजके संप्रदायकी साध्वी इसी प्रमाणे करे हैं॥ कितनाक आप आपकी आम्नाय प्रमाणे कमती जादा करे है। मनमें "नवकार"गुणी, काउस्सग्ग पारणो पछे नमो अरिहंताणं" इसो प्रकट कहणो। पछे "लोगस्स" प्रकट कहणो॥ पांच पदां की वंदनो पछे सारी क्रिया ऊभो २ करणी॥ शक्ति नहीं हुवे तो बैठो २ करणी॥ पछे पूर्वकी परे "इच्छामि खमासमणा" की पाटी दोय वार कहणी॥

इति पांचमो काउस्सग्ग आवश्यक सपूर्ण॥

हवे छठा आवश्यकका कामी धन्य है श्रीवर्धमान स्वामी इसो कही, गुरु मुनिराज पासे तथा बडेरा पासे पचक्खाण करै। इणांरो योग नहीं होय तो आज्ञा लेयनें "गंठिसहियं मुट्ठिसहियं" इत्यादि पाठ पढी धारणा प्रमाणे पचक्खाण आपरे मते करे॥

इति छठो पचक्खाण आवश्यक संपूर्ण॥

सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग और पचक्खाण ए ६ आवश्यक मांहे जांणतां अजाणतां जे काई अतिचार दोष लागो होय तथा पाठ उचारतां काना मात्र अनुस्वार पद अक्षर अधिको ओछो आगो पाछो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ मिथ्यात्वनो पडिक्कमणो, अव्रतनो पडिक्कमणो, प्रमादनो पडिक्कमणो, कषायनो पडिक्कमणो, अशुभ जोगनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा मांहेलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ गया कालको पडिक्कमणो, वर्तमान कालको संवर तथा सामायिक,आवता

कालका पच्चक्खाण, तेमां जे दोष लागो होय, अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥ थव थुइ मंगलं ॥

इति क्षमापन संपूर्ण ॥

पछै नीचो बैठ, डावो गोडो ऊंचो राख, दोय "नमोत्थुणं पूर्ववत् पढणा ॥ पछै ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी प्रतें पंचांग नमाय, "तिक्खुत्तो" का पाठसूं १००८ वार वंदना करूं छूं इम कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते वंदना करवी । पछै उपाश्रयमें जे मुनिराज होय तिणांनें वंदना करीने अपराध खमावणो । पछै तपस्वी साधर्मी भाइयांसूं खमत खामणा कर सुख साता पूछणी । पछै सारा साधर्मी भाइयां सूं खमत खामणा करणा अने सुख साता पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामें "मिच्छामि दुक्कडं" आवे तठै दिवस संबंधी मिच्छामि दुक्कडं देणो ॥ राइ पडिक्कमणामें रात्रि संबंधी कहणो । पक्खी पडिक्कमणामें देवसि पक्खी संबंधि कहणो । चौमासीमें देवसि चौमासी संबंधी कहणो । संवच्छरी पडिक्कमणा में देवसि संवत्सरी संबंधी मिच्छामि दुक्कडं कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्तः ॥

॥ अथ दश पच्चक्खाण ॥

गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारो, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए । सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाणस्सउ, अट्ठेव य अंबिलंमि आगारा । पंचेव य भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउदो अभिग्गहे,

१२, चौमासीका २०, संवत्सरी का ४० लोगस्स कआहै। जयमल्लजी महाराजके संप्रदायकी साध्वी इसी प्रमाणे करे हैं ॥ किताक आप आपकी आम्नाय प्रमाणे कमती जादा करे है। मनमें "नवकार" गुणी, काउस्सग्ग पारणो पछे नमो अरिहंताणं" इसो प्रकट कहणो। पछे "लोगस्स" प्रकट कहणो ॥ पाच पदा की वंदनो पछे सारी किया ऊभो २ करणी ॥ शक्ति नहीं हुवे तो बैठो २ करणी ॥ पछे पूर्वकी परे " इच्छामि खमासमणा " की पाटी दोय वार कहणी ॥

इति पांचमो काउस्सग्ग आवश्यक संपूर्ण ॥

हवे छठा आवश्यकका कामी धन्य है श्रीवर्धमान स्वामी इसो कही, गुरु मुनिराज पासे तथा बडेरा पासे पच्चक्खाण करे। इणांरो योग नहीं होय तो आज्ञा लेयनें "गंठिसहियं मुट्ठिसहियं" इत्यादि पाठ पढी धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण आपरे मते करे ॥

इति छट्ठा पच्चक्खाण आवश्यक संपूर्ण ॥

सामायिक, चउविसत्थो, वंदनक, पडिक्कमण, काउस्सग्ग और पच्चक्खाण ए ६ आवश्यक मांहे जांणतां अजांणतां जे काइ अतिचार दोय लागो होय तथा पाठ उचारतां काना मात्र अनुस्वार पद अक्षर अधिको ओछो आगो पाछो कह्यो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ मिथ्यात्वनो पडिक्कमणो, अव्रतनो पडिक्कमणो, प्रमादनो पडिक्कमणो, कषायनो पडिक्कमणो, अशुभ जोगनो पडिक्कमणो ए पांच पडिक्कमणा मोहेलो कोई पडिक्कमणो नहीं कीधो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ गया कालको पडिक्कमणो, वर्तमान कालको संवर तथा सामायिक, आवता

कालका पच्चक्खाण, तेमां जे दोष लागो होय, अतिक्रम व्यतिक्रम, अतिचार अनाचार तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं॥ थव थुइ मंगलं ॥

इति क्षमापन संपूर्ण ॥

पछै नीचो बैठ, डावो गोडो ऊंचो राख, दोय "नमोत्थुणं पूर्ववत् पढणा ॥ पछै ऊभो होयने श्रीसीमंधरस्वामीजी प्रतें पंचांग नमाय, "तिक्खुत्तो" का पाठसूं १००८ वार वंदना करूं छूं इम कही पोताना धर्माचार्यजीनें इण रीते वंदना करवी । पछै उपाश्रयमें जे मुनिराज होय तिणांनें वंदना करीने अपराध खमावणो । पछै तपस्वी साधर्मी भाइयांसूं खमत खामणा कर सुख साता पूछणी । पछै सारा साधर्मी भाइयां सूं खमत खामणा करणा अने सुख साता पूछणी ॥ देवसि पडिक्कमणामें "मिच्छामि दुक्कड़ं" आवे तठै दिवस संबंधी मिच्छामि दुक्कडं देणो ॥ राइ पडिक्कमणामें रात्रि संबंधी कहणो । पक्खी पड़िक्कमणामें देवसि पक्खी संबंधि कहणो । चौमासीमें देवसि चौमासी संबंधी कहणो । संवच्छरी पड़िक्कमणा में देवसि संवत्सरी संबंधी मिच्छामि दुक्कडं कहणो ॥

इति श्रावक प्रतिक्रमण विधिः समाप्तः ॥

॥ अथ दश पच्चक्खाण ॥

गाथा ॥

दोचेव नमुक्कारो, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए । सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणंमि अट्ठेव ॥ १ ॥ सत्ते गट्ठाणस्सउ, अट्ठेव य अंबिलंमि आगारा । पंचेव य भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥ २ ॥ पंच चउदो अभिग्गहे,

निव्वीए अट्ठ नव य आगारा । अप्पाउरणे पंचउ हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

१ अथ नोकारसीको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि । चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

२ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसा गारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं४ साहुवयणेणं ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

३ साढपोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्ढपोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आ हार असणं पाणं खाइम साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सह सागारेण २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेण ४ साहुवय णेणं ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ ३ ॥

४ पुरिमड्ढको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असण पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ महत्तरा- गारेणं ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥ ४ ॥

५ अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहासागा

रेणं २ सागारिआगारेणं ३ आउंटण पसारेणं ४ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

६ अथ एकलठाण को पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगट्ठाणं पच्चक्खामि दुविहं तिविहं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ सागारियागारेणं ३ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ४ पारिट्ठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥

७ अथ आयंबिलको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सुरे आयंविलं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसट्ठेणं ४ उक्खित्तविवेगेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ५ वोसिरे ॥ इति ॥ ८ ॥

९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं२ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिव-

निव्वीए अट्ठ नव य आगारा । अप्पावरणे पंचव हवंति सेसेसु चसारि ॥ ३ ॥

१ अथ नोकारसीको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कारसहियं पच्चक्खामि । चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेणं १ सहसागारेणं २ वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

२ पोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसा गारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं४ साहुवयणेण ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

३ साड्ढपोरसिको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे साड्ढपोरसिं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आ हारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सह सागारेणं २ पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवय णेणं ५ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ६ वोसिरे ॥ इति॥३॥

४ पुरिमड्ढको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे पुरिमड्ढं पच्चक्खामि चउव्विहं पिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं१सहसागारेणं २पच्छन्नकालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं५महत्तरा गारेणं ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं७ वोसिरे ॥इति॥४॥

५अथ एकाशनको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगासणं बियासणं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं१सहसागा

रेणं २ सागारिआगारेणं ३ आउंटण पसारेणं ४ गुरु-अब्भुट्ठाणेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ५ ॥

६ अथ एकलठाण को पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे एगट्ठाणं पच्चक्खामि दुविहं तिविहं चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ सागारियागारेणं ३ गुरुअब्भुट्ठाणेणं ४ पारिट्ठावणियागारेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ७ वोसिरे ॥ इति ॥

७ अथ आयंबिलको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सुरे आयंबिलं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसट्ठेणं ४ उक्खित्तविवेगेणं ५ पारिट्ठावणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ८ वोसिरे ॥ इति ॥ ७ ॥

८ अथ चउविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ५ वोसिरे ॥ इति ॥ ८ ॥

९ अथ तिविहार उपवासको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि तिविहं पि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेणं २ पारिट्ठावियागारेणं ३ महत्तरागारेणं ४ सव्वसमाहिव-

त्तियागारेणं ५ पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा, वोसिरे ॥ इति ॥ ९ ॥

१० अथ चरम पच्चक्खाण ॥

दिवसचरिमं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणा भोगेण १ सहसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ४ वोसिरे ॥ इति ॥ १० ॥

११ अथ अभिग्रहको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे गंठिसहियं मुट्ठिसहियं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १सहसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ४ वोसिरे ॥ इति ॥ ११ ॥

१२ अथ निव्विगईको पच्चक्खाण ॥

उग्गए सूरे निव्विगइयं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं १ सहसागारेण २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसट्ठेणं ४ उक्खित्तविवेगेणं ५ पडुच्चमक्खिएणं ६ पारिट्ठावणियागारेणं ७ महत्तरागारेणं ८ सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ९ वोसिरे ॥ इति ॥ २ ॥

इति दस पच्चक्खाण समाप्त ॥

विधिके दाता, दशमा शीतल[10] तपत मिटाता, ग्यारमा श्रेयांस[11] शिव दिखलाता ॥ म्हे० ॥ २ ॥ बारमां वासुपूज्य[12] भावे पूजियेजी, तेरमा विमल[13] विमल करनारा, करे अनंत[14] अंत करमांरा, पनरमा धर्म[15] धर्म दातारा ॥ म्हे० ॥३॥ नमो शांति[16] करन जग सोलमांजी, सतरमां कुंथु[17] नमूं शिर नामी, ठारमा अर[18] नमूं शिवगांमी, वंदूं मल्लिनाथ[19] गुण धांमी ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ वीसमा मुनि सुव्रत[20] व्रत देत है जी, इकीसमा नमीनाथ[21] हित करना, वंदूं नेमनाथके[22] चरना, वंदूं पार्श्वनाथ[23] दुखहरना, चौवीसमा वीर[24] प्रभु सिमरना, आये राम तिहारे सरना ॥ म्हे ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी ने वंदसांजी, वंदूं वर्तमान जिनवीसो, वंदूं गणधर सकल जगीसो, नाऊं अर्हत् साधनें सीसो ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अतमृरससंग्रहे चौईसी नामकं प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

वाणी ॥

१ लाज मेरी रख ले भवाँनी ॥ ए देशी ॥

चतुर नर सुनिये जिन वानी, सदा महा सुकृतकी खांनीं। सुणे सव इंद्र इंद्राणी, सु नकरै सफली जिंदगानी ॥ च० ॥ आंकड़ी ॥ प्रभुजी परगट फुरमावे, सुरनर सुणवेकूं आवे, सुणतां संशय मिट जावे, तुरत ही अमरा पद पावे। अमरा पदकूं पावही, सुन जिनवरना वैंण, दैण मिटे भव तापनी, खुलेज अंतर नैंण। उसीकूं कहिये निर्वानी ॥ च० ॥१॥ वाणी मुक्तीकी दाता, करे सब आनंद सुख

श्रीजिनराज महाराज चौवीसों जिनवरजी, तुम रखो हमारी लाज सुनो गणधरजी॥टेर॥श्रीऋषभ अजित संभव अभिनंदन स्वामी, सुमति पद्म सुपार्श्व नमो शिर नामी। श्रीचंद्रप्रभ सुविधिनाथ शीतल गुण गाऊं,श्रीश्रेयांस वासुपूज्य महाराजकूं सीस नमाऊं ॥ श्री० ॥ १ ॥ श्रीविमल अनंत धर्मनाथ शांति जिनदेवा, श्रीकुंथुनाथ अरनाथकी करतहूं सेवा। श्रीमल्लिनाथ मुनि सुव्रत व्रत मोय दीजो, नमिनाथ नेम महाराज पार मोय कीजो ॥ श्री० ॥ २ ॥ श्रीपार्श्वनाथ महावीर शरन रहूं तेरी, मैं हूं चरन को दास अरज सुनो मेरी। तुम चरनकी शरन विन काल अनंत गमाये, अब जन्म भये सुज सफल चरन तुम पाये ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दूषो चउवीसों महाराजको शरनो हमारे, तुम विन नाथ अनाथ कहो कुन तारे। प्रभु दीन दयाल कृपाल सुनों तन मनकी, तुम खैंचो हमारी डोर सुरत दर्शनकी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तुम दर्शन विन महाराज काज मुज विघट्यो, तुम दर्शन विन महाराज काल बहु भटक्यो । मुनि राम कहे महाराज पूरन करो आशा, मुज रखो चरनके पास न करियो निराशा ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति

३ गोरल ईसरजी कवे तो हँसकर वोलना हे ॥ एदेशी ॥

म्हे तो चौवीसे जिनवर वादसांजी, जिन साथे प्रीति मोंघसांजी ॥ टेर ॥ पेला श्रीऋषभ अजित तीजा संभवाजी, चौथा अभिनंदन सुखकारी, पचम सुमति सदा हितकारी, छठा पद्मप्रभ बलिहारी ॥ म्हे० ॥ १ ॥ सतम सुपास चंद्रप्रभ आठमाजी, नोमा सुविधि

विधिके दाता, दशमा शीतल[१०] तपत मिटाता, ग्यारमा श्रेयांस[११] शिव दिखलाता ॥ म्हे० ॥ २ ॥ बारमां वासुपूज्य[१२] भावे पूजियेजी, तेरमा विमल[१३] विमल करनारा,करे अनंत[१४] अंत करमांरा, पनरमा धर्म[१५] धर्म दातारा ॥म्हे० ॥३॥ नमो शांति[१६] करन जग सोलमांजी, सतरमां कुंथु[१७] नमूं शिर नामी, ठारमा अर[१८] नमूं शिवगांमी, वंदूं मल्लिनाथ[१९] गुण धांमी ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ वीसमा मुनि सुव्रत[२०] व्रत देत है जी, इकीसमा नमीनाथ[२१] हित करना, वंदूं नेमनाथ[२२]के चरना, वंदूं पार्श्वनाथ[२३] दुखहरना, चौवीसमा वीर[२४] प्रभु सिमरना, आये राम तिहारे सरना ॥ म्हे ॥ ५ ॥ अनंत चौवीसी ने वंदसांजी, वंदूं वर्तमान जिनवीसो, वंदूं गणधर सकल जगीसो, नाऊं अर्हत् साधनें सीसो ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अतमृरससंग्रहे
चौईसी नामकं प्रथमं प्रकरणम् ॥ १ ॥

वाणी ॥

१ लाज मेरी रख ले भवाँनी ॥ ए देशी ॥

चतुर नर सुनिये जिन वानी,सदा महा सुकृतकी खांनीं। सुणे सब इंद्र इंद्राणी, सु नकरै सफली जिंदगानी ॥ च० ॥ आंकड़ी ॥ प्रभुजी परगट फुरमावे, सुरनर सुणवेकूं आवे,सुणतां संशय मिट जावे, तुरत ही अमरा पद पावे। अमरा पदकूं पावही, सुन जिनवरना वैंण, दैण मिटे भव तापनी, खुलेज अंतर नैंण। उसीकूं कहिये निर्वानी ॥ च० ॥१॥ वाणी मुक्तीकी दाता, करे सब आनंद सुख

साता, चिंता सब मेटत है मनकी पीड़ा सब टारत है तनकी। पीडा टले शरीरकी, वरते मंगलाचार, वाणीके परमावसुं, कुसेज लेवो पार, उसीकु कहिये छे ज्ञानी ॥ च० ॥ २ ॥ महिमा वाणीकी भारी, सुणे छे पुन्यवंत नरनारी, हुवा सब शिव पद अधिकारी, अथवा सुरवर अवतारी। पावे सूर अवतारकुं, जिसका दिल हे साफ, अम जिसीको कहा करे, दुर्गति हुय गई माफ, दुष्टके मन ही नहीं मानी ॥ च० ॥ ३ ॥ केशव चक्री जिनराया, जे कोई अविचल पद पाया, राम सब हुवा छे इनसें, नमो नमो करिये छे जिनसें। नमो नमो श्रुतदेवकुं, सुधरे दोनु लोक, इह लोके सुख संपदा, परभव पामे मोक्ष, करे भव स्थिति री की हानी ॥ च० ॥४॥ हूं सब वाणीकी मा या, इसीका गणधर गुण गाया, किसीने पार नहीं पा या, राम मुनि सरणे ही आया। भजे वचन जिनराजके, जिसके सुधरे काज, भव भवमें जिन वचनको, शरण हुवो महाराज, मुक्तिकी देही ऐनांणी ॥ च० ॥५॥ इति ॥

२ रमो रमो ए चेलकियों फुंदाली छोरी ॥ ए देशी ॥

संशय छेदन तारनी भगवतकी वानी, जुड़े न जगमें जोड़ ॥ वारी हे भगवतकी वानी ॥ सरध्यां पार उतारनी ॥ भ० ॥ सुणजो ये मन धर कोड ॥ वा० भ० ॥ १ ॥ सुण सुणने म्हे अवस्यां ॥ भ० ॥ म्हे जोसा हो भर भर नैण ॥ वा० ॥ पाखंड मत म्हे छोड़स्या ॥ भ० ॥ सुणसां म्हे सतगुर वैण ॥ वा० भ०॥ २॥ जीव अजीव म्हे ओलख्या ॥ भ० ॥ जाण्या म्हे पुन्य ने पाप ॥ वा० ॥ आश्रव सं वर जाणीया ॥ भ० ॥ निर्जरा बंध मोक्ष स्याफ ॥ वा०

भ० ॥ ३ ॥ स्याद्वाद मत वीरनो ॥ भ० ॥ नय निक्षेप प्रमांण ॥ वा० ॥ सुण्यां विना किम जांणीये ॥ भ० ॥ करे मूढ खैंचातांण ॥ वा० भ० ॥४॥ परदेशी संयति पापीया ॥ भ० ॥ छिनमें हो उतरया पार ॥ वा० ॥ रामचंद्र सूत्र तारसी ॥भ०॥ दूजो नहीं तारणहार ॥ वा० भ० ॥५॥ इति

३ राग पेमासरी ॥

सूत्र हृदय धरो, गुरु मुखसेती निरनय करो ॥ सू० ॥ भव सागरथी वेग तरो ॥ टेर॥ सूत्र गणधर देवकह्यो, अरिहंत देवसूं अर्थ लह्यो, शुद्ध उच्चरो ॥ गु० सू० भ० ॥१॥ सूत्र धर्म खरो, इन बिन कबि तुम नांहीं तरो, इन बिन कबि तुम नांहीं तरो, इनके जोरसूं खूब अरो, मती डरो ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु चरन ग्रहो, स्याद्वादको भेद लहो, स्याद्वादको भेद लखो, इन बिन नाहक कांई बको, मिथ्यात हरो ॥ गु० ॥ ३ ॥ द्वे प्रमान करी, सप्त नयसूं ठीक परी, सप्त नयसूं ठीक परी, मुनि रामचंद्र तो इम उचरी, गुरु पद पकरो ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

४ गाढा मारू वसोनी आजकी रैंनमें ॥ ए देशी ॥

सूत्र सुणोनी नित भावसूंरे, जीवा सूत्रकी मोटी छै वात, म्हारा ज्ञानी जिवड़ा, सूत्र सुणोनी नित भावसूं, सुणूं सुणूं तूं स्यूं करे रे, जीवा सुणोनी दिवसने रात ॥ म्हारा० सू० ॥ १ ॥ सूत्र सो धर्म न दूसरोरे, जीवा सूत्रने वाचे शुध साध ॥ म्हारा० ॥ सूत्र तो गणधर गूंथियारे, जीवा सूत्रको ज्ञान अगाध ॥ म्हारा० सू० ॥ २ ॥ सूत्र लुंपक केई जागियारे, जीवा उत्सूत्र प्ररूपे मूढ ॥ म्हारा० ॥ मंनसूं कल्पना केलवे रे, जीवा तांणे आपणी

रूढ ॥ म्हा० सू० ॥ ३ ॥ सूत्र अरथ नहीं ओळखे रे, जीवा ज्ञानकी करे छे उत्थाप ॥ म्हा० ॥ ते डूबे डबोवे ओरने रे, जीवा करे क्रियाकी थाप ॥ म्हा० सू० ॥४॥ सूत्र वचन सिर पर धरो रे, जीवा मेटो मिथ्यात घोर॥ म्हा०॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो रे, जीवा सूत्र समो नहीं और ॥ म्हा०सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ कोटारे तूं वडो अमीर, जाय वस्यो चामलकी तीर ॥ ॥ ए देशी गजल ॥

अरिहंत वाणी वडी पुनीत, जिणमांहे तौ आछी रीत, भांत भांतका जिणमें भाव, सुरनर सुणवा रक्खे चाव ॥ वावा वाणी वावाजी, भगवतकी वाणी वावाजी ॥ १ ॥ आप आपनी भाखा सारे, समझे नर सुर पशू विचारे, संशय जावे उपजे हर्ष, सुणतां टारे तिर्यंच नर्क ॥वा०॥२॥ प्रथमानुयोग धुर साक्षात, पुरुषोत्तमकी जिणमें बात, पद्मपुराण रु आदिपुराण, ज्ञाता सूतर भगवतवान ॥ वा० ॥ ३ ॥ द्वितीयो छै चरणानुयोग, पदारथ नवको जहां उद्योत, पन्नवणा भगवत्यादि जांन, गोमट्टसारादि तंत्र प्रधान ॥ वा० ॥ ४ ॥ करणानुयोग तृतीयो होय, साध श्रावककी करणी जोय, आचरांगे मुनि आचार, उपास-कार्य श्राद्ध विचार, मुन्याचार अरु श्रावकाचार, भिन्न भिन्न जिनमें विस्तार ॥ वा० ॥ ५ ॥ द्रव्यानुयोग चौथा देख, अध्यातमको रूप विशेख, ध्यानारूढतणो मंडान- जिनसें उपजै केवल ज्ञान, जोग शास्त्र नाटक समय सार, इन शास्त्रांकूं दृढ उरधार ॥ वा० ॥ ६ ॥ उलू न सूझे सूर्य प्रकाश, मखीन सूंघे शुद्ध सुवास, जिनवानी सुनि

धरे मन रोष, कहोनि कहिये किसका दोष ॥ वा० ॥ ७ ॥ समझें न इसमें पूरे ढोर, अथवा उसके कर्म कठोर, मुनि राम कहे सुनिये पख छोर, मूरखसें नहिं करिये झोर ॥ वा० ॥ ८ ॥ इति ॥

६ सूयर सूतोरे चंपलारा वागमें रे ॥ ए देशी ॥

गौतम गणधर कीयो चांनणो रे, राज कांई ज्ञान दिवाकर होई रे, भवि जन रूपी कमल विकसिया रे, राज कांई दीयो मिथ्या तम धोई रे ॥गो०॥१॥ ज्ञान तो च्यार चवदे पूरवी रे, राजकांई पूछ्या है जांण अजांण रे, वीर जिनेश्वर सहू फुरमाविया रे, राज कांई सुणतांई परम कल्याण रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पंचम अंग उमंगे पूछिया रे, राज कांई परसन छतीस हजार रे, ओरही अंग उपांगे मूल छेदमें रे, राज कांई प्रश्नतणो नहीं पार रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ प्रश्नकारक गौतम सारीखा रे, राज कांई उत्तर दायक जिनराय रे, टीकाकार निर्वाह कीयो भलो रे, राज कांई उत्तम वांचे मुनिराय रे ॥ गो०॥४॥ पुन्यवंत वांचे पुन्यवंत सांभळे रे, राज कांई सरधे सोई पुन्यवंत रे, आज आधार छै श्रीजिन वचनको रे, राजकांई प्रत्यक्ष ऐही भगवंत रे ॥ गो० ॥ ॥ ५ ॥ सूत्र सरीखो जग धर्म छै नहीं रे, उत्सूत्र सरीखो नहीं दोष रे, मुनिराम कहे छै सगळा सरध जो रे, राज कांई सूत्र थकी होय मोख रे ॥ गोतम गणधर कीयो जग चांनणो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे वाणीनामकं द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

रूढ ॥ म्हा० सू० ॥ ३ ॥ सूत्र अरथ नहीं ओळखे रे, जीवा ज्ञानकी करे छे उत्थाप ॥ म्हा० ॥ ते डूबे डबोवे ओरने रे, जीवा करे क्रियाकी थाप ॥ म्हा० सू० ॥४॥ सूत्र वचन सिर पर धरो रे, जीवा मेटो मिथ्यात घोर ॥ म्हा० ॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो रे, जीवा सूत्र समो नहीं और ॥ म्हा० सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ कोटारे तूं बडो अमीर, जाय बस्यो चामलकी तीर ॥ ॥ ए देशी गजल ॥

अरिहंत वाणी बडी पुनीत, जिणमांहे तौ आछी रीत, भांत भांतका जिणमें भाव, सुरनर सुणवा रक्खे चाव ॥ वावा वाणी बाबाजी, भगवतकी वाणी बाबाजी ॥ १ ॥ आप आपनी भाखा सारे, समझे नर सुर पशू विचारे, संशय जावे उपजे हर्ष, सुणतां टारे तिर्यंच नर्क ॥वा०॥२॥ प्रथमानुयोग धुर साक्षात, पुरुषोत्तमकी जिणमें बात, पद्मपुराण रु आदिपुराण, ज्ञाता सूतर भगवतवान ॥ वा० ॥ ३ ॥ द्वितीयो छै चरणानुयोग, पदारथ नवको जहां उद्योत, पन्नवणा भगवत्यादि जांन, गोमट्टसारादि तंत्र प्रधान ॥ वा० ॥ ४ ॥ करणानुयोग तृतीयो होय, साध श्रावककी करणी जोय, आचरांगे मुनि आचार, उपासकापे श्राद्ध विचार, मुन्याचार अरु श्रावकाचार, भिन्न भिन्न जिनमें विस्तार ॥ वा० ॥ ५ ॥ द्रव्यानुयोग चौथा देख, अध्यातमको रूप विशेख, ध्यानारूढतणो मंडान-जिनसें उपजै केवल ज्ञान, जोग शास्त्र नाटक समय सार, इन शास्त्रांकूं दृढ उरधार ॥ वा० ॥ ६ ॥ उलू न सूझे सूर्य प्रकाश, मलीन सूंघे शुद्ध सुवास, जिनवानी सुनि

धरे मन रोष, कहोनि कहिये किसका दोष ॥ वा० ॥ ७ ॥ समझें न इसमें पूरे ढोर, अथवा उसके कर्म कठोर, मुनि राम कहे सुनिये पख छोर, मूरखसें नहिं करिये झोर ॥ वा० ॥ ८ ॥ इति ॥

६ सूयर सूतोरे चंपलारा वागमें रे ॥ ए देशी ॥

गौतम गणधर कीयो चांनणो रे,राज कांई ज्ञान दिवाकर होई रे, भवि जन रूपी कमल विकसिया रे,राज कांई दीयो मिथ्या तम धोई रे ॥गो०॥१॥ ज्ञान तो च्यार चवदे पूरवी रे, राजकांई पूछ्या है जांण अजांण रे, वीर जिनेश्वर सह्न फुरमाविया रे, राज कांई सुणतांई परम कल्याण रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पंचम अंग उमंगे पूछिया रे, राज कांई परसन छतीस हजार रे, ओरही अंग उपांगे मूल छेदमें रे, राज कांई प्रश्नतणो नहीं पार रे ॥ गो० ॥ ३ ॥ प्रश्नकारक गौतम सारीखा रे, राज कांई उत्तर दायक जिनराय रे, टीकाकार निर्वाह कीयो भलो रे, राज कांई उत्तम वांचे मुनिराय रे ॥ गो०॥४॥ पुन्यवंत वांचे पुन्यवंत सांभळे रे, राज कांई सरधे सोई पुन्यवंत रे, आज आधार छै श्रीजिन वचनको रे, राजकांई प्रत्यक्ष ऐही भगवंत रे ॥ गो० ॥ ॥ ५ ॥ सूत्र सरीखो जग धर्म छै नहीं रे, उत्सूत्र सरीखो नहीं दोष रे, मुनिराम कहे छै सगळा सरध जो रे, राज कांई सूत्र थकी होय मोख रे ॥ गोतम गणधर कीयो जग चांनणो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे वाणीनामकं द्वितीयं प्रकरणम् ॥ २ ॥

रूढ ॥ म्हा० सू० ॥ ३ ॥ सूत्र अरथ नहीं ओळखे रे, जीवा ज्ञानकी करे छे उत्थाप ॥ म्हा० ॥ ते डूबे डबोवे औरने रे, जीवा करे क्रियाकी थाप ॥ म्हा० सू० ॥४॥ सूत्र वचन सिर पर धरो रे, जीवा मेटो मिथ्यात घोर ॥ म्हा०॥ मुनि राम कहे सहू सांभळो रे, जीवा सूत्र समो नहीं और ॥ म्हा०सू० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ कोटारे तूं वडो अमीर, जाय वस्यो चामलकी तीर ॥ ॥ ए देशी गजल ॥

अरिहंत वाणी वडी पुनीत, जिणमांहे तो आछी रीत, भांत भांतका जिणमें भाव, सुरनर सुणवा रक्खे चाव ॥ वावा वाणी वावाजी, भगवतकी वाणी वावाजी ॥ १ ॥ आप आपनी भाखा सारे, समझे नर सुर पशू विचारे, संशय जावे उपजे हर्ष, सुणतां टारे तिर्यंच नर्क ॥वा०॥२॥ प्रथमानुयोग धुर साक्षात, पुरुषोत्तमकी जिणमें बात, पद्मपुराण रु आदिपुराण, ज्ञाता सूतर भगवतवान ॥ वा० ॥ ३ ॥ द्वितीयो छे चरणानुयोग, पदारथ नवको जहां उद्योत, पन्नवणा भगवत्यादि जांन, गोमट्टसारादि तंत्र प्रधान ॥ वा० ॥ ४ ॥ करणानुयोग तृतीयो होय, साध श्रावककी करणी जोय, आचरांगे मुनि आचार, उपासकाये श्राद्ध विचार, मुन्याचार अरु श्रावकाचार, भिन्न भिन्न जिनमें विस्तार ॥ वा० ॥ ५ ॥ द्रव्यानुयोग चौथा देख, अध्यातमको रूप विशेख, ध्यानारूढतणो मंडान-जिनसें उपजै केवल ज्ञान, जोग शास्त्र नाटक समय सार, इन शास्त्रांकूं दृढ उरधार ॥ वा० ॥ ६ ॥ उलू न सूझे सूर्य प्रकाश, मखीन सूंघे शुद्ध सुवास, जिनवानी सुनि

में कारण जीव एक रे, कोई पांचज रे अकारणमांहे लेखिये; *कर्ता एक छै जीव द्रव्य विशेष रे, कोई पांचजरे अकर्तामांहे पेखिये ॥ ४ ॥ द्रव्य षट्में सर्व गत आकाश रे, कोई पांच जरे लोक प्रमांणे छै सही; मुनि राम कहे छै करिये शुद्ध अभ्यास रे, कोई द्रव्य ज रे कोईमें कोई मिलतूं नहीं ॥ ५ ॥ इति ॥

गाहा ॥

परिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एक ५ खित्त ६ किरियाय ७ णिच्चं ८ कारण ९ कत्ता १० सव्वगई ११ इयर १२ अपवेसा ॥ १ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ रास ॥

धर्मास्तिकाये च्यार †गुण छै नित्यरे, कोई अरूपी रे १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय छै ४; पर्याय च्यार खंध पिण छै नित्यरे, कोई देश प्रदेश ज रे अगुरु लघु अनित्य कहाय छै॥१॥एवं ‡अधर्माऽऽ§काश ¶नित्यानित्य जोय रे, कोई ‖काल ज रे तेहना भेद कहतहूं; गुण ४ प-

---

* निश्चय नये षट् द्रव्य कर्ता छै. व्यवहार नये एक जीव ही कर्ता छै.

† धर्म द्रव्यना गुण च्यार छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गतिसहाय ४ पर्याय पण ४ छै. यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

‡ अधर्मास्तिकायना गुण ४ छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ थिति सहाय ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरु लघु ४ ॥

§ आकाशास्तिकायना गुण ४ छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ अवगाहदान गुण ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा-खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

¶ गुण च्यार ने खंध ए पांच नित्य॥ देश १ प्रदेश २ अगुरुलघु ३ ए तीन अनित्य॥

‖ काल द्रव्यना गुण ४ छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ वर्तमान ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा— अतीत काल१ अनागत काल२ वर्तमान काल३ अगुरु लघु४॥ नित्यगुण ४ अनित्य पर्याय ४ ॥

तत्वविचार–गीत ॥

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे भोजायां पांणी नीसरी, चुकल्यो मेल्यो जल जमुनाकी तीर रे, कोई आपजरे, पधाऱ्या चंपा बागमें ॥ ए देशी॥

* षट् १ द्रव्ये पुद्गल १ जीव २ प्रणामी दोय रे, कोई च्यार ज रे, † अप्रणामी शेष जानिये; षट् २ द्रव्यमें जीव १ एकही होय रे, कोई पांचजरे अजीव निश्चय मांनिये ॥१॥ पंच अमूर्ति पुद्गल मूर्तिक देख रे, कोई काल ज रे अप्रदेशी, ‡ सप्रदेशी पांच छै, धर्माधर्म आकाश तीनूं एक रे, कोई बाकी रे अनेक कहियो सांच छै ॥ २ ॥ एक क्षेत्राऽऽकाश § क्षेत्री पंचही जांण रे, कोई ¶ सक्रिय रे पुग्गल जीव पिछांनिये; च्यार ‖ अक्रिय भगवत वचन प्रमांण रे, × नित्य च्यार ज रे अनित्य पुग्गल जंतु जांनिये ॥ ३ ॥ षट् द्रव्य-

---

* दुण्णिये १ एगं २ एगं ३, पंच ४ तिये ५ एगं ६ दुण्णि ७ चउरोय ८ पंचय ९ एगं १० एगं ११ एगदसं १२ एय उत्तरं णेयं ॥ १ ॥

† षट् द्रव्य निश्चय नय परिणामी छे. व्यवहार नये जीव १ पुद्गल २ परिणामी छै. धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ एच्यार अपरिणामी छे.

‡ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ असंख्यातप्रदेशी छै. आकाश अनंत प्रदेशी छै. जीव असंख्यातप्रदेशी छै. पुद्गल अनतप्रदेशी छै.

§ क्षेत्रमस्यास्तीति क्षेत्री क्षेत्री पाँच छै. यथा–धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ जीव ३ पुद्गल ४ काल ॥ ५ ॥

¶ निश्चय नय करी छ द्रव्य सक्रिय छै. व्यवहार नय करी जीव १ पुद्गल २ ऐ दोय सक्रिय छै.

‖ अक्रिय यथा—धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ॥४॥

× निश्चय नये षट् द्रव्य नित्य छै. व्यवहार नये च्यार नित्य छै. यथा धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ॥ ४ ॥

में कारण जीव एक रे, कोई पांचज रे अकारणमांहे लेखिये; *कर्ता एक छै जीव द्रव्य विशेष रे, कोई पांचजरे अकर्तामांहे पेखिये ॥ ४ ॥ द्रव्य षट्में सर्व गत आकाश रे, कोई पांच जरे लोक प्रमांणे छै सही; मुनि राम कहे छै करिये शुद्ध अभ्यास रे, कोई द्रव्य ज रे कोईमें कोई मिलतूं नहीं ॥ ५ ॥ इति ॥

गाहा ॥

परिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एक ५ खित्त ६ किरियाय ७ णिच्चं ८ कारण ९ कत्ता १० सव्वगई ११ इयर १२ अयवेसा ॥ १ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ रास ॥

धर्मास्तिकाये च्यार †गुण छै नित्यरे, कोई अरूपी रे १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय छै ४; पर्याय च्यार खंध पिण छै नित्यरे, कोई देश प्रदेश ज रे अगुरु लघु अनित्य कहाय छै॥१॥एवं ‡अधर्मा§ऽऽकाश ¶नित्यानित्य जोय रे, कोई ‖काल ज रे तेहना भेद कहतहूं; गुण ४ प-

* निश्चय नये षट् द्रव्य कर्ता छै. व्यवहार नये एक जीव ही कर्ता छै.

† धर्म द्रव्यना गुण च्यार छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गतिसहाय ४ पर्याय पण ४ छै. यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

‡ अधर्मास्तिकायना गुण ४ छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ थिति सहाय ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरु लघु ४ ॥

§ आकाशास्तिकायना गुण ४ छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ अवगाहदान गुण ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा-खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

¶ गुण च्यार ने खंध ए पांच नित्य ॥ देश १ प्रदेश २ अगुरुलघु ३ ए तीन अनित्य॥

‖ काल द्रव्यना गुण ४ छै. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ वर्तमान ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा— अतीत काल१ अनागत काल२ वर्तमान काल३ अगुरु लघु४॥ नित्यगुण ४ अनित्य पर्याय ४ ॥

तत्वविचार–गीत ॥

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे भोजायां पांणी नीसरी, चुकल्यो मेल्यो जल जमुनाकी तीर रे, कोई आपजरे, पधान्या चंपा वागमें ॥ ए देशी॥

* षद् † द्रव्ये पुद्गल १ जीव २ प्रणामी दोय रे, कोई च्यार ज रे, अप्रणामी शेष जानिये; षद् २ द्रव्यमें जीव १ एक ही होय रे, कोई पांचजरे अजीव निश्चय मांनिये ॥१॥ पंच अमूर्ति पुद्गल मूर्तिक देख रे, कोई काल ज रे अप्रदेशी, ‡ सप्रदेशी पांच छै, धर्माधर्म आकाश तीनूं एक रे, कोई बाकी रे अनेक कहियो सांच छै ॥ २ ॥ एक क्षेत्राऽऽकाश § क्षेत्री पंचही जांण रे, कोई¶ सक्रिय रे पुग्गल जीव पिछांनिये; च्यार ‖ अक्रिय भगवत वचन प्रमांण रे, × नित्य च्यार ज रे अनित्य पुग्गल जंतु जांनिये ॥ ३ ॥ षद् द्रव्य-

---

* दुण्णिये १ एगं २ एगं ३, पंच ४ तियें ५ एगं ६ दुण्णि ७ चउरोय ८ पंचय ९ एगं १० एगं ११ एगदसं १२ एय उत्तरं गेयं ॥ १ ॥

† षद् द्रव्य निश्चय नय परिणामी छै. व्यवहार नये जीव १ पुद्गल २ परिणामी छै. धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ एच्यार अपरिणामी छै.

‡ धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ असंख्यातप्रदेशी छै. आकाश अनंत प्रदेशी छै. जीव असंख्यातप्रदेशी छै. पुद्गल अनंतप्रदेशी छै.

§ क्षेत्रमस्यास्तीति क्षेत्री क्षेत्री पांच छै. यथा–धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ जीव ३ पुद्गल ४ काल ॥ ५ ॥

¶ निश्चय नय करी छ द्रव्य सक्रिय छै. व्यवहार नय करी जीव १ पुद्गल २ ए दोय सक्रिय छै.

‖ अक्रिय यथा—धर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकाय २ आकाशास्तिकाय ३ काल ॥४॥

× निश्चय नये षद् द्रव्य नित्य छै. व्यवहार नये च्यार नित्य छै. यथा धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ॥ ४ ॥

में कारण जीव एक रे, कोई पांचज रे अकारणमांहे लेखिये; *कर्ता एक छै जीव द्रव्य विशेष रे, कोई पांचजरे अकर्तामांहे पेखिये ॥ ४ ॥ द्रव्य षट्में सर्व गत आकाश रे, कोई पांच जरे लोक प्रमांणे छै सही; मुनि राम कहे छै करिये शुद्ध अभ्यास रे, कोई द्रव्य ज रे कोईमें कोई मिलतूं नहीं ॥ ५ ॥ इति ॥

गाहा ॥

परिणाम १ जीव २ मुत्ता ३, सपएसा ४ एक ५ खित्त ६ किरियाय ७ णिच्चं ८ कारण ९ कत्ता १० सव्वगई ११ इयर १२ अयवेसा ॥ १ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ द्रव्य १ गुण २ पर्याय ३ रास ॥

धर्मास्तिकाये च्यार †गुण छै नित्यरे, कोई अरूपी रे १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय छै ४; पर्याय च्यार खंध पिण छै नित्यरे, कोई देश प्रदेश ज रे अगुरु लघु अनित्य कहाय छै॥१॥एवं ‡अधर्माऽऽ§काश ¶नित्यानित्य जोय रे, कोई ‖काल ज रे तेहना भेद कहतहूं; गुण ४ प-

---

* निश्चय नये षट् द्रव्य कर्ता छे. व्यवहार नये एक जीव ही कर्ता छे.

† धर्म द्रव्यना गुण च्यार छे. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गतिसहाय ४ पर्याय पण ४ छे. यथा—खंध १ देश २ प्रदेश २ अगुरुलघु ४ ॥

‡ अधर्मास्तिकायना गुण ४ छे. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ थिति सहाय ४ ॥ पर्याय पण ४ छे. यथा—खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरु लघु ४ ॥

§ आकाशास्तिकायना गुण ४ छे. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ अवगाहदान गुण ४ ॥ पर्याय पण ४ छे. यथा-खंध १ देश २ प्रदेश ३ अगुरुलघु ४ ॥

¶ गुण च्यार ने खंध ए पांच नित्य ॥ देश १ प्रदेश २ अगुरुलघु ३ ए तीन अनित्य॥

‖ काल द्रव्यना गुण ४ छे. यथा—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ वर्तमान ४ ॥ पर्याय पण ४ छे. यथा— अतीत काल१ अनागत काल२ वर्तमान काल३ अगुरु लघु४॥ नित्यगुण ४ अनित्य पर्याय ४ ॥

र्याय ४ नित्या ४ नित्य ४ होय रे, कोई त्रय * काल जरे अगुरु लघु च्यारे गहतहूं ॥ २ ॥ †पुद्गल द्रव्यना गुण नित्य कहिये च्यार रे, कोई रूपी रे १ अचेतन २ सक्रिय ३ गलमिल ४ देख हो; पर्याय च्यारे अनित्य विचार रे, कोई वर्ण ज रे गंध फर्श अगुरु लघु पेख हो ॥ ३ ॥ जीव द्रव्यना गुण पर्याय सात रे, कोई नित्य ज रे एक अनित्य बोल हो; अनंत ‡चतुष्टय च्यार गुण साक्षात रे, कोई तीन ज रे पर्याय एहमें खोल हो ॥ ४ ॥ अव्याबाध १ अवगाहन २ अमूर्ति ३ ए तीन रे,कोई सात ज रे नित्य एहनें जांण हो; कहो कहो अगुरु लघु अनित्य पर्यायनरे, मुनि राम जरे कहे गुरु मुख बोल पिछांण हो५इति

तुररेकी देशी ॥ कोटे पाटणमें प्रसिद्ध छै ॥

ज्ञान तो वायो ना ऊगे रे,ज्ञानी तुररो रे; कोई ज्ञान न लागे डार,वैरागी तुररो रे,ज्ञान उधारो नां मळे ॥ ज्ञा०॥ कांई भटकत फेरे गँवार ॥ वै० ॥ १ ॥ दाम दीयांसूं नां मळे रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न दिशावर दूर ॥ वै० ॥ ग्रंथमें जोयो न मळे ॥ ज्ञान० ॥ कोई मेनत करोरे भरपूर ॥ ॥ वै० ॥ २ ॥ भेष अनेक कवि चातुरी रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न कीये शिर फोड़ ॥ वै० ॥ ज्ञान हीयामें ऊपजे रे

---

* अतीत १ अनागत २ वर्तमान ३ ॥

† पुद्गल द्रव्यना गुण च्यार छै. यथा रूपी १ अचेतन २ सक्रिय ३ पूर्ण गलन गुण ४॥ पर्याय पण ४ छै. वर्ण १ गंध २ रस ३ फरस ४ अगुरु लघु सहित

‡ जीव द्रव्यना गुण ४ छै. यथा—अनंत ज्ञान १ अनंत दर्शन २ अनंत चारित्र ३ अनंत वीर्य ४ ॥ पर्याय पण ४ छै. यथा अव्याबाध १ अवगाह २ अमूर्तिक ३ अगुरु लघु ४ ॥ जीव द्रव्यना नित्य पदार्थ सात छै. यथा गुण ४ ने पर्याय ३ सुमळे ७ ॥ अनित्य एक छै अगुरु लघु ॥

॥ ज्ञा० ॥ कोई मळे न दूजी ठोर ॥ वै० ॥ ३ ॥ ज्ञान अभ्यास तो कीजिये रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई ज्ञान समो नहीं कोयरे ॥ वै० ॥ मुनि राम कहे सहु सांभळो रे ॥ ज्ञा० ॥ कोई ज्ञान विना पशु होय ॥ वै० ॥ ४ ॥ इति ॥

४ देशी पूर्ववत् ॥

सत गुरु मुझनें तारिये, गुरु ज्ञानीजी, मोनें करिये भवोदधि पार, सत गुरु ज्ञानीजी; जीवाजीव बताविये ॥ गु० ॥ मोने देवोनी ज्ञान विचार ॥ स०॥ १ ॥ जैन धर्म पायो दोहिलो ॥ गु० ॥ मुझ देवोनी भेद बताय ॥ स० ॥ देव कौनसा धारिये ॥ गु० ॥ गुरु करिये किसा मुनिराय ॥ स० ॥ २ ॥ धर्म धर्म सबको कहे ॥ गु०॥ पिण सत्य धर्म छै कौन ॥ स० ॥ कौन ठिकांनें बोलिये ॥ गु० ॥ रखी कहो कहां मौन ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञान सेती भवोदधि तरो ॥ ॥ गु० ॥ चेतन लक्षण जीव ॥ स० ॥ जैन धर्म जग दोहिलो ॥ गु०॥ जिणसूं लगे मुगतकी नींव ॥स०॥४॥ देवाधिदेव अरिहंत छै ॥ गु० ॥ गुरु छै शुद्ध निर्ग्रंथ ॥स०॥ जिन आज्ञा धर्म मानिये ॥ गु० ॥ ओही मुक्तको पंथ ॥ स० ॥ ॥ ५ ॥ मौन रखो तुमे पापमें ॥ गु० ॥ धर्ममें रहोनी वाचाल ॥ स० ॥ मुनि राम कहे सहूं सांभळो ॥ गु० ॥ सत गुरु चरणांने ज्ञाल ॥ स० ॥ ६ ॥ इति

५ खेलण दो गिणगोर पन्नामारू ॥ खे० ॥ ए देशी ॥

समय सार सिद्धांत बखांने, जीव छै पंच प्रकार, जीवाजी ॥ जी० ॥ समय० ॥ जिनको ऐ अधिकार ॥ जि०स०जि० ॥ टेर ॥ डूंघा १ चूंघा २ सूंघा ३ ऊंघा ४ घूंघा ५ पंचम धार, न्यारा न्यारा भेद बताऊं, सुनजो

हीये विचार २॥ स० १ ॥ डूंघा कर्म कलंक विना प्रभू, वचन अगोचरकार; सिद्ध पदकूं तो सेवे सदाई, सो वंदूं वारंवार २॥ स० २ ॥ चूंघा चतुर शिव अधिकारी, व्यसनादिक परिहार; गुरुके वचन प्रेम धरीनें, चूंघे जैसे वार २॥ स० ३ ॥ हीये दुष्टता रक्खे नांहीं, सुनवासेती प्यार; परमारथ कछु समझे नांही, सो सूंघा मूढ गिवाँर २॥ स० ४ ॥ विकथा जिसको प्यारी लागे, आगम ऊपर खार; विषयी पापी दुष्ट हीयेमें, सो ऊंघा कोप अपार २ ॥स०॥५॥ मन वचन नहीं श्रवण जिसीके, जड़वत सूरत हार; एकेंद्री हुय जगमें डोले, सो घूंघा घोर संसार ॥ २॥ स० ६ ॥ डूंघा केवली सुघां ऊघां, दोनूं मूढ उचार; मुनि राम कहे चूंघा छै उत्तम, शिवपुर साधनहार २, चेतनजी ॥ शि०स० ॥ ७ ॥ इति ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

अपना रूपमें रमन करो थे, पुद्गल मोह निवार, चेतनजी ॥ पु० ॥ अपना रूपमें रमन करो थे, ज्ञान पायाको सार २॥ अ० ॥ १ ॥ तूं छै चेतन एछै अचेतन, ज्ञायक तूं संसार; अज्ञायक ऐ निलको जड़ छै, देखो ज्ञान विचार; २ ॥अ०॥२॥ तूं अमूर्तिक मूर्तिक ऐ तो, दीसे नानाकार; तूं अविनाशीक नाशक ऐ छै, तूं तेरो आपो संभार २॥ अ० ॥ ३ ॥ ज्यूं कलधौत सोनारकी संगत, भूखन नाम अपार; कंचनता किंह भांत न जावे, जो करिये लाख प्रकार२॥अ०॥४॥ज्यूं नट एक धरै बहु वेष,देखे लोक तिवार; नट तो अपनो रूप पिछांनें, ज्यूं चेतन गुन धार २॥ अ० ॥ ५ ॥ निज स्वभावकों भूले नांहीं,पर स्वभाव विसार; मुनि राम कहे ऐ भाव रहे तो, जद लेखे जमवार ॥ २ ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ लावणी ॥

१ वर जोरी नहीं मिली सखीरी मैं जवान बालम छोटा ॥ ए देशी ॥

चवदे गुण श्रोताका कहिया, सुनके सब हिरदे धारो, इण भवमांहे सोभा पावो, पर भव तो सुधरे न्यारो ॥ टेर ॥ भक्ति वंत ऐ गुण छै पेलो, मीठा बोलो है बीजै; तीजे गर्व विन रुचि है चौथे, पंचम एकाग्र चित्त लीजै ॥ च० ॥ १ ॥ छठे सुणे सो परगट बोले, सातमे प्रश्नजांण खरो; आठमे बहु शास्त्रको सुणियो, नवमें आलस दूर करो ॥ च०॥२॥ दशमो गुण निद्रा नहीं लेवे, ग्यारमें बुधवंत छै भारी; बारमो गुण दातारपणेको, तेरमे गुरु गुण विस्तारी ॥ च०॥३ ॥ चवदमो गुण तो मोटो सबसें, निंदा बिलकुल नहीं जेहनें; वाद विवाद करै नहीं बोले, मुनिराम कहै धन्य छै तेहनें ॥ च०॥ ४ ॥ इति श्रोता गुण १४ ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥ वक्ता गुण ॥ १४ ॥

वक्ताके गुण चवदे कहिये, पुनांसें वक्ता पद पावे; धर्म दढावे शोभा पावे, सद्गतिमें पिण वो जावे ॥ टेर ॥ प्रथम षोडश बोलको ज्ञाता, शास्त्रारथ बीजे ठांणे; तीजे गुण तो मीठी वाणी, चौथे अवसरकूं जांणे ॥ च०॥ पंचम सत्य वदै गुण छट्ठो, संशय छेदन करै परनो; सातमे गीतारथ उपयोगी, अष्टम संकोच विस्तरनो ॥ च० ॥२ ॥ कठिण अपशब्द विन नवमो, दशमो सभा रंजन करही; ग्यारमो प्रश्न अर्थको ग्राहक, बारमो गुण मद परहरही ॥ च० ॥ ३ ॥ धर्मी गुण तो तेरमे निरमल, चौदमे लोभ

जरा नांही; मुनि राम कहे छै गुण ऐ चवदे, है विरला वक्ता मांही ॥ च० ॥ ४ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥ चवदे विद्या नाम ॥

चवदे विद्याके नाम सुनो तुम, शास्त्रमें ऐसें खुलही; अंत विद्या तो परमोत्तम है, बाकी सब पुन्यसें मिलही ॥ टेर ॥ गगन गामनी पहली विद्या, बीजी पर तनमें पैसें; रूप परावर्त तीजी बोली, चौथी स्तंभनी है ऐसें ॥ ॥ च० ॥ १ ॥ पंचमी मोहनी स्वर्ण सिद्धि पद, रजत सिद्धि सतमी कहियें; रस सिद्धी तो अष्टमी गाई, थोभनी बंध नौमी लहियें ॥ च० ॥ २ ॥ अरि परायनी दसमी जांनो, ग्यारमी वश्यकरनी वरनी; भूतादि दमनी बारमी बोली, तेरमी सब संपत करनी ॥ च० ॥ ३ ॥ ऐ त्रयोदश विद्या मिले भागसें, शिवपद प्रापनी है छेली; मुनि राम कहै छै साधक एहनो, तेहनो भगवत छै वेली ॥ च० ॥ ४ ॥ इति ॥

तुम चलो सखी कुछ जेजन करियें ॥ ए देशी ॥

पंच प्रकार मिथ्यात तजो तुम, अभिग्रहीत सुनियो लोगं; अनभिग्रहीत आभिनिवेशिक, संशयिक और अनाभोगं ॥ पं० ॥ टेर ॥ गुन अवगुन तो नांहीं विचारे, मत ग्रह्यं ते जांने खरा; अभिग्रहीत तो पेला मिथ्यात, बीजा मत सब मांने बुरा ॥ पं० ॥ १ ॥ अनभिग्रहीतके सब मत अच्छा, विशेषपणूं तो नवि जांनें; धोळो धोळो सब दूध पिछांनें, सब देवा सब गुरु मानें ॥ पं ॥ २ आभिनिवेशिक तीजा मिथ्यात, अपना बोलकी थाप करै; हठग्राही वो सूत्र उत्थापे, पर भवसेती नांहीं डरे ॥ पं०

॥३॥ जिनोक्त पदार्थे संशय रक्खे, पूछै नहीं लज्जा कर-के; संशय मिथ्या नाम है चौथा, ओवी रूळे चहुं गति मरके ॥ पं०॥४॥ अनाभोग मिथ्यात पंचमा, अज्ञात पणे सबकूं लागे; एकेंद्रियमांहे होवे विशेष, मतवाला जिम नहीं जागे ॥पं०॥५॥ पंच मिथ्यातकों छोडो प्यारे, जिनसें तुम जलदी तरसो; मुनि राम कहै जे शुद्ध उपदे-शी, शुद्ध आचारी गुरु करशो ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

गाळ

१ देशी पंखेरी ॥

कहो गुरू जीव अजीव दोय राशी रे, करूं सद्‌गुरु से-वारे; सुणो शिष्य प्रथम तोय यह भासी रे, जाणे अरिहंत देवारे ॥ १ ॥ कहो गुरू जीवके भेद विचारां रे ॥ क० सु० ॥ सिद्धनें और संसारा रे ॥क०॥जां०॥२॥क०॥ कर्म संसार भठकावे रे ॥क० सु०॥ भव्याभव्य दोय स्व-भावेरे ॥जां०॥३॥ क० ॥ भव्य तो मुक्ति सिधासी रे ॥ क० सु० ॥भव्यको छेडो नहीं आसीरे ॥ जां० ॥ ४ ॥ क० ॥ काल समयसें जीव छै कितना रे ॥ क०सु० अनंता नंत कहूं जितनारे ॥ जा० ॥ ५ ॥ क० ॥ कुंण कुंण घरमें वसाया रे ॥ क० ॥ सु० ॥ लक्ष चौरासी उपजाया रे ॥ ॥ जां ॥ ६ ॥ क० ॥ अव्वल घर कुंण मेरा रे ॥ क० सु० ॥ वणसइ घर धुर तेरा रे ॥ जां० ॥ ७॥ क० ॥ एक घरमें जीव ते वसीया रे ॥ क० ॥सु०॥ अनंत जीव तिहां धसी-या रे ॥ जां० ॥ ८ ॥ क० ॥ काल कितनो तिहां रमियो रे ॥ क० ॥ सु० ॥ काल अनंत तिहां भमियो रे ॥ जां०॥९॥ ॥ क० ॥ जन्म मरण आहारनें सासा रे ॥ क० ॥ सु० ॥

सबके एक समै प्रकाशारे ॥ जां० ॥ १० ॥ क० ॥ एक शरीरे जीव केता रे ॥ क० सु० ॥ नहीं मुक्तिमें जांवे कभी जेता रे ॥ जां०॥११॥क० ॥ मानव भव किम पायो रे॥ ॥ क० सु० ॥ नव स्थल लंघीनें आयो रे ॥ जां० ॥ १२ ॥ ॥ क० ॥ अल्पसें अल्प भव कहेना रे ॥ क० सु० ॥ स्तोक तो नर भव देहना रे ॥ जां० ॥ १३ ॥ क० ॥ जीव कर्म किम करिया रे ॥ क० सु० ॥ दोनूं अनादी उच्चरिया रे ॥ जां० ॥ १४ ॥ क० ॥ युक्तिसूं कर्म खपावे रे ॥ क० सु०॥ जबही मुक्ति हो जावे रे ॥ जां० ॥ १५ ॥ क० ॥ सकल सामग्री भव्य कोई पावे रे ॥ क० सु० ॥ मुनि राम सदा एही चावे रे ॥ जां० ॥ १६ ॥ इति

२ देशी पेमासरी ॥

सुपरीक्षा करी, जीव द्रव्यकी खबर परी, जीव द्रव्य नहीं नाश ज है, तीन कालमें नित्य रहै; जावे कबून फिरी, जीव द्रव्यकी खबर परी; सुपरीक्षा करी, जिनागमकी नहीं बराबरी ॥ १ ॥ सु० ॥ जीव गुणकी खबर परी, गुण तो द्रव्यके लार रह्यौ, अनंत चतुष्टय संग चल्यौ; पर्याय टरी ॥ जि० सु० ॥ जीव गुणकी खबर परी ॥२॥ सु० ॥ अजीव द्रव्यकी खबर परी, अजीव द्रव्यको निर्णय करो, गुरु मुखसेती हिरदे धरो; गुरु पाय परी ॥ जि० ॥ सु० ॥ अजीव द्रव्यकी खबर परी ॥ ३ ॥ सु०॥ द्रव्य गुण पर्यव तीन खरी ॥ सु० ॥ अजीव तीनकी खबर परी; अजीवतणा दोय भेद भया, रूपी अरूपी होय रह्या; हिरदे धरी ॥ जि० सु०॥ द्रव्य ॥४॥ च्यार न दीसे रूप करी ॥ सु० ॥ पुद्गल दीसे रूप भरी, पुद्गलको सब जग व्यवहार, दीसे जगमें नानाकार; नहीं एक सरी ॥

जि० सु० च्या० ॥५॥सु०॥ जीव अजीवकी खबर परी; जीव अजीव दोय पुंज खरा, मुनि राम कहै फेर नहीं तिसरा; स्याद्वाद करी ॥ जि०सु०॥ जीव अजीव०॥६॥इति॥

३ ख्याली आयो रे मुलतांनसें ॥ ए देशी ॥

अंगीकरो रे स्याद्वादकूं, तुम छोडोनी वाद विवादको अं० ॥ १ ॥ स्यात् शब्द अंकित सब ठौरे, ए छै रे मत अनादको॥अं० ॥२॥ अर्हत् दर्शन स्याद्वाद ग्रंथ, सीखोनी जीतो परवादको ॥ अं० ॥ ३ ॥ जल कचा अग्नी पक दूजो, तीजो कुशील कुवादको ॥ अं० ॥ ४ ॥ ए त्रय वर्जित स्याद्वाद सब, समजोनी शास्त्र अगाधको ॥ अं० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै स्याद्वादकूं ग्रहिये, करिये रे दूर परमादको ॥ अं० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ नाथूरामजीवाळी यार कीयो परदेशी छेलो रे, दान जोबनको लेलो; आयो यार उत्तर नहीं देलो ॥ ॥ ए देशी ॥

गुणठांणे धुरसें चाल लीयो चौथानो गैलो रे,जीव वो शिव पद ले लो; छूट गयो गुणठांणो पेलो ॥ टेर ॥ चौथा सेती पंचम जावे, अथवा सत्तम छठ्ठे आवे; ठैर सके तो ठैरे यांही, हे सत्तम पिण भेळो रे ॥ जी० छू० ॥ १ ॥ सत्तमसेती अठ्ठम आवे, उपशम क्षपक श्रेणि रचावे; क्षपक जाय तौ केवल होवे, उपशम फेर पड़ेलो रे ॥ जी० छू० ॥ २ ॥ धुर गुणठांणे चउ गति जावे, दूजे सूं नहीं नरक सिधावे; तीनूं गतिनो आयू बंधे, नहीं तीजे बंध करेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ३ ॥ चौथे सुरनर आयू सांधे, सुरमें एक विमाणिक बांधे; पंचम श्रावक करनी सेती, ऊर्ध

चढेलो रे ॥ जी०छू० ॥ ४ ॥ छट्ठम सत्तम मुनिसर कहिये, आगे आयू बंध नहीं है; सर्वार्थ सिद्ध लों ऊंचो जावे, अथवा मुक्तिको गैलो रे ॥जी०छू० ॥५॥ आदि गुणठांणा तीनूं बोलो, पंचम ग्यारम न्यारा खोलो; तीर्थंकर नहीं फरशे पांचुं, अन्य जीव फरशेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ६ ॥ तीजो कहिये अमर गुण ठांणों, बारमो तेरमो पिण इम जांणो; मरण करे तो शेष इग्यारे, राम इम शास्त्र भणेलो रे ॥ जी० छू० ॥ ७ ॥ इति गुणठांणा विधि ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

गुणठांणो धुर सादि अनादि, भेद दोय कहे सत्यवादी; ग्रंथि भेद फिर मिथ्या सादि, अध पुग्गल मुक्त लहेलो रे; सेवट वो शिव पद लेलो, छूट गयो गुणठांणो पेलो ॥ टेर ॥ १ ॥ जिण जीव ग्रंथि भेदी नहीं क्यारे, अंत अनंत दो भेद हैं ज्यांरे; आदि अंत नहीं ते अभव्य, कबू नहीं मुक्ति रळेलो रे ॥ से० छू० ॥ २ ॥ चौथे पंचम छट्ठेसूं पाती, सस्वाद न व्है समकितघाती; एक समै पद आवलि विचमें, फेर मिथ्यात गहेलो रे ॥ से० छू० ॥ ॥ ३ ॥ अनंतानुबंधि उदयथी न्यारा, सत्यासत्य सम मिश्र धारा; अंतर्मुहूर्त समै एक ठैरी, दोयसें एक भिळेलो रे ॥ से० छू० ॥ ४ ॥ छासट सागरलों रहे जाझेरो, अंतरमुहूर्त जघन्य विचारो; तेतीस सागर भव एक गणिये, चौथे एम सुणेलो रे ॥ से० छू० ॥ ५ ॥ कोटि पूरव देश ऊणो जांणो, अंतर्मुहूर्त जघन्य पिछांणो; देश वृत्तिकी थिति ए पाली, सुगुरु मुखसें झेलो रे ॥ से० छू० ६ ॥ छट्ठा सेती बारमे जायो, पृथक अंतर मुहूर्त गायो; एक समैकी जघ-

न्य बतावो, फेर केवल वास वसेलो रे ॥ से० छू० ॥ ७ ॥ जघन्य तेरमे मुहूर्त अंतर, कोड पूर्व अठ वर्षकेभ्यंतर; होय अयोगी मुक्ति पधारे, पंच अक्षर लघुरै छेलो रे ॥ से० छू० ॥ ८ ॥ दान शील तप भाव आराधो, पडिया मुनि की सेवा साधो; मुनि राम कहै थे जन्म सुधारो, सुन सद्गुरुनो हेलो रे ॥ से० छू० ॥ ९ ॥ इति ॥ चतुर्दश गुण स्थान स्थिति विवरण ॥

६ ख्याली आयोरे मुलतानसें ॥ ए देशी ॥

तुम जाप जपोरे नमोकारको, सहू पाप धुपेरे जमवार-को ॥ तु० ॥टेर ॥ श्रीमती लही फूलकी माला, कुष्ट गयो रे श्रीपारको ॥ तु०॥ १ ॥ भील भीलनी नृप पद लहियो पोरसो शिवही कुमारको ॥ तु० ॥२ ॥ जिनदास सेठ बि जोरो लायो, बलिवर्द सुर अवतारको ॥ तु० ॥ ३ ॥ चो-र छींके चढ गगनमें उडियो, लह्यो सूली चढ्यो भव पा-रको ॥ तु० ॥ ४ ॥ पांडव त्रिया द्रौपदी केरो, विघ्न टाळि-यो भुजंगम न्हारको ॥ तु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे छै भव-भव एहनो, शरण चाहुंरे सुखकारको ॥ तु०॥ ६ ॥ इति ॥

७ सखी सुन बात सयांनी ॥ ए देशी ॥

ध्यान लगासां मन ठैरासां, नासा निजर जमासां रेक; मंत्रको न्यास घुमासां,हांक जिनवरना गुण गासां, जिन गुण गासां वांछित पासां, पासां शिव पुर वासारेक ॥ जि० ॥हांक जि० ॥ १ ॥ ध्याता ध्यान ध्येय पद तीनें, निज गुण मांह रमासां रेक; छोडां सब आसा पासा ॥ हां० ॥ २ ॥ और ध्यानकों छोडो प्यारे, देखो फेर तमासा रेक; होवे तेरे मांहि प्रकाशा ॥ हां० ॥ ३ ॥ अर्ह पदका ध्यान

चढासां, दशमें द्वारे जासारेक; झूठ नहीं जिणमे मासा ॥ हां० ॥ ४ ॥ मुनि रामचंद्र तो और न चाहे, रखो चरनके पासारेक; मेटो प्रभु गर्भावासा ॥ हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ सासू सेज बिछाई किसा घरमें ॥ ए देशी ॥

जीवा अवल वसौ तूं किसा घरमें, सखि धुर घर मेरो निगोद दरमें, के हांक समकितल्यो, मानव भवमें, उत्तम कुलमें, जन्म सुधारो, छोडो संको,परखी ल्यो जी समकित ल्यो ॥ १ ॥ जीवा अव्यवहार राशि वनस्पतिमें, सखि व्यवहार राशि चतुः गतिमें ॥ के हांक स० ॥ २ ॥ जीवा ग्रंथि भेदक शिव वरिये, सखि और सकल चौ गति फिरिये॥के हांक स०॥३॥ जीवा सूत्र प्रतीत हिये धरिये,सखि संका कंखा तौ नवि करिये॥के हांक स०॥४॥ जीवा स्थाणु कीटिका चढ़ी ढरिये, सखि कीटि पंखाळी जायै परिये ॥ के हांक स० ॥ ५ ॥ जीवा जीव अजीवसें जग भरियो ॥ सखि श्रद्धा विना नां को तरियो ॥ के हांक ॥ स० ॥ ६ ॥ जीवा सूत्र प्रमाण श्रद्धा चहता, सखि राम मुनि तौ इम कहता ॥ के हांकस० ७ ॥ इति॥

दोहा ॥

प्रभु नामे सुख संपजे, आपद जावे दूर। अष्ट सिद्धि नव निधि मिले, कर्म हुवे चकचूर ॥ १ ॥ अणिमा १ धुर महिमा द्वितीय २, लघिमा ३ गरिमा ४ होय। प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशीत्वं ८ वसुमी जोय ॥ २ ॥ गज १ सिंह २ दावानल ३ अहि ४, रिन ५ समुद्र ६ गुरु ७ बंध ८। प्रभु नामें वसु भय टळे, मिटे जमारा फंद॥ ३॥

ढाळ ॥

१ देशी चौपईनी ॥

प्रथमा ऋद्धी अणिमानाम, नांन्हो रूप करे सुख काम; कमल नालमें पैसी जाय, चक्री केरो सुख भुगताय॥ १ ॥ दूजी महिमा ऋद्धि अभिराम, मेरुथकी मोटो तनु ताम; विष्णुकुमारतणी पर होय,सुरनर देख डरे सहु कोय॥२॥ लघिमा वायूपरे तनु थाय, गरिमा वज्रसो शरीर बनाय; इंद्रादिक नहीं सके उठाय,चौथी गरिमा नाम कहाय॥३॥ प्राप्ति पंचमी ऋद्धिकी वात, फेरे भूं बैठां मेरुपर हात; प्राकाम्य छट्टी ऋद्धि गुण एह, जलपर भूं पर ज्यूं फिर जेह ॥ ४ ॥ ईशित्व सप्तमी ऋद्धिका नाम, तीर्थंकर ऋद्धि करै सुख धाम । अष्टमी वशित्व जग वश थाय, सुरनर पूजे तेहना पाय॥ ५ ॥ अष्ट सिद्धि प्रभु नामे मळे, प्रभु नामे लक्ष्मी अविचले। प्रभु नामे हुवै मंगल माल, मुनि राम कहै सब टळे जंजाल ॥ ६ ॥ इति ॥

२ चाल जोगी रासानी ॥

भगवत भाखै जगसिंधू जल छै१,जन्म जरा मरन पानी, कर्दम स्थाने काम भोग कादो २,अहंकार फेन तूं जानी३; च्यार कलसा ज्यूं गत कही च्यारे ४, तृष्णा वेल वखांनी ५; कच्छप मच्छ ज्यूं कुटुंब कबीलो ६, मगर ज्यूं गलागल तांनी ७; समुद्रमें डूंगर कर्मनें जांणो ८, संघोट्या कर्म कुगुरु पिछांनी ९; रत्नाकर ज्यूं श्रीसंग कहिये १०, कांठे ज्यूं मोक कहानी ११; वड़वानल सिंधू क्रोधनें समझो १२, कपट तो भमर स्थांनी १३; समुद्रमें कळण

चढासां, दशमें द्वारे जासारेक; झूठ नही जिणमे मासा ॥ हां० ॥ ४ ॥ मुनि रामचंद्र तो और न चाहे, रखो चरनके पासारेक; मेटो प्रभु गर्भावासा ॥ हां० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ सासू सेज बिछाई किसा घरमें ॥ ए देशी ॥

जीवा अवल वस्यौ तूं किसा घरमें, सखि धुर घर मेरो निगोद दरमें, के हांक समकितल्यो, मानव भवमें, उत्तम कुलमें, जन्म सुधारो, छोडो संको,परखी ल्यो जी समकित ल्यो ॥ १ ॥ जीवा अव्यवहार राशि वनस्पतिमें, सखि व्यवहार राशि चतुः गतिमें ॥ के हांक स० ॥ २ ॥ जीवा ग्रंथि भेदक शिव वरिये, सखि और सकल चौ गति फिरिये॥के हांक स०॥३॥ जीवा सूत्र प्रतीत हिये धरिये,सखि संका कंखा तौ नवि करिये॥के हांक स० ॥४॥ जीवा स्थाणु कीटिका चढ़ी ढरिये, सखि कीटि पंखाळी जायै परिये ॥ के हांक स० ॥ ५ ॥ जीवा जीव अजीवसें जग भरियो ॥ सखि श्रद्धा विना नां को तरियो ॥ के हांक ॥ स० ॥ ६ ॥ जीवा सूत्र प्रमाण श्रद्धा चहता, सखि राम मुनि तौ इम कहता ॥ के हांकस० ७ ॥ इति॥

दोहा ॥

प्रभु नामे सुख संपजे, आपद जावे दूर । अष्ट सिद्धि नव निधि मिले, कर्म हुवे चकचूर ॥ १ ॥ अणिमा १ धुर महिमा द्वितीय २, लघिमा ३ गरिमा ४ होय । प्राप्ति ५ प्राकाम्य ६ ईशित्व ७ वशीत्वं ८ वसुमी जोय ॥ २ ॥ गज १ सिंह २ दावानल ३ अहि ४, रिन ५ समुद्र ६ गुरु ७ बंध ८। प्रभु नामें वसु भय टळे, मिटे जमारा फंद ॥ ३॥

अमे करसां रे, भलां करसां ने भव तरसां ॥ प्र० ॥ १ ॥ अमे धींग धणी शिर धरसां रे, अमे पांखडसूं नहीं डरसां रे, अमे शिव सनमुख पग भरसां॥प्र०॥२॥ तूं साहिब छै मेरो रे, हूं सेवक छूं तेरो रे; मोनें दीजो मुक्तिमें डेरो॥ प्र० ॥ ३ ॥जो नहीं प्रभु मुझ तारो रे, तो अमने कौन आ-धारो रे; हूं तो भव भव दास तुमारो ॥ प्र० ॥ ४ ॥ मैंतो रत्न चिंतामणि लाधूं रे, अमचोमनडूं बाधूं रे; हूं तो भव भव तुमनुं अराधूं ॥ प्र० ॥ ५ ॥जो होवे निज दासा रे, मालक पूरे आशा रे; जो होवे दास निराशा रे, तौ करसी लोक तमाशा ॥ प्र० ॥ ६ ॥ तूं छै अंतरजामी रे, प्रभु तूं छै त्रिभुवन स्वामी रे; रामचन्द्र कहै शिरनामी ॥ प्र० ॥ ७ ॥ उगणीसे अष्टादश वरसे रे, तिंवरी मांहे भाव सरसे रे; सहू सेवा करणनें तरसे ॥ प्र० ॥८॥इति॥

२ देशी नींबूड़ानी ॥

हो सुखकारी हो जिनजी, भव भव दीजो चरणांरी मुझनें चाकरी हो राज; हूं बलिहारी हो जिनजी, हूं तो चाहूं कृपा निश दिन आपरी हो राज ॥ १ ॥ काशीदेश वणारसी मांय हो ॥ सु० ॥ जन्म लीधो कीधो जुगमें चांनणो हो राज; नाग नागणी तूं मंत्र सुणाय हो, सुर पद दीधो कमठनो मांन भांनणो हो राज ॥ २ ॥ स्यूं कहूं बहुली बात हो,जनम मरणना दुख चिहुं गतमें मैं सह्या हो राज; धन्य धन्य पार्श्वनाथ हो, सेवकनें तो दीजो शिव पुर कर मया हो राज॥३॥ अधम उधारण तोय हो, सुणनें आयो नुमायो चरणे राजनें हो राज; अब राखो शरणे मोय हो राज, जिम तिम करनें राखो, अमची लाजनें हो राज ॥ ४ ॥ कुंणसके दुश्मण भाळ हो, धींग धणीरी

ज्यूं मोहकी कळण, जिणमें कळया सहू प्राणी १४; मुनि राम कहै संसार सिंधुनें, तखा भगवत वाणी ॥१॥इति॥

३ श्रीगुरु चरणां रे नमिये ॥ ए देशी ॥

श्री जिन वचनां रे रमिये, भव भवना दुख गमिये ॥ श्री० ॥ श्री जिन वाणी रे परखो, तुमे षट् दर्शनकूं निरखो; आप्तवाक्य निबंधन मर्थ ज रे ज्ञानं, सो आगम अर्थ प्रमानं ॥ श्री० ॥ १ ॥ आगम पद लक्ष ज रे जांनों, अवशिष्ट लक्षण भेद पिछांनो ॥ श्री० ॥ जो अर्थ ज्ञान ज रे कहिये, तो प्रत्यक्षे अतिव्याप्ति लहिये ॥ श्री० ॥ २ ॥ वाक्य निबंधनमर्थ ज्ञानं रे बोले, विरोधी उक्ति न्हैं जिण तोलै ॥ श्री० ॥ जठै आप्त वाक्य निबंधन ज्ञान ज रे कोगे, तौ आप्त वाक्य कर्म पिण होगे ॥ श्री० ॥३॥ तातें अर्थ पदका रे कैणा, तात्पर्य अर्थ समझी लेणां ॥ श्री० ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञानचारित्र रे तीने, मोक्ष मार्ग कहै बुद्ध अहीने ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सम्यक् शब्दे तीनूं रे लेना, विपरीत संशय अनध्यवसाय तज देना ॥ श्री० ॥ एक दोयसैं मुक्ति रे नहीं छै, आगम राम प्रमान एही छै ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे तत्वविचारनामकं तृतीयं प्रकरणम् ॥ ३ ॥

---

४ स्तवन—गीत ॥

१ जात्रीडा यात्रा निनांणूं करिये रे ॥ ए देशी ॥

अमे जिन चरणां चित्त धसां रे, अमे पाप पुराकृत हरसां रे; अमे पाखंड मत परहरसां, प्रभुजीरी नौकरी

लिखनें भेजयूं, हरे हांरे हांरे भेजयूं, जिनेश्वर, सांग्रु रे नहीं आवणहार ॥ सी० ॥ आवत जावत जो हुवे, हरे हांरे जो हुवे, जिनेश्वर, लावे रे कोई मुख समाचार ॥ सी० म० ॥ २ ॥ गगन गती विद्या ना रही, अरे हांरे हांरे नां रही, जिनेश्वर, सुरवर ऐ नहीं मोरे सहाय ॥ सी० ॥ दर्शनरी मनमें रहे, अरे हांरे मनमें रहे, जिनेश्वर, इण भवरे हूं नहीं सकूं आय ॥ सी० म० ॥ ३ ॥ एक पुन्याई माहरी, अरे हांरे हांरे माहरी, जिनेश्वर, जाण्या रे मैं श्रीजिनराय ॥ सी० ॥ रामचंदनी वीनती, अरे हांरे वीनती, जिनेश्वर, दीजो रे मुझ पार लंघाय ॥ सी० म० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

स्फटिक सिंघासन ऊपरे, वैसीनें ध्वन उच्चरे, जिनेश्वर, सुनवारे आवे चौसठ इंद, सेवे रे थांनें सुर नर वृंद, सीमंधरजीसूं मन लागो, मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो नाथ, वावा हूं तो तेरो दास, प्रभु चरणां म्हारो चित लागो ॥१॥ सर्व संशय छेदनी, मोह कर्मनें भेदनी, जिनेश्वर वरसेरे जिम अमृत वैंण, निरखे रे थांनें भर भर नैंण ॥सी०॥२॥ अनंत रूप रळियामणो, विस्मयनो उपजावणो ॥ जि० ॥ सोभे रे जिम पूनमचंद, दीठां रे हुवे परमानंद ॥ सी० ॥ ॥३॥ दर्शन करे छै आपनो, नाश करे छै पापनो ॥ जि० ॥ मोटा रे छै जिणरा भाग, राखे रे जे थांसूं राग ॥ सी०॥ ॥ ४ ॥ रामचंद अरजीभणी, थे छो मुज शिरना धणी ॥ जि० ॥ कीजो रे मुज भवोदधि पार, लीजो रे मुज पार उतार; दीजो रे मुज अविचल ठाम, हूं छूं रे तुज दास गुलाम ॥ सी० ॥ ५ ॥ इति ॥

लागी जिण शिर छाप हे हो राज; थे प्रभु दीन दयाल हो, रामचंदनें राखो शरणे आपरे हो राज ॥५॥ इति ॥

३ देशी हींडाकी ॥

प्यारी लागे जी जिनकी सेवा, पार उतारे राज प्यारी लागे जी ॥ टेर ॥ पिरथी अप तेऊने वायू, जां दर्शन नहीं पायो रे; वनस्पतीमें काल अनंतो, यूंही गमायो रे ॥ प्या० ॥ १ ॥ बी ती चउरेंद्री मां हे, पंचेंद्री जब हूवो रे; असंज्ञी तिरजंच मनुज, हुयनें मूंवोरे ॥ प्या० ॥ २ ॥ नरकमांहे दुख है भारी, सुर सुखमें चित दीनो रे; मनुज अनारज मांहे, हूवो पाप मतीनो रे ॥ प्या० ॥ ३ ॥ काल अनादी भटकत भटकत, श्रावकनों भव पायो रे; भलो हुवो श्रीगुरु देवको, साचे धर्म बतायो रे ॥ प्या० ॥ ४ ॥ हरि हर ब्रह्मा देव बतावे, राग द्वेषसें कळिया रे; वीतराग जे तारक साचा, ते नहीं मिलियारे ॥ प्या० ॥ ५ ॥ शस्त्र धारे नारी राखे, फिर फिर ले अवतारे रे; व्यभिचारी बहु कामी दंभी, ते किम तारे रे ॥ प्या० ॥ ६ ॥ नाभिराय मरुदेवी नंदन, प्रथम तीर्थंकर देवा रे; रामचंद कहे साहिब दीजो, भव भव मांगूं सेवा रे ॥प्या०॥७॥इति

४ देशी दरजियांकी ॥

महाविदेहमें तूं वसे, हरे हांरे तूं वसे, जिनेश्वर, हूं तो रे वसूं भरत मझार, सीमंधरजीसूं मन लागो; पांख नहीं आवी मिलूं, हरे हांरे आवी मिलूं, जिनेश्वर, पूगूं रे नहीं चरण विहार ॥ पू० ॥ सीमंधरजीसूं मन लागो, मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो नाथ, बाबा हूं छूं तेरो दास, जिन चरणां म्हारो चित लागो ॥ १ ॥ अर्जी

लिखनें भेजचूं, हरे हांरे हांरे भेजचूं, जिनेश्वर, सांगु रे नहीं आवणहार ॥ सी० ॥ आवत जावत जो हुवे, हरे हांरे जो हुवे, जिनेश्वर, लावे रे कोई मुख समाचार ॥ सी० म० ॥ २ ॥ गगन गती विद्या ना रही, अरे हांरे हांरे नां रही, जिनेश्वर, सुरवर रे नहीं मोरे सहाय ॥ सी० ॥ दर्शनरी मनमें रहे, अरे हांरे मनमें रहे, जिनेश्वर, इण भवरे हूं नहीं सकूं आय ॥ सी० म० ॥ ३ ॥ एक पुन्याई माहरी, अरे हांरे हांरे माहरी, जिनेश्वर, जाण्या रे मैं श्रीजिनराय ॥ सी० ॥ रामचंदनी वीनती, अरे हांरे वीनती, जिनेश्वर, दीजो रे मुझ पार लंघाय ॥ सी० म० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

स्फटिक सिंघासन ऊपरे, बैसीनें ध्वन उच्चरे, जिनेश्वर, सुनवारे आवे चौसठ इंद, सेवे रे थांनें सुर नर वृंद, सीमंधरजीसूं मन लागो, मन लागो रे, जिनेश्वर, तूं तो मेरो नाथ, बावा हूं तो तेरो दास, प्रभु चरणां म्हारो चित लागो ॥१॥ सर्व संशय छेदनी, मोह कर्मनें भेदनी, जिनेश्वर वरसेरे जिम अमृत वैंण, निरखे रे थांनें भर भर नैंण ॥सी०॥२॥ अनंत रूप रळियामणो, विस्मयनो उपजावणो ॥ जि० ॥ सोभे रे जिम पूनमचंद, दीठां रे हुवे परमानंद ॥ सी० ॥ ॥३॥ दर्शन करे छै आपनो, नाश करे छै पापनो ॥जि० ॥ मोटा रे छै जिणरा भाग, राखे रे जे थांसूं राग ॥ सी०॥ ॥ ४ ॥ रामचंद अरजीभणी, थे छो मुज शिरना धणी ॥ जि० ॥ कीजो रे मुज भवोदधि पार, लीजो रे मुज पार उतार; दीजो रे मुज अविचल ठाम, हूं छूं रे तुज दास गुलाम ॥ सी० ॥ ५ ॥ इति ॥

६ देशी कलाळीकी ॥

महाविदेह अति सुखकार हो, प्रभुजी; कांई जिहां तो विराजै श्रीजगनायकू हो, राज; त्रिभुवन स्वामी ॥ जि० ॥ धन्य थांनें देखे नर नार हो ॥ प्र० ॥ वाणी सुहांणी सुणे सुखदायकू हो, राज ॥ त्रि० वा० ॥ १ ॥ अशोक वृच्छ स्वच्छ आनंद हो ॥ प्र० ॥ कांई स्फटिक सिंहासन आसन शोभता हो राज ॥ त्रि० ॥ सेवे थांने चौसठ इंद हो ॥ प्र० ॥ कांई हाजर तो ऊभा सनमुख जोवता हो राज ॥ त्रि० हा० ॥ २ ॥ हूं तो वसूं भरत मझार हो ॥ प्र० ॥ कांई दुखमी तो आरो हलाहल आजनो हो राज ॥ त्रि० दु० ॥ पायो मैं तो जिन धर्म सार हो ॥ प्र० ॥ कांई भलो तो होईजो गुरु महाराजनो हो राज ॥ त्रि० भ० ॥ ३ ॥ सीमंधर प्रभुनें निरखण लाग हो ॥ प्र० ॥ कांई निरखूं सो विरियां लेखे लागसी हो राज ॥ त्रि० नि० ॥ मुनि राम कहे छै धन्य म्हारा भाग हो ॥ प्र० ॥ कांई दर्शन करनेसें भ्रमना भागसी हो राज ॥ त्रि० द० ॥ ४ ॥ इति ॥

७ देशी रंगा वायलीकी ॥

प्रभूजी थांरी हो नामतणी बलिहार, सुपनामें दीठी हो सूरत आपरी; प्रभुजी पायो हो आनंद अपार, निश दिन रटसूं हो माला जापरी ॥ १ ॥ प्रभुजी जाण्या हो पुन्य प्रमांण,भव भव चाऊं हो सेवा देवरी;सतगुरु दीवी हो मोनेंजी पिछांण, उत्कंठा लगी हो सदा थांरे सेवरी ॥ २ ॥ प्रभुजी थांरा हो गुणजी अनंत, इंद्रादिक गाये हो पार न पावीयो; प्रभुजी थांने निरखे हो जिके पुन्य-

वंत, नहींतर निकम्मो हो जन्म गमावीयो ॥ ३ ॥ लोभी धन पायो हो मानी पायो मान, रंक मन हर्ष्यो हो पाई राजनें; राम मन हर्ष्यो हो जांणी वर्धमान, प्रभुजी सुधारे हो भव भव काजनें ॥ ४ ॥ इति ॥

८ हाथे डोरा कांगसी, ढोला, शीश गुंथावण जाय, साम्हो मिलगयो साहिबो, म्हारी छाती धड़का खाय, रे म्हारी झूमा रांणीजीनें, ओढण मेवाड़ो मलीर ॥ ए देशी ॥

महाविदेहे विराजता, प्रभु, सीमंधर जगनाथ; दासानुदास भरतमें हूं, गरीब दीन अनाथ रे, म्हारा प्रभुजीनें देखण वडो रे उछाह ॥ १ ॥ तारण तिरण तूं प्रभू रे, पतित उधारण हार; पार उतारो मो पापीनें, तो थारी बलिहार रे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ किण दिन पारस सेवियो रे, कब वंदगी कीधीलार; नीच लोह भिड़ सोनो थयो रे, धन्य पारस उपगार रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ जो दिन भावी शिव पुरी रे, तो स्यूं ताऱ्यो आप; कृपा करी अब तारिये, तो जाणूं धणियाप रे म्हा० ॥ ४ ॥ मैं प्रभूतोनें भेटियो रे, छै मुज मोटो भाग; मुनिराम कहे प्रभु तारसो रे, टार कर्मको दागरे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ इति ॥

९ पिणहारी हे लो ॥ ए देशी ॥

जंबू द्वीपे विदेहमें, जिनवरजी हो राज; विजय पुष्कलावती नाम, जिनवरजी हो राज, पुंडरीकणी नगरी भली ॥ जि० ॥ ज्यां शोभे सीमंधर स्वाम ॥ जि० ॥ १ ॥ माता सत्यकी तांहरी ॥ जि० ॥ लीयो श्रेयंस घर अव-

तार ॥ जि० ॥ रुखमणी नामे भारज्या ॥ जि० ॥ रूपे रति अनुहार ॥ जि० ॥ २ ॥ संसारना सुख भोगवी ॥ ॥ जि० ॥ रह्या तयांसी लाख पूर्व गेह ॥ जि० ॥ पछे संयम आदर्यो ॥ जि० ॥ सुर नर पाय प्रणमेह ॥ जि० ॥ ३ ॥ चौतीस अतिशय शोभता ॥ जि० ॥ रही पैंतीस वाणी विराज ॥ जि० ॥ काया धनुप धारी पांचसे ॥ ॥ जि० ॥ जयवंता विचरे आज ॥ जि० ॥४॥ अनंत रूप सोवन तनू ॥ जि० ॥ लंछन वृपभनो जांण ॥ जि० ॥ द्वादश परिषदा आगले ॥ जि० ॥ वाणी योजन प्रमाण ॥ जि० ॥ ५ ॥ द्वादश गुण करि शोभता ॥ जि० ॥ पर उपगारी जिनंद ॥ जि० ॥ सिंघ च्यारू सेवा सांचवे ॥ ॥ जि० ॥ सेवे थांनें सुर नर वृंद ॥ जि० ॥ ६ ॥ दक्षिण भरते हूं वसूं ॥ जि० ॥ दुखमी पंचमे काल ॥ जि० ॥ पुन्य संजोगे पांमियो ॥ जि० ॥ श्रीजिन धर्म रसाल ॥ जि० ॥ ७ ॥ तुम दरसनरी चायना ॥ जि० ॥ लग रहीं मनरे मांय ॥ जि० ॥ लब्धि नहीं सुर वश नहीं ॥ जि० ॥ इण भव नहीं सकूं आय ॥ जि० ॥ ८ ॥ पाखंड धर्म फैल्यो घणो ॥ जि० ॥ नहीं जांणे धर्मनो मर्म ॥ जि० ॥ नहीं जांणे जीव छकायना ॥ जि० ॥ हिंसामें बोले धर्म ॥ जि० ॥ ९ ॥ ते मन वच काय वांछुं नहीं ॥ जि० ॥ तूं छे गरीबनिवाज ॥ जि० ॥ तुम चरणां वि-च आवियो ॥ जि० ॥ अब राखो हमारी लाज ॥ जि० ॥ ॥ १० ॥ शुद्ध संजम तो ना पळे ॥ जि० ॥ पिण तुमचो बिरद संभार ॥ जि० ॥ अब आवो मति काढजे ॥जि०॥ भव सागर पार उतार ॥ जि० ॥ ११ ॥ हाथ जोड़ अ-रजी करूं ॥ जि० ॥ सो वाते एक वात ॥ जि० ॥ भव सागरथी तारजो ॥ जि० ॥ तुंहीज माथे नाथ ॥ जि० ॥

॥ १२ ॥ रामचंद करै वीनती ॥ जि० ॥ मुज जन्म मरण मिट जाय ॥ जि० ॥ उगणीसे नचे विसलपुरे ॥ जि० ॥ स्वामी वृद्धिचंदजी पसाय ॥ जि० ॥ १३ ॥ इति ॥

१० देशी नींबूड़ानी ॥

तूं प्रभु त्रिभुवन नायको, तूं छै हो प्रभु देवाधिदेव; मोय पतित प्रभु तारिये, करिये हो भवोदधि पार ॥मो०॥ तूं ईश्वर परमेश्वरू, सुर नर हो सारे प्रभुजीकी सेव ॥ मो० ॥ १ ॥ अधम उधारण तूं प्रभू, समर्थ हो प्रभू गरीवनिवाज ॥ मो० ॥ काज सुधारो कृपा करी, सुणियेहो प्रभू गरीव अवाज ॥ मो० ॥२॥ केई तार्‍या केई तारस्यो, स्यूं फूलूं हो प्रभू पर रिध देख ॥ मो० ॥ जिण दिन प्रभु मुझ तारसो, हूसी हो प्रभू हर्ष विशेख ॥मो०॥ ३ ॥ सूधो संजम नां पळै, समकित हो पिण नहीं निरधार ॥ मो० ॥ मुनि राम कहै प्रभु आसरो, करिये हो प्रभू बेड़ो पार ॥ मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

११ देशी मिजनूंकी ॥

थे छो त्रिभुवन नाथ, थांरे सरीखा जुगमें नां जुडे रे लो; थां पर वारी म्हांरा जिनजी, महर करीने दर्शन दीजिये रे लो; प्रभूजी पारस लागो हाथ,लोह न रवै जो अडे रे लो ॥१॥तूं छै देवाधिदेव,हूं तो अनाथ शरणै थांहरे रे लो; चाहूं थांरे चरणांरी सेव, रात दिवस हूंस मांहरे रे लो ॥ २ ॥ कृपानिधी तुमचे जी पास, हूं तो नाच्यो विविध सांगसूं रे लो; जो रींझ्या तौ करूं अरदाश, वगसो जो वस्तु एक मांगसूं रे लो ॥ ३ ॥ जो नहीं रींझ्या दयाल, जब तो नाकारो करो नहीं नाचसूं रे लो; रामचंदकी अरज कृपाल, हां नां फुरमावो निज वाचसूं रे लो ॥ ४ ॥ इति ॥

१२वाई ए चौटा मांहिली देवळी, कोई न चाड़े धूप ॥ ए देशी ॥

प्रभूजी चौरासीमें हूं भम्यो, कदेयन दीठा आप ॥ प्र० ॥ काल अनादी निगम्यो, कीधा बहु विधपाप ॥१॥ प्रभूजी पुन्यसूं नर भव मैं लंह्यौ, दुर्लभ जिन धर्म लाध ॥ प्र० ॥ समकित सन्मुख हुई रह्यौ, वळि आछा लागे साध ॥२॥ प्रभूजी पापी संगत मत हुवो, हुवो साधुको संग, पापी संग होतां थकां, पड़े भजनमें भंग ॥ ३ ॥ प्र० ॥ क्रोध-मान माया तजूं, लोभ पापको मूल ॥ प्र० ॥ रात दिवस तुमकूं भजूं, करूं राग द्वेप निर्मूल ॥ ४ ॥ प्र० ॥ मात पितानें त्यागसूं, त्यागूं घर परिचार ॥ प्र० ॥ करूं क्रिया धर्म रागसूं, धरूं सतगुरुसूं प्यार ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जे लारे लागा सहीं, ते सहु पार लंघाय ॥ प्र० ॥ धन दौलत मांगूं नहीं, म्हारा जनम मरण मिट जाय ॥ ६ ॥ प्र० ॥ हूं छूं सेवक आपरो, आप हमारा नाथ ॥प्र०॥ मोनें आधार छै आपरो, पकड़ो म्हारो हाथ ॥ ७ ॥ प्र० ॥ आप हमांनें तारसो, दूजो न तारनहार ॥ प्र० ॥ थेई पार उतारसो, मुनि राम न छोडे लार ॥ ८ ॥ इति ॥

१३ सांवण आयो हो म्हारा सोझतिया सिरदार भँवरजी सांवण आयो हो ॥ ए देशी ॥

सरणे आयो हो जी म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभू-जी, सरणे आयो हो; कुगुरुभरमायो हो, हो जी म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, कुगुरु भरमायो हो ॥ १ ॥ सुमती दीजो हो, होजी म्हारा सूमतीका दातार, प्रभुजी, सुमती दीजो हो, यनणा लीजो हो, होजी म्हारा कुमती

मेटणहार, प्रभुजी वनणा लीजो हो ॥२॥ दरसण दी
हो, होजी म्हांरा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभुजी, दरस
दीजो हो, पारही कीजो हो, होजी म्हांरा मुगती
दातार, प्रभुजी, पारही कीजो हो ॥ ३ ॥ मुजनें ता
हो, होजी म्हांरा करम मुकावणहार, प्रभुजी, मुः
तारो हो; बिरद विचारो हो, होजी म्हांरा सुखना दे
णहार, प्रभुजी, बिरद विचारो हो ॥ ४ ॥ पारस पा
हो, होजी म्हे तो रमता बालक खेल; प्रभुजी, पा
पायो हो, चरणे आयो हो, होजी थांनें राम वंदे
तोड, प्रभुजी, चरणे आयो हो ॥ ५ ॥ इति ॥

१४ देशी पूर्ववत् ॥

दर्शन पायो हो म्हारा त्रिभुवनका सिरदार, प्रभु
शरणे आयो हो, म्हे तो शीश नमायो हो, म्हांरा
मंधरजी महाराज, प्रभुजी गुण मुख गायो हो ॥
श्रद्धा दृढ धरसां हो, म्हांरा सीमंधरजी महाराज, प्र
जी मुनि संग करसां हो, सुपात्र दान देसां हो, म्ह
त्रिभुवनका सिरदार, प्रभूजी शुद्ध शील पाळेसां
॥ २॥ तपसूं तन गाळेसां हो, म्हारा त्रिभुवनका सिरद
प्रभूजी भावना भावेसां हो, कुगुरुनें नहीं नमसां हो म
रा सीमंधर जिनराज, प्रभूजी सुगुरु संगे रमसां हो॥३॥
तो पाखंडसूं नहीं डरसां हो, म्हारा सीमंधर जिनरा
प्रभूजी न्यायसूं झगड़सांहो, म्हेतो सूत्रभण सांहो, म्ह
सीमंधर महाराज प्रभूजी पाप शास्त्र न सुणसां हों ।
मुनि रामचंद गावे हो, म्हारा सीमंधरजी महार
प्रभूजी थांने शीश नमावे हो ॥ ५ ॥ इति ॥

१५ अनोखा भमरजी हो ॥ ए देशी ॥

महाविदेहमें विराजिया हो, प्रभूजी, सीमंधर जिनराज; सर्वज्ञ शिव पद दीये हो ॥ प्र० ॥ भवोदधि तारण जाज; सुणिये वीनती हो, प्रभूजी, दीनानाथ दयाल ॥ ॥ १ ॥ सुरनर इंद्र आयनें हो, प्रभूजी, वंदे वे कर जोड़; रात दिवस हाजर रहै हो ॥ प्र० ॥ मुज मन देखण कोड़ ॥ सु० ॥ २ ॥ अवर देव वांछुं नहीं हो ॥ प्र० ॥ मन वचने महाराज; करुणा सागर सांभळो हो ॥ प्र० ॥ सारो आतम काज ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतन चिंतामणि छोडनें हो ॥ प्र० ॥ काच खंड कुण लेह; समरथ प्रभूसूं तोडनें हो ॥ प्र० ॥ पाखंड चित कुंण देह ॥ सु० ॥ ४ ॥ तूं साहिब तूं शिर धणी हो ॥ प्र० ॥ तुहीज मुज आधार; रामचंदनी वीनती हो० ॥ प्र० ॥ दीजो पार उतार ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ देशी विलालेकी ॥

प्रभुजीरो कांईयन मांगांराज ॥ प्र० ॥ म्हांरी राखीजो प्रभु लाज ॥ प्र० ॥ टेर ॥ हाथी घोडा तो मूळ न मांगां, नहीं मांगां कछु राज; पुत्र कलत्र धन दौलत न मांगां, एक मांगां धर्मकी जाज ॥ प्र० ॥ १ ॥ यथाख्यात तो चारित्र मांगां, ध्यानमें शुकल ध्यान; समकित मांहे तो क्षायिक मांगां, ज्ञानमें केवल ज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥२॥ जिनवर गणधरको पद मांगां, मांगां सुखांकी रास; मुनि राम कहे अक्षय पद मांगां, मुगत पुरीको वास ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ मारग मारग हूं चली रे, ऊजड़ पड़ गयो पांव;

ढोलो तो म्हारो इतनोसो, वारु म्हारा राजान, खेलों म्हारा राजन इतनोसो ॥ ए देशी ॥

प्रभू तो म्हांरो सर्वज्ञ छै, संशय सारे भाजन, प्रभू म्हांरो तारन, कुमति विदारन, सुमतीको कारन, प्रभू म्हांरो सर्वज्ञ छै ॥ टेर ॥ हूं तो सेवक आपको रे २, आप गरीवानिवाज ॥ प्र० ॥ शरणे आयो आपके रे २, रखिये म्हांरी लाज ॥ प्र०॥ १ ॥ चिंता न चूरे चिंतामणी रे २, सुरतरु पूरे न आस ॥ प्र० ॥ जो पारसे सोवन ना करेरे २, तो लोक करेगा हास ॥ प्र० ॥ २ ॥ जो तिरतानें तार सोरे २, सी अधिकाई थाय ॥ प्र० ॥ जो डूवतनें तारही रे २, ते महिमा जगमांय ॥ प्र० ॥३ ॥ जो मुज प्रभु नहीं तारसो रे २, तो कुंण तारसी और ॥प्र०॥ निश्चै नाभेय जिन तारसी रे २, राम वंदे कर जोर ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

१८ म्हे लां रे नीचै किणी रे कँवरांरा घोड़ा हींसिया ॥ ए देशी ॥

म्हारो सीमंधर जिनराजसें दिलडो लागि यो; हूं तो वसूं भरतके मांय, छूं आपको रागियो; मैं तो कुगुरु कुदेवको नवो वंदवो त्यागियो ॥ टेर ॥ विदेह क्षेत्र सुहामणो सरे, आरो पलटे नाह; सदा जिन चक्री केवली सरे, जां खुल्यो सदा शिव राह ॥ म्हा० ॥ १ ॥ पांचसे धनु काया जिहां सरे, आयू पूरव कोड़, राज न्यायी वरषा घणी स रे, रहे पुत्र वहू सदा कर जोड़ ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रीकुंथु वारे जिन जनमिया स रे, दीक्षा वीसमें होय; भावी चौवीसी जिन सातमे स रे, शिव जासी कर्म खोय ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ गुण चितारू आपका स

१५ अनोखा भमरजी हो ॥ ए देशी ॥

महाविदेहमें विराजिया हो, प्रभूजी, सीमंधर जिनराज; सर्वज्ञ शिव पद दीये हो ॥ प्र० ॥ भवोदधि तारण जाज; सुणिये वीनती हो, प्रभूजी, दीनानाथ दयाल ॥ ॥ १ ॥ सुरनर इंद्र आयनें हो, प्रभूजी, वंदे वे कर जोड़; रात दिवस हाजर रहे हो ॥ प्र० ॥ मुज मन देखण कोड़ ॥ सु० ॥ २ ॥ अवर देव वांछूं नहीं हो ॥ प्र० ॥ मन वचनें महाराज; करुणा सागर सांभळो हो ॥ प्र० ॥ सारो आतम काज ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतन चिंतामणि छोडनें हो ॥ प्र० ॥ काच खंड कुण लेह; समरथ प्रभूसूं तोडनें हो ॥ प्र० ॥ पाखंड चित कुंण देह ॥ सु० ॥ ४ ॥ तूं साहिब तूं शिर धणी हो ॥ प्र० ॥ तुहीज मुज आधार; रामचंदनी वीनती हो० ॥ प्र० ॥ दीजो पार उतार ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ देशी विलालेकी ॥

प्रभुजीरो कांईयन मांगांराज ॥ प्र० ॥ म्हांरी राखी जो प्रभु लाज ॥ प्र० ॥ टेर ॥ हाथी घोडा तो मूळ न मांगां, नहीं मांगां कछू राज; पुत्र कलत्र धन दौलत न मांगां, एक मांगां धर्मकी जाज ॥ प्र० ॥ १ ॥ यथाख्यात तो चारित्र मांगां, ध्यानमें शुकल ध्यान; समकित मांहे तो क्षायिक मांगां, ज्ञानमें केवल ज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥२॥ जिनवर गणधरको पद मांगां, मांगां मुखांकी रास; मुनि राम कहे अक्षय पद मांगां, मुगत पुरीको वास ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ मारग मारग हूं चली रे, ऊजड़ पड़ गयो पांव;

ढोलो तो म्हारो इतनोसो, वारु म्हारा राजान, खेलों म्हारा राजन इतनोसो ॥ ए देशी ॥

प्रभू तो म्हांरो सर्वज्ञ छै, संशय सारे भाजन, प्रभू म्हांरो तारन, कुमति विदारन, सुमतीको कारन, प्रभू म्हांरो सर्वज्ञ छै ॥ टेर ॥ हूं तो सेवक आपको रे २, आप गरीबनिवाज ॥ प्र० ॥ शरणे आयो आपके रे २, रखिये म्हांरी लाज ॥ प्र०॥ १ ॥ चिंता न चूरे चिंतामणी रे २, सुरतरु पूरे न आस ॥ प्र० ॥ जो पारसे सोवन ना करेरे २, तो लोक करेगा हास ॥ प्र० ॥ २ ॥ जो तिरतानें तार सोरे २, सी अधिकाई थाय ॥ प्र० ॥ जो डूबतनें तारही रे २, ते महिमा जगमांय ॥ प्र० ॥३ ॥ जो मुज प्रभु नहीं तारसो रे २, तो कुंण तारसी और ॥प्र०॥ निश्चै नाभेय जिन तारसी रे २, राम वंदे कर जोर ॥ प्र० ४ ॥ इति ॥

१८ म्हे लांरे नीचै किणीरे कँवरांरा घोड़ा हींसिया ॥ ए देशी ॥

म्हारो सीमंधर जिनराजसें दिलडो लागि यो; हूं तो वसूं भरतके मांय, छूं आपको रागियो; मैं तो कुगुरु कुदेवको नवो वंदवो त्यागियो ॥ टेर ॥ विदेह क्षेत्र सुहामणो सरे, आरो पलटे नाह; सदा जिन चक्री केवली सरे, जां खुल्यो सदा शिव राह ॥ म्हा० ॥ १ ॥ पांचसे धनु काया जिहां सरे, आयू पूरब कोड़, राज न्यायी वरषा घणी स रे, रहे पुत्र वहू सदा कर जोड़ ॥ म्हा० ॥ २ ॥ श्रीकुंथु वारे जिन जनमिया स रे, दीक्षा वीसमें होय; भावी चौवीसी जिन सातमे स रे, शिव जासी कर्म खोय ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ गुण चितारू आपका स

१५ अनोखा भमरजी हो ॥ ए देशी ॥

महाविदेहमें विराजिया हो, प्रभूजी, सीमंधर जिनराज; सर्वज्ञ शिव पद दीये हो ॥ प्र० ॥ भवोदधि तारण जाज; सुणिये वीनती हो, प्रभूजी, दीनानाथ दयाल ॥ ॥ १ ॥ सुरनर इंद्र आयनें हो, प्रभूजी, वंदे बे कर जोड़; रात दिवस हाजर रहै हो ॥ प्र० ॥ मुज मन देखण कोड़ ॥ सु० ॥ २ ॥ अवर देव वांछुं नहीं हो ॥ प्र० ॥ मन वचनें महाराज; करुणा सागर सांभळो हो ॥ प्र० ॥ सारो आतम काज ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतन चिंतामणि छोडनें हो ॥ प्र० ॥ काच खंड कुण लेह; समरथ प्रभुसूं तोडनें हो ॥ प्र० ॥ पाखंड चित कुंण देह ॥ सु० ॥ ४ ॥ तूं साहिब तूं शिर धणी हो ॥ प्र० ॥ तुहीज मुज आधार; रामचंदनी वीनती हो० ॥ प्र० ॥ दीजो पार उतार ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ देशी विलालेकी ॥

प्रभुजीरो कांईयन मांगांराज ॥ प्र० ॥ म्हांरी राखी जो प्रभु लाज ॥ प्र० ॥ टेर ॥ हाथी घोडा तो मूळ न मांगां, नहीं मांगां कछु राज; पुत्र कलत्र धन दौलत न मांगां, एक मांगां धर्मकी जाज ॥ प्र० ॥ १ ॥ यथाख्यात तो चारित्र मांगां, ध्यानमें शुकल ध्यान; समकित मांहि तो क्षायिक मांगां, ज्ञानमें केवल ज्ञान ॥ प्र० ॥ ॥२॥ जिनवर गणधरको पद मांगां, मांगां सुखांकी रास; मुनि राम कहै अक्षय पद मांगां, मुगत पुरीको वास ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ मारग मारग हूं चली रे, ऊजड पड गयो पांव;

संसारी हो रहे, कोई मिलै न तारनहार जी; जिनवरजी दरसन दीजो जी, लख भेजूं अरजी मान लीजो जी, जायर कहिजो दरशन प्रभु दीजो जी, जी जिनवरजी दर्शन चाऊं जी;लख भेजूं किणके संग पठाऊं जी,जायर कहीजो रस्ते किनसें आऊं जी ॥ टेर ॥ किणविध प्रभुजी तारसी जी, किणविध मरण मिटाय;छिन भरमें प्रभु तारसी जी, पड्यो चरणमें आय जी ॥ जि० ॥ २ ॥ अनेक पापी तारियाजी, जिणरो न पायो पार; मुजनें किम नहीं तारसो, कांई लागाछां म्हे लार जी ॥ जि० ॥ ३ ॥ मात पिता घर त्यागियो जी, तुम वचनांके लार; मुनि राम कहै प्रभु तारिये, कांई तुमची विरद संभार जी, जिनवरजी,दरसन चाऊंजी,लख भेजूं किनके संग पठांऊ जी, जायर कहीजो रस्ते किनसें आऊं जी ॥४॥ इति ॥

२१ माथानें मैंमद लावजो, म्हांरी रखड़ी रतन जड़ाव हो राज ॥ ए देशी ॥

मुजनें प्रभुजी तारिये प्रभू, लागाछां तुमचे लारे हो राज; तुम विन कुंन अन्य तारसी, हूं तो सूतो भरोसे थारे हो राज; जी प्रभुजी मुज तारिये, मोनें करिये भवोदधि पार हो राज; जन्म मरण प्रभु तारिये मैं तो पकड्या तुम चरणार हो राज ॥ टेर ॥ १ ॥ हूं तो अवगुणसूं भर्यौ, प्रभु नहीं मुज अवगुण पार हो राज; अवगुण देखतां नहीं तिरूं, पिण तुमचो बिरद संभार हो राज ॥ जी० ॥ २ ॥ लोह पारस कद सेवीयो, कद वंदगी करी दिन रात हो राज; पिण छिनमें सोवन कर दीयो, इम तारो मुज जगनाथ हो राज ॥जी०॥३॥ अब तो

रे, व्यतीत करूं दिन रात; दर्शनकी दिलमें वसीज रे, सो जांण रहै जगनाथ ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ मुज औगुण जो देख सो सरे, तो नहीं तारो कोय; विरद विचारी आपको सरे, तो तारोगे मोय ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ वीतराग दिलमें वस्यौ स रे, पाखंड दिये छिटकाय; मुनि राम कहै मुज दिल रमो स रे, प्रभु चरणांके माय ॥ म्हा० ॥ ६॥ इति॥

१९ हे गोरी सूती मैलमें ढोला, मुख पर राख रुमाल; नैण गुलाबी होय रह्या ढोला, पीव करे मनुहार; म्हारे आलीजारा हाथमें गुलाबकी छड़ी, म्हारा केसरियानें वीसरूं न एक घड़ी ॥ ए देशी ॥

अब तो चेतन समजिये जीवा, शुद्ध मारगमें आय; क्यूं भटके उजाडमें जीवा, जनम अकारथ जाय;म्हारी तूटोड़ीसी नावड़ी दरियावमें पड़ी, म्हारा प्रभूजीने वीसरूं न एक घड़ी; कर्म शत्रु करे म्हांसूं खड़ाजी खड़ी, प्रभूजीका नामकी म्हारे हाथमें छड़ी ॥ टेर ॥ १ ॥ नाव चली मझ धारमें जीवा, ना कोई राखणहार; मंगर बड़े भ्रमर पडै प्रभू, किम कर होवे पार ॥म्हा० ॥ २ ॥ ऐसी जूंनी नावडी जीवा, डूबी अनंतीवार;कुगुरां मिल गोतो दीयो प्रभू, सुगुरां काढी बार ॥ म्हा० ॥ ३ ॥नाव तिरे प्रभु नामसूं जीवा, तरै न और प्रकार; मुनि राम कहै प्रभु कीजिये,म्हारी नावा पैले पार ॥म्हा०॥४॥इति॥

२० फिर गये राजंद फिर गये सजी, कर गये आस निरास ॥ ए देशी ॥

काल अनादी वहिगये जी, जिसके छेह न पार, हम

संसारी हो रहे, कोई मिलै न तारनहार जी; जिनवर-जी दरसन दीजो जी, लख भेजूं अरजी मान लीजो जी, जायर कहिजो दरशन प्रभु दीजो जी, जी जिनवरजी दर्शन चाऊं जी;लख भेजूं किणके संग पठाऊं जी,जायर कहीजो रस्ते किनसें आऊं जी ॥ टेर ॥ किणविध प्रभुजी तारसी जी, किणविध मरण मिटाय;छिन भरमें प्रभु तारसी जी, पड्यो चरणमें आय जी ॥ जि० ॥ २ ॥ अनेक पापी तारियाजी, जिणरो न पायो पार; मुजनें किम नहीं तारसो, कांई लागाछां म्हे लार जी ॥ जि० ॥ ३ ॥ मात पिता घर त्यागियो जी, तुम वचनांके लार; मुनि राम कहै प्रभु तारिये, कांई तुमची विरद संभार जी, जिनवरजी,दरसन चाऊंजी,लख भेजूं किनके संग पठाऊं जी, जायर कहीजो रस्ते किनसें आऊं जी ॥४॥ इति ॥

२१ माथानें मैंमद लावजो, म्हांरी रखड़ी रतन जड़ाव हो राज ॥ ए देशी ॥

मुजनें प्रभुजी तारिये प्रभू, लागाछां तुमचे लारे हो राज; तुम विन कुंन अन्य तारसी, हूं तो सूतो भरोसे थारे हो राज; जी प्रभुजी मुज तारिये, मोनें करिये भवोदधि पार हो राज; जन्म मरण प्रभु तारिये मैं तो पकड्या तुम चरणार हो राज ॥ टेर ॥ १ ॥ हूं तो अवगुणसूं भर्यौ, प्रभु नहीं मुज अवगुण पार हो राज; अवगुण देखतां नहीं तिरूं, पिण तुमचो बिरद संभार हो राज ॥ जी० ॥ २ ॥ लोह पारस कद सेवीयो, कद बंदगी करी दिन रात हो राज; पिण छिनमें सोवन कर दीयो,इम तारो मुज जगनाथ हो राज ॥जी०॥३॥ अब तो

तारो साहिबा, प्रभु अवधारो अरदाश हो राज; मुनि रामचंद इम वीनवे प्रभु राखो मुज चरणां पास हो राय ॥ जी० ॥ ४ ॥ इति ॥

२२ मोय झिलतीरो नींबूड़ो ॥ ए देशी ॥

हांरे प्रभू कैसे तिराऊं म्हारो जीवड़लो, कैसे पाऊं हो मुगतका सुख, मो मन लागो प्रभु चरणांसूं, लागो लागो हो मन दीन दयाल, हांरे जीवा धर्मसेती रे थांरो जीवड़लो, करणी सेती हो टरे सब दुःख ॥ मो० ॥ १ ॥ हांरे प्रभू शुद्ध संजम तो नां पळै, कैसे पाळूं हो कठिन आचार; हांरे जीवा मन दृढ संजम पाल लै, सुरा चाले हो खांडेकी धार ॥ मो० ॥ २ ॥ हांरे प्रभू कठिन काल छै आजनो, नहीं सकूं हो मनकूं थंभाय ॥ मो० ॥ हांरे जीवा जद तद मनकूं रोकते, ज्ञान डोरी हो शुद्ध ध्यान लगाय ॥ मो० ॥ ३ ॥ सीमंधर जिन साहिबो, मन वसियो हो दिवसनें रात ॥ मो० ॥ मुनि राम कहै प्रभु तारिहे, तुम सुनिये हो जग त्रय नाथ ॥ मो० ॥ ४ ॥ इति ॥

२३ हरिहे ऊंचा नीचा परवत अंबाजीरो वैसणो॥एदेशी॥

हरि हे कौशांबी तो नगरी सोहे जगदी पती, वीरजी रह्याहे विराज हो त्रिलोकीनाथ, विराज हो प्रभुजी राज म्हांरो मन लागो हो प्रभूजीरा नामसूं, पलक न वीसरूं रे, वावा पलक न वीसरू रे ओ ध्यान हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे चंद्र रवि आये मूल विमानसूं, वाजा तो रहिया हे वाज हो ॥ त्रि० ॥१॥ हरि हे मृगावती आई चंदनवालाजी संगे, प्रभुजीनें रही हे निहार हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे गुरणी तो गई सांझ विचारनें, मृगावती रही हो लार

हो ॥ त्रि० ॥ २ ॥ हरि हे इंद्र गये तम थये सती कंपित भई, आई गुरणीरे पास हो ॥ त्रि० ॥ हरि हे सूता तो गुरणी इणपर बोलिया,तोनें घणा हे शाबास हो ॥ त्रि० ॥३॥ हरि हे केवल उपज्यो क्षमा करतां थकां, गुरणीजी सुणी हो बात हो ॥त्रि०॥ हरि हे नाग काळो जैर भर्‍यो आयो पाट ऊपरे,ऊंचो तो राखिये हो हाथ हो॥त्रि०॥४॥ हरि हे गुरणीजी कहे किम तुम नाग देखीयो, देखूं ज्ञानरे जोर हो ॥त्रि०॥ हरि हे राम मुनि कहै सुण क्षमा सब कीजियो, तो पासो उत्तम ठोर हो ॥त्रि०॥५॥इति॥

२४ देशी कुंजेकी ॥

श्रीनाभेय जगनाथरे, हो मरु देव्या नंदा ॥ श्री० ॥ दर्शन चाहूं नित्यला हरो रे, मुज दीजो ॥ मु० ॥ दरसण धर दया ॥ मु० ॥ हूं प्रभु गरीब अनाथ रे हो ॥ म० ॥ करो निस्तारो हिवे मांहरो रे, मांन लीजो ॥ मां० ॥वंदना धर दया रे ॥ मां० ॥ १ ॥ पतित उधारन हार रे हो ॥ ॥ म०प०॥ सुणनें चरणे आवियो रे, काढो मती ॥का० ॥ आघो मुझभणी रे ॥ का० ॥ दूजो नहीं संसार हो ॥म० दू० ॥ कुगुरु मुज भरमावियो रे, दुख पायो अति॥ दु०॥ तुम विन शिर धणी रे ॥ दु० ॥ २ ॥ जपूं तुमारो जाप रे हो ॥ म० ॥ लपट रहूं चरणार में रे, दिल ऐसी ॥ दि० ॥ आवे न छोडूं अध घरी रे ॥ दि० ॥ मुनि राम शिर तुम छाप रे हो ॥ म० ॥ रूल्हूं नहीं संसारमें रे, कहूं कैसी ॥ क० ॥ छाप न धारूं दूसरी रे ॥ क० ॥ ३ ॥ इति ॥

२५ मिणयारड़ो हे ॥ एदेशी ॥

जग तारणो हे, पार उतारणो हे, पारस प्रभुजी

जग तारणो ॥ टेर ॥ एक दिन तापस आवियो हे, अमा खलक मुलक लागे पाय हे, देखो पाखंड एहनो हे, अमा चालोनी नीहालो एहनें जाय ॥ ज० ॥१॥ आयनें उतर्यो गंगा ऊपरे हे, अमा देखवा आया जिनरायो, अवधि ज्ञाने जिन देखियो हे, अमा नाग नागणी काष्ठ मांयो ॥ ज० ॥ २ ॥ रे रे पाखंडी स्यूं तप करे रे, जोगी जीवानें क्यूं होमे अग्नि मांयो; जीव हिंसा किणनें तारियो रे, जोगी कुण गयो सिद्ध गति मांयो ॥ ज० ॥ ३ ॥ नाग तिहां सुर पद लह्यो रे, अमा परमेष्ठी दीयो सुणायो; रामचंद कहे एहनो हे, अमा जनम मरण मिट जायो ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति ॥

२६ दानजी दानजी करती रे, हूंयो वागां मांयला फूलड़ा वीणती रे, ॥ हूंतो० ॥ ए देशी ॥

वीर प्रभू वीर प्रभू ध्यावसां रे, म्हे तो त्रिभुवन नायक गावसां रे ॥ म्हे० ॥ म्हांरो मुक्त पुरीरो साहिब वीरजी रे, म्हांरो केवल ज्ञानवालो वीरजी रे ॥ टेर ॥ ध्यान ध्यावो तो भल ध्यावजो रे, सैंणां गावो तो वीर प्रभू गावजो रे २॥ वीर प्रभु वी०॥१॥ दान देवो तो भल देवजो रे, सैंणां वचन कैवो सच कैवजो रे २॥ वीर० ॥२॥ जे टाळो चोरी टाळजो रे, सैंणां पाळो तो शीलव्रत पाळजो रे २॥वी० ॥३॥ जो त्यागो तो परिग्रह त्यागजो रे, सैंणां भागो तो शिव सांमा भागजो रे ॥२॥ वी०॥४॥ जो चाखो तो समता चाखजो रे, सैंणां नांखो तो ममता नांखजो रे २॥वी० ॥५॥ मुनि राम कहे सीख धारजो रे, सैंणां नर भव अफल म हारजो रे २ ॥ वी० ॥६॥ इति ॥

२७ नव घाटीनें उलंघने आयो ॥ ए देशी ॥

दीजे पार उतार प्रभूजी, दीजे पार उतार; हूं अपावन पतित अधम छूं, तूं छै दीन दयाल ॥ तूं० ॥ कृपानिधि तूं छै दीन दयाल, मो अधमकूं पार उतारो, तूं छै परम कृपाल ॥ टेर ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर तूं छै, तूंही शंकर मुरार; ब्रह्मा विष्णू हिरण्यगर्भ तूं, महादेव किरतार॥प्र० ॥ १ ॥ स्वयंभू अर्हंत गणेश, वीतराग तीर्थंकार; कर्ता विश्वंभर जगके भर्ता, तूं हरि श्याम उदार ॥ २ ॥ प्र० ॥ २ ॥ तूं निरमोही निकर्मी निसंगी, नीरागी निराकार; पुरुषोत्तम निष्कलंक तूं ही छै, राम रहीम निर्धार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ३ ॥ तूं प्रभु तारक कर्म विदारक, वारक तूं संसार; सुखके कर्ता हर्ता दुखके, भर्ता त्रिलोकी सार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ४ ॥ तूं भगवंत सर्वज्ञ शिरोमनि, गुनको पारंपार; मुनि राम कहै जिण पारस भेट्यो, किम रहै लोह विकार ॥ २ ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ अब मोय तारो श्रीनाथजी ॥ ए देशी ॥

च्यार गत भमियो घणो, दीठा दुःख अपार; पार न पायो जी पाछ लो, नहीं कीनी अमची जी सार; नहीं मिल्या तारनहार, तातें रुळियो संसार, अब तो पार उतार; अब मोय तारो श्रीमहावीरजी; अब मोय तारो श्रीदयालजी ॥ १ ॥ टेर ॥ पुन्य जोगे नर भव लह्यो, पांम्यो आरज देश; उत्तम कुलमें जी ऊपनो, लागो गुरु-

नो उपदेश, भागो मिथ्यात रेस, छूटो सकल कलेश, लाधो साधूनो वेस ॥ अब मो० ॥ २ ॥ काम मोहनें लालसा, छूटे नहीं हे दयाल; गुण नहीं औगुण पुंज हूं, नहीं सकूं सुरत संभाळ, पड़ियो मोहनी जाळ, तूं ही थारे निकाळ, तूं छे दीन दयाल, तूं तो परम कृपाल॥अब०॥३॥ तूं ईश्वर परमेश्वरू, तूं छे आतमराम; तूं दाता धाता खरो, शंकर थारो छे नाम, तूं छे त्रिभुवन स्वाम, तूं छे भूलां विश्राम; हूं छूं दास गुलाम, दीजो अविचल ठाम॥अब०॥ ॥४॥जैन धर्म जाणूं खरो, पाखंड जांणूंजी और; वीतराग धर्म तारसी, राम वंदे कर जोर, अमची इतनी जी दोर, नहीं छे अगोजी ठोर, काटो कर्म कठोर ॥अ०॥५॥ इति॥

२ देशी चौकनी ॥

सीमंधरजी क्या जांणूं मुज कर्म कटक दल केवा, अहो जिनवरजी मेटो संकट पाया धणी तुम जेवा ॥ टेर ॥ कर्म धकावे मुज भारी, कहतां नहीं आवें पारी; हूं तो भटक्यौ गत आगत च्यारी ॥ सी० ॥ १ ॥ तुमसें लागी मुज तारी, कही हकीकत में सारी; हूं अनाथ निरधारी ॥ सी० ॥ २ ॥ तुमसो नाथ नहीं करियो, तद लाख चौरासीमें फिरियो; अब नाथ तुमनें उर धरियो ॥सी०॥३॥ जो नहीं काटो मुज पासी, तो तुम शरणे कूंण आसी; घर हांण दूजी लोकां हासी ॥सी० ॥४॥ इम जांणी मुज तारोनी, भवोदधि पार उतारोनी; ए वीनतडी अवधारोनी ॥ सी० ॥ ५ ॥ दूर देशावर अति आगो, विकट धरा आऊं तहीं सागो; तुम चाकरीमें अत्र लागो, ॥सी० ॥ ६ ॥ तूं स्वामी अंतरजामी, नीठसे समकित में पांमी; रामचंद कहे निज शिर नांमी ॥ सी० ॥ ७ ॥ साते नां-

मासो कीयो तिंवरी, सेवा करै सहु हर्ष धरी; सावन वदमांहे तवन करी ॥ सी० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ कावलनो पांणी लागणो, कावल मत जावो ॥ ए देशी ॥

वाल सनेही तूं प्रभू, रह्या एक ठिकांणे; मैं न लखी तुम कथनसुं, हूं पिण थयोसु जांणे ॥ १ ॥ सीमंधर जिन साहिवा, हूं छूं दास तिहारो; आश निराश न कीजिये, तुमचो विरद निहारो ॥ सी० ॥ २ ॥ तें जीत्या ते मो जीत है, अब सो करिये स्वामी; शिरनांमी तुमनें कहूं, तूं छै अंतरजामी ॥ सी० ॥ ३ ॥ काम मोहनें लालसा, मुजनें एह धकावै; सुख भर नींद न लेण दे, निश दिन आय संतावै ॥ सी० ॥ ४ ॥ निरावरण तूं थयो, मुझ रह्यौ कर्म दोलो; तूं अकर्म सकर्म हूं, तुज मुज अंतर वोलो ॥ सी० ॥ ५ ॥ जो पद पांम्यो तूं प्रभू, सो पद हूं पिण चाऊं; दीजै परम कृपा करी, स्यों घणो कही सुणाऊं ॥ सी० ॥ ६ ॥ तरण तारण तूं प्रभू, हूं धर आयो आशा; रामचंदकी वीनती, नहीं करिये निराशा ॥ ॥ सी० ॥ ७ ॥ इति ॥

४ म्हारे तो हाथमें नौकरवाळी ॥ ए देशी ॥

म्हारे तो समरण नौपदजीरो, म्हारे नवपदजीरो आधार जी ॥ म्हा० ॥ टेर ॥ णमो अरिहंताणं पहिले पदमें, ज्यांरा गुण छै बार जी; अष्ट गुण तो द्रव्य कहावे, भाव गुण छै च्यार जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं दूजा पदमें, अष्ट गुण श्रीकारजी; अनंत पंचमे सिद्ध कहावे, भंग तो दोय प्रकारजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं पद छै तीजो, गणिजी अर्थ दातारजी; गुण

नो उपदेश, भागो मिथ्यात रेस, छूटो सकल कलेश, लाधो साधूनो वेस ॥ अब मो० ॥ २ ॥ काम मोहनें लालसा, छूटे नहीं हे दयाल; गुण नहीं औगुण पुंज हूं, नहीं सकूं सुरत संभाळ, पड़ियो मोहनी जाळ, तूं ही बारे निकाळ, तूं छे दीन दयाल, तूं तो परम कृपाल॥अब०॥३॥ तूं ईश्वर परमेश्वरू, तूं छे आतमराम; तूं दाता धाता खरो, शंकर थारो छे नाम, तूं छे त्रिभुवन स्वाम, तूं छे भूलां विश्राम; हूं छूं दास गुलाम, दीजो अविचल ठाम॥अब०॥ ॥४॥जैन धर्म जाणूं खरो, पाखंड जांणूंजी और; वीतराग धर्म तारसी, राम वंदे कर जोर, अमची इतनी जी दोर, नहीं छे अगोजी ठोर, काटो कर्म कठोर ॥अ०॥५॥ इति॥

२ देशी चौकनी ॥

सीमंधरजी क्या जांणूं मुज कर्म कटक दल केवा, अहो जिनवरजी मेटो संकट पाया धणी तुम जेवा ॥ टेर ॥ कर्म धकावे मुज भारी, कहतां नहीं आवें पारी; हूं तो भटक्यौ गत आगत च्यारी ॥ सी० ॥ १ ॥ तुमसें लागी मुज तारी, कही हकीकत में सारी; हूं अनाथ निरधारी ॥ सी० ॥ २ ॥ तुमसो नाथ नहीं करियो, तद लाख चौरासीमें फिरियो; अब नाथ तुमनें उर धरियो ॥सी०॥३॥ जो नहीं काटो मुज पासी, तो तुम शरणे कूंण आसी; घर हांण दूजी लोकां हासी ॥सी० ॥४॥ इम जांणी मुज तारोनी, भवोदधि पार उतारोनी; ए वीनतडी अवधारोनी ॥ सी० ॥ ५ ॥ दूर देशावर अति आगो, विकट धरा आऊं नहीं सागो; तुम चाकरीमें अन्न लागो, ॥सी० ॥ ६ ॥ तूं स्वामी अंतरजामी, नीठसे समकित में पांमी; रामचंद कहै निज शिर नांमी ॥ सी० ॥ ७ ॥ साने चौ-

मासो कीयो तिंवरी, सेवा करै सहु हर्ष धरी; सावन वद्मांहे तवन करी ॥ सी० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ काबलनो पांणी लागणो, काबल मत जावो ॥ ए देशी ॥

बाल सनेही तूं प्रभू, रह्या एक ठिकांणे; मैं न लखी तुम कथनसूं, हूं पिण थयोसु जांणे ॥ १ ॥ सीमंधर जिन साहिबा, हूं छूं दास तिहारो; आश निराश न कीजिये, तुमचो विरद निहारो ॥ सी० ॥ २ ॥ तें जीत्या ते मो जीत है, अब सो करिये स्वामी; शिरनांमी तुमनें कहूं, तूं छै अंतरजामी ॥ सी० ॥ ३ ॥ काम मोहनें लालसा, मुजनें एह धकावै; सुख भर नींद न लेण दे, निश दिन आय संतावै ॥ सी० ॥ ४ ॥ निरावरण तूं थयो, मुझ रह्यौ कर्म दोलो; तूं अकर्म सकर्म हूं, तुज मुज अंतर वोलो ॥ सी० ॥ ५ ॥ जो पद पांम्यो तूं प्रभू, सो पद हूं पिण चाऊं; दीजै परम कृपा करी, स्यों घणो कही सुणाऊं ॥ सी० ॥ ६ ॥ तरण तारण तूं प्रभू, हूं धर आयो आशा; रामचंदकी वीनती, नहीं करिये निराशा ॥ ॥ सी० ॥ ७ ॥ इति ॥

४ म्हारे तो हाथमें नौकरवाळी ॥ ए देशी ॥

म्हारे तो समरण नौपदजीरो, म्हारे नवपदजीरो आधार जी ॥ म्हा० ॥ टेर ॥ णमो अरिहंताणं पहिले पदमें, ज्यांरा गुण छै बार जी; अष्ट गुण तो द्रव्य कहावे, भाव गुण छै च्यार जी ॥ म्हा० ॥ १ ॥ णमो सिद्धाणं दूजा पदमें, अष्ट गुण श्रीकारजी; अनंत पंचमे सिद्ध कहावे, भंग तो दोय प्रकारजी ॥ म्हा० ॥ २ ॥ णमो आयरियाणं पद छै तीजो, गणिजी अर्थ दातारजी; गुण

छत्तीस करीनें शोभै, नमो नमो नमोकारजी ॥ म्हा० ॥ ॥ ३ ॥ णमो उवज्झायाणं पद छै चौथो, ए सूत्रतणा दातार जी; गुण पचवीस करीनें शोभै, ज्यांसूं रखिये प्यारजी ॥ म्हा०॥४॥णमो लोए सव्वसाहूणं पद छै पंचम, ते कहिये अणगारजी; गुण सत्तावीस करनें युत्ता, वंदूं वारंवार जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ णमो दंसणस्स पद छै छट्ठो, दंसण विण सव छारजी; ते कारणथी तेहनें नमीये, जिम हुवे खेवो पार जी ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ णमो णाणस्स पद छै सत्तम, ए सहूनो शिरदार जी; एही छै मुक्तीनो मारग, इण विन घोर अंधारजी ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ णमो चरित्तस्स पद छै अष्टम, इणसूं होय सुधारजी; इणसूं कर्म रुके अरु क्षपही, मुक्ति लेजावणहार जी ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ णमो तवस्स पद छै नवमो, तप छै दोय प्रकारजी; पूर्व कर्मनें जालणहारो, नमिये वारंवार जी॥ म्हा० ॥ ९ ॥ पद दोय धुरे देव विराजै, त्रयमें गुरु विचारजी; च्यार पदमें धर्म विराजै, मुनि राम वंदे बहुवारजी ॥ म्हा० ॥ १० ॥ इति ॥

५ नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ॥ ए देशी ॥

नाथ कैसे कर्मको फंद छुडायो, ओ अचरज मोकूं आयो ॥ ना० ॥ टेर ॥ चंडकौशिक फणिधर तुम डसिया, दृष्टी विष कहायो; जिणकूं सुधार दीयो संथारो, आठमें स्वर्ग पोंचायो ॥ ना० ॥१॥ईंद्रभूति तुम विभूति निरखी, अवगुण वाद बोलायो; त्रिपदी मंत्रे गणभृत थप्यौ, श्रीसंघ मुख्य वणायो ॥ ना० ॥ २ ॥ जमाली नांमे नन्दव तोरो, तुम वच दोप लगायो; चतुर्दश भव कर शिव पद

मेलो, श्रीभगवती अंगमें गायो ॥ ना० ॥ ३ ॥ गोसालक तुम युग मुनि बाल्या, ऊंधो पंथ चलायो; अच्युत स्वर्ग समर्प्यो जिणनें, आखर मुक्ति बतायो ॥ ना० ॥ ४ ॥ सोमिल ब्राह्मण करी तुम चर्चा, दुधारा प्रश्न करायो; जिणनें मुक्ति इण भव दीधी, श्रीपंचम अंग दिखायो ॥ ना० ॥ ५ ॥ अर्जुन माली खटमसातांई, सात मिनख नित घायो; जिणनें मुक्ति दीवी छिन भरमें, सकलही पाप गमायो ॥ ना० ॥ ६ ॥ श्रीवीरप्रभूसें अरज करत हूं, मुजनें किम विसरायो; नहीं अधिकाई काष्ठ जल तारै, अधिकाई पाहण तरायो ॥ ना० ॥ ७ ॥ तुम अपकार कीया बहुतेरा, सहुना काज सरायो; मुनि राम कहै मुज तारन बिरियां, किम आलस दरसायो ॥ ना० ॥ ८ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ खबर नहीं है जुगमें पलकी ॥ ए देशी ॥

चंदा तूं जइये जिन चरणां रे, चंदा तूं जइये जिन चरणां, हाथ जोड़नें करै वीनती, कहीजै मुज वनणां ॥ चं० ॥ १ ॥ टेर ॥ पूर्व विदेह पुंडरीकणीमें, सीमंधर स्वामी; मुज अरजी मालम श्रीजीन आगै, कहीजै शिर नांमी ॥ चं० ॥ २ ॥ चउतीस अतिशय पैंतीस वाणी, शोभै जिनराया; वृषभ लंछन सोवन वरन, पंचसे धनुष काया ॥ चं० ॥ ३ ॥ द्वादश गुण करि शोभै जिनवर, मुख पूनम चंदा; पद पंकज चरचित इंद्रादिक, सेवे सुर नर वृंदा ॥ चं० ॥ ४ ॥ दक्षिण भरते जंबू द्वीपे, मैं लीयो अवतारो; दुखमी आरे पंचम काले, नहीं आवण

छत्तीस करीनें शोभै, नमो नमो नमोकारजी ॥ म्हा० ॥ ॥ ३ ॥ णमो उवज्झायाणं पद छै चौथो, ए सूत्रतणा दातार जी; गुण पचवीस करीनें शोभै, ज्यांसूं रखिये प्यारजी ॥ म्हा०॥४॥णमो लोए सव्वसाहूणं पद छै पंचम, ते कहिये अणगारजी; गुण सत्तावीस करनें युत्ता, वंदूं वारंवार जी ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ णमो दंसणस्स पद छै छट्ठो, दंसण विण सव छारजी; ते कारणथी तेहनें नमीये, जिम हुवे खेवो पार जी ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ णमो णाणस्स पद छै सत्तम, ए सहूनो शिरदार जी; एही छै मुक्तीनो मारग, इण विन घोर अंधारजी ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ णमो चरित्तस्स पद छै अष्टम, इणसूं होय सुधार-जी; इणसूं कर्म रुके अरु क्षपही, मुक्ति लेजावणहार जी ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ णमो तवस्स पद छै नवमो, तप छै दोय प्रकारजी; पूर्व कर्मनें जालणहारो, नमिये वारंवार जी ॥ म्हा० ॥ ९ ॥ पद दोय धुरे देव विराजै, त्रयमें गुरु विचारजी; च्यार पदमें धर्म विराजै, मुनि राम वंदै बहुवारजी ॥ म्हा० ॥ १० ॥ इति ॥

५ नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ॥ ए देशी ॥

नाथ कैसे कर्मको फंद छुडायो, ओ अचरज मोकूं आयो ॥ ना० ॥ टेर ॥ चंडकौशिक फणिधर तुम डसिया, दृष्टी विष कहायो; जिणकूं सुधार दीयो संथारो, आठमें स्वर्ग पौंचायो ॥ ना० ॥१॥ इंद्रभूति तुम विभूति निरखी, अवगुण वाद बोलायो; त्रिपदी मंत्रे गणभृत थप्यौ, श्री-संघ मुख्य वणायो ॥ ना० ॥ २ ॥ जमाली नांमे नन्नव तोरो, तुम वच दोष लगायो; चतुर्दश भव कर शिव पद

नांमी जी; प्रभु दूर वसै परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमी जी ॥१॥मेरे ऐसे आवे दिल मांय, अबी श्वासा चढवाऊंजी; मैं करूं अजप्पा जाप, नासा पर दृष्टि जमाऊंजी; मैं ढूंढूं प्रभूका देश, जैसे मैं प्रभुकूं पाऊं जी; मैं धरूं अरिहंतका ध्यान, ध्यानसें ज्ञान जगाऊंजी; मैं कोई युक्तिके साथ, आपनो स्वरूप ध्याऊंजी; मैं देखूं निज दीदार, औरका ध्यान मिटाऊंजी; मैं मिनखा देहकूं पाय, कबी नहीं अफल गमाऊंजी; मैंने कहे गुरू महाराज, सोहंका ध्यान लगाऊंजी; मैं सुनी शास्त्रकी बात, गुरू एक मिल गये नांमीजी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमी जी ॥ २ ॥ नहीं गुरूका दोष, दीया मुज उत्तम ज्ञानेजी; मन दाबियां होगा ध्यान, सबी ऐ शास्त्र वखानेजी; मैं मन घोरेकूं पकर, लात हूं अबी ठिकांनें जी; मेरे चढी ज्ञानकी छाक, हिताहित खूब पिछाने जी; मुज कौन सके भरमाय, कौन मेरे पाखंड मांनेजी; मेरे वरस्या अमृत मेह, ताल भरगये सिरांनें जी;मैं सूतो सुमता सेज, कुमत नहीं सके जगानें जी; मेरे भये आनंद भरपूर, दूर सब गये अज्ञाने जी; मैं सुनी शास्त्रकी वात, गुरू एक मिल गये नांमी जी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमीजी ॥ ३ ॥ मैं कीया अगाऊ पाप, ऊपज्यो भरतके मांई जी; पुन संचिया नहीं पूर, रह्यौ नहीं देव सहाईजी; प्रभुको दूर भयो रहवास, हूं पिण सकूं न आईजी; करूं षट्मासीका कोल, सासा शुद्ध ध्यान लगाई जी; मेरे नहीं धोखाकी वात, नाथ तो दे दिखलाई जी; इन विध प्रभुका खोज, मिलेगा मुजके तांई जी; ध्यान विना नहीं ज्ञान, ज्ञान विन मुक्त न थाई जी;

सारो ॥ चं० ॥ ५ ॥ पिण गुरु प्रसादे पुन्य संजोगे, शुद्ध समकित पांमी; दर्शन प्यासी सदा उदासी, दर्शन विन स्वांमी ॥ चं० ॥ ६ ॥ पाखंड धर्म भर्म सब छोडी, शरण ग्रह्यौ थारो; भवोदधि तारो पार उतारो, वनणा अवधारो ॥ चं० ॥ ७ ॥ तूंहीज स्वामी अंतरजामी, पुन्य जोगे पायो; जन्म जरा मरणेसूं डर कर, तुम चरणे आयो ॥ चं० ॥ ८ ॥ मुज अरजी कर जोड़ी सगळी, कहीजै जिन आगै; सेवग तौ विललाट करत हैं, अविचल पद मांगै ॥ चं० ॥ ९ ॥ रामचंद ए अरजी भेजी, वनणा अवधारो; भव सागरथी तार प्रभूजी, चाकर चरणांरो ॥ चं० ॥ १० ॥ संवत उगणीसे नोके वरसे, सोझत चउमासे; धुर भाद्रव सुद पंचम गुरु वारे, स्वामी वृद्धिचंदजी पासे ॥ चं० ॥ ११ ॥ इति ॥

२मैं सुणी कंतकी वात, नार एक घाली घरमांई जी; धण छोड चल्यो परदेश पियो जा वस्यौ मंमाईजी ॥ए देशी॥

मैंने तज दीये घरवार, सुनो मेरे अंतरजामी जी; प्रभु दूर वसे परदेश, श्रीसीमंधर स्वामी जी ॥ टेर ॥ मैं तड़फत हूं दिन रैन, मोयकूं कर्म संतावेजी; मैं देऊं दिलकूं ज्ञान, जधी समता घर आवेजी; मेरे प्रभू वसे परदेश, सदा जां केवल पावेजी; प्रभु वसे समुद्रां पार, मिलन कैसे वन जावे जी; मेरे वीचमें पड़ रहे व्हाड़, मोय कुन पार लंघावेजी; नहीं दीवी विधाता पंख, देवत पिण नांही पुगावेजी; मेरे लग रही दिलके मांय, दर्श कहो कौन करावे जी; मेरा मान वसै प्रभु पास, रात नहीं निद्रा आवेजी; मैं सुनी शास्त्रकी वात, गुरु एक मिल गये

और नहीं वांछा मेरे, सरन हूं आयो तेरे; जाझका काग तुमारा, ज्ञानकी मांगूं धारा; ग्रथा मैं चरनही थारा वे ॥ सदा ० ॥ ४ ॥ इति ॥

---

१ राग सोरठ ॥

प्रभु म्हारे रहीजो जी हि वड़ारे मांय ॥ प्र० ॥ टेर ॥ मात तात त्रिया सुत सारे २, म्हारे नहीं रती एक चाय ॥प्र०॥१॥ पाखंड धर्म मिथ्यामति शास्त्र २, तिष्ठो मत मन वच काय ॥ प्र० ॥ २ ॥ तन धन सज्जन और पदारथ २, एक न आवे म्हारी दाय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रभूजीको ध्यान चिंतामनि सरी खो २, जो खो सब देवे टळाय ॥ प्र० ॥ ४ ॥ प्रभु पद पंकज मुज मन भमरो २, अंत समै रहो लपटाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ रामचंद तुझ कदमको चाकर २, दीजो प्रभु पार लंघाय ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ राग प्रभाती ॥

ज्यूं गावे ज्यूं चोखा प्रभु गुन, ज्यूं गावे ज्यूं चोखा छै ॥ ज्यूं० ॥ प्रभु गुन गावै सो मुख शिरोमन, नहींतर जांनूं बोखा छै; प्रभु आगै जोडे कर शिरोमन; नहीं तो मानूं डोका छै ॥ ज्यूं० ॥ १ ॥ प्रभु मुख जावे सोचरन शिरोमन, नहींतर थंभ सरोखा छै; जीभ शिरोमन प्रभु गुन गावे, प्रभु वच सुणे श्रवन अनोखा छै॥ज्यूं० ॥ २ ॥ आंख शिरोमन प्रभु रूप निहारे, टारे भव भव जोखा छै; मुनि राम कहै वो धनवंत साचो, जिण सुपातर पोखा छै ॥ ज्यूं० ॥ ३ ॥ इति ॥

३ राग भैरूं ॥

मैं दर्शन नहीं पायो जिनेश्वर ॥ मैं० ॥ टेर ॥ एकेंद्रीमें

मुनि रामचंद्रकी जोड़, कला सब के मन भाई जी
मैं सुनी शास्त्रकी वात, गुरू एक मिल गये नांमीजी;
प्रभु दूर वसै परदेश, श्रीसीमंधर स्वांमीजी ॥ ४ ॥इति॥

३ सदाशिव पारवती प्यारा, जटाविच वहत गंग धारा
॥ ए देशी ॥

सदा तुन जैन धर्म पाळो, हिंसाके पंथ मती चालो ॥ ॥ टेर ॥ अजी काशी देश सुहांमणो स कांई, बनारसी सुखकार; अजी वामा रांणी जनमिया स कांई, पार्श्व नाम कुमार; एक दिन गंगा ऊपर आये, माताजी के लार; कमठकी देखी माया, तपै वो धूंणी लगायां, अंगका कहि ये मांनी, दीखे तूं खरा अज्ञानी, लकड़में जले छै प्रानी वे ॥ सदा० ॥ १ ॥ अजी कुनसा नाग जलै लकड़में, हमकों आंखों दिखाय; अजी प्रभुजी लकड़ फाड़ दिखाये, देखे दुनियां आय; रे हत्यारा नाग जलाया, प्रभु दीये मंत्र सुनवाय, नागकूं सुर पद दीधा, तापस तो रस्ता लीधा, वहोतसा मनमें जळिया, मुल्कसें भाग निकळिया, प्रभूसें पाखंड गळिया वे॥स०॥२॥ अजी मरके कमठ हुवे मेघमाली, प्रभु भये अनगार; अजी मेह वरसाया प्रभू न चळिया, रचिया फुंणही हजार; धरणेंद्र पद्मावती आये, सुण्यो जहां णमुक्कार; आयके शीश नमाये, प्रभूकूं अधर उठाये; कहां वो दुष्टही देवा, पावेगा कीधा जेवा; प्रभूकी करे छै सेवा वे ॥ स० ॥ ३॥ अजी पार्श्व केवल पामिया स कांई, तीर्थ थाप्या च्यार; अजी पार्श्व प्रभू घावा घणा स कांई, जांणे सहू संसार; मुनि रामचंद्रकी एही अर्जी, करियो भवोदधि पार;

ख्याल ॥

१ हां ए सखी तूं आजा रेजा लाल पिलंग लचका करै॥ ॥ ए देशी ॥

श्रीशांतिप्रभुजी, संत वरते जी थांरे नांवसूं॥श्री०॥टेर॥ उदर आये जब मरी मिटाई, वरतायो सुख सारे; संकट भंजन बिरद तुमारो, शास्त्र मुनींद्र पुकारे; सुख संपतकूं आपे प्रभुजी, आपद सहू निवारे जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ ताव तप तौ कदेन आवे, सीयो दाउ नहीं ठैरे; शिर वेदन तौ उभी न रेवे, दुश्मन छोडे वैरे; भूत प्रेत तौ अलगही नासे, अमृत होवे जैर जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष परचो थांरो प्रभुजी, वैड़ी जावे भाज; शुद्ध मनसेती सिमरै तोनें, सुधरे सगळा काज; अष्ट महाभय दूर पलावे, आदर देवे राजजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ शांति कर तो बिरद तुमारो, सबही रोग मिटावो; ग्राम गयोड़ो कुशलै आवै, होवे हर्ष वधावो; दिन दिन लक्ष्मी वधै चौगणी, पावे राज पसावो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ बांझ कामणी पूत लडावे, निर्धनिया धन पावे; अंधा बहिरा होवे ज अच्छा, पापी पाप गमावे; रामचंद्र कहे नित्य सुख वरतै, संत प्रभूनें ध्यावे जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

पायो शरन तिहारो रे, धन भाग हमारो ॥ पा० ॥

काल अनादी, जनम मरन करवायो; विकलेंद्री तिर्यंच पंचेंद्री, ज्ञान विना दरसायो ॥ मैं० ॥ १ ॥ नर सुर नरक धस्यौ विन ज्ञाने, यूंही जनम गमायो; पायो नर भव सत्‌गुरु अवके, जिनवर धर्म सुणायो ॥ मैं० ॥ २ ॥ धर्म अधर्म आज्ञा अनाज्ञा, तत्व धर्म दिखायो; सम्यक्‌ दर्शन देव हमारे, सम्यक्‌ ज्ञान गुरुरायो; मैं दर्शन अव पायो जिनेश्वर ॥ मैं० ॥ ३ ॥ सम्यक्‌ चारित्र धर्म धार्‍यूं, श्री-गुरुदेव दरसायो; रामचंद्र कहै प्रभु निज घटमें, नहीं कछ दूर बतायो ॥ मैं० ॥ ४ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ लागे लठ लागे लठ लागे लठरे ॥ ए देशी ॥

लागी धुन, लागी धुन, लागी धुन रे; प्रभुजीके नाम-की तो लागी धुन रे; प्रभुजीके चरना लागो मन रे ॥ ॥ टेर ॥ तिसेकूं पांनी, भूंगेकूं वांनी, भुखेकूं प्यारो जैसे अनरे ॥ ला० ॥ १ ॥ कामीकूं नारी नें नारीकूं भरता, चातक चाहे जैसे घन रे ॥ ला० ॥ २ ॥ राजाकूं राज स-तीकूं लाज, गाज प्यारो जैसे मोरन रे ॥ ला० ॥ ३ ॥ ज्याप गाय जाय वनमें चरत हैं, सूरत वसे ऐसे घछरन रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ नटी नचै वरत पर नानां, विक्षेप करै नहीं तिल तन रे ॥ ला० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहै प्रभु चरनांमें लागो, जांको मन सो धन धन रे ॥ ला० ॥ ६ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ हां ए सखी तूं आजा रेजा लाल पिलंग लचका करै॥
॥ ए देशी ॥

श्रीशांतिप्रभुजी, संत वरते जी थांरे नांवसूं॥श्री०॥टेर॥ उदर आये जब मरी मिटाई, वरतायो सुख सारे; संकट भंजन बिरद तुमारो, शास्त्र मुनींद्र पुकारे; सुख संपतकूं आपे प्रभुजी, आपद सहू निवारे जी ॥ श्री० ॥ १ ॥ ताव तप तौ कदेन आवे, सीयो दाउ नहीं ठैरे; शिर वेदन तौ उभी न रेवे, दुश्मन छोडे वैरे; भूत प्रेत तौ अलगही नासे, अमृत होवे जैर जी ॥ श्री० ॥ २ ॥ प्रत्यक्ष परचो थांरो प्रभुजी, वैड़ी जावे भाज; शुद्ध मनसेती सिमरै तोनें, सुधरे सगळा काज; अष्ट महाभय दूर पलावे, आदर देवे राजजी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ शांति कर तो बिरद तुमारो, सबही रोग मिटावो; ग्राम गयोड़ो कुशलै आवै, होवे हर्ष वधावो; दिन दिन लक्ष्मी वधै चौगणी, पावे राज पसावो जी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ बांझ कामणी पूत लडावे, निर्धनिया धन पावे; अंधा बहिरा होवे ज अच्छा, पापी पाप गमावे; रामचंद्र कहे नित्य सुख वरतै, संत प्रभूनें ध्यावे जी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

पायो शरन तिहारो रे, धन भाग हमारो ॥ पा० ॥

॥टेर॥ तूं जिनराज काजको कारक, तारक त्रिभुवन हारो रे; टारक कुमतारो ॥पा० ॥१॥ पतित उधारन पारनवारो, सारन पर कज वारोरे; टारन जन मारो ॥ पा० ॥ २ ॥ तूं पूजनीक सकल इंद्रांको, शरनको राखन हारो रे; धारो विरद विचारो ॥ पा० ॥ ३ ॥ तुम विन कुंण तारक छे वीजो, दीजो पार उतारो रे; कीजो वेगं उवारो॥पा०॥४॥ रामचंद आनंद धर गावे, जिनंद प्रानसें प्यारो रे; मुज जन्म सुधारो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

१ आरती ॥

जय जय उँकारा, नमो जिन उँकारा; नाहैं पद न्यारा, योगीश्वर प्यारा, अनाद्यनंतरूपाय, पंचाक्षर धारा, भज भज भज जिन देव ॥ टेर ॥ काशी देश बनारसी, नगरी अति राजे; प्रभु नगरी अति राजे, अश्वसेन वामा नंदन २, फणी लांछन छाजे ॥ भ० ॥ १ ॥ एकानन चतुरानन समोसरण गाजे ॥ प्रभु स० ॥ धर्म चक्र गगने गत २, पाखंड सब भाजे ॥ भ० ॥ २ ॥ अशोक वृच्छ शिर पर, छत्र चमर सोहे ॥ प्रभुछ० ॥ प्रभुजीनो रूप निरखतां, जिनजीनो रूप निरखतां, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भ० ॥३॥ हस्तायुध वाहन विन, अंबर नहीं अंगे, प्रभु वसन नहीं अंगे; केवल धारी संशयटारी २, नारी नहीं संगे, माया नहीं संगे ॥ भ० ॥ ४ ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर, तूं शंकर धाता ॥ प्रभु तूं० ॥ शुद्ध प्रकाशा आशा रहिता २, तुमही पितु माता ॥ भ० ॥ ५ ॥ तो महिमा कुंन गाने समरथ, तूं देवन देवा, ॥ पार्श्व तूं दे० ॥ जिण जिण रूप देखूं तिण रूपे, प्रभुजीनो रूप देखूं तिण रूपे, सारे तुम

सेवा ॥ भ० ॥ ६ ॥ पार्श्व प्रभूकी आरति, जे शुद्ध मन ध्यावे; निर्मल चित्त गावे; भनत मुनि रामेंदु, वांछित फल पावे, सद्गतिमें जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे स्तवननामकं चतुर्थं प्रकरणम् ॥ ४ ॥

---

५ स्वाध्याय—गीत ॥

१ देशी गजरेकी ॥

गावो गावोरी पूज्य जयमल्लजी गुण गावो, सुख पावोरी घर बैठां होय वधावो ॥ गा० ॥ १ ॥ श्रीसंघनो काज करावो, और भक्तकी भीड़ मिटावो ॥ गा० ॥ २ ॥ दुश्मन अलग भगावो, वळी आदर देवे नर रावो ॥ गा० ॥ ३ ॥ झगडे जीत रखावो, कोइयन करे जग दावो ॥ गा० ॥ ४ ॥ पुत्र कलत्र मित्र मिलावो, भूत प्रेतनें दूर नसावो ॥ गा० ॥ ५ ॥ अड्यो काम न रक्खावो, वळी बिगड्यो काम वणावो ॥ गा० ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष परचो दिखावो, वळी भूलो राह वतावो ॥ गा० ॥ ७ ॥ मुनि राम करे छै जतावो, म्हे तो देख्यो प्रगट प्रभावो ॥ गा० ॥ ८ ॥ इति ॥

२ रंगरेज रंगीला कांचूं रंग दे रे म्हांने केसर्‍या ॥ ए देशी ॥

अरिहंत देवनें ओळख्या स रे, हुवो परम कल्यांन; द्वादश गुण कर शोभता स रे, ते अरिहंत जांन रे ॥ गुरु ज्ञान नगीना, भलो रे वतायो मारग मोखनो ॥ टेर ॥ १ ॥

॥टेर॥ तूं जिनराज काजको कारक, तारक त्रिभुवन हारो रे;टारक कुमतारो॥पा० ॥१॥ पतित उधारन पारनवारो, सारन पर कज धारोरे; टारन जन मांरो ॥ पा० ॥ २ ॥ तूं पूजनीक सकल इंद्रांको, शरनको राखन हारो रे;धारो विरद विचारो ॥ पा० ॥ ३ ॥ तुम विन कुंण तारक छै बीजो, दीजो पार उतारो रे; कीजो वेगं उवारो॥पा०॥४॥ रामचंद आनंद धर गावे, जिनंद प्रानसें प्यारो रे; मुज जन्म सुधारो ॥ पा० ॥ ५ ॥ इति ॥

१ आरती ॥

जय जय उँकारा, नमो जिन उँकारा; नाहे पद न्यारा, योगीश्वर प्यारा, अनाद्यनंतरूपाय, पंचाक्षर धारा, भज भज भज जिन देव ॥ टेर ॥ काशी देश बनारसी, नगरी अति राजे; प्रभु नगरी अति राजे, अश्वसेन वामा नंदन २, फणी लांछन छाजे ॥ भ० ॥ १ ॥ एकानन चतुरानन समोसरण गाजे ॥ प्रभु स० ॥ धर्म चक्र गगने गत २, पाखंड सब भाजे ॥ भ० ॥ २ ॥ अशोक वृच्छ शिर पर, छत्र चमर सोहे ॥ प्रभुछ० ॥ प्रभुजीनो रूप निरखतां, जिनजीनो रूप निरखतां, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भ० ॥३॥ हस्तायुध वाहन विन, अंवर नहीं अंगे, प्रभु वसन नहीं अंगे; केवल धारी संशयटारी २, नारी नहीं संगे, माया नहीं संगे ॥ भ० ॥ ४ ॥ तूं ईश्वर परमेश्वर, तूं शंकर धाता ॥ प्रभु तूं० ॥ शुद्ध प्रकाशा आशा रहिता २, तुमही पितु माता ॥ भ० ॥ ५ ॥ तो महिमा कुंन गाने समरथ, तूं देवन देवा, ॥ पार्श्व तूं दे० ॥ जिण जिण रूप देखूं तिण रूपे, प्रभुजीनो रूप देखूं तिण रूपे, सारे तुम

सेवा ॥ भ० ॥ ६ ॥ पार्श्व प्रभूकी आरति, जे शुद्ध मन ध्यावे; निर्मल चित्त गावे; भनत मुनि रामेंदु, वांछित फल पावे, सद्गतिमें जावे ॥ भ० ॥ ७ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे स्तवननामकं चतुर्थं प्रकरणम् ॥ ४ ॥

५ स्वाध्याय—गीत ॥

१ देशी गजरेकी ॥

गावो गावोरी पूज्य जयमल्लजी गुण गावो, सुख पावोरी घर बैठां होय वधावो ॥ गा० ॥ १ ॥ श्रीसंघनो काज करावो, और भक्तकी भीड़ मिटावो ॥ गा० ॥ २ ॥ दुश्मन अलग भगावो, वळी आदर देवे नर रावो ॥ गा० ॥ ३ ॥ झगडे जीत रखावो, कोइयन करे जग दावो ॥ गा० ॥ ४ ॥ पुत्र कलत्र मित्र मिलावो, भूत प्रेतनें दूर नसावो ॥ गा० ॥ ५ ॥ अड्यो काम न रक्खावो, वळी बिगड्यो काम वणावो ॥ गा० ॥ ६ ॥ प्रत्यक्ष परचो दिखावो, वळी भूलो राह वतावो ॥गा०॥ ७ ॥ मुनि राम करे छै जतावो, म्हे तो देख्यो प्रगट प्रभावो ॥ गा० ॥ ८ ॥ इति ॥

२ रंगरेज रंगीला कांचूं रंग दे रे म्हांने केसऱ्या॥ए देशी॥

अरिहंत देवनें ओळख्या स रे, हुवो परम कल्यांन; द्वादश गुण कर शोभतास रे, ते अरिहंत जांन रे ॥ गुरु ज्ञान नगीना, भलो रे वतायो मारग मोखनो ॥ टेर ॥ १ ॥

निरलोभी निरलालची स रे, ते गुरुलीधा धार; आप तिरे पर तारता स रे, ते साचा अणगार ॥ गु० ॥ २ ॥ भेषधारी छारी दिया स रे, देखी अंदर ज्ञान; भेख देख भूलो मती स रे, लीजो हीये पिछांण रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ वीतरागरा वचनमें स रे, हिंसा न करणी मूल; हिंसा मांहे धर्म परूपे, है जांके मुख धूळ रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु घम कारणे स रे, हिंसा करसी कोय; ते रुळसी च्यारूं गते स रे, लीजो सूतर जोय रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ दया दान उथापक योले, वीर गया छै चूक; ते मर दुर्गति जावसी स रे, करसी कूकाकूक रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ समकित दीधी मुझ गुरु स रे, जीव अजीव ओळखाय; तस थावर जाण्यां विना स रे, कहो समकित किम आय रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म सयही कहे स रे, नहीं जांणे छः काय; तो धर्म हुवे किण रीतरूं स रे, जोयो आगम मांय रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कषाय परगत ओळखी स रे, लीजो समकित सार; राम कहे पांम्यो नहीं स रे, विन समकित कोई पार रे ॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु प्रसाद समकित लही स रे, गुरु सम अवर न कोय; गुरुसूं बेमुख जे हुवे स रे, तेहनी गत किम होय रे ॥ गु० ॥ ॥ १० ॥ उगणीसेरा आठमें स रे, नागौर शहर चौमास; कातिक वद पांचम किवी स रे, स्वांमी वृद्धिचंदजी पास रे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

३ कांटो साले रे ॥ ए देशी ॥

मास खमणरे पारणे, मुनि आया बांमण गेह; तपसी मोटा रे, मोटा मोटा रे छ कायारा पीर, तपसी मोटा रे ॥ ॥ १ ॥ देखाव्यो सत गुरु भणी, गुरु बोल्या तिणवार ॥ ॥ त० ॥ कुंण थांनें आहार वेराविया, कुंण मिलियो

दातार ॥ त० ॥ २ ॥ जैर हलाहल छै बुरो, ओतो नांखे ला आंतरा तोड़ ॥ त० ॥ तिणकारण नहीं खावसो, ओतो परठो निरवद्य ठोड़ ॥ त० ॥ ३ ॥ एक बिंदु परठियो, दीठो अनरथकेर ॥ त० ॥ नाके सळ नहीं घालियो, पी गया हलाहल जैर ॥ त० ॥ ४ ॥ अनशन करि सुरवर थया, सर्वार्थ सिद्ध विचाल ॥त०॥ गुरु कहे निज शिष्य तेड़नें, तुमे करो मुनिकी संभाल ॥ त० ॥ ५ ॥ कलेवर देखि मुनि आविया, थया गुरु अधिक उदास ॥ त० ॥ शिष्य गमन गुरु देखियो, पांमी सुखनी रास ॥ त० ॥ ६ ॥ गुणवंतना गुण गावतां, तूटे कर्मांकी कोड़ ॥ त०॥ धर्मरुची मुगते गया, मुनि राम वंदे कर जोड़ ॥ त०॥ ७ ॥ इति ॥

४ देशी घूमरनी ॥

मोने सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां; म्हे तो मन वंछित सुख पासां हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां ॥ टेर ॥ आज शहरमें सत गुरुजी आया, ए तो पंडित पुरुष सवाया हे माय; पाखंड मतनें हराय नसाया, आं तो छोड्या क्रोध मान माया हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मन मान्या पाशा मुझ ढळिया, आज मन वांछित मुझ फळिया हे माय; राज पायो जिम हुई रंग रळियां, वाट जोतां सत गुरु मिलिया हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ बाल ब्रह्मचारी न परचो नारी, ऐंरी कैणी रैणी एकतारी हे माय; आतम निंदा परनिंदा निवारी, आंरी सूरत मोहणगारी हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ सत गुरु जीवाजीव बताया, पुन्य नें पाप दिखाया हे माय; नव तत्व सत गुरु उरमें धराया, म्हांने षद्द्रव्य

निरलोभी निरलालची स रे, ते गुरुलीधा धार;आप तिरे पर तारता स रे, ते साचा अणगार ॥ गु० ॥ २ ॥ भेषधारी छारी दिया स रे, देखी अंदर ज्ञान; भेख देख भूलो मती स रे, लीजो हीये पिछांण रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ वीतरागरा वचनमें स रे, हिंसा न करणी मूल; हिंसा मांहे धर्म परूपे, है जांके मुख धूळ रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु धम कारणे स रे, हिंसा करसी कोय; ते रुळसी च्यारूं गते स रे, लीजो सूतर जोय रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ दया दान उथापक योले, वीर गया छै चूक; ते मर दुर्गति जावसी स रे, करसी कूकाकूक रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ समकित दीधी सुध्र गुरु स रे, जीव अजीव ओळखाय; तस थावर जाण्यां विना स रे, कहो समकित किम आय रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म सबही कहै स रे, नहीं जांणे छः काय; तो धर्म हुवे किण रीतरूं स रे, जोयो आगम मांय रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कषाय परगत ओळखी स रे, लीजो समकित सार; राम कहे पांम्यो नहीं स रे, विन समकित कोई पार रे ॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु प्रसाद समकित लही स रे, गुरु सम अवर न कोय; गुरुसूं येमुख जे हुवे स रे, तेहनी गत किम होय रे ॥ गु० ॥ ॥ १० ॥ उगणीसेरा आठमें स रे, नागौर शहर चौमास; कातिक वद पांचम किवी स रे, स्वांमी वृद्धिचंदजी पास रे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

३ कांटो साले रे ॥ ए देशी ॥

मास खमणरे पारणे, मुनि आया यांमण गेह; तपसी मोटा रे, मोटा मोटा रे छ कायारा पीर, तपसी मोटा रे॥ ॥ १ ॥ देखाव्यो सत गुरु भणी, गुरु योल्या तिणवार ॥ ॥ त० ॥ कूण धांनें आहार येरायियो, कूण मिलियो

दातार ॥ त० ॥ २ ॥ जैर हलाहल छै बुरो, ओतो नांखे ला आंतरा तोड़ ॥ त० ॥ तिणकारण नहीं खावसो, ओतो परठो निरवद्य ठोड़ ॥ त० ॥ ३ ॥ एक बिंदु परठियो, दीठो अनरथकेर ॥ त० ॥ नाके सळ नहीं घालियो, पी गया हलाहल जैर ॥ त० ॥ ४ ॥ अनशन करि सुरवर थया, सर्वार्थ सिद्ध विचाल ॥त०॥ गुरु कहे निज शिष्य तेड़नें, तुमे करो मुनिकी संभाल ॥ त० ॥ ५ ॥ कलेवर देखि मुनि आविया, थया गुरु अधिक उदास ॥ त० ॥ शिष्य गमन गुरु देखियो, पांमी सुखनी रास ॥ त० ॥ ६ ॥ गुणवंतना गुण गावतां, तूटे कर्मांकी कोड़ ॥ त०॥ धर्मरुची मुगते गया, मुनि राम वंदे कर जोड़ ॥ त०॥ ७ ॥ इति ॥

४ देशी घूमरनी ॥

मोने सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां; म्हे तो मन वंछित सुख पासां हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां ॥ टेर ॥ आज शहरमें सत गुरुजी आया, ए तो पंडित पुरुष सवाया हे माय; पाखंड मतनें हराय नसाया, आं तो छोड्या क्रोध मान माया हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मन मान्या पाशा मुझ ढळिया, आज मन वांछित मुझ फळिया हे माय; राज पायो जिम हुई रंग रळियां, वाट जोतां सत गुरु मिलिया हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ बाल ब्रह्मचारी न परचो नारी, ऐंरी कैणी रैणी एकतारी हे माय; आतम निंदा परनिंदा निवारी, आंरी सूरत मोहणगारी हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ सत गुरु जीवाजीव बताया, पुन्य नें पाप दिखाया हे माय; नव तत्व सत गुरु उरमें धराया, म्हांने षद्द्रव्य

निरलोभी निरलालची स रे, ते गुरुलीधा धार;आप तिरे पर तारता स रे, ते साचा अणगार ॥ गु० ॥ २ ॥ भेषधारी छारी दिया स रे, देखी अंदर ज्ञान; भेख देख भूलो मती स रे, लीजो हीये पिछांण रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ वीतरागरा वचनमें स रे, हिंसा न करणी मूल; हिंसा मांहे धर्म परूपे, है जांके मुख धूळ रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ देव गुरु धम कारणे स रे, हिंसा करसी कोय; ते रुळसी च्यारूं गते स रे, लीजो सूतर जोय रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ दया दान उथापक योले, वीर गया छै चूक; ते मर दुर्गति जावसी स रे, करसी कूकाकूक रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ समकित दीधी मुझ गुरु स रे, जीव अजीव ओळखाय; तस थावर जाण्यां विना स रे, कहो समकित किम आय रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म सबही कहै स रे, नहीं जांणे छः काय; तो धर्म हुवे किण रीतरूं स रे, जोवो आगम मांय रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ कषाय परगत ओळखी स रे, लीजो समकित सार; राम कहे पांम्यो नहीं स रे, विन समकित कोई पार रे ॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु प्रसाद समकित लही स रे, गुरु सम अवर न कोय; गुरुसूं बेमुख जे हुवे स रे, तेहनी गत किम होय रे ॥गु०॥ ॥ १० ॥ उगणीसेरा आठमें स रे, नागौर शहर चौमास; कातिक वद पांचम किवी स रे, स्वांमी वृद्धिचंदजी पास रे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

३ कांटो साले रे ॥ ए देशी ॥

मास खमणरे पारणे, मुनि आया बांमण गेह; तपसी मोटा रे, मोटा मोटा रे छ कायारा पीर, तपसी मोटा रे॥ ॥ १ ॥ देखाव्यो सत गुरु भणी, गुरु बोल्या तिणवार ॥ ॥ त० ॥ कुंण थांनें आहार वेरावियो, कुंण मिलियो

दातार ॥ त० ॥ २ ॥ जैर हलाहल छै बुरो, ओतो नांखे ला आंतरा तोड़ ॥ त० ॥ तिणकारण नहीं खावसो, ओतो परठो निरवद्य ठोड़ ॥ त० ॥ ३ ॥ एक बिंदु परठियो, दीठो अनरथकेर ॥ त० ॥ नाके सळ नहीं घालियो, पी गया हलाहल जैर ॥ त० ॥ ४ ॥ अनशन करि सुरवर थया, सर्वार्थ सिद्ध विचाल ॥त०॥ गुरु कहे निज शिष्य तेड़नें, तुमे करो मुनिकी संभाल ॥ त० ॥ ५ ॥ कलेवर देखि मुनि आविया, थया गुरु अधिक उदास ॥ त० ॥ शिष्य गमन गुरु देखियो, पांमी सुखनी रास ॥ त० ॥ ६ ॥ गुणवंतना गुण गावतां, तूटे कर्मांकी कोड़ ॥ त०॥ धर्मरुची सुगते गया, मुनि राम वंदे कर जोड़ ॥ त०॥ ७ ॥ इति ॥

४ देशी घूमरनी ॥

मोने सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां; म्हे तो मन वंछित सुख पासां हे माय, सत गुरु वंदन म्हे जासां ॥ टेर ॥ आज शहरमें सत गुरुजी आया, ए तो पंडित पुरुष सवाया हे माय; पाखंड मतनें हराय नसाया, आं तो छोड्या क्रोध मान माया हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मन मान्या पाशा मुझ ढळिया, आज मन वांछित मुझ फळिया हे माय; राज पायो जिम हुई रंग रळियां, वाट जोतां सत गुरु मिलिया हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ बाल ब्रह्मचारी न परचो नारी, ऐंरी कैणी रैणी एकतारी हे माय; आतम निंदा परनिंदा निवारी, आंरी सूरत मोहणगारी हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ सत गुरु जीवाजीव बताया, पुन्य नें पाप दिखाया हे माय; नव तत्व सत गुरु उरमें धराया, म्हांने षट्द्रव्य

प्रकट सुणाया हे माय ॥ स० ॥ ४ ॥ व्याख्यान मीठो जिम अमृत धारा, सदा पुंडरीक कमल ज्यूं न्यारा हे माय; अल्पाहारा रस जील्या जिभ्यारा, मोनें लागे प्राणसूं प्यारा हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ जिम जिम कल्पका दिन नैड़ा आवै, मोनें खाणो पीणो नहीं भावे हे माय; काम काज तो नांहि सुहावे, वळी नैंणां नींद नहीं आवे हे माय॥स०॥६॥ पेटी बांधनें विहार करियो, मो मन सत गुरु हरियो हे माय; म्हारो हिवड़ो जावे भरियो, मांनुं उलटे जोरावर दरियो हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ धन्य जिके नर नित्य सुणे वखांण, धन्य गुरु मुख करे पचक्खाण हे माय; धन्य चले गुरु वचन प्रमाण, धन्य सेवा करे चतुर सुजांण हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ गुरु विन ज्ञान न गुरु विन ध्यान, म्हांनें गुरु विन नहीं मिले मान हे माय; सत गुरुनो विनो करे गुणवान, तिके पांमे अमर विमान हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ समत उगणीसे साते कही गाई, म्हांने पाली पीठ सुहाई हे माय; रामचंद्र गुरु महिमा सुनाई, आ तो मास फागुण वदमांही हे माय ॥ स० ॥ १० ॥ इति ॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

मोनें सत गुरु बोली प्यारी लागे हे माय, मोनें सत गुरु चाल सुहावे हे माय; सत गुरु वंदन म्हे जासां, म्हे तो जासां ने शीश नमासां हे माय, म्हे तो मन वांछित सुख पासां हे माय ॥ स० ॥ टेर ॥ जीव दया वीस विश्वा पाळे, ऐ तो निरवद्य वदे मुख भाषा हे माय ॥ स० ॥ विना दीये तृणमात्र न लेवे, जांरे घटमें प्रकट उजासा हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ शीलव्रत पाळे चित्त चोखे, ऐ तो

भूल न करे सुख हासा हे माय ॥ स० ॥ आज्ञा प्रमांणे उपग्रहन रक्खे, जांरे नहीं ममत एक मासा हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ पंच महाव्रत निर्मल पाळे, ओ तो छोडी जगतकी आशा हे माय ॥ स० ॥ इस भवमें तो महिमा फैली, परभव मुक्तिमें वासा हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ वार वार म्हांरे नगर पधारो, ओ तो होसी धर्म प्रकाशा हे माय ॥ स० ॥ राम मुनी कहे सत गुरु महिमा, म्हे तो ऊगे दिन नित्य गासां हे माय ॥ स० ॥ ४॥ इति ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

गणधर ग्यारे नित नित नमसां, म्हे तो करसां सत गुरु सेवा हे माय; शीश नमास्यां पाये पड़स्यां, म्हे तो गुण मुख गास्यां नितमेवा हे माय ॥ ग० ॥ टेर ॥ श्रीतीर्थंकर गणधर पद मोटे, म्हांने लागे जीवसें प्यारा हे माय; प्रथम संघयन संस्थान प्रथम छै, ए तो अद्भुत रूप उदारा हे माय ॥ ग० ॥ १ ॥पूर्व चतुर्दश धारक सारे, दृष्टिवादके स्वामी हे माय; संदेह टारक ज्ञान च्यार धारक, गणधर सब शिवगामी हे माय ॥ ग० ॥ २ ॥ केवल विन ज्ञान मुहूर्तमांहे, आवे गणधर लब्धिथी सारो हे माय; गणधर पूछै श्रीअरिहंत भाखे, ज्यांरो उपदेश लागे अति प्यारो हे माय ॥ ग० ॥ ३ ॥ तेसठ श्लाघा पुरुप प्रधान, जांकी कथा गणधर भाखे हे माय; मनका संदेह तो गणधर टारे, करे गणधर जगत प्रकासे हे माय ॥ ग० ॥ ४ ॥ लब्धिपात्र और निर्मल गात्र, ज्यांका गुणकीयां बुद्धि वाधे हे माय; घर बैठांही पौरस सोवन, वळी अन्न धन लछमी लाधे हे माय ॥ग०॥५॥ तद्भव शिवगामी अरिहंत गणधर,

पुन्य स्कंध उत्कृष्ट हे माय; मुनि राम कहे कष्ट मोचक तुम हो, ज्ञानावरणादि टारो कर्म अष्ट हे माय॥ग०॥६॥इति॥

७ नटवा कर जोगिको वेस आगरे चल रे ॥ ए देशी ॥

चेतन धर मुनिवरका वेस, मुगतनें चाल रे; हां रे मुगतनें चाल रे,हां रे मुगतनें,चाल, चेतन दे सत गुरु उपदेश, मुगतनें चाल रे ॥ टेर ॥ पंच महाव्रत धारके स रे, समति गुपति प्रतिपाल, मानों साची कूं, त्रयोदश चारित शुद्ध मने स रे, करत पतनकूं गाल ॥ चे० ॥ १ ॥ सात वीस गुण मूल है सरे, उत्तर गुण दश होय; मांनो साचीकूं, शुद्ध मन सेती पाळजो स रे, राग द्वेष दोय खोय॥चे०॥२॥ गीदड़पणो तूं छोड दे स रे, सिंघपणें शुद्र चाल, मांनो साचीकूं, गीदड़पणे तूं चालसी स तो, खोटा होवे हवाल ॥ चे० ॥ ३ ॥ गर्दभ खेत खावेिया स रे, ओढ सिंघकी खाल, मानो साचीकूं, खबर पड़ी जब लोकनें स रे, मार्‍यौ बुरे हवाल ॥चे०॥४॥ सिंघपणे जो पाळसी स रे, तो लोक करे गुण ग्राम, मानो साचीकूं, मुक्त हुवे जग जस रहे स रे, इम बोले मुनि राम ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

८ थारे तो कारण बूंदी गयो थो, बूंदीसें फूंदी लायो नांदांनड़ी रंग लागो; केसरको पट लागो नांदांनड़ी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

मुक्तिके कारन संयम लीयो छै, संसारनें त्याग दीयो, धर्मको रंग लागो, समकितको पट लागो, धर्मको रंग लागो ॥ टेर ॥ १ ॥ मुक्तिके कारन चारित्र पाळूं छूं, दोष तो सगळा टाळूं ॥ ध० ॥ २ ॥ मुक्तिके कारण तप करूं छूं,

कर्मसूं खूब लरूं छूं ॥ ध० ॥ ३ ॥ मुक्तिके कारण ज्ञान पढूं छूं, पाखंडसूं जाय लडूं ॥ ध० ॥ ४ ॥ मुक्तिके कारण इंद्रिय दमूं छूं, क्रोधादिकनें उपशमूं ॥ ध० ॥ ५ ॥ मुक्तिके कारण कर्म हटाऊं, मुनि राम कहे प्रभु गुण गाऊं ॥ध०॥६॥इति॥

९ देशी जलेकी ॥ जलो म्हारी जोड रो उदिया पुर माले रे ॥

श्रेणिक रेवाडी चढ्यौ रे, दीठो मुनि वर एक; मुनि मन भावतो, मुझ मनडो मोह्यौ रे, शिव अब गावतो; अविचल हुय रह्यौ रे॥ टेर ॥ राजा मन अचरज हुवो रे २, मोह्यौ रूपनें देख ॥ मु० ॥ १ ॥ क्यूंथे संजम आदर्‍यौ रे २, मुनि कहे हूं छूं अनाथ ॥ मु० ॥ राजा बोले मुनिवर भणी रे २, हूं हूसूं थांरो नाथ ॥ मु० ॥ २ ॥ तूं पोते अनाथ छै रे २, होसी किणरो नाथ ॥ मु० ॥ राजा बोले मुनिवर भणी रे २, सुण राजा मोरी बात ॥ मु० ॥ ३ ॥ कौशांबीनो वासियो रे २, मुज घर धन अण पार ॥ मु० ॥ आंखतणी वेदन हुई रे २, आडो न आयो परिवार ॥ मु० ॥ ४ ॥ राजा सुणनें समजियो रे २, हुवो समकित धार ॥ मु० ॥ राम कहे मुनिवर भणी रे २, वंदूं वारं वार ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

१० आज शहरमें हो हंजा मारूं सी पड़े ॥ ए देशी ॥

स्वामी सुधर्मा हो वीरजीना पाटवी ॥ टेर ॥ सुधर्म स्वामी हो गणधर पांचमो, गुरु भेट्या वर्धमान दयालु, परम उदारी करूपे सूंदरूं, अनुत्तर सुर किण ज्ञान ॥ द० स्वा० ॥ १ ॥ कोलास ग्रामें हो धमिल, तुम पिता भ दिला तुमची मात ॥ द० ॥ वरस पचासे हो घरमें तुम रह्या, भेट्या पछे जगनाथ ॥ द० स्वा ॥ २ ॥ सो वरसांनो हो

सर्व आऊखो, केवल वरस आट ॥ द० ॥ सुर नर इंद्र सेवे तुम चरणनुं, आप छाजो प्रभूजीरे पाट ॥ द० स्वा० ॥ ३ ॥ जंबू सरीखा हो शिष्य आप रे, वैरागी गुण पात्र ॥ द०॥ रमणी अष्ट हो छिन्नूं कोड़ दाय जो, परण तजी जिण रात्र ॥ द० स्वा० ॥ ४ ॥ सोळे वरसांना हो संजम आदरयो, केवल वरस चमाल ॥ द० ॥ चरम केवली हो जंबू शिव गया, असी वरस आयू रसाल ॥द०स्वा०॥५॥ जंबू स्वामी हो सर्व पूछा करी, भाखी सुधर्मा स्वाम ॥ ॥ द० ॥ ऐसा मुनि वर मन वच कायसूं, नित्य वंदे मुनि राम ॥ द० स्वा० ॥ ६ ॥ इति ॥

११ कठोडेववाउं लपकरिया थारी एलची रे ॥ ए देशी ॥

धन्नोजी तो न्हावे, न्हवावे जांकी कांमनी रे, नैंणांमें ढळ रह्यौ नीर, धन्नोजी तौ पूछै, ऐ पूंछै आंसूं हाथसूं रे, कहो किम थया दलगीर; अरजी सुण लीजै, न दीजै मोसो एहवो रे, कह्यां विन रह्यो रे न जाय, बंधव मोसो सह्यो रे न जाय ॥ टेर ॥ १ ॥ राजाजी पधाऱ्या जिण पूठे कांमण दिन प्रते रे, एक एक छोडे जी वीर; वीर पूरो पड़सी वीरो जी संयम धारसी रे, इण मुद्दे नैंणांमें नीर ॥ अ० ॥ २ ॥ धन्नोजी तो बोले छै वीरो कायर ताहरो रे, त्यागीनें किसो जी विचार; म्हांरे तो बंधवनी प्रीतमजी होड नां करो रे, देखां छोडोनी एकण वार ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्नोजी तो भाखे हूं वीरो तूं मुझ बैनड़ी रे, लो मैं छोडी एकण वार; हांसीमें कांई छोडो साहिबजी गुंनो बगसिये रे, क्यूं देवो चांदी पर खार ॥ अ० ॥ ४ ॥ धणनें तो समझाई वकारयौ आई सिंघनें रे; दोऊं लीनो संयम भार, वीर

प्रभूनें भेट्या कीयो मासे मासे पारणो रे, संयम वरसजी बार ॥ अ० ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध तो पौंचे ए भव कर मुक्त सिधावसी रे, मुनि राम कहे धन्य मुनि राय; उगणीसेरा तीसे नागोर शेषे कालमें रे, मुनिना वंदो नित नित पाय ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

१२ असवारीनी देशी ॥

श्रेणिक पूछे वीरजी भाखे, उत्तम मुनि वर सारा; रजमें तज है तरतम जोगे, अधिक धन्नो अणगारा; धना मुनि धन मानव भव पायो, श्रीमुख यूं फुरमायो ॥ ध० ॥ १ ॥ श्रेणिक राजा आतम हित काजा, धन्ना मुनि पै आवे; शीश नमावे मुख गुण गावे, जोतां नृपति न थावे ॥ध०॥२॥ नार बतीसे अपछर सिरखी, धन्न बतीसे कोड़ो; संसारनें पूठ दीवी मुनिवरजी, शिवपुर सांमा दोडो ॥ध०॥३॥ निरंतर तप बेले बेले, पारणे उज्झित अहारो; वणिमग काग श्वान नहीं वंछै, किम तुम कंठ उतारो ॥ ध० ४ ॥ वार इकीस जलमांही धोई, ते अन्न खाई जल पीयो; ऐसो तप सुणी उर कंपे, धन्य धन्य थांरो जीयो ॥ ध० ॥ ५ ॥ चवदे हजार मुनीसर मांहे, आपनें वीर वखाण्यां; दर्शन आपको पुण्यवंत पावे, मैं पिण आज पिछाण्यां ॥ ध० ॥ ६ ॥ नवमासे शुद्ध संजम पाळी, सर्वार्थसिद्ध जावे; रामचंद्र कहे ऐसे मुनिवरजी, क्यूं नहीं मुक्ति सिधावे ॥ ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

१३ देशी केरवो ॥

गुणवंत मुनिकूं वांदलो रे, थांरो जनम सफल हो जाय ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत पाळवे रे, मुनि जतन करे षट्-

काय॥गु०॥२॥खरची देवे गांठकी रे,मुनि देवे मुक्ति पौंचाय ॥ गु० ॥ ३॥ निरलोभी निरलालची रे, मुनिवहे जिन आज्ञा मांय ॥ गु० ॥ ४ ॥ मुनि अनाथी भेटने रे, कांई समज्यों श्रेणिक राय ॥ गु० ॥ ५ ॥ राय प्रदेशी पापियो रे, ताऱ्यो केसी महाराय ॥गु०॥६॥ अरजुन माली शिव गयो रे, मुनि राम कहे चित लाय ॥ गु० ॥ ७ ॥ चौमासो साल चौवीसमें रे, तिंवरी सदा सुख दाय॥गु०॥८॥इति॥

१४मारूजीनें राखो समझाय दासी मोरा मा०॥ए देशी॥

गुरुजीनें राखो समझाय सखी मोरा ॥ गु० ॥ भर्म गया सत गुरु मिल्या जी, और गमाया पाप; साच झूठनें ओळख्याजी, भव भव मेट्या संताप ॥ स० ॥ १ ॥ सत संगत बहुली करी जी, रहे करणरो चाव; पिण अबके गुरु सागे मिल्या जी, मिलिया पुन्य प्रभाव ॥ स० ॥ २ ॥ निरलोभी निरलालची जी, किम राखूं विलमाय; हाथ जोड़ अरजी करूं जी, लुळ लुळ लागूं पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ निंदा नहीं कोई धर्मनी जी, विधीसूं करे उपदेश; रेस खुलासे सवी कहे जी, रीस नहीं लव लेश ॥ स० ॥ ४ ॥ काम क्रोध अज्ञानसूं जी, दूर रहे नित्यमेव; निज स्वरूपनें ओळखे जी, ते मोरे गुरु देव ॥ स० ॥ ५ ॥ अबके विछड्या गुरु देव जी हे, कब फेर मिलसी आय; मुनि राम कहे जसरासर मध्ये, घणो साधूनो चाव ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

१५ मारग मारग हूं चली, कांई ऊजड़ रेक पड़ गयो पांव, करवो रे गुड़वेलीरो,करवो राज चंबेली रो॥ए देशी॥

धर्म अधर्म न ओळख्यो, नहींमारगरे कुमारग लाघ२,

कुगुरु रे वह काविर्यो, सुगुरु संग न पावियो, जीव अजीव न जाणिया, नहीं जाण्यां रे मैं साध असाध २ ॥कु०॥१॥ मोक्ष अमोक्ष न जांणिया, कांई पड़ियो रे हूं मिथ्या मांय२ ॥ कु० ॥ जिनवर वचन न सरधिया, कांई उलटी रे निंद कराय २ ॥ कु० ॥ २ ॥ कुगुरु कुशास्त्र धारिया, नहीं गिणियो रे मैं न्याय अन्याय २ ॥ कु० ॥ हठग्राही कुमती थयो, शुद्ध धर्म रे नहीं आयो दाय २॥ कु०॥३॥इम काल अनादि भटकतां, अब पायो रे मैं सत गुरु संग २॥सुगुरुरो संग लागियो, कुगुरुनो संग त्यागियो ॥ टेर ॥ भलो हुवो गुरु देवको, अब लागो रे मुझ जिन मत रंग २ ॥सु०॥ ४ ॥ सम्यक् दर्शन ज्ञान ही, चारित्र रे वळे तीजो जांण२ ॥सु०॥मोक्ष मारग जिन भाखियो, जिन वचन रे सहू करूं प्रमाण २ ॥ सु० ॥ ५ ॥ निःसंकिय निःकंखिय, विचिकिस्सा रे निर्मल दृष्ट २ ॥ सु०॥ उहवूंह थिरि करणे, वच्छल रे प्रभावना अष्ट २ ॥ सु० ॥६॥ देश थकी और सर्वथी, निसंकित रे निकांक्षित होय २ ॥ सु० ॥ स्यादवाद मत मूल छै, जिन शासन रे थे लीजो जोय २ ॥ सु० ॥ ७ ॥ भव भव सरणो मुझ होजो, जिन वाणी रे छै तारणहार २ ॥ सु० ॥ मुनि राम कहे जिन धर्मको, कांई मर्म रे गुरु मुखसूं धार २ ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति ॥

१६ ऊंची नीची हो भैरूं सरवरियारी पाळ, सायधण हो झलती पणिहार; हार दे म्हारा लाड़ला हो भैरूं ॥ ए देशी ॥

म्हे तो करसां हो प्रभू गणधर सेवा; सेवा करसां, पाये पड़सां, हे देवनके देवा; गणधरजी कर जोडी हो वंदूं;

वंदवाको कारन म्हारे सारो दुःख निकंदूं ॥ म्हे० ॥ टेर ॥ जो तनें रे जीवा तरवाको कोड, तो गणधरजीके पाय वंदो कर जोड ॥ म्हे० ॥ १ ॥ इंद्रभूति अग्निभूति वायूभूति नाम, गौतम गोत्री तीनें भाई राख्यो जुगमें नाम ॥म्हे० ॥ २ ॥ व्यक्त स्वामी हो सुधर्मा शिर नाऊं, मंडित पुत्र हो मौर्य पुत्र गुण गाऊं ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ अचल भ्राता हो मैतार्य प्रभास, पृथक् कुला आठूंकेरा वंदूं हुलास ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ एकादश हो गणधरजी विख्यात, वीरप्रभूजीका चेला जांकी ब्राह्मण उत्तम जात ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ प्रभूजीके हो पेली नव गण धार, मुक्ति पधारे गणधर दोइ रहे प्रभूके लार ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ सारेंही तो शिव गये राजगृहके मांही, सुधर्मा स्वामीकी रही वाचना रही दूजाकी नाहीं ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ किंकरकी तो अरजी प्रभूजी लीजो अवधार, मुनि रामचंद तो वंदे थांनें आपतणो आधार ॥ म्हे० ॥ ८ ॥ इति ॥

१७ राधा प्यारी हे ॥ ए देशी ॥

गणधरजीनें म्हे तो वंदसां, ऐ तो राजे प्रभूजीके पाट; प्रभू म्हारा हो; सूरि दाता छै अर्थका, उपाध्याय दे सूत्रपाठ ॥ प्र० गण० ॥ १ ॥ तीरे इन कर कैसो तीर्थ छै, तीर्थंकर तीर्थ करणार ॥ प्र० ॥ प्रथम तो गणधर थप्पिये, पछै तीर्थ थपे छै त्यार ॥ प्र० ग० ॥ २ ॥ अर्थसें अत्तागम अरिहंत, गणधर अनंतरागम ॥ प्र० ॥ परंपरागम शिष्य तेहना, छै तीन प्रकारे आगम ॥ प्र० ग० ॥ ३ ॥ सूत्रसें अत्तागम गणधरू, अनंतरागम जंबू स्वाम ॥ प्र० ॥ परंपरागम छै आजलों, करूं सूत्रमणी प्रणाम

॥ प्र० ग० ॥ ४ ॥ अर्थ भासक अरिहंतजी, सूत्र गूंथे गणधार ॥ प्र० ॥ प्रश्न कारक प्राये गणधरु, श्रीअरिहंत उत्तरकार ॥ प्र० ग० ॥ ५ ॥ अरिहंत गणधर दो पद, अविनाभावी छै दोय ॥ प्र० ॥ अरिहंत गणधर विन नहीं, गणधर अरिहंते होय ॥ प्र० ग० ॥ ६ ॥ जिन शासन नित्य वंद हूं, आगम नमुं तज भर्म ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे मुज तारसी, श्रीदेव गुरु शुद्ध धर्म ॥ प्र० ग० ॥ ७ ॥ इति ॥

१८ मेड़ी ऊपर माळियो हे मिसरी, जिण चढ़ नाखूं राख; राख राख तो उड गई हे मिसरी, नीपजे दाड़म दाख; ॥ ए देशी ॥

हाथ जोड़ अरजी करूं हे सजनी, लुळ लुळ लागूं पाय; सत गुरु आवे सैरमें हे सजनी, दीजे मोय बताय ॥ १ ॥ देसूं वधाई तोयनें हे सजनी, मत जांणीजे हास; नहीं विसरूं गुण ताहरा हे ॥ स० ॥ और देस्यूं स्यावास ॥ २ ॥ सत गुरु आया वागमें हे सजनी, तूं केती सो आज; मूंडे विराजे मुंहपती हे सजनी, ओघो जतना काज ॥ ३ ॥ हाथमें झोळी जेहने हे ॥ स० ॥ पोथी जांरे पूठ; चेला जांरे दीपता हे सजनी, चावा च्यारूं खूंट ॥ ४ ॥ सुरत प्यारी जेहनी हे ॥ स० ॥ नीची राखे दिष्ट; मैला कपड़ा पहरवा हे सजनी, वाणी अमृत मिष्ट॥ ५ ॥ लोक करे था वातड़ी हे ॥ स० ॥ आये उत्तम निग्रंथ; पंच महाव्रत पाळता हे सजनी, साधे मुगतनो पंथ ॥६॥ दीधी वधाई जेहने हे ॥ स०॥ पैरी नाकमें नाथ; ओढी दिखणी चूनड़ी हे सजनी, चाली सखियां साथ ॥ ७ ॥ आई मुनिवर वांदवा हे ॥ स० ॥ हीये हर्ष अपार; मुनि राम कहे

भ्रम वातडी हे सजनी, कहे सो साचो प्यार ॥८॥ इति ॥

१९ देशी वधावेकी ॥ सहेल्यां ए आंबो मोरियो ॥

सहेल्यां हे गुरुजीनें वंदस्यां, म्हे तो करस्यां हे सेवा कर जोर ॥स०॥ गुरु परमेश्वर सारिखा, गुरु सरिसा है नहीं जगमें और; सहेल्यां हे गुरुजीने निरखिया, म्हे तो निरख्या हे म्हांरी सूरति लगाय ॥ स० ॥ १ ॥ जांरे मुकुट वण्यो महाव्रततणो, गुण उत्तर हे दश जांरे संग ॥ स० ॥ तिलक वण्यो तंत नामरो, शुद्ध वचन हे जांरे होठ सुरंग ॥ स० ॥ २ ॥ जां स्नान कीयो समता कुंडमें, पंकरूपी हे दीघा पाप पखाळ ॥ स० ॥ करुणा कुंडल जांरे कांनमें, जसरूपी हे जांरे फूलांरी माळ ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ मन वस जांरे मूंदड़ी, जांमो गैरो हे जांरे जतनांरो जांण ॥ स० ॥ दुपटो दया उपगारनों, गुणी भ्रमरा हे जांरे लपट्या हे आंण ॥ स० ॥ ४ ॥ वज्र कछोटो कस्यो शीलनों, सिरपाव हे जांरे शुद्ध आचार ॥ स० ॥ नय दोय नेत्र छै निर्मला, शिव मारग हे शुद्ध जांरो संचार ॥ स० ॥ ५ ॥ अमर तो तखत विराजिया, स्याद्वाद है जांरी अमृत वाण ॥ स० ॥ सापेक्षा वचन ज उच्चरे, विवेकरूपी हे जांरे दीपे दीवांण ॥ स० ॥ ६ ॥ बुद्ध सदा बीडी वणी, पीक थूक्यो हे जग जांण असार ॥ स० ॥ कालिक सूत्र जांरे काच छै, पंचांगी हे जोवे वारंवार ॥ स० ॥ ७ ॥ म्हे तो शीश भेट श्रीफल धरां, तुमे राखोजी गुरु चरणांरे पास ॥ स० ॥ तन मन धन सहू उवारस्यां, नहीं भूलांजी एक सास उसास ॥स०॥८॥ मुनि रामचंद्रकी वीनती, मति भूलो जी तुम गरीब निवाज ॥स०॥

दीजो जी भक्ति पावनी, मति निर्मल हो मांगूं महाराज ॥ स० ॥ गुरुजीनें वंदसां, म्हे० ॥ ९ ॥ इति ॥

२० देशी करहानी ॥

जी हो सुखकारी म्हारे हीयडे उमंगियो है गुरु, अभिनव सूर प्रकाश ॥ टेर ॥ दिवस दीपक सूरज कह्यो हे सहियां, चंद्र दीपक कह्यो रात; सुपुत्र कुल दीपक कह्यो हे सहियां, सुगुरुकी अद्भुत वात ॥जी०॥१॥ सूर छिपे घन वादले हे सहियां, रज पिण करे रवि मंद; गुरु दिनकर हीयडे जग्यो हे सहियां, निर्मल नित्य अमंद ॥ जी ॥ २ ॥ कोष्टक आदि अंधारडूं हे सहियां, अर्क न करे विपनाश; गुरु दिनमणि हीयडे जग्यो हे सहियां, घट घट करत उजास ॥ जी० ॥ ३ ॥ रात्रि पडे रवि आथमे हे सहियां, ग्रहण हुवे किणवार; गुरु प्रभाकर एहवो हे सहियां, मेटे सदा अंधकार ॥ जी० ॥ ४ ॥ निषढाचल आदि करी हे सहियां, तरणि तुरत छिप जाय; गुरु भास्कर हीयडे जग्यो हे सहियां, रूपी अरूपी ओळखाय ॥ जी० ॥५॥ अग्नि सूरज मणि आदि दे हे सहियां, कुंण सके मिथ्या तम टाल; मुनि राम कहे गुरु सैजमें हे सहियां, टालत है ततकाल ॥ जी० ॥ ६ ॥ इति ॥

२१ देशी गजरेकी ॥

पुन्य जोगे सत गुरु मिलिया, म्हारा अशुभ दीहाडा टळिया; हूं तौ भूली परमादमें सेवा भूली, भूली भूली हो, सत गुरुजी थांरी सेवा, परमादमें सेवा भूली ॥ १ ॥ हूं तो थई जैन धर्मकी रागी, सत गुरुजी मिल्या वड भागी; हूं तो सत गुरु वचन नवि भूलूं, हूं तो

पाखंड देख नवि झूलूं ॥ हूं० ॥ २ ॥ मोनें सत गुरुजी सूत्र सुणाया, म्हारा मनमें वहोत सुहाया; ज्ञानी गुरुजीनी अमृत वाणी, म्हांने लागे अमिय समाणी ॥ हूं० ॥ ३ ॥ म्हेतो वीर प्रभुजी मत पायो, म्हांने ज्ञानी गुरुजी वतायो; म्हे तो लीयो जगत सब जोई, पिण गुरुजीरे तुले नहीं कोई ॥ हूं० ॥ ४ ॥ हूंतो सत गुरुजी निजरां निरखूं, हूं तो रोम रोम करि हरखूं; दीठां दिल हुवे राजी, म्हांरा गया भर्म सब भाजी ॥ हूं० ॥ ५ ॥ सत गुरुजी ज्ञानका दाता, गुरु दीठां दिल पावे साता; म्हारो गुरु चरणां चित लागो म्हारो संसारसूं दिल भागो ॥ हूं० ६ ॥ मोनें नैणें नींद न आवे, म्हांने खाणो पीणो नहीं भावे; मोसूं भक्ति वण नहीं आवे, सो अफल जमारो जावे ॥ हूं० ॥ ७ ॥ चित्त चोखे करो गुरु सेवा, कुमति काढे गुरांमें कैवा; गुरु मोटा छै उपगारी, ज्यांनें वंदीजे वार हजारी ॥ हूं० ॥ ८ ॥ गुरु अज्ञान मिटायो, मोनें सम्यक्त्व रत्न वतायो; शुद्ध उपदेश गुरु भाख्यो, नरक पडतां झेली राख्यो ॥ हूं० ॥ ९ ॥ काच खंड कुंण लेवे, चिंतामणि नाख कुंण देवे; लाख वात जो कैवे, कल्प छोडी खेजड़ कुंण सेवे ॥ हूं० ॥१०॥ सतगुरुजी वाल ब्रह्मचारी, ज्यांरी सूरत मोहणगारी; ज्यांरी मुद्रा प्यारी लागे, ज्यांरे बैठ रहीजे मुख आगे ॥ हूं० ॥ ११ ॥ मोनें सतगुरुजी भवोदधि तारे, म्हांने सतगुरुजी पार उतारे; म्हांरी अरज ऊपर छै अरजी, दर्शन देणेकी राखजो मरजी ॥ हूं० ॥ १२ ॥ वनणा वारंवार लीजो, म्हांनें वेगो दर्शन दीजो; कल्पता चौमासे पधारो, वारे महीनांमें क्षेत्र संभारो ॥ हूं० ॥ १३ ॥ सत

गुरुजीनें सगळा पूजे, पाखंडी ऊभा सहू धूजे; सतगुरुजी तन मन भाया, इम राम मुनी गुण गाया॥हूं०॥१४॥इति॥

ढाळ. ॥

१ नाम जपो श्रीना कोड़ो ॥ ए देशी ॥

पूज्य जयमल्लजी हुवा अवतारी, ज्यांरे नामतणी महिमा भारी; कष्ट टळे मिटे ताप तपो, पूज्य जयमल्लजीरो जाप जपो ॥ १ ॥ पूज्य नामे सब कष्ट टळे, वळी भूत प्रेत पिण नांही छळै; मिले न चौर है गप्पचपो ॥ पू० ॥ २ ॥ लक्ष्मी दिन दिन वध जावे, वळी दुःख नैडो तो नहीं आवे; व्यौपारमें होवे बहुत नफो ॥ पू० ॥ ३ ॥ अड़्यो काम तो हुय जावे, वळे विगड़्यो काम तो वण जावे; भूल चूक नहीं खाय डफो ॥ पू० ॥ ४ ॥ राज काजमें तेज रहे, वळी खमा खमा सहु लोक कहे; आछी जायगां जाय रुपो ॥ पू० ॥ ५ ॥ पूज्य तणो जां लीयो ओठो, जांरे कदे नहीं आवे तोटो; घर घर बारणे कांई तपो ॥ पू० ॥ ६ ॥ एक माला नित नेम रखो, किण वाततणो नहीं होय धको; खाली विमांण और टळेजी सप्पो ॥ पू० ॥ ७ ॥ स्वगच्छतणी प्रतिपाल करे, मुनि राम सदा तुम ध्यान धरे; कोई प्रत्यक्ष वात मती उथपो, पूज्य जयमल्लजीरो जाप जपो ॥ ८ ॥ इति ॥

दोहा ॥

कृष्णरायनो नंद है, नेमप्रभूनो शिष्य ।
अंत्राय कर्म उदय भयो, बोलेइणविध ऋष्य ॥ १॥

२ देशी वाँसरलीनी ॥

सुणो मुनिवरजी, मत आवो म्हांरी लार, म्हे सुख नहीं पावां; जावां घर घर जी, थांरी संगत भटकी खाली आवां ॥ टेर ॥ इण कारण वरजावां छां, अहार विना दुख पावां छां; ज्यूं जावां ज्यूं आवां छां, म्हे तो अहार विना घवरांवां छां ॥ सु० ॥ १ ॥ कहतां शर्म जआवे छै, पिण आतमा अति दुख पावे छै; सब संत एम सुणावे छै, ढंढण ऋप संग क्यूं आवे छै ॥ सु० ॥ २ ॥ कहो तो अहार पांणी म्हे ला देसां, आप कैसो ज्यूं म्हे करसां; असणादिक आगे धरसां, पिण आपरी लार नहीं रहसां ॥ सु० ॥ ३ ॥ रतिभर चूक नहीं थांरो, अंत्राय कर्म दीसे म्हांरो; इणमें नहीं थांरो सारो, अब कर्मसूं नहीं करसां टारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

३ देशी असवारीकी ॥

ढंढण ऋपि दर्शनकी बलिहारी, हे जी थांरे सूरतकी बलिहारी ॥ ढं० ॥ टेर ॥ निर्जरा करणी दोनूं थांरी, परम श्रीनेम उचारी; यादव कुळ थे ऊंचो जी लाया, अद्भुत करणी थांरी ॥ ढं ॥ १ ॥ षट् मास थया अन्न जल लीधां, लीधो अभिग्रह धारी; मुझ लब्धिको आहार ज लेसूं, जावज्जीव पण धारी ॥ ढं० ॥ २ ॥ गाथापती देख श्रीपति भक्ती, प्रतिलाभे कर मनुहारी; आहार पांणी ले प्रभू पैं आया, नहीं वच्छ लब्धि तुमारी ॥ ढं० ॥ ३ ॥ मोदक परटण काजे चाल्या, दीया कर्म विदारी; मुनि राम पयंपे जिन शासनमें, मुनि वडे तप धारी ॥ ढं० ॥ ४ ॥ इति ॥

४ ममत मत कीजो राज मनमें ॥ ए देशी ॥

उत्तम मुनि वंदो तुम प्यारे,जिके राग द्वेषसें न्यारे॥उ०॥टेर॥ षट्काय आतम सम जानें, दुर्धर महाव्रत धारे ॥उ०॥॥ १ ॥ हिंसा झूठ चोरी सब त्यागी, ब्रम्हचारी न नारी निहारे ॥ उ० ॥ २ ॥ परिग्रह रंचन रक्खे मुनिवर, जी भगवत वचन उचारे ॥ उ० ॥ ३ ॥ राग द्वेष अशुद्ध उपयोग, सदा अंगसें टारे ॥ उ० ॥ ४ ॥ मुनि राम कहे धन्य धन्य जग मुनिवर, आप तिरे पर तारे ॥ उ० ॥ ५ ॥इति॥

५ देशी पूर्ववत् ॥

बाहुबल खड़ा जोग वन धरियो, वरस लग कायोत्सर्ग करियो ॥ बा० ॥ टेर ॥ अन जल त्याग शरीरकूं त्याग्यो, मरनथकी नहीं डरियो ॥ बा० ॥ १ ॥ चल्लूं न हिल्लूं केवल लेलूं, लघु बंधव पग नहीं परियो ॥ बा० ॥ २ ॥ बेल वींटांणो शरीर सुकांणो, पंखी माळा कर भरियो ॥ बा० ॥ ३ ॥ ब्राह्मी सुंदरीनें प्रभु भाखे, जावो बंधव मांनकों हरियो ॥ बा० ॥ ४ ॥ गज असवारी छोडो तुम वीरा, केवल दूरसें टरियो ॥ बा० ॥ ५ ॥ पग उठांतां केवल पांम्यो, मुनि राम वंदत दिल ठरियो ॥ बा० ॥ ६ ॥ इति ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

गुरुजी मेरो मन नहीं ज्ञानमें भीजे, ऐ तो पुद्गल देखी क्यूं रीझे ॥ गु० ॥ टेर ॥ प्रभुकी वाणी सुणतां ऊंघे, शुद्ध सीख सुंन खीजे ॥ गु० ॥ १ ॥सत संगत तो दाय न आवे, कुसंग चाय करीजे ॥ गु० ॥ २ ॥ साधुको सकुन बुरो

मन लागे, वेश्याको सकुन मानीजे ॥ गु० ॥ ३ ॥ सुकृत केरी वात न भावे, दुःकृत चाय करीजे ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञानको कथन करे नहीं घेटो, उलटे पंथ चलीजे ॥ गु० ॥ ५ ॥ लाख प्रमोद देवे गुरु सचो, पिण नहीं एक पतीजे ॥ गु० ॥ ६ ॥ कौन प्रकारसूं मन रहे निश्चल, सो गुरु शैली मुझ दीजे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ध्यान विना मन कबूवन थंभे, गुरु कहे शिष्य सुणीजे ॥ गु० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे मनको वश करया, गुरु मुख सैली लीजे ॥ गु० ॥ ९ ॥ इति ॥

७ वडे घर ताळी लागीरे, जीवड़लारी जोत जागी रे ए देशी ॥

गुरुजीरी सेव करसां रे, सदा शिर पग विच धरसां रे ॥ टेर ॥ गुरु दीवो गुरु ज्ञानके दाता, साताके देवनहार; सतगुरु विन जग घोर अंधारो, कुंण नरकसें राखनहार ॥ गु० ॥ १ ॥ पाखंड मत म्हांरी दाय न आवे, कुगुरु संग मत होय; पापी तो म्हांनें मिलजो हजारां, कुगुरु मिलो मत कोय ॥ गु० ॥२॥ कुगुरु धनकूं खांचे विध विध, डारें दुर्गति मांय; सतगुरु तारे खरची बंधावे, दीधा नेत्र खुलाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ तीन भवनमें चीज न ऐसी, जो सतगुरु जोड़े लागे, रामचंद कहे करो गुरु सेवा, ज्यूं सुख पावोला आगे ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

चाल सखी तूं मुझ संगे तोय कैती थी, वे आया सतगुरु आज, सखी तोय कैती थी; सतगुरुकी संगत छोड

मती, पंच महाव्रत पाळता॥तो० पं०॥ऐ तारण तरण जहाज, सखी तोय कैतीथी, सतगुरुकी संगत छोड मती, मिथ्यात्व हरो सतसंग करो, मुनि संगसूं उतरो पार ॥ सखी० स० मि० स० मु० स० सत० ॥ १ ॥ नमे नहीं ऐ केहनो तो ॥ तो० ॥ ऐ खमे बोल कुबोल ॥ स० ॥ रमे सदा निज रूपमें ॥ तो० ॥ ऐ वमे कर्म कल्लोल ॥ स० स० मि० स० मु० स०स० ॥२॥ कालिस नहीं किण वातसूं ॥ तो०॥ लालच नहीं है लिगार ॥ स० ॥ वाचक ऐसा छै नहीं ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ३ ॥ब्रह्मवेत्ता करता नहीं ॥ तो० ॥ भूल चूक परपंच ॥ स० ॥ आतमराम रमावही ॥ तो० ॥ लोभ न ध्यारे रंच ॥ स०स० मि० स० मु० स० स० ॥ ४ ॥ पांव पसारे नहीं हाथकूं ॥ तो० ॥ बंदगी फिर मत आव ॥ स० ॥ याद रखो प्रभु भूल हां ॥ तो० ॥ फक्कर एह स्वभाव ॥ स० स० मि०स०मु० स०स॥ ॥ ५ ॥ तारे सतगुरु एहवा ॥ तो० ॥ जे मनकूं बैठा मार ॥ स० ॥ मुनि रामचंद मन चायना॥ तो० ॥ गुरु जीवो वरस हजार ॥ स० स० मि० स० मु० स० स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ ख्याली आयो मुलतांनसें ॥ ए देशी ॥

पार न पायो गुरु ज्ञानको, भलो बतायो मार्ग जैनको ॥ ॥ पा० ॥ टेर ॥ दान सुपातर मुनिकूं दीजो, पायो शालिभद्र फल दानको ॥ पा० ॥ १ ॥ शील रतन जतन करि रक्खो, ज्यूं सुधरे थांरों मांनखो ॥ पा० ॥ २ ॥ तप विना नहीं मोक्ष मिलत है, नष्ट करे कर्म वितानको ॥ पा० ॥ पा० ॥ ३ ॥ देखो भाव शिरोमण शुद्ध परणांमे, मरु देव्या भरत राजानको ॥ पा० ॥ ४ ॥ जीव अजीव

पुन्य पाप बतायो, कीयो आश्रव संवर पिछानको ॥ पा० ॥ ५ ॥ निर्जरा बंध क्रिय मोख दिखायो, शासन बतायो वर्धमानको ॥ पा० ॥ ६ ॥ रामचंद्र कहे सतगुरु सचा, नाश कर्यो रे अज्ञानको ॥ पा० ॥ ७ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥

मुनि तिष्ठे अपने ख्यालमें, रहे मस्त सदा निज म्हालमें ॥ मु० ॥ टेर ॥ कौन जाने कौन बिगरे सुधरे, नहीं फसे रे जगके जालमें ॥ मु० ॥ १ ॥ निंदो वंदो भावे कउ देवो गाळी, कबू चूके न अपनी चालमें ॥ मु० ॥ २ ॥ ध्यानानंदी अरु दृढ ब्रह्मचारी, जांके दमके जी हीरो भालमें ॥ मु० ॥ ३ ॥ पत्थर कंचन सम कर जांनें, फर्क न रंक भूपालमें ॥ मु० ॥ ४ ॥ जगसें तर्क फर्क मन रक्खे, भला करे एक स्वालमें ॥ मु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे ऐसे धन्य जग जोगिया, मिलजो जी म्हानें कोई कालमें ॥ मु० ॥ ॥ ६ ॥ इति ॥

४ हां सखी सुन वात सयानी ॥ ए देशी ॥

पंच महाव्रत पाळे मुनिवर, टाळे दुःखण सारा रे क; करते ज्ञान विचारा, हां गुरुदेव हमारा, गुरूदेव हमारा, तारनहारा, जिन शासनवारा रे क ॥ गु० ॥ १ ॥ जिन मतके मंडन कुमतके खंडन, करते ज्ञान पसारा रे क, शुद्ध उपदेश दातारा ॥ हां गु० ॥ २ ॥ निसप्रेही रहते परिषह सहते, वहते खड्गकी धारा रे क, करते उग्र विहारा ॥ हां गु० ॥ ३ ॥ राग द्वेष दो मल्लकूं मारे, तारे भविक अपारा रे क; भेंठे जो चरनही जांरा ॥हां गु०॥४॥ रामचंद कहे ऐसे मुनिवर, करते भवोदधि पारा रे क; नमोनी सो सो वारा ॥ हां गु० ॥ ५ ॥ इति ॥

५ नखरो जोर वण्योरे चंदगारीरो ॥ ए देशी ॥

सखरो धर्म पायोरे जिनराजरो; अजरो जीग वण्योरे गुरु महाराजरो ॥ टेर ॥ सतगुरु पासे जासां म्हेतो, सीस नमासां गुण मुख गासां; डर नहीं लासां कुल लाजरो ॥ स० ॥ १ ॥ भवसिंधूही तरसां म्हे तो, भव उलंघसां पार उतरसां; शरणो लेसां रे धर्म जाजरो ॥ स० ॥ २॥ नव तत्वही सीखां म्हे तो, नयकूं धरसां चरचा करसां; ज्ञान अभ्यासां दिन सांजरो ॥ स० ॥ ३ ॥ निज रूप ओळखसां, करसां निरणो, तिरणो इनसे, मुनि राम भणे रे धन दिन आजरो ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

६ असी रुपय्या ले कलदार ॥ ए देशी ॥

प्रणमूं श्री गुरु ज्ञान दातार, भव जल सिंधू तारनहार ॥ टेर ॥ श्रीगुरुदेव करूं तुम सेव, तजूं अहमेव भजूं चरणार ॥ प्र० ॥ १ ॥ तुम गुरु राज सुधारो काज, रखो मेरी लाज महाराज कृपाल ॥ प्र० ॥ २ ॥ अधम उधारन भव जल तारन, सारन वारन करन सुधार ॥ प्र० ॥ ३ ॥ मैं गुरु चेरो ग्रह्यो पद तेरो, दे मुझ गैरो ज्ञान विचार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ गुरु पद पूजो नहीं जग दूजो, तूं जो चाहे तऱ्यो संसार ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कहे मुनि राम करो गुन ग्राम, निश्चल ठाम लहो सुखकार ॥ प्र० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ आनंदी लै घोटो, घूंघटमें दोय नैंन रह्या, जैसे शूरवीरका वान वह्या, थारे घायळरो नहीं तोटो रे, आनंदी आनंदी लै घोटो ॥ ए देशी ॥

सुगुरुजी सुगुरुजी मो तारो ॥ बाबा सु० ॥ टेर ॥ गुरु चरनां बिचमें आय रह्यो, मेरे मनको मनोरथ

होय गयो; गुरु गुनको अंत न पायोरे, सुगुरुजी सुगुरुजी मो तारो ॥ १ ॥ मेरा मोटा भाग्य गुरु पद भेट्या, तुम भव भवना दुख सब मेट्या; मेरो सफल भयो अवतारो रे ॥ सु० ॥ २ ॥ मात तात भ्रात नहीं तार सके, नरक पड़तां कोइयन राख सके; एक रक्खे गुरु चरनांरो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मेरा गुरु चरना चित जाय लगा, मेरा मोह अज्ञान तो दूर भगा; कर लगा चिंतामणि गलो रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ फेर कुगुरु काला नाग जिसा, नहींजगमें दुश्मन और इसा; दै कुगुरु छांनी मारो रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ थारे मुक्त जावन दिलमांहे वसी, तो तुम सेवो शुद्ध ऋसी; कर राग द्वेपको टारो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ दिल राख सफा तेरे होय नफा, तूं रीस करी मत होय कफा; तेरी अप्पा इणविध तारो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ गुरु गुण शारदा नित्य गावे, फेर इंद्रादि पार नहीं पावे; गुरु किधूं मोटो उपगारो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ मुनि रामचंद गुरु वंदत है, दुष्ट गुरुभणी कोई निंदत है; जिणरो होसी मुकड़ो कारो रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ देशी धूंसेरी ॥

एक कर लो रे सेव गुरु देवनकी ॥ ए० ॥ टेर ॥ गुरु देवन ईश्वर परमेश्वर २, क्या महिमा करूं गुरु भगवनकी ॥ ए० ॥ १ ॥ शुद्ध उपदेशी कैसी गुरु जेहवा २, शेली दिवी शिव स्थाननकी ॥ ए० ॥२॥ भव भव काज सुधारे गुरु ज्ञानी २, क्या ओपमा लगे चिंतामनकी ॥ ए०॥ ३ ॥

पशुता टाली कीयो मुज मानव २, फेरी ज्ञान शलाका अंजनकी ॥ ए० ॥ ४ ॥ एकलव्य गुरु भावकूं रख तो २, शिष्यो कला देखो बांननकी ॥ ए० ॥ ५ ॥ गुरु कृपासें काज सब सुधरे २, गरज सरे सब तन मनकी ॥ए०॥६॥ मुनि राम कहे शिष्य केवलधारी २, तनु सेव करे गुरु चरननकी ॥ ए० ॥ ७ ॥ इति ॥

२ देशी ख्यालनी ॥

सतगुरुजी म्हारा दर्शन तौ दीजे मोनें कर मया ॥ सतगुरुजी०॥टेर॥ सतगुरुजी तो काठिण दाखसें, हैं अमृतसें खारा; सतगुरुजी तो करता वरते, रविथकी अंधियारा जी ॥ स० ॥ १ ॥ सतगुरुजी तौ ऐसा मैला, मोती अथवा चंद; सतगुरुजी तो घणाज ओछा, जैसे महासमंद जी ॥ स० ॥ २ ॥ छोटा पिण वे मेरू जैसा, खोटा चिंतामणि रतन्न; थिरवासी तौ कहिये ऐसा, मन अथवा पवन्न जी ॥ स० ॥ ३ ॥ सतगुरुजी तो नितही मोनें, ज्ञान करी भरमावे; रामचंद कहे सतगुरु हट कर, मुक्ति महल लेजावे जी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

३ देशी फागनी ॥

गुरु बेमुख मोख नहीं पावे॥गु०॥अज्ञानीको गुरु ज्ञानी करियो, जीव अजीवकूं ओळखावे ॥ गु० ॥ १ ॥ दुर्गति सद्गति राह दिखायो, वळे मुक्तिपंथकों दिखलावे ॥ गु०॥ ॥२॥पंचआचारीने गुरु उपगारी,गुरु गुणको पार नहीं आवे गु०॥ ३ ॥ ऐसा गुरुकूं फेरे अज्ञानी, वहोल संसार दुर्गति जावे ॥गु०॥४॥ अपछंदो ने आपमती हुय, गुरु दयालकूं छिटकावे ॥गु०॥५॥ दशवें कालिक उत्तराध्ययने, अवनी-

तकूं इम दरसावे ॥ गु० ॥ ६ ॥ गलिहार गधोने कुही कुत्ती, जठे जावे जठे दुखी थावे ॥ गु० ॥ ७ ॥ विनय रहित तप धर्म करीयो, ज्ञानी तो लेखे नहीं लावे ॥गु०॥ ॥ ८ ॥ रत्न छोडनें काच ग्रहे छे,अमृत छोड अखज खावे ॥ गु० ॥ ९ ॥ गुरु निंदा सम पातक मोटो, दीसे नहीं प्रभु फुरमावे ॥ गु० ॥ १० ॥ इम जांणी गुरु सनमुख रहिये, रामचंद इम दरसावे ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति ॥

४ देशी ख्यालनी ॥

गुरु देव हमारा, थांका दर्शनकी रे म्हारे भावना; सुणो सखी सहेल्यो, तन धन तो वारूं रे, करसूं वधावणा ॥ टेर ॥ तीन लोकको द्रव्यही सारो, करूं भेट तो थोड़ा; दर्शन करनें करूं वीनती, क्यूं दीये दर्शन मोड़ा ॥ गु० ॥ १ ॥ मात पिता सुत मित्र रु स्वामी, खड़े खड़े सब झांखे; समरथ नहीं को नरक टारवा, बांह पकड़ गुरु राखे जी ॥ गु० ॥ २ ॥ अंधत्व टारी नेत्र दिये वर, अपूज्यके पूज्य बनाये; पशुता टारी जन्म सुधारी, नर पंक्तिमें लाये जी ॥ गु० ॥ ३ ॥ भव भवमें मुझ सद्गुरु सेवा, दीजो वर प्रभु मांगूं; मुनि राम कहे गुरु दर्शन दीजो, लुळ लुळ चरणे लागूं जी ॥ गु० ॥ ४ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ सुण सब जारे तुम जलदी जावो ॥ ए देशी ॥

सुण चेतन रे तुम गुणवँत मुनीकों सेवो, एक भजो निरंजन गुणवँतना गुण लेवो ॥ टेर ॥ एक संजती राजा मृग मारण गीसरियो एक मुनिवर देखि मनमें अधिको डरियो; जिहां

सुण उपदेशो उत्तम कारज करियो, मुनि केवल पांमी भव सागरथी तरियो ॥ सु० ॥ १ ॥ एक राय प्रदेशी नहीं थी उसके करुणा, एक कैसी मुनिना पकड़्या उसनें शरणा; जिन अल्पकालमें कीना पंडित मरणा, मर हुवो सुरीयाभे निकस्या उसका निरणा ॥ सु० ॥ २ ॥ एक अर्जुन माली थो राजग्रही बारे, षट् मासातांई सात मनुष्य नित मारे; एक सेठ सुदर्शन कर लीयो अपणी लारे, श्रीभगवंत भेटी कर दीयो खेवो पारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुनि वेले वेले जावजीव तप ठावे, नर नारी मिलके मुनिकूं बहोत सँतावे; मुनि क्षम्मा करके कर्म पुंज उड वावे, मुनि केवल पांमी शिवरमणीकूं जावे ॥ सु० ॥ ४॥ एक मुनिवर भेटी अनंत जीव उद्धरिया, जिन शास्त्रमां हे भगवत निरणा करिया; शुद्ध करणी करनें भव सागरथी तरिया, मुनि राम कहे ते जन्म मरणसूं डरिया ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ घ्राणेंद्रीके वश नहीं परिये ॥ ए देशी ॥

मुनिवरकी संगत करिये, सदा गुरुवाक्य उर धरिये ॥ मु० ॥ टेर ॥ कोड़ अपराध मिटे एक छिनमें, कुमति लता उद्धरिये; भरिये शिव सनमुख पग जिनके, नरक कपाटही जरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ १ ॥ मात पिता भ्राता सुत नारी, स्वामीसें नरक न टरिये; सद्गुरु विन नहीं नरकको टारक, तारक चरन पकरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ २ ॥ सत संगत सम नहीं जग दूजो, शास्त्रके वाक्य समरि-

ये; मुनि रायप्रदेशी अर्जुन मालीसें, गुरु विन कैसे तरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ३ ॥ शशिसें ताप गंगासें पाप, दारिद्र कल्पसें हरिये; ताप पाप संताप तीनूंही, सध दर्शनसें गरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ४ ॥ रोहीण्ये तस्कर भूल संगत कर, ना अभय कुमरसें छरिये; मुनि राम कहे सत संग नित करिये, भवभव जनम सुधरिये ॥ ४ ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

इतिश्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे स्वाध्याय नामकं पंचमं प्रकरणम् ॥ ५ ॥

---

६ हितोपदेश—गीत ॥

१ दिल्ली शहरका पासा मंगाय, आवोजी कम धजिया चोपड़ खेलसां हे लो; चोपड़ खेले राज दिवांण, चोपड़ खेले मोटा घरां हे लो॥ए देशी॥

चेतो चेतो चतुर सुजांन, मनुष्य जनम पावणो दोहिलो हे लो; आर्य देश उत्तम अवतार, लांबो रे आऊखो नहीं सोहिलो हे लो ॥ १ ॥ इंद्रयां पांचे शरीर निरोग्य, कठिन मुनिनी संग पावणी हे लो; पाई संगत सुनवो सिद्धांत, श्रद्धा रे प्रतीत दुर्लभ आंवणी हे लो ॥ २ ॥ पाई सरधा पुन्य प्रमांण, तो नहीं रे पराक्रम चेतन तें कीया हे लो; रुलियो रुलियो काल अनाद, जनम मरण दुख पाविया हे लो ॥ ३ ॥ पायो पायो जिन धर्म सार, चले रे अवसांण नहीं पावसी रे लो; नहीं बांधे तूं खरची लार, जासी रे परभवमें कांई खावसी रे लो ॥४॥ धारो धारो अरिहंत देव, धारोनी निग्रंथ गुर पिछांणिये रे लो;

सारो सारो नित नित सेव, दया रे धर्म निश्चै जांणिये रे लो ॥ ५ ॥ धन धन जेह नर नार, मनुष जनम सफलो करे रे लो; रामचंद जेहनी बलिहार, पाप रे करमसुं जे नर डरे रे लो ॥६॥ रुद्र निधि इंद्र १९११ वर्ष मांय, ग्राम रे नींवाज पोस मासमें रे लो; आठम बुध सेवा मन लाय, करे रे सगलाई मन हुलासमें रे लो ॥७॥इति॥

२ गैरो जी फूल गुलाबरो ॥ ए देशी ॥

तेरो जी कूंण संसारमें, ओ तो तेरो मेरो एक न कोय ज्ञानी जियड़ा, तूं पिण नहीं छै केहनों, तूं तो अंदर ज्ञानसुं जोय ॥ ज्ञा० ॥ ते० ॥ टेर ॥ धन कमायो अकृत करी, ओ तो खायो खरच्यो नाय ॥ ज्ञा० ॥ पुन्य संचीया पूरा हुवे. जद संचीयो केम रहाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ १ ॥ पुत्र कलत्र धन दाबीयो, ओ तो निकमो डोसो खाय ॥ ज्ञा० ॥ कूंण करै थारी चाकरी, थारो डेरो पोळरे मांय ॥ ज्ञा० ॥ ते० ॥ २ ॥ मांगे खावा रबी खीचड़ी, वळे ताजी जलेबी सेव ॥ ज्ञा० ॥ लपटो पूरो नवि घालही, वळे पूरी न घाले पळेव ॥ ज्ञा० ते० ॥ ३ ॥ टिण टिण करो विन कामरा, थे तो मरो खावण रे काज ॥ ज्ञा० ॥ क्यूं कांन पचावो खावो देखनें, थांरी सुध बुध गई सब लाज ॥ज्ञा० ते० ॥ ४ ॥ वहू बेटा कह्यो ना करै, जरे डोसो झुरे मनमांय ॥ ज्ञा० ॥ मुनि राम कहे धर्म जो कीयो, तो क्यूं दुख देखे भव पाय ॥ ज्ञा० ते० ॥ ५ ॥ इति ॥

३ हांरे वावा नेह लग्यो दिल मांणले ॥ ए देशी ॥

हांरे जीवा कमला नीची संचरे, हांरे जैसे नदीनो ढार रे; यों लच्छी स्वभाव विचार रे, इमं वदे प्रगट गण-

धार रे ॥ यो॰ ॥ हां रेजीवा ज्ञान गमावे वेगसुं, हां रे ज्यूं निद्रा चैतन्य अपहार रे ॥ यों॰ ॥ १ ॥ हां रेजीवा कमला मद मगट करै, हां रे ज्यूं उन्मत्त करै मद धार रे ॥ यों॰ ॥ हां रेजीवा कमला अंधपणो दहै, हां रे जैसे धूम विकार रे ॥ यों॰ ॥ २ ॥ हां रे जीवा लक्ष्मी चापल्यता भजै, हां रे जैसे विज्जु झत्कार रे ॥ यों॰ ॥ हां रे जीवा लक्ष्मी लोभ वधावही, हां रे ज्यूं दव ज्वाल अपार रे ॥ यों॰ ॥ ३ ॥ हां रे जीवा कमला स्वेच्छाये रमै, हां रे जैसे कुलटा नार रे ॥ यों॰ ॥ हां रे जीवा मुनि रामकहै किम आपरी, हां रे देखोनी कृष्ण मुरार रे ॥ यों ॥ इति लक्ष्मी स्वभाव ॥

४ देशी पूर्ववत् ॥

हां रे जीवा धिक् धन बहू आधीन रे, हां रे इम जानों लोक प्रवीन रे ॥ धि॰ ॥ टेर ॥ हां रे जीवा गोत्री कहै धन मांहरो, हां रे तस्कर लेवे छीन रे॥ धि॰॥ हां रे जीवा भूपत छल कर खोंचही, हां रे तैं तो गुन्हो राजको कीन रे ॥ धि॰ ॥ १ ॥ हां रे जीवा भस्म करै वन्हि वेगसुं, हां रे जवी होवे पुन्याई हीन रे ॥ धि॰ ॥ हां रे जीवा अंबु बहाये गाळवे, हां रे जवी होवे तेरे तीन रे ॥ धि॰ ॥ २ ॥ हां रे जीवा धन भूमीमें गाडीयो, हां रे कोई अपहरे देव बलीन रे ॥ धि॰ ॥ हां रे जीवा कुपुत्र गमावे धन संचियो, हां रे पछे होवे अधिको दीन रे ॥ धि॰ ॥ ३ ॥ हां रे जीवा सप्त सीर एहमें कथ्या, हां रे तुमे देखोनी बुद्ध अर्हन रे ॥ धि॰ ॥ हां रे जीवा मुनि राम कहै धन खरचिये, हां रे सद्क्षेत्रे ध्रुय कर लीन रे ॥ धि॰ ॥ ४ ॥ इति ॥

५ गोरल ईसरजी कवै तो हंस कर बोलणा हे ॥ ए देशी॥

म्हे तो निरलोभी नहिं देखिया जी, म्हे तो देखिया सो सगळा लोभिया जी ॥ टेर ॥ केई गृहस्थ ब्रह्मव्रत पालवे जी २; केई सदा करै चउ विहार, केई हरीतणो परिहार, पिण छे धनसूं अधिको प्यार ॥ म्हे० ॥ १ ॥ केई घर त्यागी योगी भया जी २; केई धनके होगये त्यागी, जांके मठकी ममता लागी, जांकू किम कहिये वैरागी ॥म्हे०॥२॥ केई वस्त्र वस्त्र करते फिरे जी २; जांकू लोभी किम नहीं कैवां, अथवा पुस्तक लेवां लेवां, जांनें निरलोभी किम कैवां ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ केई ममत्व करै चेलातणी जी २; ए तो अपणा नाम वधावे, बाजे अपणा माल गमावे, ए तो उलटा धर्म लजावे, जांनें निरलोभी कुण गावे ॥ म्हे० ॥ ४ ॥ केई तन ऊपर ममता धरे जी २; ए तो खाय खाय माँस वधावे, जांनें तपस्या दाय न आवे, आखर लोभी गणिया जावे ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ केई कथन करावे केई ढंगसूं जी २; है कोई राजाजीकूं लावे, हे कोई दिवानकूं बुलवावे, धनवंत देख देख बतलावे ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ केई महिमा वांछै आपणी जी २; निज महिमासूं फूल जावे, जांरे तत्व हाथ नहीं आवे, मुनि रामचंद्र दरसावे ॥म्हे०॥७॥इति लोभ गर्भित हितोपदेश॥

६ म्हांरा गाढा मारू वसोनी आजकी रैनमें ॥ ए देशी॥

म्हांरा भोळा जिवड़ा लेवोनी खरची जोयने, जीवा मारग विषम अपार, म्हांरा भोळा जिवड़ा, लेवोनी खरची विचारने; ॥ टेर ॥ म्हां० ॥ लेउं लेउं तूं स्यूं करे,

जिवड़ा दीसे तूं मूढ गिवांर ॥ म्हां० ले० ॥ १ ॥ म्हां० ॥ तन धन दौलत कामनी, जिवड़ा, रैसी यांहकी यांह ॥ म्हां० ॥ एक न साथे चालसी, जिवड़ा दरिये खाली मत जाह ॥ म्हां० ले० ॥ २ ॥ म्हां० ॥ दान सुपात्र दीजिये, जिवड़ा जीवांनों करोनी वंचाव ॥ म्हां० ॥ जप तप शुद्ध क्रिया करो, जिवड़ा राखोनी निरमल भाव ॥ म्हां० ले० ॥ ३ ॥ म्हां० ॥ सत गुरुनी संग कीजिये, जिवड़ा बंधसी खरचीरी गांठ ॥ म्हां० ॥ मुनि राम कहै मत भूलजो, जिवड़ा आगे विषमी वाट ॥ म्हां० ले० ॥ ४ ॥ इति ॥

७ कांई रे जवाव करूं रसियो ॥ ए देशी ॥

कांईरे गुमांन करे अपणो, मान करेगो गुमांन करेगो, तो नीची गतमें जाय पड़ेगो ॥ कां० ॥ टेर ॥ जोवन वयमें तुं आंधो चाले, तो दोय दोय छोगा ऊपर राळे॥कां० ॥ १ ॥ जोवन देखीने जोम करे छै, तो रूप देखीने गर्व धरे छै ॥ कां० ॥ २ ॥ धन देखीने मनमें फूले छै, तो मोह नदीरे मांहे झूले छै ॥ कां० ॥ ३ ॥ इंद्र नरेंद्र चक्रवरती, ते पिण छोड चल्या सहू धरती ॥ कां० ॥ ४ ॥ छपन कोड़को नाथ कहातो, ते पिण मूवो कौशांवी जातो ॥ कां० ॥ ५ ॥ नहीं मिल्यो पांणी पावणवाळो, तो तुमे गर्व धरी किम चालो ॥ कां० ॥ ६ ॥ चौथो चक्री सनत्कुमारो, जिण कीयो रूपतणो अहंकारो ॥ कां० ॥ ७ ॥ सोले रोग थया ततकालो, तो देख शरीर चिंते भूपालो ॥ कां ॥ ८ ॥ काची काया ने काची माया, तो काचा ही सहू दंद्ध बनाया ॥ कां० ॥ ९ ॥ कुंण जांणे मोत कि-

स विध आसी, ओ घर छोड किसे घर जासी ॥ कां० ॥ ॥ १० ॥ रामचंद्र कहै गर्व न कीजै तो पर भव सेती डरता रहीजै ॥ कां० ॥ ११ ॥ इति ॥

८ इण सरवरियारी पाळ ऊभा दोय राजवी, मोरा लाल, ऊभा दोय राजवी ॥ ए देशी ॥

भाखे श्रीजिनराज, काज सुधारजो; मोरा लाल, काज सुधारजो; देव गुरु सुध धर्म, हीयामें धारजो, मोरा लाल, हीयामें धारजो ॥ १ ॥ नर भव रतन अमोल, आळे मत हारजो ॥ मो० ॥ आ० ॥ विषय विकार प्रमाद, दूर सहू टारजो ॥ मो० दू० ॥ २ ॥ तन धन सहू परिवार, लार नहीं आवसी ॥ मो० ला० ॥ सुख दुख संच्या जीवकै, पर भव पावसी ॥ मो० प० ॥३॥ मात पिता सुत नार, परिवार स्वारथी ॥ मो० प० ॥ विरचे इण संसार, नहीं परमारथी ॥ मो० न० ॥ ४ ॥ सुरनर थिर नहीं कोय, जोय विचारनें ॥ मो० जो० ॥ रुळियो जीव अनाद, प्रमाद धारनें ॥ मो० प्र० ॥ ५ ॥ तो कीयां सत गुरु संग, श्रवण फल ज्ञानता ॥ मो० श्र० ॥ ज्ञान थकी विज्ञान, पछै पचखांनता ॥ मो० प० ॥ ६ ॥ त्यागथी संयम होय, पछै आश्रवरो कहै ॥ मो० प० ॥ तपथी तूटे कर्म, अक्रिय फल मोक्ष है ॥ मो० अ० ॥ ७ ॥ ए दस फल भगवइ अंग, सुणी राखो आसता ॥ मो० सु० ॥ तो कीजे सतगुरु संग, जो सुख चावो शाश्वता ॥ मो० जो० ॥ ८ ॥ दान शील तप भाव, सुध आराध जो ॥ मो० सु० ॥ संजम तप करी दोय, आतम साधजो ॥ मो० आ० ॥ ९ ॥ चेतो सहु नर नार,

त्यार हुवो मोखने ॥ मो० त्या० ॥ स्यूं हूवे कहियां राम, प्यारो पाप लोकनें ॥ मो० प्या० ॥ १० ॥ इति ॥

९ जल्हो म्हांरो जोड़रो उदियापुर माले रे ॥ए देशी ॥

दश दृष्टांते दोहिलो रे, पाम्यो नर अवतार; जिणनें वंछे देवता रे, ते किम जावो हार; चतुर नर चेतजो, मुनिराज सुणावे रे; पर उपगारी साधुजी, इम सत्य दरसावे रे ॥ च० ॥ १ ॥ गर्भावासमें ऊपनो रे, भृष्टा भाखसी मांय; नीचे माथे ऊंचे पगे रे, ते दुख जांणे जिनराय ॥ च० ॥ २ ॥ गर्भावासमें ऊपनो रे, विसरी पूरव वात; बालपणो खोयो ख्यालमें रे, जोबन तिरिया साथ ॥ च० ॥ ३ ॥ परण्यो प्यारी प्रेमसूं रे, रहे आधे आखर त्यार; पलमांहे पर भव गयो रे, कठै प्रीतम कठै नार ॥ च० ॥ ४ ॥ मात पिता सुत भामिनी रे, एक न चालै लार; जासी जीव एकलो रे, इणमें फेर न सार ॥ च० ॥ ५ ॥ पर नारी प्यारी लगे रे, जोवे आंख्यां फाड; काती कुत्तारी ओपमा रे, देवे सहु नर नार॥च०६ नांन्ही मोटी नार विष लता रे, जोवो हीये विचार; कन्या राशी रवी आवही, जदि शीतल हुवे दिनकार ॥ च० ॥ ७ ॥ ज्ञान सहित शील पाळजो रे, जोवन वयरे मांय; विजय कुमर विजया परे रे, शुद्ध पाळो मन वच काय ॥च०॥८॥ पुद्गल त्याग किया थकां रे, चेतन निर्मल थाय; जो सुख चावो शाश्वता रे, ओही करोनी उपाय ॥ च० ॥ ९ ॥ सुख दुख भुगत्या जीवड़े रे, केई अनंती वार; भटक्यो च्यारूं गतमें रे, कर्मतणे अनुसार ॥ च० ॥ १० ॥ कीया कर्म सहु भोगवे रे, इम कहे श्री जिनराज; बांधो मती कर्म जीवड़ा रे, जो राखी चावो लाज ॥ च० ॥ ११ ॥

करो दान शील तप भावना रे, पतळी चौकडी पाड़; संजम तप दूणो करो रे, कीजे कर्मासूं राड़ ॥ च० ॥१२॥ सार धर्म जिनराजनो रे, बीजूं सहू असार; रामचंद कहै सांभळो रे, अवसर नहीं वारंवार ॥ च० ॥ १३ ॥ संवत उगणीसे दश समै रे, नागौर नगर मझार; ज्येष्ठ मास शुद्ध त्रयोदशी रे, प्रथम जाम रविवार ॥ च० ॥ ॥ १४ ॥ इति ॥

१० नंणदल बाळो ए जोबन झिल रह्यौ ॥ ए देशी ॥

भविजण बांधो मति कर्म चीकणा,ऐ तो भुगते आपो आप ॥ भवि० बां० ॥ टेर ॥ एक तौ जोवन थिर नहीं, ओ तो दूजो अथिर परिवार ॥भ०॥ तीजो धन नहीं शाश्वतो, ओ तौ चौथो तन नहीं लार ॥ भ० बां० ॥ १ ॥ एक तो अटवी उजाड़में, ए तो दूजी विषमी ठौड़॥भ०॥ मुनिवर जातां मारगे, विचमें मिलियो चौर ॥भ०बां० २॥ तन वस्त्र लेतां तिहां ऋषिजी कीधो ध्यांन ॥ भ० ॥ चौर कहै कारण किसो, मुनि कहै सुण धर कांन॥भ० बां०॥३॥ तूं बांधे कर्मज एकलो, खावे सगलो साथ ॥ भ० ॥ पांतीवार कुंण एहमें, तूं तो पूछेनी घरमें वात ॥ भ० बां० ॥ ४ ॥ चौर पूछे घर आयनें, हूं तो बांधूं पापना पूर॥भ०॥ कुंण कुंण सांमल एहमें, थे साच कहो नहीं कूड़ ॥ भ० बां० ॥ ५ ॥ खावणरा सीरी सहू, म्हें तो पापना सीरी नहीं कोय ॥ भ० ॥ जो करसी सो पावसी, चौरनें सूली देवे पोय ॥ भ० बां० ॥ ६ ॥ चौर आयो मुनिवर कनें, तुमे भलो दियो मोनें ज्ञान ॥ भ० ॥ मुनि राम कहै सहु सांभलो, थे समझो इन आख्यान ॥ भ० बा० ॥७॥ इति॥

११ झमाकड़ो ॥

जीवा मोरा मानव भव लाधो भलो रे, पाम्यो आरज देश ॥ जी० ॥ उत्तम कुलमें ऊपनो रे, आयू दीरघ विसेस; जीवा मोरा चेत सके तो चेत जो रे, ए सतगुरु उपदेस॥ टेर॥जीवा मोरा पंच इंद्री दौरी मिली रे, वळी शरीर निरोग॥जी०॥सत गुरु संगत छै किहां रे, ते पिण मिलियो जोग ॥ जी० चे० ॥ १ ॥ जीवा मोरा गुरु विन ज्ञान मिले नहीं रे, गुरु विन घोर अंधार ॥ जी० ॥ गुरु परमेश्वर सारिसा रे, देवै पार उतार ॥ जी० चे० ॥ २ ॥ जीवा मोरा सुणवो शास्त्रज दो हिलो रे, धेठ हुई रह्यौ जीव ॥ जी०॥विन श्रद्धा तिरणो नहीं रे, ए जिन वचन सदीव ॥ जी० चे० ॥ ३ ॥ जीवा मोरा ज्ञान सहित करणी करो रे, ज्यूं हुवे खेवो पार ॥ जी० ॥ दान शील तप भावना रे, क्षमा दया गुण धार ॥ जी० चे० ॥ ४ ॥ जीवा मोरा उगणीसेरा पचवीसमें रे, नागौर शहर चौमास ॥ जी०॥ राम कहै सहू सांभलो रे, कीजो ज्ञान अभ्यास ॥ जी० चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

१२ भांगडली पीवो तो ढोला म्हांरे महलां आईजो, अमलियो अरोगो सोकड़ जाज्यो राज, भांगडली ॥ ॥ ए देशी ॥

दान तो दीजै प्राणी शील पालीजे, तप खजानो संग लीजै रे, राज, सुण सीखड़ली ॥ अजी कांई निर्मल भाव राखीजे रे, राज, सुण सीखड़ली ॥ टेर ॥ सीखडली सुणीजे प्राणी चित्तमें धरीजे, साधु संगत नित कीजे रे ॥

रा० ॥ अजी कांई किणरी निंदा मत कीजै रे ॥ रा०॥१॥ दया तो पालीजै प्राणी झूट टालीजै, पर चीज उठाई मत लीजै रे ॥ रा० ॥ अजी कांई मोटकी चौरी मत कीजै रे ॥रा०॥२॥ पर त्रियानें प्राणी बैन जांणीजै, बुरी निजर मत जोईजै रे ॥ रा० ॥ अजी कांई अळ्यो वचन मत कइजै रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ दांम परायो प्राणी हराम थे जांणो, संतोष दिलमांहे आंणो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई संतोष करि सुख मांणो रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोभ तजी जो, राग द्वेष मत कीजो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई समता भाव राखीजो रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ वचन की राड़ प्राणी आलको देवो, जिसो देवो तिसो लेवो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई तेरमो पाप मति सेवो रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ चुगली तो खासो प्राणी पर निंदा करसो, तो हरगज भव नहीं तिरसो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई नीची गतमांहे पड़सो रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ ऋत अनृत माया मृषा म भाखो, मिथ्या शल्य मति राखो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई मुगत म्हैल सांमो ताको रे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नैंण, वैंण, कर, कांनको साचो, लंगोटे साचे साचो रे ॥ रा० ॥ अजी कांई जबानें काचे काचो रे ॥ रा० ॥ ९ ॥ संवत उगणीसे प्राणी तीसको साल, नागौर शेषे काल रे ॥ रा० ॥ अजी कांई नजीक आयो वरसाल रे ॥ रा० ॥ १० ॥ इति अष्टादश पाप स्थान ॥

१३ गैरो जी फूल गुलाबरो ॥ ए देशी ॥

तस थावरमें भटकतां, वळे अटकतां घाटी नव नर सैंणां, दश दृष्टांते दोहीलो; ओ तौ पाम्यो मानव भव नर मैंणां. चेतो जी नर भव पायनें; थे तो चेतो चेतो

चतुर सुजांण ॥ न० चे० ॥ १ ॥ टेर ॥ गर्भावासमें अवतर्यौ, ओ तो वास दुर्गंधिमांय ॥ न० ॥ मास सवा नव गर्भमें, दुख जांणे जिनराय ॥ न० चे० ॥ २ ॥ गर्भावाससूं नीसर्यो, वळे विसर्यो पूरब वात ॥ न० ॥ रात दिवस वस्यौ मोहमें, वळे सेवे विसन सात ॥ न०चे०॥३॥ पर नारी प्यारी लगै, वळे जारी कीयां सिर धूड़ ॥न०॥ सारी ऋध खोवे हाथसूं, थारी वात मांने सहु कूड़ ॥ न० चे० ॥ ४ ॥ सत गुरु भाखे देशना, ओ तौ नर भव रतन अमोल ॥ न० ॥ वार अनंती हारियो, पिण अवके तौ सूरति खोल ॥ न० चे० ॥५॥ अरिहंतदेवनें धारजो, वळे करजो सत गुरु सेव ॥ न० ॥ धरजोजी धर्म दया मध्ये, वळे डरजो पाखंड कुदेव ॥ न० चे० ॥ ६ ॥ क्रोध मान माया लोभनें, थे तो छोडो च्यार कषाय ॥न०॥ जो सुख चावो जीवनें, ऐ तो इम भाखे जिनराय ॥ न० चे० ॥७॥ मात पिता सुत भामिनी,वळे तन धन सहु परिवार॥न०॥ एक न आवे परभवे, तूं तो अंतर ज्ञान विचार ॥न०चे०८ देखोनी ऋद्धि जादवतणी, आ तो क्षणमें गई विलाय॥न० सुरवर नरवर थिर नहीं,जिम बादरनी छांय ॥ न०चे०॥९॥ कीधा कर्म ज भोगवे, ऐ तो भोगव्यां छूटक होय ॥न०॥ कर्म बीज जिनवर कहे, ऐ तौ राग द्वेष छै दोय ॥ न० चे० ॥ १० ॥ इम जांणी कर्म मति बांधो, वळी साधो शिव पुर माग ॥ न० ॥ तप संयम दोय मूल है, इम कहे श्रीवीतराग ॥ न० चे० ॥ ११ ॥ दान शील तप भावना, ऐ तो शिव पुर मारग च्यार ॥ न० ॥ जो सुख चाहो शाश्वता, तो इणसें राखो प्यार ॥ न०चे०॥१२॥ उगणीसे निधि मधु मासमें, ओ तो वास जालोर सुख दाय ॥

॥ न० ॥ स्वामी वृद्धिचंदजी प्रसादसूं, ऋषि राम कहै चित लाय ॥ न० चे० ॥ १३ ॥ इति ॥

१४ न्याल देकी देशी ॥

छपर पुरांणा पड़ गया जी, कांई तूटण लागा बंध; संध संध खुलण लगी जी, कांई तऊ न दीसे मति मंद; अब घर छूटा चेतन समझिये जी ॥ १ ॥ झरोखे जाली लगी जी, कांई बारी आडी भींत; मूल नींव डिगमिग करे जी, कांई भई पुरांणी रीत ॥अ०॥२॥लछन सुभट नासी गया जी, कांई स्याईनो लोक गयो दूर; सिक्खर थरहर धूजही जी, कांई आई नंदी पूर॥अ०॥३॥ थेगली पिण ठहरे नही जी, कांई नहीं कोई रिछपाल; क्यूं सूतो तूं नींदमें जी, कांई अब तो सूरत संभाल ॥ ॥ अ० ॥ ४ ॥ अब करणा है सो कीजिये जी, कांई देणा है सो देह; लेणा है सो लीजिये जी, कांई कैणा है सो कैह ॥ अ० ॥ ५ ॥ लाय लगी चहुं फेरसूं जी, कांई मिल रही झाळो झाळ; मुनि राम कहै सहु काढजो जी, कांई इण घरमें बहुमाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

१५ न्यालदेनी देशी ॥

दश पचखांणे जीवड़ो जी, कांई पांमे सुख अनपार; करतां एक नवकारसी जी २; सौ वरस नरक निवार, तप समो नहीं जगतमें जी, सुखतणो दातार ॥ त०॥१॥ बीजूं पोरसी वर्ष सहसनो जी, कांई साढ पोरसी दश हजार; पुरिमढ लक्ष एक वर्षनो जी, एकासणे दश लक्ष धार ॥ त० ॥ २ ॥ नीवी तोडे कोड वरसने जी, कांई दश कोड एकल ठांण; सो कोड एकल दत्त दहेजी, आं-

विल सहस कोड जांण ॥ ३ ॥ सहस दश कोड उपवासमें जी, कांई छठतणो तप धार; लख कोटी वर्ष खपावही जी, अठ्ठम कोटि दश लख टार ॥४॥ कोटाकोटी वर्षनो जी, कांई दशम भस्म करै कर्म; मुनि राम कहै तप कीजियो जी, पामे स्यौ शिव शर्म ॥ त० ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ वेगा आईजो हो वाईसारा वीर, थां विना गडिये न आसँगे ॥ ए देशी ॥

धड धड धृज्यो हे माय मोरी जीव अपार, दूलभ नर भव पावियो; रुळियो रुळियो माय मोरी वारंवार, तेहनो लेखो नहीं आवियो ॥ १ ॥ करियो करियो हे माय मोरी कुगुरुको संग, धरम हिंसामें मानियो; भमियो भमियो हे करी धरमको भंग, सुध धरम नहीं जांणियो ॥ २ ॥ अब लेसूं हे माय मोरी संजम भार, वीर प्रभु गुरु धारसूं; गोतम स्वामी हे मिलिया तारनहार, नर भव वेग सुधारसूं ॥ ३ ॥ माता हसती हे बोले इण पर वात, तूं नांनडियो टावडो; खट घरसनो रे जाया तूं छै साक्षात, किम सैसी सी ने तावडो ॥ ४ ॥ कोमल केसां रे पुत्र करणो रे लोच, दुर्धर महाव्रत पालणा; मुनिपंथ कडो रे नहीं पाछलो सोच, छोटा मोटा दोष टालणा ॥ ५ ॥ कुमर ऐमंतो रे बोले इण पर वात, माताजी अनुमत दीजिये; ढील न कीजे हे माय मोरी खिण एक मात, मुनि राम कहे मुनी गुण कीजिये ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ कर रायजादा सुगटणो ॥ ए देशी ॥

ऐ तो मारगमें लूंटे पांच जणी, ऐ तो नहीं गिणे नि-

न्यल सबल भणी; इनसें भाग छूटा ज्यांके खूब वणी, यांरे सांमा हुवा ज्यांमें हुई घणी; मारगमें लूंटे पांच जणी ॥ टेर ॥ पेहली कुरंग भुजंगनें मार लिया, जो सन्मुख हुवा सो हार गया; भाग गया सो छूट गया, ज्यांने मिल गये धींग धणी ॥ मा० ॥ १ ॥ दूजी शलभादिकनें भस्म कीया, वळी मुक्ति जातांनें रोक दीया; कामी पुरुषांनें नरकमें पटक लीया, ज्यांने मारदेवे यमराज धणी ॥ मा० ॥ २ ॥ भमरादिक तीजी नाश करे, चोथी मत्स्यादिकना प्राण हरे; मुनि शूर वीर देखो इनसें लरे, इनके नहीं कोई एक धणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ गज महिष पंचमी दाह दीया, एक एक इंद्रिय जो वो जुलम कीया; साधू पंचांनें जीत शिव राह लीया, मुनि राम कहे ज्यांरे खूब वणी ॥ मा० ॥ ४ ॥ इति ॥

१८ चांदा थारी चांदनीसी रात रे, कोई नणदल रे भोजायां पांणी नीसरी; चुकल्यो मे ल्यो जल जमुनारी तीर रे, कोई आपज रे पधारया चंपा वाग में ॥ ए देशी ॥

जिन मारग छै सब मारगमें सार रे, कोई और ज रे नहीं लागे जोडे एहनें; रतननें निंदे मूरख गिवाँर रे, कोई परखे रे जँवरी जलदी जेहनें ॥ १ ॥ शुद्ध मारगके जोडे न लागे कोय रे, कोई ज्ञान ज रे दृष्टी करनें देखिये; कंचन पीतल अंतर कितनो होय रे, कोई रात ज रे दिन के अंतर पेखिये ॥ २ ॥ कुंण कुंण तरिया जिन मारगके जोर रे, कोई भरत ज रे आदि बहुला तर गया; इण धर्मसें पाये शिव रमणीकी ठौर रे, कोई जनम ज रे मरण

तणा दुख टर गया ॥ ३ ॥ देखो भाईजी धर्मको प्रताप रे, कोई बीजो रे प्रताप न जगमें एहवो; जावे भाईजी संचिया इणसूं पाप रे, कोई तरियो रे राजा परदेशी जेहवो ॥ ४ ॥ कुंण करे जगमें जिन मारगकी होडजी, कोई परखे रे बुध जन ज्ञान विचारसूं; मुनि राम कहै छै सुणियो मत पख छोड जी, कोई झोड़ज रे मत करजो मूढ गिवाँरसूं ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ मालण मालण कांई करो म्हांने, ल्होड़ी लाडी के वतळाव हो मारूजी ॥ ए देशी ॥

एकेंद्रीमांथी नीकल्यो, अबे इंद्रिय पाई पंच हो, चेतनजी ॥ संज्ञी मनुज आयू दीर्घ छै, वळे उत्तम कुल पुन्य संच हो ॥ चे० ॥ १ ॥ तूं भमियो पुद्गल संगसूं, वळी गमियो काल अनंत हो ॥ चे० ॥ जिन धर्म दुर्लभ पामियो, वळे मिल गये उत्तम संत हो ॥ चे० ॥ २ ॥ झूठे मात पिता भ्राता, सब झूठे पुत्र कलत्र हो ॥ चे० ॥ झूठे कुटुंब धन परिग्रहो, सब झूठे शत्रु अर मित्र हो ॥ चे०॥ ॥३॥ तेरे कुंण तूं देखतो, तूं पिण किणरो पेख हो ॥चे०॥ राग द्वेप अंदर भर्यो, तो स्यूं हुवो लीधां वेप हो ॥चे०॥४॥ लोक रंजन क्रिया करी, पढ कर लोक रिझाय हो ॥चे०॥ आशा तृष्णा अंदर जगी, तें स्यूं कीयो माथो मुंडाय हो ॥ चे० ॥ ५ ॥ कथनी जैसी रेणी नहीं, तो स्यूं हुवे कथनी कोड़ हो ॥ चे० ॥ शुद्ध करणी विन जीवड़ा, सब निकमी छै माथा फोड़ हो ॥ चे०॥६॥ ऐ वात पाई सद्गुरु कनें, सब सरधी साची वात हो ॥ चे० ॥ मुनि राम कहै शुद्ध संजम चहूं; रहो सतपुरुषांरो साथ हो॥चे०॥७॥इति

२० पनजी मूंडे बोल ॥ ए देशी ॥

उत्तम कुल मानव भय पायो, वळी निरोगी काया रे; लंबो आयू इंद्रिय निर्मल, आचारी गुरु पाया रे; चेतन अवके चेत, दुःखमिये आरेमें जनम लीधो रे ॥ चे० ॥१॥ पंचम आरे दुःख घणेरा, कहतां न पारही आवे रे; काया निरोगी तो धन नांही, धन तो पुत्र ही चावे रे ॥चे०॥२॥ पुत्र हुवो तो हुवो दुखकारी, अथवा पढियो नांही रे; जो पढियो संगत भूंडी, वहू न मिली मन चाथी रे ॥चे० ॥ ३ ॥ वहू गमंती तो पोतो नांही, पोती वहू दुख भारी रे; पुत्री वर तो नहीं मन गमतो, आ पिण चिंता न्यारी रे ॥चे०॥४॥ नारी सुपातर मरगई पैली,दूजी आई दुखदाई रे; और सुख तो मिलगये सारे,दुखदाई हुवो भाई रे॥ चे० ॥५॥पाडोसी दुखदाई मिलियो, नितको जंग मचावे रे; जो पाडोसी आछी मिलियो, तो तोटो व्यापारमें जावे रे ॥चे०॥६॥ लेणायत तो आय संतावे, देणायत नहीं देवे रे; और छांनी मार लगी बहुतेरी, सो किण आगे कैवे रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ धर्म करै जो दुखमी आरे, जेहनी अधिक वडाई रे; मुनि राम कहे छै धर्म करोनी, वखत पांवणी आई रे ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

मनवा रस्ते चाल, थारे नें कारणिये दुखडा निपजे रे; वैरी रस्ते चाल ॥ थारे०॥ दुसमण रस्ते चाल॥ टेर ॥ रस्ते चाल्या नहीं दो चक्री, नर्क सातमी पोंता रे; कोंडरीक मुनिवर रस्तो भूलो, खावे नरकमें गोता रे ॥ म० ॥ १ ॥ नघूक राजा तो हिंसाये डूवो, वसु नृप झूठ उचरने रे;

सत्यघोष तो चोरी करनें,रावण परत्रिय हरनें रे॥म०॥२॥ धनतृष्णाये आठमो चक्री, चाल्यो भर दरियाव रे; देव सह्र तो छुप गया दूरा, डूब गई जब नाव रे ॥ म०॥ ३ ॥ तंदुल मच्छ तो गयो सातमी, रे मन तुज परताप रे; भरत महाराजा केवल पायो, छूट गया सब पाप रे ॥ म० ॥४॥ मनसूं बंधन मनसूं मोक्ष,जिणमें फेरनसार रे; मन जीता तो जीता सब ही, मन हारे सब हार रे ॥म० ॥ ५ ॥ ज्ञान थकी तो ध्यान नीपजे, ध्यान थकी मन रोको रे; मन रूक्यां सूं राम कहे छै, दूर नहीं छै मोखो रे ॥ म० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ कुंजेरी देशी ॥

सुण भाई प्यारे, भम्यो गत च्यारूं मांय रे; कीडी मकोड़ी आदि तूं हुवो रे; तिर्यंच में; तिरजंचमें काल अनंत वस्यो रे तिर्यंचमें ॥ १ ॥ सु० ॥ कवि गयो नरकरे मांय रे, छेदन भेदन दुख सह्या रे; कहणी नावै ॥ क० ॥ दुःख एक सासरो रे, कहणी नावै ॥ २ ॥ सु० ॥ कवि हुवो रांक कंगाल रे, विध विधना दुःख भोगव्या रे; सुख नायो ॥ सु० ॥ सुपनें पापसूं रे, सुख नायो ॥ ३ ॥ सु०॥ लाधो लाधो मानव देह रे, उत्तम कुल श्रावक थयो रे; चेतोनी ॥ चे० ॥ अवसर दोहिलो रे, चेतोनी ॥४॥ सु० ॥ धन्य धन्य नरकना जीव रे, जे निर्मल समकित धारही रे; जिण कारण ॥ जि० ॥ धन्य धन्य जेहने रे, जिणकारण ॥ ५ ॥ सु० ॥ धिक् धिक् सुर अवतार रे, जे मिथ्या मतमें राचही रे; तिण कारण ॥ ति० ॥ धिक् धिक् तेहने रे, तिण कारण ॥ ६ ॥ सु० ॥ राम कहे बोल सात रे,

बंधे नहीं समकित मध्ये रे; दृढ राखो ॥ दृ० ॥ समकित मूल छै रे ॥ दृ० ॥ ७ ॥ इति ॥

२३ रूड़ो बथवोरे ॥ ए देशी ॥

नहीं हसवो रे, प्यारे ॥ नहीं० ॥ रहो ज्ञानमें मगन्न, नहीं० ॥ टेर ॥ हँसियां सेती हलको होवे, दुश्मण होवे सारा; पांडव कौरव जुद्धमच्यो थो, कटी क्षोहिणी ठारा ॥ नहीं० ॥ १ ॥ धणी धणियांणी दोनूं हँसिया, पुत्र वधू रीसाई; कंता भेद बतावो मोनें, नहींतर जीमूं नांई॥नहीं० ॥ २ ॥ हट कर पुत्र पूछै पितानें, क्यूं तुम हाँसो आयो; एक दिन तोरी जननी मोनें, कूवामें डबकायो ॥ नहीं० ॥ ३ ॥ आज जीमतां तड़को टाल्यो, कर कर लंबो हात; सिमरण होते दोनूं हँसिया, दूजी नहीं कोई वात ॥ नहीं० ॥ ४ ॥ पायो भेद कंतके पासे, एक दिन मोसो दीधो; अमरस आयो सासू झटके, गलमें पासो लीधो ॥ नहीं० ॥ ५ ॥ सेठ मरियो पुत्रही मरियो, बहू गल पासो धरियो; मुनि राम कहे छै विन प्रस्तावे, भूल न हासो करियो ॥ नहीं० ॥ ६ ॥ इति हास्य निषेधिका ॥

२४ काजलियो काढीनें दरजण आरसीमें जोयो रे, आंखरे टमोरे तैं तो छेलो मोयो हे दरजण बारे आव; ॥ ए देशी ॥

मनुष्य जनम पायो, उत्तम कुलमें आयो रे, चिंतामणि यण तैं तो हाथे खोयो रे, सज्जन हारे मत, हारे सज्जन ारे मत, मनुष्य जनम हीरो हाथ आयो रे ॥स०॥ १ ॥ टेर ॥ घर मध्ये धन्न देखी, मन्न मांहे फूल्यो रे, रूपवंती

नारी पेखी ज्ञान भूल्यो रे ॥ स० ॥ २ ॥ पुत्रनें परणाय, तूं तो मनड़ामें मोयो रे, पूंजी संभाली लारे गाढो रोयो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ लेणायत घेऱ्यो, तोनें राजमें रुकायो रे, इण रीते कर्म भोगे, राम गायो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ इति ॥

२५ देशी नवीन सूरजमलरी ॥

सटक सटक थारी ऊमर जावे, बूढापो नैड़ो, आवे रे चेतन भोळा,धर्म तूं कर ले रे; ओछी ऊमरका, आदमी रे तूं तो, खरची तो ले ले रे॥ टेर ॥१॥ सटक सटक थारी सासा रे जावे, जांणे अंजन उडियो, आवे रे ॥ चे० ॥ कवी तार ज्यूं तूटे रे ॥ ओछी० ॥ २ ॥ आयू पत्थर तेरा कोयला होय, अंजन रात दिन, दोय रे ॥चे०॥ गुरु सीटी पुकारे रे ॥ ओछी० ॥ ३॥ पंचदश पनरा बीस पचीसां, तीस चालीस पचासा रे ॥ चे० ॥ इस्टेसण जांणो रे ॥ ओछी०॥४॥ टिकट उत्तम ग्रामका लेना,हुस्यांरी पूरीसें, रैना रे ॥ चे० ॥ नहीं व्हादे पर रहना रे ॥ ओ०॥५॥ घड़ी घड़ी जावे सो पाछी रे नावे, वृथा क्यूं खोय गमावे रे ॥ चे०वृ०॥ हीरो हाथ तो आयो रे ॥ ओ० ॥६॥ तन धन यौवन छिनमें रे छीजे, झूठो गुमांन न,कीजे रे॥चे०झू०॥ ऐ जुग सुपनो रे ॥ ओछी०॥७॥ भटक भटक तूं तो धनकूं रे भटके, ज्ञानसूं मन नहीं, हटके रे ।चे०॥ मुनि राम दरसावे रे ॥ ओछी० ॥ ८ ॥ इति ॥

२६ सखि पनियां भरन कैसे जाना ॥ ए देशी ॥

तूं चलता छै विनजारा, जिया मत कर बहोत पसारा २; तूं० ॥टेर॥ कहांसें पोठ लदवाया, तूं क्या क्या माल

भरायाजी; नहीं जिस्का जांननहारा ॥ तूं० ॥१॥ मैं प्राग नगरसें आया, देहली पुर माल भराया जी;छै विध विध माल हमारा जी ॥ तूं० ॥ २ ॥ इस नगरीमें वहोत ठगारा, नहीं अंगतु कोई तुमारा जी; तूं रहीजे हुई हुंसियारा जी ॥तूं०॥३॥ यहां च्यार तो पूरे धुतारे, वे अच्छी अच्छी वस्तु उतारे जी;भरे वदळे माल असारा॥तूं०॥४॥ यां पंचांको कथन मत मानें,मैं चौडे कहूं नहीं छांनें जी; वसे तेईस पूरा ठगारा ॥ तूं०॥ ५ ॥ तूं अट्टल कुटल मत लीजे, तोटा काढ मत दीजे जी; फेर रक्खो दलाल शुद्ध लारा ॥ तूं०॥ ६ ॥ गाफल होय मत सोना, मिला रतन नहीं खोनाजी; इम चौकीदार पुकारा ॥ तूं०॥ ७ ॥ मत खरचीकी गफलत राखे, मुनि रामचंद इम भाखे जी; तूं करजे शुद्ध व्यापारा ॥ तूं० ॥ ८ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ खबर नहीं है जगमें पलक ॥ ए देशी ॥

तारक धर्म जिनेश्वरकेरो, विरला नर धारे; पाखँड मतनी पूजा होवे, मनुष्य जन्म हारे ॥ हलाहल कलियुग चल आयो रे ॥ ह० ॥ कूड कपट मत पाखंड करनें, जगनें ठग खायो ॥ ह० ॥ १ ॥ नगर ग्रामें ग्राम मसांणें राजा जम जैसा, वर्षा नहीं होवे मनमांनी, अल्प हुवा पैसा ॥ ह० ॥ २ ॥ वूज गाज नहीं रही राजमें, कामेती अळिया; कहो किसीका पोरा देवे, चौर कुती मिलिया

॥ ह० ॥ ३ ॥ झगडे बेटो मात तातसें, नहीं बंधव मुख बोले; साला सेती गूंज घणेरी, गुप्त बात खोले ॥ह०॥४॥ नारी कारण न्यारो होवे, मांगे सो लावे; वा नारी निज पतिनें छोडी, और पुरुष ध्यावे ॥ ह० ५ ॥ बूढेनें बेटी परणावे, लोभ दृष्टि जोवे; अल्प दिनांमें हुवे ज दुखणी, निज पतिनें रोवे ॥ ह० ॥ ६ ॥ मुखमें न धोला सिरपर धोला, परणीजण चावे; कुलवंती कोई रहे कारमें, और विगड जावे ॥ ह० ॥ ७ ॥ भला आदमी वहु सिधावे, पापीनो पोरो; दुखिया रानी ऊमर मोटी, सुखी जिवे थोड़ो ॥ ह० ॥ ८ ॥ दादो बैठा पोतो चल जावे, नहीं सर्व सुखी पावे; निर्धनके बहु बेटा बेटी, धनवंत तरसावे ॥ ह० ॥ ९ ॥ मूरख धन जोबनसूं गर्व, छिन छिन आउ छीजै; रामचंद्र कहे हलाहल कलुमें, चर्म ध्यांन कीजे॥ ह० ॥ १० ॥ इति ॥ कलियुगनी लावणी ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

हलाहल कलि युग मत जांणो रे ॥ ह० ॥ बडे बडे मुनिराज इसीमें, तपसी गुण खांनो ॥ टेर ॥ मारग चलता भूंडो न दीसे, ए खरुं उन्मांनो; अमृत पीते मूवो न सुणियो, झेर न रखे प्रांनो ॥ ह० ॥ १ ॥ एक अधिकाई हदसें जादा, विना धणी झूंझे; लाखां द्रव्य छोडी मुनि होवे, सिंघ परे गूंजे ॥ ह० ॥ २ ॥ दुजी अधिकाई सत युगसेती, दुहिता दी जावे; नाके सल घाले नहीं तिल भर, नहीं औगुन गावे ॥ ह० ॥ ३ ॥ लूलो पंगु अंग हीणो अंधो, रोगी कुष्टी बूढो; कुरूप बधिरादि पिता परणावे, धी न फेरे मूंढो ॥ ह० ॥ ४ ॥ अग्नि तेज सूरज प्रकाशा, धरा निपजे धांनो; खांड गळे पाले

सुत माता, दाता देवे दांनो ॥ ह० ॥ ५ ॥ वचन प्रमांणे लाखां रुपिये, दे ते व्यौपारी; वर्षे वर्षा नदियां चलती, पतिव्रता नारी ॥ ह० ॥ ६ ॥ भगवत वचन प्रकाश जगतमें, मेटे अंधारी; महाव्रत शुद्ध पाले सत जुगसा, करै तपस्या भारी ॥ ह०॥ ७ ॥ करै न हिंसा वदे न मृषा, दत्त ले ब्रह्मचारी; अकिंचन रंच नहीं है ममता, समता दिल धारी ॥ ह० ॥ ८ ॥ सत पुरुषांरे नितही सत जुग, करे कलि युग कांई; मुनि राम कहै आ वखत भली है, भजन करो भाई ॥ ह०॥९॥ इति ॥ सत्ययुगनी लावणी॥

३ मैं गुरुजी चेला तेरा; पड़ी जाज दरियाव बीचमें, पार लंघा बेड़ा मेरा ॥ ए देशी ॥

तुम भाग चलो तो कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती सेरी ॥ टेर ॥ एक रैन अंधेरी विजुरी चमके जी, कैदी कैदमें रहते थे, सफीलगिरी पोरायत सूते, बंदीवांन एक कहते थे, सबही निकसो ऐ छै मारग, ऐ अवसर नहीं आनेका, बहोत अच्छा पिण जरा लेटके, है इरादा जानेका, जे निकस्या ते घरकूं पोंचें, सूता ते जंजीर जडा, कब हुवे मारग कब वे निकसें, इन रीते जगवासी पडा, मत जांनो जग साचा, हे काचेसे काचा, वीरतणी है वाचा, आते नहीं अवसर फेरी ॥ *तुम भा० ॥१॥

---

* सवैयो-बंधी ज्यूं संसारी नर कैदी खानो जानो घर, मोहसो कपाट दृढ बेडी नारी सागे है। चौकीदार परिवार जावा नांहि देवे वार, मिथ्या रूप अंधकार निद्रालस लागे है ॥ गच्छो गच्छो कहै ज्ञानी झत्तकार रूप वानी, मोहकी दिवारगिरी मोक्षपुरी भागे है। कहै मुनि रामचंद सुन हो भविक वृंद, मनुष्य जनम जैसी सेरी नहीं आगे है ॥ १ ॥

जगजाल जगत का है अति फंदाजी, मोह मायामें नर नारी; मात पिता अरु बैन भार्या,अंत समय नहीं है थारी; रूप गर्व अरु धन गर्वता, ऐ दोनूं है दुखकारी; तड़फ तड़फनें माया जोडी, जीवथकी लागे प्यारी; या माया तेरी संग न चल्ले, तातें सुकृत करलेनी; जे कोई लेग्या इसकूं लारे, उसका नाम कह देनी; देते सतगुरु हेला, तूं मांन मांन रे गैला; दिलसें विचारे पैला, अरे बिगड गई क्या मत तेरी ॥ भा० ॥ २ ॥ रूपवंत पर त्रीया देखी जी, बुरी निजर क्यूं जोता है; सिर बदनामी दोजग होगी, क्यूं सुकृतकूं खोता है; हीरकनीसा नरभव पाया, इससें नहीं कोई और बडा; नाहक इसकूं क्यूं तूं हारे, मैं कैताहूं खड़ा खड़ा; मुनिराम कहे दिल पाक रखोनी, अच्छा अवसर आय अडा; करणा है सो करलो प्यारे, ऐ घोड़ा मैदांन पड़ा; सुणते हो तुम बंदा, क्यूं होते हो अंधा, पड़ा रहेगा धंधा, तेरे पूठ पीछे लागा वैरी, तुम भाग चलो तो कहोनी प्यारे, आगे नहीं मिलती सेरी ॥ ३ ॥ इति॥

४ देशी पूर्ववत् ॥

मैं अच्छा चाहता तेरा, पाखंड धर्म भरमकों छोड़ो, आतम धर्म रखो नैड़ा ॥ ज्ञान प्रकाशक आगसो आतम जी, ज्ञायक सब वस्तुकेरो; पाचक पावक आतम कहिये, दर्शन पाचक है गैरो; सर्व पदारथ दर्शन करनें, पचते हैं सूधी सरधो; विन श्रद्धा कुछ पचते नांही, तातें श्रद्धा दृढ कर दो; दाहक आतम छै अग्नीसो, चारित रूप आतम बोले; विन चारित कछु कर्म न जलता, शास्त्र धीच सारा खोले; सुधी सुणीये सारा, देख स्वरूप तुमारा, रहो पुद्गलसें न्यारा, ज्यूं पार लंघे तेरा बेड़ा, पाखंड ध-

रम भरमकूं छोड़ो, आतम धरम रक्खो नैड़ा ॥ १ ॥ इन आतमके दोय छै नारी जी, एक सुमति कुमती बीजी; कुमतिको भरमायो आतम, नाच रह्यो करतो जी जी; सुमती जाया पुत्र च्यार वर, प्रबोध १ विवेक २ शील ३ संतोसं ४; कुमती जाया पंच कहाया, मोह १, काम २, तीजो रोसं ३; मान ४, लोभ ५ है पुत्राभास हि, आतमनें घाले फोड़ा; मोह भणी निज राज सूंपियो, कामतणा दौड़े घोड़ा; आतम दुख अति पायो, सुमति पास सिधायो; प्रबोध नृप ठहरायो, टले राम विवेकसूं विखेड़ा; पाखंड धरम भरमकों छोड़ो, आतम धरम रक्खो नैड़ा ॥ २ ॥ इति ॥

दोहा ॥

चेतनजी अब चेतिये, वैंत वण्यो भल आय ।
पुद्गल हेत न रक्खिये, निज घर चाल संभाय ॥ १ ॥

५ लाज मोरी रखले भवांनी ॥ ए देशी ॥

वैरी वीच वास भया तेरा, लग्या फिर कर्मनका घेरा; देखो तुम स्वरूप निज घरका, गिणो मत खळ गुळ सब सरखा; दुग्ध दुग्ध सब सारिसा, मुग्ध जनोंकी वात, खोजी पावे धर्मनें, अण खोजी खोटा खात; धर्मकी खोजना करना; २ ॥ भूल पग पाछा नहीं धरना; २ ॥ मुक्ति गढ कायमही करना २ ॥ मु० भू० ॥ १ ॥ ज्ञानकूं आगू संग रक्खो, भला बुरा रस्तेकूं परखो; रतन औ कंकरकूं ओळखो, ढोर ! जहर अमृतकूं चक्खो; चाखो समता सूंखड़ी, नांखो ममता मार; राखो निर्मल भावना, भाखो वचन विचार; मुक्तिके सांमा पग भरना २ ॥ मु०

भू० ॥ २ ॥ कठिन अति मारग मुनिवरका, दूजा नहीं जगमें इन सरखा; आठ मास बारे, घड़ी वरसा, करे छिन जल थल नदी खड़का, मौती सम व्रत साधुका, करजो कोड़ जतन्न; फटे तूटे नहीं अरथके, इम भाखे भगवन्न; नहीं मुनि मारग विन तरणा २ ॥ मु० भू० ॥ ३ ॥ मुनीका महाव्रत शुद्ध पाळो, दोष सब दूरे ही टाळो; मुक्तके सांमो नित भाळो, प्रभूकी आज्ञाये चालो; चालो प्रभूकी कारमें, टाळो विषय विकार; मालो शिवपुर मागमें, झालो गुरु चरणार; लेवो गुरुदेवनका सरना २ ॥ मु० भू० ॥ ४ ॥ क्षमाकी बांधो समशेरा, संयमकी सेना लो लेरा; खजाना ज्ञानका गहरा, लूंटलो दुश्मनका डेरा; तेरा संघाती साथ लो, दुश्मन करो निरोध; ऊखारो जड़ मूलसूं, राग द्वेष दोष योध; क्रोधके ताला ही जडणा २ ॥ मु० भू० ॥ ५ ॥ जिनागम जय कुंजर सज्ञ लो, सातसे नय घोड़े चढ लो; शीलके रथ शस्त्रे भर लो, संवेगकी पलटण संग धर लो; कर केसरिया ऊर दो, कर्म कटकके मांय; चढ्यां घोड़ां लो शिवपुरी, साचका तीर चलाय; करो गज सुख माल जिसी जरणा २ ॥ मु० भू० ॥ ६ ॥ तपकी तोपांकूं भर दो, ध्यांनकी वत्ती सिर धर दो; हिमतका हल्लाही कर दो, कर्मकी सेनाकूं मरदो; मारो मोह महिरानकों, जारो राग रु रीस, मुनि राम उजारो आतमा, तूं ईश्वर जगदीस, नहीं ज्यां जन्म जरा मरना २ ॥ मु० भू० ॥ ७ ॥ इति ॥

दोहा ॥

प्रथम न बैसे पंचमें, बसे तौ कर दे छांन ।
पिण कलियुगनी पंचायती, है अनरथकी खांन ॥ १ ॥

साच बराबर तप नहीं, साच धर्मको बीज।
रींझे सुरनर साचसूं, साच जगतमें चीज ॥ २ ॥

६ देशी पूर्ववत् ॥

साचसें सेव करे देवा, साचसें जीते नित्य मेवा; साचसें धीज उत्तर जेवा, साचसें पारही उतरेवा; पार उतारे साचही, साच बडो संसार; कार हुवे सब साचसूं, साच भोळाऊ लार; साचसूं खड़ा खड़ा गूंजो २, साचका पगल्या नित पूजो; साचसो धरम नहीं दूजो ॥ सा० ॥ १ ॥ साचसूं पैठ जमे भारी, साचसूं धीजे नर नारी; साचकी बात लगे प्यारी, साचसूं रींजे व्यौपारी; संपत पावे साचसूं, जावे आपदा दूर; जिण नर साच न रक्खियो, तिण कीयो जमारो धूर; झूठसो दुश्मन नहीं दूजो२ ॥सा०॥२॥ महीपति साचकूं परखे, तिहां सब दैवज्ञकूं करखे; कहो मुझ मुष्टिमें हरखे, जोतसी बोलो बेधरके; दैवज्ञ शास्त्र हेरनें, कहे श्वेत गौ-लमटोर; कहो शकुनी तुम शकुनसूं, मैं पूछूं इन ठौर; शकुनी शकुनांकूं बूजो २ ॥ सा० ॥३॥ शकुनि जोवे छे जेहवे, कन्या कच नीचोवे तेहवे; मौती अणवींध मुष्टीमें, पंच तब आये दृष्टीमें; पंच विचारे आपसूं, करणो किसो उपाय; विना इलमको बोलबो, बिन बोल्यां हुरमत जाय; आवे अब उर आडो डूजो२॥ सा० ॥४॥ पंच कहे करणो अब कांई, बोल्यां विन सरसे कब तांई; पंचायति झूठी नहीं भाखी,आपां नहीं रखारुखी राखी;परमेश्वर साखी करी, डर पर भवको राख; खोटी न करी पंचायती,झूठ न कह्यो हकनाक;आपां अब बोलत क्यूं धूजो२॥सा०५॥

पंचांमें परमेश्वर कैवे, पंचांको ओठो सब लेवे; पंचांकों करकाटी देवे, पंचांके भरोसे रेवे; पंच परमेश्वर सारीसा, प्रगट कहे संसार; लाल कहो सब मिल करी, भली करे करतार; आपां पख परमेश्वर हूजो २॥सा०॥६॥ पंच कहे लालही खोलो, नृप कहे आलोची बोलो; पंच कहे सुणिये महाराजा, साचसें सुधरे सब काजा; काज सुधारे साजही, लाज रखे जिनराज; मोंती फिद हुई लालही, देखे दुनियां राज; साच है मिश्रीको कुंजो॥ ॥ २ ॥ सा० ॥ ७ ॥ भूपति साचकूं परख्यौ, पंचां पर तन मन कर हरख्यौ; पंचांको वचन नहीं सरक्यो, कह्यां सूं लालही निरख्यौ; निरखो साच प्रभावकों, देवो झूठकों त्याग; मुनि राम कहे धन साच है, साच बोले वड भाग; झूठ तज तिन्यौ चाहतूं जो २ ॥ सा० ॥ ८ ॥ इति ॥

७ मत करना परतीत रांडकी मारा सेर देगई टारा॥ ॥ ए देशी ॥

चले न किसका जोर मिजाजी, होनहार होवे, मिजाजी, होनहार होवे; जोसी सिद्ध मीये अर अवधू, खड़ा खडा जोवे ॥टेर॥ जो जोसी जोतसकूं वरते, वात सचि दीसे उनकूं ॥ भला वा० ॥ राजा प्रजा पाये लग्गे, ईश्वरही जांने जिनकूं; तेजी मंदी होवेरे मालम, क्यूं जाचे औरनकूं; ॥ भला क्यूं० ॥ अंक फर्क जोसीकूं दीसे, छिनमें मार लेवे धनकूं; सब कोई जोसी फैल करत है, होतबनें को कुन धोवे ॥ भला हो० ॥ च० ॥१॥ राख लगाये जटा वधाये, क्या सिधि पाते हैं बाबू; ॥ भला क्या० ॥ गंगा पर हरद्वार ठिकांना, हींगलाज रहैं आबू; जडी बुंटीका

रक्खे कुतका, तड़ाका मारे, मीजाजी ॥ त० ॥ भोळेकों भरमावे विरथा, सबही धूतारे,साच किसीके पास नहीं है, जन्म वृथा खोवे ॥ भला ज०॥च०॥२॥ मुसलमीन परवीन हीं देखा, जादूगर रमली; ॥ भला जा० ॥ डोरे गंडे झाड़े फूंके, वात मिलाते हैं अगली; देख देखनें सबही देखा, पुरवासी जंगली; ॥ भला पु० ॥ इल्म किसीके पास न सच्चा, ठगबाजी सगली; सिमिया हिंमिया रिंमिया बोले, किमियाकूं रोवे ॥भला कि०॥च०॥३॥ जंत्र मंत्र और टांणे टूंणे, उच्चाटन सारे, भला उ० ॥ जो किसीका किसपर चल्है,चाहे सो मारे; कर्म प्रमांणे सुख दुख भुगते समझो दिल प्यारे; ॥भला स०॥ नास्ति नहीं को विरला होगा, होते नहीं ज्हारे; सच्चा इल्मी उसकूं समझो, सुकृत फल बोवे ॥ भला सु० ॥ च० ॥ ४ ॥ साध संत अर अवधू नग्गे, मौनी अर मुल्लां; ॥ भला मौ० ॥ साच वात तौ कोइयन पाई, मारत है गल्लां; अंदर छोडी बाहिर ढूंढे, किम पाते रस्ता; ॥ भला कि० ॥ ऋद्धि सिद्धि सब मांहि विराजे, क्यूं इत उत धस्ता; मुनि राम कहै वो इल्मी सच्चा, निज मठनें धोवे ॥भला नि०॥च०॥५॥इति॥

७ तेरो सूतो सिंघ निशंक जगादे सिंघणी ॥ ए देशी ॥

वार वार मैं क्या तुज बोलूं, मांन कह्या मेरा; चतुर नर मांन कह्या मेरा; सब स्वारथके मिले मुसाफिर, नहीं कोई तेरा ॥ टेर ॥ एक दिन ऐसे जादव होते, सुर पाये परता; ॥ भला सु० ॥ हेम पुरी सुर छिनमें कीधी, नहीं किसे डरता; तीन खंडके भोक्ता होके, पुन्य पिछा फिर-

ता; ॥ भला पु० ॥ एक दिवस ओ आंखां देखे, जादव सब जरता; जरा न लागो जोर कृष्णको, विन पानी मरता; ॥ भला वि० ॥ धन दोलत कोई संग न चल्ली, खमा खमा करता; छपन कोड़ जादवको मालिक, एक न गयो लेरां ॥ भला ए० ॥ वा० ॥ १ ॥ एक दिन रावण राज करत हो, बलवँत जगमांही; भला ब० ॥ लाख जिसीके बेटे कहिये, सव्वा लख भाई; घरमी फूटे नौकर बदळे, बदळे सीपाई; भला ब० ॥ पर नारीसें प्रीति करीनें, फते किसे पाई; छिनमें लिछमण मार लियो है, नर्क बीच डेरा; भला न० ॥ वा० ॥ २ ॥ किसके मात पिता सुत बंधू, किसके परिवारा; भला कि० ॥ किसके नारी किसके बचे, झूठा संसारा; बिन मुतलब सब खारा लग्गे, मुतलबसे प्यारा; भला मु० ॥ पुन्य पाप दो संग चलेगा, और नहीं लारा; रामचंद्र कहे सद्गुरु सचे, करते उजवेरा; भला क० ॥ वा० ॥ ३ ॥इति॥

९ अगड़धं अगड़धं वाजे दोकड़ा सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

माल खरीदो मिले जो नफ्फा, घरका करलो संभारा; मूल पूंजीकों रख लो सैंठी, तूं छै चलता विनजारा ॥टेर॥ जो जो वस्तू नफा न देगा, पोठ खालि कर दो सारा; भूलचूक मत करो खरीदी, विवेक मित्र रखियो लारा ॥ मा० ॥ १ ॥ जो जो वस्तु नफा तोय देगा, उनकूं संग्रह कर प्यारा; दूर दिशावर माल चढेगा, रस्तेमें बहु वठ पारा ॥ मा० ॥ २ ॥ एकाएक तूं जासी दिशावर, संगन आसी परिवारा; विदा हुतेकूं विदा न देसी, खो-

स लेसी कपड़ा थारा ॥ मा० ॥ ३ ॥ थारो एक न दीसे अंगतू, तूं पिण सबसें है न्यारा; मुनि राम कहै तूं रट जिनवरकूं, ज्यूं वेग हुवे वेड़ा पारा ॥ मा० ॥ ४ ॥ इति ॥

१० तुम चलो सखी कुछ जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

गंधी देहका तूं रहवासी, क्या इतना तूं सोच करे; किनसें उत्पत्ति या तूं जांनें, क्यूं आंके वांके पांव धरे ॥ ॥टेर॥ माता रुधिर पिता शुक्रसें, जिससें तेरी देह बनी; अधोमुख पांव नीचे तूं लटक्या, मल निकस्या तेरी नाक अनी ॥ गं० ॥ १ ॥ पुरीष कूमी पर तूं नित झूल्यो, भूल्यो तूं बाहिर आके; फूल्यो धन अरु तन जोवनसें, पर नारी पिण तूं ताके ॥ गं० ॥ २ ॥ श्रवण पदारथ जब छै तेरे, श्रवण करे भगवत वांनी; नहींतर निकम्मे खम्मे कहिये, बात नहीं कछु एह छांनी ॥ गं० ॥ ३ ॥ त्रस थावरकी दया जो पाळे, भगवत मुनिवरकूं देखे; शास्त्र वाचे धर्मसूं राचे, जद आंख्यां जांणूं लेखे ॥ गं० ॥ ४ ॥ नर भव सेती सिद्ध पद पावे, नाकी जिण प्रांणी राखी; नर भव खोयो जन्म विगोयो, गई सदा जिणकी नाकी ॥ गं० ॥ ५ ॥ रसनाकर रटिया जिनवरकूं, जद ऐ जीभ पवित्त रहै;काया सफल शुद्ध धर्म कीयां सूं,नहींतर अशुचितणो घर है ॥ गं० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे खजवांणामांहे, क्यूं न करो नर देह सफली; गुणचालीसे माघ वद बारस, धरम करै जोई तिथि भली ॥ गं० ॥ ७ ॥ इति ॥

११ एक घड़ीकी करते मोहोवत ऊमर निभा देते सारी ॥ ए देशी ॥

सुण हे गोरी अंग मरोरि. तूं कालामें पेच धरे. काला

हिरणा जंगल चरणा, वे भी छल वल वहोत करे; काला नाग वंबी पर खेले, उसके खायां तुरत मरे; काली घटा अंवर पर गाजे, वरस्यां दुनियां पेट भरे; काला हस्ती राजाके सोभे, वे फौजां सिणगार धरे; काली ढाल गैंडकी होती, उनसें जोधा खूब लरे; काली तो कस्तूरी कहिये, औगुन ऊपर गुन्न करे; कालो सुरमो नयनां सोभे, उसकी विंदली सुरंग धरे; काला तवा पर रोटी पके, उससे तेरा पेट भरे, काली कीकी आंखमें सोभे, उनसे सव जग सूझ परे; कालाही केश वहुतसा सोभे, उनसें तरुणी चित्त हरे; कालाही पारस काली स्याही, जिण लिखियां सव साख भरे; एक काली तलवारही होती, उससे दुश्मन वहोत डरे; एक काली कोकिल वी होती, टहुका सुन कर दिल्ल ठरे; एक काली मंमाई होती, उन खायां तो प्रांण धरे; सुण गोरी नालतकी मारी, क्यूं कालामें ऐव धरे ॥ १ ॥ इति ॥

१२ सासू कहे रिसाई जी क ॥ ए देशी ॥

चौमासो अयी लागे जी क, सरावग सुण लीजो; कोई धर्म करै वड भागे जी क॥स०॥ वहुत जीव उत्पत्ती जी क ॥ स० ॥ नहीं विचरै जैनके जत्ती जीक ॥स०॥१॥ श्रीकृष्ण सभा नहीं करता जी क॥स०॥आवश्यक सूत्रमें धरता जी क॥स०॥त्रिखंडतणा छा भोक्ता जी क ॥स०॥ अरिहंत पद लग पोतां जी क ॥स०॥२॥ अन्यमति श्रावण हरी वरजे जी क ॥स०॥ तो श्रावण भादू तुम किम सरजे जी क ॥स०॥ दो मासे शील ज पाळोजी क ॥स०॥ करो रयणी भोजन टाळो जी क ॥स०॥ ३ ॥ नित प्रति सुणो वखांणे जी क ॥स०॥ हुवे श्रवणथी नाण विनाणे जी क

॥ स० ॥ श्रावण भादू धन उपजै जी क ॥स०॥ इण रीत धर्म पिण निपजै जी क ॥ स० ॥४ ॥ सुणो थोड़ामें उच्च- रियो जी क ॥ स० ॥ शुद्ध कृत्य थे करियो जी क ॥स०॥ अवश्य करो एक तेलो जी क ॥ स० ॥ चौपड़ पासा मत खेलो जी क ॥ स० ॥ ५ ॥ छांणे इंधन धांन शाक पाते जीक ॥ वायां सु० ॥ करो जीव जतन दिन राते जी क ॥ वा० ॥ पग पग उपयोग रक्खो जी क ॥ वा० ॥ थांरे सुकृत फल हुवे पक्को जी क ॥ स० ॥६॥ टाळो जीवांनी घाते जीक ॥ वा० ॥ गरणा कह्या छै साते जी क॥वा०॥ रामचंद्र इम भाखे जी क ॥ स० ॥ पुन्यवंत जयणा राखे जी क ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ चौमासे कर्तव्य कर्म ॥

१३ मैं जाती हूं गिरनार कहूं नहीं छांना ॥ ए देशी ॥

तुम खूब करो धर्म ध्यान, पर्यूषण आये; धरो मती पर- माद, प्रभू फुरमाये; दान शील तप भाव, क्षमा तुम करियो; कठिन वचन मुख बोल, काहू मत लरियो; हुवो किसीसें वैर, देर विन खामो, रखो न दुश्मन भाव, गु- नी शिर नामो; रखो न मन अहंकार, धर्म जो पायो; जो रखो मन अहंकार, तो धर्म गमायो;मुनिवरकेरी सेव, करो मनभाये ॥ तुम खू० ॥ १ ॥ केई अंत समै कहे तात, वात पुत्रांनें; असुकसें जावज्जीव, न बोलो कोई टांनें; र- खजो गाढा वैर, कहूं तूं मांनें;मरणे परणे न रक्खो रीत, सपूत गिणूं थांनें;जो रखोला कछु व्यवहार,तो हूंलो दां- नगिरी थांरो; लीजो इनसें वैर, वचन सुनो म्हारो; दी- जो छोरांने सीख, लीक ऐ रक्खे; कोई उत्तम पुन्यवंत जीव, धर्मकूं लक्खे; करे सूंस पचखांण, सारांने खमाये ॥ तु० ॥ २ ॥ करो कुशीलका त्याग, रात्रि मत खावो;

रखो हरीका नेम, और मत न्हावो; रात्री भोजन दोष, ज्ञानी कह्यो मोटो; द्रव्ये भावे दोय, इसीमें तोटो; व्रत जो होय मलीन, फेर उजवालो; पग पग रखो उपयोग, हिंसाकों टालो; एक देऊं तुमकूं सीख, हीयमें रक्खो; कोई भूल चूक पर निंद, करी मत बक्को; ना देवो हूंकारो भूल, न सुनियो कांनें; एह दीवी तुमकूं सीख चौड़े नहीं छांनें; तो न्हेगा कारज सिद्ध, सदा मन चाये ॥तु० ॥ ३ ॥ तुम करो सामायिक शुद्ध, और पड़िकमणो; सम्यक् दर्शन ज्ञान, चारित्रमें रमणो; जिन धर्मकूं जांनों सार, आतमकूं दमणो; गुणोनी श्री नमुक्कार, छूटे तेरो भमणो; सुनियो नित्य व्याख्यान, अज्ञानकूं वमणो; कठिन वचन सुनि कांन, सुधे दिल खमणो; मुनि राम कहे जिनराज, तणो लो सरणो; और कारजकूं छोड, दौड़ धर्म करणो; तातें तेरा जन्म, मरण मिट जाये; ॥ तुम खूब करो धर्म ध्यांन, पर्यूषण आये; २ ॥ धरो मती परमाद, प्रभू फुर माये ॥ ४ ॥ इति ॥

१४ बारे मास्यारी चाल ॥

मैं बोलूं छूं हितकी वातां, सुलटी समझो शुद्धमती; ऊलटी सरधे ऊंधमती नर, जिनकी किम हुवे ऊंच गती ॥ टेर ॥ सम्यक् दृष्टी होवे प्रांनी, जानी आरंभनें टाले; अनसरतें वो करे मन मझे, भगवत वचनांसूं चाले; यदि-वा शुद्धलोक विरुद्ध, कदे नहीं रस्ते हाले; लोक विरुद्ध जो कारज करतां, जिणनें पिण हितसूं पाले ॥ मे० ॥ १ ॥ मुनि पण लोक विरुद्धकूं वरजे, गरजे जिन मारगमांही; सुवावड़ न्यात गोठ हलवाई, नहीं वहिरे रस्ते मांही; नारी

जात अरु अज्ञा परमुख, भूंडो लगे परचो जाही; आल प्रमुख तो आवे उसकूं, जिसमें शंका छै नांही ॥ मे० ॥ २ ॥ घर घर मांहि जावे वो चाली, मोकाण करावे मुनि होके; टेरो मिले जां जावे पाधरो, चौड़े विगाड़े दोय लोके; भेष लजावे लोक रिझावे, गीदा बिछावे वो चौड़े; गृहस्थी जिसकूं जांणे ढीला, कूंण करे समझू सिर फोड़े ॥ मे० ॥ ३ ॥ श्रद्धा शुद्ध नहीं फेर होवे, समझू साहमूं कुंण जोवे; मत पखिया जो मांनें जिसकूं, मनमांहे पिण वो रोवे; ले डूबेगा जिसकूं पीं दे, कदे नहीं ऊंचो होवे; लोकांनें पर मोद लगावे, पोते अंधो क्यूं होवे ॥ मे० ॥ ४ ॥ कर्मतणी तो गत छै न्यारी, आप औगुण फेर नहीं जोवे; जिसको पढियो जरा न लेखे, नाहक जन्म वृथा खोवे; मुनि रामचंद्र कहे दश पूर्व महा, अभव्य पिण पढबोज करे; क्या होवे पढियां विन श्रद्धा, सम्यक् ज्ञान क्रियासें तरे ॥ ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

देशी ख्यालनी ॥

संसारी लोको सात व्यसन छोडो भावसूं ॥ सं० ॥ टेर ॥ जूवा खेलण मांस मद्य और, वेश्या व्यसन सिकार; चोरी पर रमणीको रमवो, सातूं व्यसन निवार हो ॥ ॥ सं० ॥ १ ॥ जूवा खेलिया पांडवास रे, मंस भखियो वकराय; मदिरा पीवी जादवांस रे, जळ्यां मूलसें जाय हो ॥ सं० ॥ २ ॥ चारुदत्त वेश्यानें सेवी, ब्रह्मदत्त आ-

खेट; सत्यघोष पर धनके कारन, पहुंतो नरकां थेट हो ॥ ॥ सं० ॥ ३ ॥ रावण राजा बडो अभिमानी, तीन खंडको सांमी, रामचंद्रकी सीता हरतां, भयो नरकको गामी हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ सात व्यसन ए छोड दोस रे, है जीवन दुखकार; रामचंद्रकी आही सीख है, सातूं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

संसारी लोको जूवा व्यसन तुमे छोड दो ॥ सं०॥टेर॥ सर्व व्यसनका राजा जूवा, भूल चूक मत खेलो; सर्व व्यसनकों जूवा सिखावे, ओ सात व्यसनमें पेलो हो ॥ सं० ॥ १ ॥ सप्त व्यसनको राजा ओ तो, दुर्गतिमें पहुंचावे; आर्त ध्यानको मूल कहावे, चौरी आदि सिखावे हो ॥ सं० ॥ २ ॥ एक वस्तिको राजा जूवे, रमवा चाले पड़ियो; कह्यो किसीको मांनें नांही, जोगी आयो दूरसें खड़ियो हो ॥सं० ॥३॥ राजा बाबूका जूवा खेलन, युक्ती साथ छोडाऊं; तो गुरुका पंजा शिर पर मेरे, नृपकूं रस्ते लाऊं हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ अद्भुत जोगी जंगल नृप दीठो, पूछे इम महिपाल; क्या कथा कक्षे नांहीं राजा, सफरी बंधकूं जाल हो ॥ सं० ॥५॥ नृप कहे क्या तुम मछयां खाते, हां खाते मदिरा सेत; क्या मदभी पीते बाबो बोले,पीवां वेश्या समेत हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ क्या वेश्याभी सेते बोले जोगी,अरि शिर पग दे जाते;कुंन तुज वैरी वो मुज वैरी भीत भेदहां राते हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ क्या चौरीभी करते दीसो बाबू, हां द्यूत हेत करां चौरी;सुणनें दिलमें राजा

चमक्यौ, ए गत होसी मोरी हो ॥ सं० ॥८॥ राजा बोले सुण बाबाजी, हूं जूवारी मैं मोटो; किसीतणो मैं कह्यौ न मांन्यो, जांण्यो व्यसन ए खोटो हो॥सं०॥९॥ सुणिये बान्नू कहे इम जोगी, जो तूं जूवा रमसी; चौरी नारीपर मदिरा मांस, वेश्या शिकार तूं भमसी हो ॥ सं० ॥१०॥ राजा बोले सुणो बाबाजी, भूल चूक नहीं रमसूं; मुनि राम कहै संग उत्तम करिये, सीख देवो उत्तमसूं हो ॥ ॥ सं० ॥ ११ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥

संसारी लोको गंधी देहीका किसा गारवा ॥ सं० टेर ॥ गंधी देहीका किसा गारवा,बुध जन करो विचार; सत्पुरुषांकी करलो संगत, ज्यूं हुवे बेड़ा पार हो ॥ सं० ॥ १ ॥ रंगी चंगी काया दीसे, छिनमे छेह दिखावे; धम धम करतो चढ्यो चौबारे, पाछो पगां नहीं आवे हो ॥ सं० ॥ २ ॥ अश्व कुदावे मूंछ मुरडावे, मनमें घमंड घणेरो; पटके पड़ियो दम नीसरियो, कीयो ममांणे ड़ेरो हो० ॥ सं० ॥ ३ ॥ चोवा चंदन चरचे काया, रजही वेग उडाड़े; बांण ही बूवो पर वश हूवो, खाटमें जावे झाड़े हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ माता रुधिर पिता वीर्य मिल, महा अशुचिकी ठौर; जिणमांहे तो चेतन उपजे, देखो कर्मका जोर हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ कल्कल एक रात्रि लग रेहै, पंच रात्री बुद्बुद रूप; पक्ष करीनें ईंडो होवे, इम बोले जिन भूप हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ शिरोंकुर एक मास करी होवे, मास दोय उर घाट; तीन माससें उदर बनत है, चतु मासे कर फाट हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ पंच मास करीनें अंगुली प्रगटे, रोम दृष्टि षट मासः सर्वावयव व्है मास

सातमें, जिनवर कीयो प्रकाश हो ॥ सं० ॥ ८ ॥ चरण ऊर्ध्व अरु मस्तक नीचो, चर्म पक्षी परे टिरियो; नव द-क्ष मासे वायू प्रकोपे, गर्भ थकी नीसरियो हो ॥ सं० ॥ ९ ॥ नव द्वार करीनें अशुचि वहै नित, छै मल मूत्रकी खांन; मुनिराम कहे इण कायासेती, सदा करो धर्म ध्यांन हो ॥ सं० ॥ १० ॥ इति ॥

४ देशी ख्यालनी ॥

कर्मतणी गत वांकड़ी, सुंणजो भवि लोको ॥ क० ॥ टेर ॥ वडा पुरुष वे राम रु लिछमण, ज्यां सेव्यो वन-वास; सती सीताकूं रावण ले गयो, राम भयो उदास हो ॥ सुं० ॥ १ ॥ कर्म धको दीयो रावणकूं, सीतानें घा-ल्यो हाथ; जीव संपदा सबही खोई, तीन खंडको नाथ हो ॥ सुं० ॥ २ ॥ वन भुगत्यो है पांचे पांडव, जिनकी सुणजो वात; जूवामांही हारी संपदा, दुर्योधनके साथ हो ॥ सुं० ॥ ३ ॥ धातकी खंडको राय पदमोत्तर, वडी करी उत्पात; समुद्र उलंघ द्रौपदी ले गयो, हुई असंभव वात हो ॥ सुं० ॥ ४ ॥ सती शिरोमण वड़ी अंजना, उ-त्तम वांकी जात; विखो सु भुगत्यो वीस वरस दो, संग दासीके साथ हो ॥ सुं० ॥ ५ ॥ देखोजी कर्मनकी या थिति, वड़ा वड़ामें होय; मुनि राम कहे समझायनें स जी, कर्म बांधो मति कोय हो ॥ सुं० ॥ ६ ॥ इति ॥

५ हूं डरूं अकेली वादलमें, चमके वैरण वीजली ॥ ए देशी ॥

मूरख लखजा रे, कनक ने कामण जगमें पास है; निज मन समझा रे, इण भवमें विरचै, नहिं थिर

वास है ॥ टेर ॥ नांणो नेह तोडो कह्यो स रे, जांणो अनरथ मूल; हेत ठिकांणो ना गिणे स रे, सगपण जावे भूल; धन्य मुनिवर संसारमें स रे, धनकूं जांणे धूल रे ॥ मू० ॥ १ ॥ श्रेणिकरायनो डीकरो स रे, कुणिक नामें राय; बाप भणी दीयो पींजरे स रे, जोवो आगम मांय; इण परिग्रह कारणे स रे, अनरथ होता जाय रे ॥ मू० ॥ २ ॥ हार हाथी था वहिल पै सरे, कुणिककरी अभिलाख; दोय दिवसमें नर-मुंवा स रे, एक कोड असिलाख; महाभारत आगे हुवा स रे, छै सूत्रनी साख रे ॥ मू० ॥ ३ ॥ जादव कुलमें आयनें स रे, कमला कीधो वास; पुरी द्वारका सुर करी स रे,सब सोवन घर वास;इक दिन ऐसो आवियो स रे, हुवो जादव केरो नास रे; ॥ मू० ॥ ४ ॥ राय प्रदेशी रै होंती स रे, सूरी कंता नार; इष्ट कांत वाल्ही घणूं स रे, सूत्रमें अधिकार; निज स्वारथ विन पापणी स रे, मार्‍यो निज भरतार रे ॥ मूं० ॥ ५ ॥ जुहूल श्रावकनें हूंती स रे, दयिता तीसनें दोय; अग्नीमांही प्रजालियो स रे, दया न आंणी कोय; माठी गतनी पाहुणी स रे, गई जमारो खोय रे ॥ मू० ॥ ६ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणी स रे, हूंती चूलणी मात; विभचारण चूके गई स रे, दीर्घराय-के साथ; घात विचारी पुत्रनी स रे, छै ए वहुली वात रे ॥ मू० ॥ ७ ॥ सहस विद्या त्रिखंड धणी स रे, रावण मोटो राय;सीतानें हरतां थकां स रे,बैठो लंक गमाय;घर फूट्यो वैरी हण्यो स रे,धक्का नरकमें खाय रे ॥ मू०॥ ८॥ पद्मोत्तर हुरमत गई स रे, गये कीचकना प्रांण; पांडव त्रिया द्रौपदी स रे, मूल न राखी कांण; माठी गत मरनें

गयो स रे, मारे छै जमरांण रे ॥ मू० ॥ ९ ॥ जिण ऋषिनें जिन पालजी स रे, बंधव हूंता दोय; रेणा देवी रे वश पड्या स रे, जक्ष सहाई होय; जिण रूप सांमो जो वियो स रे, लीयो सूळीमें पोय रे ॥ मू० ॥ १० ॥ रूपवंत त्रिया देखनें स रे, जोवे विषयविकार; लंपट परनारीतणां स रे, गया जमारो हार; जम घाले आंख्यांमें ताकळा स रे, दे गुरझांरी मार रे ॥ मू० ॥ ११ ॥ मल मूतरनी कोथली स रे, अशुचितणो भंडार; ऊपरसें कळी लगी स रे, जिण ऊपर सिंणगार; हिंगा देवी सम त्रिया स रे, जोवो हीये विचार रे ॥ मू० ॥ १२ ॥ जर जोरूके कारणे स रे, तूटे जूनो प्यार; जे नर जांणे आपणी स रे, ते नर मूढ गिवाँर; त्यागन कर संग्रह करे स रे, तिणनें छै धिक्कार रे ॥ मू० ॥ १३ ॥ कनक कांमणी छोडनें स रे, पाले शुद्ध आचार; सुपनामें बंछै नहीं स रे, ते कहिये अणगार; राम कहै मुनिवरभणी स रे, वंदो वार वार रे ॥ मू० ॥ १४ ॥ उगणीसे अष्टादसे स रे, जोधपुर शेषे काल; स्वांमी वृद्धिचंद प्रसादसूं स रे, जुगतसूं जोडी ढाळ; सत गुरुनी किरपा थकी स रे, वरते मंगल माल रे ॥ मू० ॥ १५ ॥ ॥ इति ॥

६ तूं आजा सोजा रे ॥ ए देशी ॥

मैं वरजूं रे तोनें पर नारीकी संगत क्यूं करे; तन छीजे रे तारो, धन जावेनें जग निंदा करे ॥ टेर ॥ पर नारी धन मांगसी स रे, होसी जगमें भांड; गरमी चिणग्यो लागसी स रे, मूंडे पडसी खांड रे ॥ मैं० ॥ १ ॥ कुलनें काळो लागसी स रे, राजा करसी दंड; घर नारी रीसा-

वसी स रे, मिटसी सरब घमंड रे; ॥ मैं० ॥ २ ॥ *लाखी णो तो मानव वाजे, जोतां १ हसतां २ वात; ३ फर्श ४ कुचेष्टा ५ मूल ६ सेवतां, कमसूं खट लो पात रे ॥ मैं०॥३॥ पैठ प्रतीत जावसी स रे, हूय चूकामें कैसी; सबसूं नीचो जोवसी स रे, ऊंचो बोलतो रैसी रे ॥ मैं० ॥ ४ ॥ सर्वापद की साई ए छै, सद्गततणा कपाट; नरकतणो जावानें मारग, अह निश रहे उचाट रे ॥ मैं० ॥ ५ ॥ उभय लोक सूधारण मरजी, रखो परनारीका नेम; अहिपुर तीसे काती शुद्धमें, मुनि राम कहे छै एम रे ॥ मैं० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ देशी ख्यालनी ॥

साच बातकी थाप जिसीमें, झूठतणो नहीं रंच; किसी जीवकूं दुख नहीं देणा, तजणा सब परपंच रे ॥ सुणियो सब प्यारे, जैन धर्म नहीं छोडणा ॥ सु० टेर ॥ १ ॥ कष्ट आये पिण झूठ न कहना, झूठ पापका मूल; पर तृण जिणनें लिया उठाई, कीया जमारा धूल हो ॥ सु० ॥ २ ॥ नारी सारी द्वार नरकको, स्वर्ग अर्गला जांन; धनकूं धूल गिणी तज निसरो, धन अनरथकी खांन हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ ए उपदेश जिसी धर्ममें, समजो चतुर सुजांण; पर निंदा स्व महिमा नांही, नहीं छै खांचाताण हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ भाई जमाई पुत्र कमाई, फेट शरीरे लागे;

---

* आदमी लाखीणो अर्थात् लाख रुपयांरो है सो पर नारीनैं कुदृष्टि जोवतां छ ६ आंक मांयसूं एक आंक छेली बिंदी घट जावै जद, दश हजाररो रै जावै. हसतां दूजी बिंदी जावै जद, हजाररो रैजावै. वात करतां तीजी बिंदी जावै जद, सोरो रैजावै. स्पर्श करतां चौथी बिंदी जावै जद, दशरो रैजावै. कुचेष्टा अर्थात् स्तनादि स्पर्श करतां पांचवी बिंदी जावै जद, एक रो रै जावै. ने मूल अर्थात् मैथुन करतां समूल नष्ट हो जावै.

पूर्व कमाई धर्म सहाई, मिष्ट धर्म फल आगे हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ विरुद्धाभास नहीं पूर्वापर, नहिं खंडन कोई ठौर; मुनि राम कहे जिन धर्म सरीखो, हुवो न होसी और रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

८ देशी धूंसारी ॥

एक करलो रे संग गुणी जन की ॥ ए० ॥ टेर ॥ गुणि जन संग सदा सुखदाई २; सब टारत है भ्रम नामनकी ॥ ए० ॥ १ ॥ भ्रमरा संग कीटक हुवे भ्रमरो २, वो उड उड वास ले फूलनकी॥ ए० ॥ २ ॥ जल बिंदु तुच्छ शुक्ति संगतसूं २, व्है मुक्ताफल जात अमोलनकी ॥ ए० ॥ ३ ॥ लोह अडे जे पारस सेती २, छिनमें होवे जात सोवनकी ॥ ए० ॥ ४॥ पुष्पकी संगत सूतको तागो २; मस्तक चढे सुर भूपनकी ॥ ए० ॥ ५ ॥ निर्मल आंखतणे परसंगे २, काणाक्षी होवे अंजनकी ॥ ए० ॥ ६ ॥ रज गगन चढे पवनथी २, देखो ढांके जी क्रांती भाननकी ए० ॥ ७ ॥ राय प्रदेशी केसी गुनी तार्यो २ , दृढ प्रहारी संग संतनकी ॥ ए० ॥ ८ ॥ धर्मीकी संगत पापी सुधरे २, मुनि राम कहे शास्त्र शास्त्रनकी ॥ ए० ॥ ९ ॥ इति ॥

९ देशी ख्यालनी ॥

वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥ व० ॥ टेर ॥ तूं क्रोध पूतलो शुद्ध न धारे, बोले आल पंपाल; क्रोड पूरवकी तपस्या करनें, छिनमें देवे जाल ॥ व० ॥१॥ बिना पूंजीको निकमो फंफलो, बिरथा जनम गमावे; साधू गृहस्थ दोनूंमें नांही, अध बिच गोता खावे ॥ व० ॥ २ ॥

तूं औगणसूं भरियो पापी, जिणनें तूं नहीं देखे; मनसूं वैरागी वणनें वैठो, वास व्रत नहीं लेखे ॥ व० ॥३॥ परवतसेती माथा फोड़े, भ्रष्टामें मुख घाले; लोभतणो तूं लाय पलीतो, ज्ञान विना तूं चाले ॥ व० ॥४॥ इण भवमें तौ लाज गमाई, पर भव देसी खोय; दोनूं भव तुज बिगड्या पापी, मेल पराया धोय ॥ व०॥५॥ गांव गांवरा टुकड़ा मांगे,धर्म ठगाई करतो;रसनेंद्रीके वश तूं पड़ियो लाजे नहीं झगड़तो ॥ व० ॥ ६ ॥ एम सुणी सुध रीतमें चल्ले, तो सुधरे परलोक; मुनि राम कहें सुध पंथे चलतां पांमे सगळा थोक ॥ व० ॥ ७ ॥ इति ॥

१० आयारे जोगी निगम पाड़सें ॥ ए देशी ॥

सुरड़ा वडा निसरड़ा रे, देखो सुरड़ा वडा निसरड़ा; संतां सुरड़ा वडा निसरड़ा रे, ऐ काटे पापी करड़ा रे ॥ दे० ॥१॥ ध्यांनी ज्ञानीरी धारा चुकावे, ऐ गिणे न वाला गरड़ा रे ॥ दे० ॥ २ ॥ देश माळवे सुरड़ा मत्कुण, लिख भेजूं मारू खरड़ा रे ॥ दे० ॥ ३॥ मालव देशमें दुख एही मोटो, पड रहे इसिके ढरड़ारे ॥ दे० ॥ ४ ॥ दाफड़ वहुले हुवे क्षिण तनमें,खाज करी पडे झरड़ा रे ॥ दे०॥५॥ पाप लगाडे वसन विगाडे, नींद उजारे पापरडा रे ॥दे०॥६॥ मुनि राम कहै नहीं मुरधर देशे, जां खांन पांन सुथरडा रे ॥ दे० ॥ ७ ॥ इति ॥

११ देवरियानी देशी ॥

पर नारी संग छोडो, म्हांरा वालमिया;पर नारी दुखदाई, मोंनें राम दुवाई, आपदकी छे साई ॥ १ ॥ पर

नारीसूं दंडीजे, म्हांरा वालमिया; रोग अंगे लग जाई ॥ ॥ म्हां० ॥२॥ धन छीजे वल हटे, म्हांरा वालमिया;रीसां वळेला थांरा भाई ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ ऊंचो बोल सके नहीं, म्हांरा वालमिया; नीचो जोवेला सदाई ॥ म्हां० ॥ ४ ॥ लाखीणो ठिकांणो छूटे ॥ म्हां० ॥ लोकमें दर घट जाई॥ ॥ म्हां० ॥ ५ ॥ पर नारीसूं दुख पावो ॥ म्हां० ॥ मुरझा-वोला दिलमांही ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे घर नारी समझावे ॥ म्हां० ॥ करकरनें नरभाई ॥ म्हां० ॥७॥इति॥

दोहा

कोई निंदा मत करो, निंदा सम नहीं दोष ।
एह लोक बिगड्या फिरे, सुधरे नहीं पर लोक ॥ १ ॥

१२ देशी ख्यालनी ॥

वरजूं वरजूं रे पापीडा निंदा छोड दे ॥ व० ॥ मूंढे मीठा बोले मूरख,पेटमें खोटा करमी; जैनी नहीं ते फैनी कहिये, जांणो खरा अधरमी ॥ व० ॥ १ ॥ गुरु देवसूं बे मुख हूवा, जिणरा न देखो मूंडा; सात पांच तो मोटा पापी, जासी नरकमें ऊंडा ॥ व० ॥२॥ सूत्रतणो तो मर्म न जांणे, गुरु करया ऊंध मती; तपस्या मांहे छाछ पि-लावे, किम सुधरेला गती ॥ व० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमाकर द्वेषी पूरा,खोटी प्ररूपणा करता; भोळांनें डहकावे पापी, पूंज पूंज पग धरता ॥ व० ॥ ४ ॥ पात्रामांहे करे मातरो, धर्म मर्म नहीं जांणे; तपसीकेरा नाम धरावे, रूढ आंप-णी तांणे ॥ व० ॥ ५ ॥ मन उपंगसूं करे थापना, निकमा साधू बाजे; ज्ञानतणा उत्थापक पापी, निंदा करत नहीं

लाजे ॥ व० ॥ ६ ॥ इसा साधूनें गुरु कर थाप्या, श्रावक वण रह्या धोरी; नकटा देवनें सुरड़ा पूजारी, जैसा ढेढ जिसा थोरी ॥ व० ॥ ७ ॥ घर अवगुण तो देखे नांही, पर औगुणही भाळे; अमृत छोडी नर भंडसूरा, भृष्टामें मुख घाले ॥ व० ॥ ८ ॥ म्हे परदेशी साधू वंदां, दूजांनें नहीं वंदां; नहीं वंदो तो जांणी पापी, क्यूं मांडी थे नंदा ॥ व० ॥ ९ ॥ निंदारा फल लागे खोटा, विध विधसूं दुख पावे; और घणेरा पासी दुखड़ा, साद संत संतावे ॥ व० ॥ १० ॥ निंदक मुख चपेटिका ए तो, सुणनें रीस न करसो; राम कहे डरसो पर भवसें, नहींतर नरकां पड़सो ॥ व० ॥ ११ ॥ इति ॥

१३ देशी ख्यालनी ॥

तुम सुणियो जी संतो, नीचनें ज्ञान न देवणा; ॥ तु० ॥ टेर ॥ ज्ञान देना विन नहीं देना अच्छा, आम घड़ामें पांनी; घडो वीगडे पांणी जावे, लघुता होय पोतानी ॥ तु० ॥ १ ॥ सर्पनें दूध पिलावे कोई, ज्हेर व्है निर्धार; स्यो सुख पायो वैद्य नवीनो, सिंघकी आंख उघार ॥तु० ॥ २ ॥ भगवत आज्ञा नहीं छै सूत्रे, दुष्टनें ज्ञान सिखाना; नीति शास्त्रे पिण इम वर्ज्यो, दुश्मन होवें छांना॥तु०॥३॥ एक अक्षर गुरु ज्ञानके दाता, जो उपगार न मांनें; सो वार तो स्वागति पावे, चांडाल गति पिण तांनें॥तु०॥४॥ नीचनें ज्ञान कवी नहीं देणा, इण विध शास्त्रे गावें; राम कहे सुविनीतनें देतां, सुक्ख अनंता पावै॥तु०॥५॥इति ॥

१४ मुकुट धर मोरना रे ॥ ए देशी ॥

तथा धर्म धन संचिये रे ॥ ए देशी ॥

श्री जिन धर्म पामियो रे, मेरे पाखंड सेवे बलाय;क्या हिंसा मती, क्या आशा मती, क्या नास्त मती, क्या वाम मती, क्या विष्णु मती, क्या शिव मती, ए जोड़े न लागे कोय; जैन धर्म पामियो रे, मेरे पाखंड सेवे बलाय ॥ टेर ॥ सोना पीतल सारखो रे, और केसर धूल समांन; मूरख पंडित सम गिणे रे, ते नर खरा अजांन॥ ॥ जै० ॥ १ ॥ जीवाजीव न जांणही रे, पुन्य पाप किम होय; धर्म अधर्म सम मांनही रे, ते गये जमारो खोय ॥ ॥ जै० ॥ २ ॥ वीतराग तो देव छै रे, गुरू शुद्ध अणगार; अर्हत प्रणीत धर्म कयो रे, ऐही उतारे पार ॥ जै० ॥ ३ ॥ शस्त्र धरे नारी रक्खे रे, ते छै देव कुदेव; महाव्रत विन गुरु छै नहीं रे, हिंसा धर्म मत सेव ॥ जै०॥४॥केवल ज्ञान दर्शन धरा रे, ते छै देवाधिदेव; रामचंद वंदे सदा रे, जांकी इंद्र करे सब सेव ॥ जै० ॥ ५ ॥ इति ॥

१५ देशी ख्यालनी ॥

सुणो चतुर सुजांना, खूटीकी बूंटी नहीं कोई ग्रंथमें; क्यूं है जांन दिवांना, अमर नहीं सुणियो रे हुवो कोई पंथमें ॥ टेर ॥ श्रीतीर्थंकर अवतार अवालिया, नहीं देखा कोई संतमें; योगाभ्यासी लगा समाधी, मर खूटे सब अंतमें ॥ सु० ॥ १ ॥ धन्वंतरी या बूंटी हेरत, ते पिण गये उडंतमें; कोई नहीं अमर देखा देहधारी, इम सुंणी खरी सिद्धंतमें ॥ सु० ॥२ ॥ अश्वत्थामा भीम गज भर्तरी, अमर कहे कथदंतमें; आईआई मर खूटे समही, सब गये शुभ कृतंतमें ॥सु०॥ ३ ॥ हरि हर ब्रह्मा सबकूं छोडी, ध्यांन रखो अरिहंतमें; मुनि राम कहे अनंत पद भजिये, सो पद सिद्ध भगवंतमें ॥ सु० ॥ ४ ॥ इति ॥

१६ देशी ख्यालनी ॥

तुम सात वारमें, खरची बांधो रे एक दिन जावणां ॥ टेर ॥ सात वारमें सबको जांना, जिसमें क्या है फेर; रंक रावकूं सबकूं चलना, खरची लेलो लेर; लेलो खरची लेर; फेर पिछतावसो, बंधी मूठी आय, खाली हुय जावसो ॥ तु० ॥१ ॥ सूर्य वारमें सूर्य ऊगे नित, आयु खंड ले जावे; घटी जावे सो पाछी नावे, रवि तो एम जतावे २; खरची बांधसो, मुनि लोकांसूं प्रीत, सैंठीथे सांधसो ॥ तु० ॥ २ ॥ चंद्रवारमें करो चांनणो, तेरा घटरे मांय; जिनसेती तो मिटे अंधेरो, घट पट प्रगट दिखाय २; आखर तो जावणां, राख्या नहीं रहे लाख, मेह्र अरु पावणां ॥ तु० ॥३॥ मंगल वारमें मंगल वरते, धर्म कीयां सुख पासी; धर्म विना तो खाली जासी, आखर तूं पिछतासी २; शास्त्र गाय छै; आंकी भली न वांकी भली, आंख फेर मिचवाय छै ॥ तु० ॥ ४ ॥ बुद्ध वारमें बुद्ध विचारो, जनम मरण मिट जाय; राग द्वेषनें पतळा पाडो जिणरो नाम कषाय २; पातळी पाडसो; ज्ञानथकी ग्रहो ध्यान, समाधी चाडसो ॥ तु० ॥ ५ ॥ गुरूवारमें गुरु चेतावे, इसा करो व्यौपार; जिसमें नफ्फा हुवे अनंता, वावा करे संसार २; ज्ञान कर हेरसी; तूं सूतो छै कुंण नींद, मोत आय घेरसी ॥ तु० ॥ ६ ॥ शुक्रवारमें सुकृत कर ले, धर ले गुरुका ध्यान; गुरु विना कुछ पता न लग्गे, मत कर गुरुसें मांन २; ज्ञान उर राखजो; सुधरे जिम पर लोक, वचन सुध भाखजो ॥ तु० ॥ ७ ॥ थावर वारमें थिर नहीं रहना, चलना विश्वा वीस; जैन धर्म शुद्ध पाळजो

स रे, पाछी मारो रीस २; जस थे लीजियो; मुनि राम कहे सत वारमें, सुकृत कीजियो ॥तु०॥८॥ इति सप्तवार ॥

१७ देशी ख्यालनी ॥

वीते पखवाडो धर्म करो रे ज्ञानी जीवड़ा ॥ वी० ॥ ॥टेर॥ एकम कहे तूं एकलो स रे, दूजा न तेरो संग; पुन्य पाप दो संग चलेगा, रखो धर्मसूं रंग; एकत्व भावो भावना स रे, दुर्लभ मानव अंग रे ॥ वी० ॥ १ ॥ बीज कहे बीज रोपलो स रे, समकित बीज जमाव; मुनि श्रावकपणो आदरो स रे, बैसो धर्मकी नाव; ज्ञानरूपी जल सींचलो स रे, उज्जल रक्खो भाव रे ॥ वी० ॥२॥ तीज तीन थे आदरो स रे, सम्यक् दर्शन ज्ञान; चारित्र विन तरना नहीं स रे, ऐ तूं साचो मांन; देव गुरु धर्म आदरो स रे, ज्यूं पांचो निर्वाण रे ॥ वी० ॥ ३॥ चौथ कहे च्यारूं तजो स रे, क्रोध मान माया लोभ; ऐ छोड्यां तरणो हुवे स रे, फैले जगमें शोभ; शिर मुंडायां स्यूं हुवे स रे, मिट्यो न मनको क्षोभ रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ पांचूं कहे पांचूं जपणां स रे, लागी धारे लार; जिणने कब्जे रक्खिये स रे, जिम उतरो भव पार; पांचूं रोपो धर्ममें स रे, छोडो विषय विकार रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ छठ छकाया ओळखो स रे, पग पग जपणां राख; धर्म दया विन छै नहीं स रे, छै सूतरकी शाख; लाख वातकी एक है स रे, दया विना सब खाख रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सातम कहे सत राखजो स रे, सातूं व्यसन निवार; काळो लगासो देहनें स रे, डूबा काळी धार; मरणो किण विध सूधरे स रे, कीजो हीये विचार रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ आठम

आठूं तोडिये स रे, कोई जुक्तिके साथ; जोग अष्टांग धारिये स रे, है मन मारण वात; अष्ट आचार समकिततणां स रे, पाळो शुद्ध विख्यात रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ नवमी निरणो कीजिये स रे, नवही तत्व विचार; जांण विना पशु सारखो स रे, बोले सूत्र मझार; ज्ञान विना करणी किसी स रे, ज्ञान विना अंधार रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ दशमी दश लक्षण धरो स रे, तातें मरण मिटाय; दश मूंडन पिण आदरो स रे, शिर मूंड्यां स्यूं थाय; केवल शिरही मूंड़ियां स रे, खाज माथेकी जाय रे ॥ वी० ॥ १० ॥ एकादशी कहे प्राणियां स रे, ग्यारा प्रतिमा धार; बारस चौड़े बोलही स रे, लो श्रावक व्रत बार; बारे भावो भावना स रे, जिणसूं उतरो पार रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ तेरस कहे तेरे क्रिया स रे, छोड़ो चतुर सुजांण; तेरे छोडो काठिया स रे, छोड़ो रूढ अजांण; तेरेपंथी संग छोड दो स रे, सूत्र लुंपक ते जांण रे ॥ वी० ॥ १२ ॥ चवदश कहे चौकस करी स रे, धारो चवदे नेम; दान करो थे शुद्ध मने स रे, राखो अधिको प्रेम; भूत ग्राम रक्षा करो स रे, चावो कुशल क्षेम रे ॥ वी० ॥ १३ ॥ पूनम पूरो ऊगियो स रे, जिणमें वड़ो प्रकाश; अथवा चंद विन रातड़ी स रे, जिणमें नहीं उजास; मुनि राम कहे पखवाड़ो सफलो, कीजो ज्ञान अभ्यास रे ॥ वी० ॥ १४ ॥ तीन चालीस उगणीसके स रे, पाली शेषे काल; जेठ महीनो आकरो स रे, वाजे झाल दुझाल; धर्म कीयां षट रुतु भली स रे, वरते मंगल माल रे ॥ वी० ॥ १५ ॥ इति पखवाडो ॥

१८ देशी ख्यालनी ॥

तुम बारे मासमें दिलनें मंजो रे तीरथ कौन छै ॥ तु० ॥

॥ टेर ॥ चैत कहे तुम चेतजो स रे, चित राखो एक ठाम; चित्त उज्ज्वल विन ताहरो स रे, सरे न एको काम रे तु० ॥ १ ॥ वैशाख शाख दोय कल्पर्सी स रे, वांछित देवण हार; श्रुत चारित्र दो धर्म छै स रे, भवोदधि तारण हार रे ॥ तु० ॥ २ ॥ ज्येष्ट कहे तूं ज्येष्ट है स रे, जो करे धर्म दृढ धार; ढके दोप जो सकलके स रे, और करे उपगार रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ आपाढ आशा राखिये स रे, परमेश्वरकी एक; बीज वावो शुद्ध भूमिमें स रे, जिनसें होय अनेक रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ श्रावण श्रवण कीजिये स रे, जिनागम परम पवित्त; लूंयां वरसे ज्ञानकी स रे, करें सकलनो हित्त रे ॥ तु० ॥५॥ भाद्रव गहरो गाजियो स रे, पृथिवी होय सुकाल; गाजो धर्ममें प्राणियां स रे, जिणसेती हुवो न्याल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ आसोज सोज भल भावसूं स रे, सीप समुद्रां जोय; मौती निपजे वखतका स रे, तिम दानादिक होय रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ काती काती वरसणो स रे, अथवा कटक समांन; अन्य मतकी करणी छै तैसें, जनम मरणको स्थान रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ मृगशिर मृग शिर सारिखो स रे, धर्म विना नर देह; मृगा रूप पशु सारखा स रे, जिणमें क्या संदेह रे ॥ तु० ॥ ९ ॥ पोप पोप पातरभणी स रे, जिणसूं सुधरे काज; शालिभद्र जिम सुख लहो स रे, पांमो अविचल राज रे ॥तु० ॥ १० ॥ माह मोहनें मारलो स रे, क्षमा खड्ग चलवाय; शरण ग्रहो गुरु चरणका स रे, ज्ञान चिराक जिगाय रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ फाल्गुन फाल गुनकी संघो स रे, तो तूं घणो रमाद; मुनि राम कहे छै बारे मासमें, राखो धर्म सूं गाद रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ इति बारे मास्यो ॥

१९ देशी ख्यालनी ॥

तुम सुणिये रे लोको कक्का बत्तीसी हिरदे धारिये ॥ ॥ तु० ॥ टेर ॥ कक्का किरिया कीजिये स रे, क्रिया विना स्यूं ज्ञान; ज्ञान विना क्रिया नहीं स रे, तातें दोय प्रधान रे ॥ तु० ॥ १ ॥ खक्खा खिलवत्त छोड़िये स रे, खिलवत्तमें नहीं सार; खिलवत्त खोवे जोगनें स रे, औरही विधवा नार रे ॥ तु० ॥ २ ॥ गग्गा गर्व न कीजिये स रे, गर्व कीयां लछ जाय; गर्व करी रावण गल्यो स रे, और दुर्योधन राय रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ घग्घा घटमें चांनणो स रे, कर लो प्यारे लोक; घोर तपस्या कीजिये स रे, मिटे कर्मका रोग रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ चच्चा चरचा ज्ञानकी स रे, कर लो शास्त्र प्रमांण; चुगली चोरी छोड़िये स रे, जिण सूं होय कल्यांण ॥ तु० ॥ ५ ॥ छच्छा छल नहीं कीजिये स रे, मेटो मनकी छोल; छः कायांनें ओळखो स रे, जांणो आतम तोल रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ जज्जा जसही लीजिये स रे, जस सम नहीं छै धन्न; जी जी करतां बोलियो स रे, उज्जल राखो मन्न रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ झज्झा झूठ न बोलिये स रे, झूठ महा दुखदाय; झूठ विगाड़े पैठनें स रें, पत पंचांमें जाय रे ॥ तु० ॥ ८ ॥ टट्टा टेक न छोडिये स रे, धर्मतणी नितमेव; टट्टी तूटे मांहिली स रे, ऐसा सद्गुरु सेव रे॥तु०॥९॥ठठ्ठा ठोठ न होजिये स रे,तज दो ठठ्ठा रोल; ठींभरपणो थे आदरो स रे, ओछो न बोलो बोल रे ॥ तु० ॥ १० ॥ डड्डा डरही राखिये स रे, भगवत भूप संसार; डरही विगाड़े अर्थनें स रे, सो डर वेग निवार रे ॥ तु० ॥ ११ ॥ ढढ्ढा ढील न कीजिये स रे, जिण-

सूं होय सुधार; काज विगाड़े ढीलसूं स रे, ते नर मूढ गिवाँर रे ॥ तु० ॥ १२ ॥ तत्ता तत्व पिछांणिये स रे, तरुणपणो दिन च्यार; थोडा दिनकी चांनणी स र, सेवट घोर अंधार रे ॥ तु० ॥ १३ ॥ थत्था थिर रहणा नहीं स रे, यौवन धन परिवार; आखर एक दिन जावणो स रे, चल्यो जाय संसार रे ॥ तु० ॥१४॥ दद्दा दिलमें रक्खिये स रे, दया दान दिन रात; दगो न कीजे केहसूं स रे, धर्म हारकी वात रे ॥ तु० ॥ १५ ॥ धद्धा धर्मही कीजिये स रे, मनमें धीरज राख; ऋतु आयां फल नीपजे स रे, धर्म विना सब खाख रे ॥ तु० ॥ १६ ॥ नन्ना नर भव दोहिलो स रे, तातें करो सुधार; खरची बांधो ऊजली स रे, जिणसूं बेड़ा पार रे ॥ तु० ॥ १७ ॥ पप्पा पंडित पारखा स रे, शंके करतो पाप; पाप करे छे प्राणियो स रे, भुगते आपो आप रे ॥ तु० ॥ १८ ॥ फप्फा फकीरी आदरो स रे, चलिये खांडे धार; लालचमें फसियो फिरे स रे; धिक् ताको जमवार रे ॥तु०॥१९॥ बब्बा बुध जेहनी खरी स रे, इण भवमें जस लेह; पर भव सुधरे जेहथी स रे, ज्यूं शाख सुधारे मेह रे ॥तु०॥२०॥ भब्भा भमतो क्यूं फिरे स रे, विन कारज पर गेह; भजन करो भगवंतरो स रे, जिणसूं सुधरे देह रे ॥ तु० ॥ २१ ॥ मम्मा मर्म न भाखिये स रे, हुवे अनरथ किणवार; मात पितानें मानिये स रे, और करो उपगार रे ॥ तु० ॥ २२ ॥ यय्या यारी रक्खिये स रे, परमेश्वरके साथ; पार उत्तरे छिनभर मांहे, दूजी खाली वात रे ॥ तु० ॥ २३ ॥ ररा रोस निवारिये स रे, उपजे भली रसांण; रोसथकी तप खोय ई स रे, कोद पूरयको जांण रे ॥ तु० ॥ २४ ॥ लल्ला

लालच छोडिये स रे,सब सरखी नहीं ठौर;अति लालच नहीं अर्थरो स रे, लीन अलीन छै और रे ॥ तु० ॥ २५॥ वव्वा वाद न कीजिये स रे, वाद कीयां हुवे हांण; वंदो गुणि जन देखनें स रे, रखो वडेकी कांण रे ॥ तु० ॥२६॥ शश्शा शंक न कीजिये स रे, जिन वचनांके मांय; शील व्रत शुद्ध पाळजो स रे, जो तुम तिरवा चाय रे ॥ तु० ॥ २७ ॥ षष्षा खूब पिछांणिये स रे,स्याद्वाद मत सार; खाली वाद न कीजिये स रे,बोलो शास्त्रके लार रे ॥ तु० ॥ २८ ॥ सस्सा सतही भाखणो स रे, सूत्र समो नहीं धर्म; सूत्र विरुद्ध जे भाखही स रे, जिणरे बोहला कर्म रे ॥ तु० ॥ २९ ॥ हहा हासो त्यागिये स रे, हास्यथकी विषवाद;कौरव पांडव वीगड्या स रे, नहीं हांसीमें स्वाद रे ॥ तु० ॥ ३० ॥ ळं लखावे लिखणो भेळो, ररे विना सब कोय; उलट पलट अक्षर वण बोले, वर्णसंकर ते होय रे ॥ तु० ॥ ३१ ॥ क्ष क्षमा तुम कीजियो स रे, क्षमा करे गुणवंत; मुनि राम कहे छै ककाबतीसी, शीख चलो इण पंथ रे तु० ॥ ३२ ॥ तयां लीस उगणीसको स रे, पाली पीठ मझार, ज्येष्ठ वदी तेरस रची स रे, ककाबतीसी सार रे ॥ तुम सुणियो रे लोको ककाबत्तीसी हिरदे धारिये ॥ ३३ ॥ इति ककाबत्तीसी ॥

गाळ ।

१ जैपुरसें दोय चीज मंगाय दो ॥ ए देशी ॥

गुरु कृपासें दोय चीज ओळखसां, एक निश्चो ने व्यव

हार; गुणि जन संग करसां; निश्चो तो म्हांने पार उतारे, रहस्यां उद्यमकी लार ॥ गु० ॥ १ ॥ गुरु कृपासें दोय चीज ओळखसां, अगार ने अणगार ॥ गु० ॥ अगार धर्म श्रावकनो जांणो, अणगार मुनि आचार ॥ गु० ॥ २ ॥ गुरु कृपासें तीन चीज ओळखसां, देव गुरु शुद्ध धर्म ॥ गु० ॥ देव गुरु धर्म पार उतारे, मेटे पुरातन कर्म ॥ गु० ॥ ३ ॥ गुरु कृपासूं तीन चीज ओळखसां, दर्शन ज्ञान चारित्र ॥ गु० ॥ दर्शन देव ज्ञान गुरु जांणो, धर्म चारित्र पवित्र ॥गु०॥४॥ गुरु कृपासूं च्यार चीज ओळखसां, दान शील तप भाव; ॥ गु० ॥ दान सुपात्र शील शुद्ध पाळो, तप वो दान भाव नाव ॥गु०॥५॥ गुरु कृपासें पंच पट् ओळखसां पंचाश्रव पट् काय॥गु०॥पंचाश्रवकूं छिनमांहे छोडां,जतन करां जी पट् काय ॥ गु० ॥ ६ ॥ मुनि राम कहे गुरु कृपासेती, सुधरे छै सगला काज ॥गु०॥ गुरु कृपा विन कहो कुंण तरियो, कुंण पायो त्रिभुवन राज ॥गु०॥७॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

वीर कृपासें मोह नृपनें भगासां, म्हे तो नहीं रखां हिरदे रे मांय; कायम गढ करसां ॥ प्रबोध नृपनें वेग बुलासां, म्हे तो लेसां मोतीडा वधाय ॥ का० ॥१॥ विवेकसें राग द्वेष हटासां,म्हे तो हणसां शीलसें काम॥का० लोभ मेरसी संतोषके आगे, करां क्षमासें कोप निर्नाम ॥ का० ॥ २ ॥ अहंकार घातस्यां विनय करीनें, ओ तो जीते प्रबोध महाराज ॥ का० ॥ राम कहे आतम जय सुखियो, जो रखै सुमतकी लाज ॥ का० ॥ ३ ॥ इति ॥

३ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

ए संसार असार अपार, मुनिवर भाखे वारंवार ॥टेर

दश दृष्टांते नर भव लाधो, मिले नहीं यो मूढ गिवाँर ॥ मु० ॥ मात तता त्रिया सुत भाई, एक न आवे थारी लार ॥मु०॥१॥ हाथ कमाई सब ठकुराई, चलेन साथे एक लिगार ॥ मु० ॥ आप कमाई साथे आसी, समझ समझ तूं ज्ञान विचार ॥ मु० ॥२॥ अशुभ कर्म उदय जब आवे, खावे चेतन आपही मार ॥ मु० ॥ कहांसें आयो कहां तूं जासी, नफेको कर ले तूं व्यौपार ॥मु०॥३॥ रावण राजा पलमें पलट्यौ, मिट्यौ जिसीको सब अहंकार ॥ मु० ॥ दुर्योधनसा जँगमें कट गये, अक्षौहिण सम्मेत अठार ॥ मु० ॥ ४॥ किसी गिणतमें कुंण तूं भोडू, कांई करे तूं घरसें प्यार ॥ मु० ॥ मुनि राम कहे सुणजो सब भाई, सफल करीजो नर अवतार; ॥ मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ रंग मांणो रे म्हांरा बेलियां ॥ ए देशी ॥

धर्म करो रे म्हांरा बेलियां ॥टेर॥मात तात नहीं दुर्गति टारे, नहीं तारे चेलाने चेलियां ॥ ध० ॥ १ ॥ धन दौलत तेरे संग न आवे, नहीं जावे थारे संग थेलियां ॥ ध० ॥ २ ॥ रंग महल तेरे मनकूं सुहावे, तूं गावे छै हाट हवेलियां ॥ ध० ॥ ३ ॥ बालपणो हँस खेल गमायो, जोबन घाली सिर सेलियां ॥ ध० ॥ ४ ॥ रस इंद्रीके वश तूं पडियो, क्या चावे तूं लड्डु जलेबियां ॥ ध० ॥ ५ ॥ कुदेव कुगुरु कुधर्म टारो, धारोनी गुरु मुख सेलियां ॥ ध० ॥६॥ अंजलि जल ज्यूं जावे तेरी ऊमर, जरा आवे नित ठेलियां ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सुण धर्म न करसी, जांने ज्ञानी कह्या छै गैलियां ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

५ नेह लग्यो रंग मांण ले ॥ ए देशी ॥

हां रे जीवा ! चौराशी में तूं भम्यो, हां रे जीवा पाम्यो

दुःख अपार रे; अब तो सूरत संभार रे, मत हारे नर अवतार रे ॥ अ० ॥ १ ॥ हां रे जीवा नर भव दुर्लभ लाधियो, उत्तम कुल अवतार रे ॥ अ० ॥ २ ॥ हां० ॥ नर भव पायो तो स्यूं थयो, धर्म विन मूढ गिवाँर रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ हां० ॥ धर्म पायो तो स्यूं थयो, दया विना नहीं कछु सार रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ हां० ॥ समकित विन पढ स्यूं कियो, ऊंणो दश पूरब धार रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ हां० ॥ क्रिया करी तौ क्या भयो, समकित विन सब छार रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ हां० ॥ ज्ञान विना क्रिया नहीं, क्रिया विन ज्ञान न सार रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ हां० ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र थी, मुक्ती व्है ततकार रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ हां० ॥ दव लगी पंगू बोलियो, अंधे सुणी है पुकार रे ॥ अ० ॥ ९ ॥ हां० ॥ पंगु चढ्यो खंध अंधके, दोऊं मिल लंघे वन पार रे ॥ अ० ॥ १० ॥ हां० ॥ ज्ञान क्रियासें मोख है, मुनि राम कहे अवधार रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ इति ॥

६ वालमा नायण गईथी लूंटमें, हां रे वातो क्या ॥ क्या लाई लूंट, वालमा नायण गईथी लूंटमें ॥ ए देशी ॥

जियडा प्रभुजीनें गावो रंगसूं, हां रे तुमे छोडो, हां रे तुमे छोडोनी झूठी झखाल, जियडा प्रभुजीनें गावो रंगसूं ॥ जि० ॥ धर्म करिये उमंगसूं, हां रे छिन भरमें २ हूसो रे न्याल ॥ जी० प्र० ॥ हां रे तुमे छोड़ो २, झूठी झखाल ॥ जी० प्र० ॥ १ ॥ कपाल वसे बुद्धि रीसडी, हां रे रीस करदे २, बुद्धि खराब ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ नयनमें काम लज्जा वसै, हां रे लज्जा नें २, काम देवे दाब ॥ जी० प्र० ॥ २ ॥ जी० ॥ लोभ दया हिरदे वसै, हां रे लोभ देवे २, दयानें उठाय ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ मूख

मान उरमें वसे, हां रे भूख देवे२, मांन मिटाय ॥ जी० प्र० ॥ ३ ॥ जी० ॥ बुद्धिसूं रीसनें मारस्यां, हां रे लज्जासूं २, काम हटाय ॥ जी० प्र० ॥ जी० ॥ दयाथकी लोभ जीतस्यां, हां रे मन चलसूं २, भूख डुराय ॥ जी० प्र० ॥ ॥ ४ ॥ जी० ॥ प्रभु कृपासूं माहरे, हां रे सदा वरते २, कोड़ कल्यांन ॥ जी० प्र०॥जी०॥ राम कहे प्रभु भजनसूं, हां रे म्हारे प्रगटथा २, नवही निधान ॥ जी०प्र०॥५॥इति॥

७ छोड गोरीरा छैलरो दुपट्टो ॥ ए देशी ॥

मुनिवर देवे देशना रे, जीवा म्हांरा हिरदे राखो ज्ञान रे, सुज्ञानी, सुज्ञानीनर सांभळो रे; भवि जन हिरदे राखो ज्ञान रे, सुज्ञानी॥टेर॥जीव हिंसा नहीं कीजिये रे ॥जी०॥ हिंसा दुःखांरी खांन रे ॥ सु० ॥ १ ॥ झूठ कदू नहीं बोलिये रे, झूठ सदा दुखदाय रे ॥ सु० ॥ वसु राजा गयो सातमी रे, जी० ॥ कह्यो आगमके मांय रे ॥ सु० ॥ २ ॥ चोरी करतां दुख लहे रे ॥ जी० ॥ देखां निजरां आज रे ॥सु०॥ सत्यघोष गयो सातमी रे ॥ जी० ॥ चोरीसें जावे लाज रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ परनारीकी प्रीतडी रे ॥ जी० ॥ भूल न करिये संग रे ॥ सु० ॥ राजा रावणसा वीगड्या रे जी० ॥ विगडे रूपनें रंग रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन धन करतो क्यूं फिरे रे ॥ जी० ॥ धर्मसूं पावे धन्न रे ॥ सु० ॥धनसूं कुंण तरियो नहीं रे ॥ जी० ॥ राखो धर्मसूं मन्न रे ॥सु०॥ ॥ ५ ॥ ए उपदेश सांभळी रे ॥ जी० ॥ चेते उत्तम जीव रे ॥ सु० ॥ मुनि राम कहे खूब दीजिये रे ॥ जी० ॥ सद्गतकेरी नींव रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

८ पांच म्होर रोकड़ ले लो ॥ ए देशी ॥

परभवकी खरची ले लो, सत गुरुजी तो दे हेलो, प०॥

॥ टेर ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म ऐ तीनें, तीनें आखर गोतो देलो ॥ प० ॥ १ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्म ऐ तीनें, खबर करी हिर दे झेलो ॥ प० ॥ २ ॥ पर भव मांहे जासी अकेलो, झूठो सब गोकुल मेलो ॥ प० ॥३॥ दशकोस गावांतर जावे, खरची विन कांई खावे लो ॥ प० ॥ ४ ॥ लाखां कोस मुकांम चणे लो, हेतु विन कुंण खरची देलो ॥ प०॥५॥मात तात धन संग न चलसी, संग न चलसी गुरु चेलो ॥ ॥ प० ॥ ६ ॥ त्याग वैरागकी खरची ले लो, छोड दीजो उज्जड़ गैलो ॥ प० ॥७॥ मुनि राम कहे खरची लो गैरी, सो री सुखियो तूं रैलो ॥ प० ॥८॥ इति ॥

९ देशी पूर्ववत् ॥

तपस्या तुम करलो प्यारे, जिनसें कर्म टरे सारे ॥त०॥ ॥ टेर ॥ यथा कांतारं वनहि विशालं, दावानल विन कुंण जारे ॥ त० ॥ १ ॥ दावानल बूझावन कारन, मेघ विना कहो कुंण टारे ॥ त० ॥ २ ॥ अंभोधरनें दूरी करवा, पवन विना नहीं पड़ुला रे ॥ त० ॥ ३ ॥ कर्म समूह विदारन कारन, मुनि राम कहे तुम तप धारे ॥ त० ॥ ४ ॥ इति ॥

१० हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ ए देशी ॥

हां सखीनें खारो लागे, खारो लागे झूठ बोलणो; कुल काळो लागे रे ॥ स० ॥ टेर ॥ यश भस्म व्हे एक छिनमें, ज्यूं दावाग्नि वन दागे रे ॥ स० ॥१॥ झूठ दुःखको कारण कहिये, ज्यूं तरु जलसें जागे रे ॥ स० ॥ २ ॥ झूठ मध्य तप चारित्र नांही ज्यूं आतपे छाया भागे रे ॥ स० ॥ ३ ॥ मुनि राम कहे छे झूठ न बोलो, सुख पावोला आगे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ इति झूठ निंदा ॥

११ देशी पूर्ववत् ॥

सवीकूं लागे प्यारो, प्यारो लागे साच बोलनो; टारो देहीनो कारो रे ॥ स० ॥ टेर ॥ सत्य विश्वासतणों घर बोल्यो, विपत्ति रहे सब लारो रे ॥ स० ॥ १ ॥ सुर असुर तो पाये लागे, हाकम रीझे न्यारो रे ॥ स० ॥ २ ॥ मुक्ती पथनों संबल कहिये, करै जल अनलही टारो रे ॥ स०॥३॥ व्याघ्र उरग स्तंभनको कारण, संपति मिले अपारो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ मुनि राम कहे छै साचही बोलो, तोल वधेला थारो रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति सत्य महिमा ॥

१२ वालम छोटो रे ॥ ए देशी ॥

सुखिया घरमें जनमियो, दुखी थयो किण काज; कर्मको आंटो रे; कोई न खोलणहार, कर्मको आंटो रे; दुखी थकी सुखियो थयो, केई करता दीसे राज ॥ कर्म० ॥ कोईन० ॥ कर्म० ॥ एक आतम खोलणहार ॥ कर्म०॥१॥ बडा तपस्वी अवलिया, केई पाळे छै ब्रह्मचार ॥ क० ॥ केई श्रेणी चड पाछा पड्या, पंडित पेले पार ॥ क० को० क० ए० क० ॥ २ ॥ सिद्ध साधक केई पूछिया, फिर्यो फकीरां लार ॥ क० ॥ ग्रह गोचर केई पूजिया, और पूज्या पर्वत पाड़ ॥ क० ॥ ३ ॥ किण विध कर्मज बांधियां, किण विध दीवी अंतराय ॥ क० ॥ लाख उद्यम कर देखिया, पिण कुंण नहीं सक्यो बताय ॥ क० ॥ ४ ॥ कोई श्रावक धोरी वाजिया, निंदा करत अपार ॥ क० ॥ केई साधुकी करणी करै, पिण पड्या निंदाके लार ॥ क०

॥ ५ ॥ अरिहंतनो विरहो पड़्यो, और अथयो केवल नांण ॥ क० ॥ पूर्वधारी विच्छेदिया, किण विध पड़े पिछांण ॥ क० ॥ ६ ॥ सम्यक्त्व ही आतां छतां, छूटे मिथ्या गांठ ॥ क० ॥ केवल घाती गये हुवे, सिद्ध हुवे क्षय आठ॥क० ॥ ७ ॥ अक्कल पिण चल्ले नहीं, और चल्ले नहीं कछू जोर ॥ क० ॥ मुनि राम कहे केवल विना, मचियो घोरमघोर ॥ क ॥ ८ ॥ इति कर्मांको आंटो केवली गम्य ॥

१३ हुकम कर दिया सदरसें, पार बुलावे चाल अधरसें ॥ ए देशी ॥

हां हुकम इम दिया सुगुरुनें, दुःख नहीं देना भूलही परनें; दोय वात तूं भूल मती नर, दो जा विसरनें रे ॥ ॥ हु० ॥ टेर॥ दोय वात याद रक्खो प्यारे २, दोय वात देवो विसारे; लक्ष वेद ४ किस्से मथ काढे, कह्यूं पुत्तरनें रे ॥ हु० ॥ १ ॥ परमेश्वर जम यादही रक्खो २, नाहक वाद करी क्यूं वक्को; कर दिल मंजन, रट ईश्वरनें रे ॥ हु०॥२॥ परवर दिगार भजलो प्यारे २, खरची ले लो गैरी लारे; खडे खडे गुरु देव पुकारे, पग धर डरनें रे॥हु०॥३॥नित्यकी मोतया सिर पर घूंमै २, क्यूं नहीं माया खरचे सूंमै; किसके साथ भ्रात ऐ चल्ली, जाना परभव मरनें रे॥ हु० ॥ ॥ ४ ॥ दोय वात तो भूलही जानां २, बोलूं चौडे नहीं कहूं छांना; कर उपकार विसार हिये सूं, कै मत कछ करनें रे ॥ हु० ॥ ५ ॥ जो कोई बुरा तुमारा कीना २, जाकूं तूं तो भूल प्रवीना; खडे खडे मुनि राम पुकारे, साधो शिव पुरनें र ॥ हु० ॥ ६ ॥ इति ॥

१४ हांक समदण सदमतवाली ॥ ए देशी ॥

हांक प्रभुको धर्म पियारो, धर्म पियारो लागे प्यारो; अरिहंत वारो रे क ॥ प्र० ॥ टेर ॥ जिसी धर्ममें हिंसा वरजी, निश्चै नें व्यवहारो रे क ॥ प्र० ॥ १ ॥ झूठ जिसीमें मूल न भाख्यौ, निरवद्य सत्य उचारो रे क ॥ प्र० ॥ २ ॥ विगर दिये कछु तृणा न लेना, रैना खांडेकी धारो रे क ॥ प्र० ॥३॥ चित्र पूतरी वरजी निरखन, जिनसें होय विकारो रे क ॥ प्र० ॥ ४ ॥ परिग्रह कारन जग पचत है, पिण तन ममता टारो रे क ॥ प्र० ॥ ५ ॥ रात्री भोजन वरज्या जिसमें, जिसके भंगे च्यारो रे क ॥ प्र० ॥ ६ ॥ ऐसा धर्म तो हुवा न होसी, मुनि राम कहे तंत सारो रे क ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति ॥

१५ सीटी सननननन् ॥ ए देशी ॥

सुणजो सुगुरु सवाल, ऊमर चल्ले जैसे तार; रहो सारे होसियार, चल्ले सननननन् ॥ १ ॥ वखांन सुन्नेवाले सुनियो, नमोकार गुन्नेवाले गुनियो; सूत्र भन्नेवाले भणियो, सुकृत चुन्नेवाले चुनियो; सूत्र पंडितसें भंनियो, अर्थ पंडितसें सुंनियो; पंडित अग्रेही गुंनियो, घूमे घननननन् ॥ २ ॥ पंडित करते हैं तरक, नहीं जराही फरक; जिके ज्ञानमें गरक, झिलके झननननन् ॥ ३ ॥ ज्ञानके सरनें ही आवो, गुरुके चरने सिर नांवो; किसीके औगुन मत गावो, जीवका सुखही जो चावो; प्रभूके गुन मुखही गावो, व्यसनके रस्ते मत जावो; मिटेगो नरकको दावो, तूटे तननननन् ॥ ४ ॥ ग्रहो गुरुके चरन्न, चावो शीघ्रही तरन्न; राम गुरुके सरन्न, ग्रहो गननननन् ॥ ५ ॥ इति ॥

१६ लाली रांड छदामी रे ॥ ए देशी ॥

एक वात तो साची कहूं, सब के जियका हितही चहूं; गुरु हुक्मसें बोलूं एम, ऐ जग चलियो जावे रे; मूरख भेद न पावे रे, गाफल गोता खावे रे, सत गुरु यूं फुरमावे रे ॥टेर॥१॥ च्यार गतीमें रुलियो घणो, पारन आयो दुखंड़ा तणो; जन्म मरणको नायो पार॥ऐ०॥२॥मात तात भ्राता ने नार, है सगला मुतलबका यार; दुखरी विरियां जावे दूर ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ किसकी निंदा भूल न करो, मिनखा देहकूं धूल न करो; परका मल क्यूं मुखमें धरो, जलती लायमें किम तुम परो; पत्थरसें क्यूं फोड़ो सीस ॥ ऐ०॥ ॥ ४ ॥ दान समान नहीं गुण छे और, निंदा सम नहीं पापकी ठौर; स्वमत पर मतमें कहे एम ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ साधु संतकी सेवा करो, दान शील तप हियमें धरो; मुनि राम कहे मुख रखो विवेक ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ कुंण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

श्रावक वाजे धोरी रे, जांकी करणी फोरी ॥ टेर ॥ जिण कर वधियो महा उपकारी, जांरी काटे डोरी रे, द्रोही पापी अघोरी ॥ श्रा० ॥ १ ॥ जमा दबाय चौडे नट जावे, करे पराई चोरी रे; लेवे अधिको जोरी ॥ श्रा० ॥ २ ॥ धर्मी वाजनें पर धन ठगियो, लगियो कुकर्मके दोरी रे; करे वातां ठगोरी ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ पैसा साटे पगडी उतारे, निरखी पारकी गोरी रे; खेले परगट होरी ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ कांदा मूळा सब गटकावे, नहीं छोडे काची कोरी रे; नहीं त्याग एकोरी ॥श्रा०॥ ५ ॥ त्यागको नहीं कछु ठाए ठिकांणो, वातां वणावे कोरी रे; करे निंदा

साधोंरी॥आ०॥६॥स्याद्वाद धर्म मूल न जांणे,मिल गये मूरख टोरी रे; हठग्राह बकोरी ॥आ०७॥ शठ गुरु उत्सूत्रके वक्ता, मिल गई सरिखी जोरी रे; सूत्र अर्थ मरोरी ॥ ॥ आ० ॥ ८ ॥ ओछो देव अधिको लेवे, घासै नारदा मोरी रे; नहीं यतना जीवोंरी ॥ आ० ॥ ९ ॥ रामचंद्र तो यूं चेतावे,शुद्ध सामायिक दोरी रे; निंदा करणी सोरी ॥ ॥ आ० ॥ १० ॥ इति ॥

१८ कमर टूटीकी बूंटी नहीं है सलम ॥ ए देशी ॥

खूटीकी बूंटी नहीं होती मेरे जालम ॥ खू० ॥ टेर ॥ धन्वंतरी वैद्य भयो कृष्ण राज्ये, जिणनें पिण नहीं बूंटी की मालम ॥ खू० ॥ १ ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें ढूंढी थी, रावणसे पिण रहगयो ठालम ॥ खू० ॥ २ ॥ अमर वल्ली चल्ली नहीं किसकी, काम पड़ेसें होगई पोलम पालम ॥ खू० ॥ ३ ॥ सुर नर असुर फणींद्र इंद्रादित्य, आई आई खूट मरे सब आलम ॥ खू ॥ ४ ॥ देहधारी कोई एक न बंचियो, मुनि राम कहे खावो रसान भावे सालम ॥ खू० ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ जिनवर पास पियारो ॥ ए देशी ॥

थोडा बोले १ मीठा बोले २, काम पड्यांसें बोले रे ३ क; श्रावक थोड़ा बोले; हां क श्रावक मीठा बोले; थोड़ा बोले मीठा बोले, कांम पड्यांसें बोले रे क॥आ०॥१॥विवेकसें बोले ४ निगर्वे बोले ५, मरम न परका बोले ६ रे क ॥ आ० ॥ २ ॥ न्यायसें बोले ७ हितसें बोले ८, जबही होय अमोल रे क ॥ आ०॥३ ॥ अष्ट गुण वाचा श्रावक साचा, मुनि राम ते अमृत तोले रे क ॥ आ०॥ ४ ॥ इति ॥

२० देशी पूर्ववत् ॥

बहुला बोले १ खारा बोले २, नाहक सिरही पचावे ३ रे क; श्रावक धर्म लजावे, धर्म लजावे, शोभ न पावे, ते किम ऊंचा जावे रे क ॥ श्रा० ॥ १ ॥ विवेक न रक्खे ४ गर्वसें बक्के ५, अखै मर्म विरोध घलावे६ रे क ॥ श्रा० ॥ २ ॥ न्याय न बोले ७ अपकारी बोले८, मुनि राम तो वसु छुडावे रे ॥ श्रा० ॥ ३ ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

थोड़ा बोले १ बोवे बहुला, गर्जसें मिष्ट कहावे २ रे क, श्रावक धर्म लजावे ॥ १ ॥ काम पड्यांसें झूठं बोले ३, निर्लज वचन सुणावे ४ रे क ॥ श्रा० ॥ २ ॥ मांन न मूके ५ मर्म न चूके ६, थूंके विना प्रस्तावे रे क ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ न्याय उथापे ७ हिंसा थापे ८, उत्सूत्र व्यक्त दढावे रे क ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ भ्रांति पड़ावे आल चढावे, परकी निंदा गावे रे क ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ दांन न देवे आडी देवे, मुनि राम तो प्रगट सुणावे रे क ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ पांच म्होर रोकड़ ले लो ॥ ए देशी ॥

परम मंत्र नवकार शिरोमणि, जिनवाणी टाली सब कूड़; जहां देखा जहां कूड़ ही कूड़, छांण कीया तो धूढही धूड़ ॥ टेर ॥ मंत्र यंत्र रसायन इन नांमें, ठग खावे खाली मगरूड़ ॥ ज० ॥ १ ॥ इणसें लक्षाधिप कुंण वणियो, गत लक्ष्मी तो सुंणिया जरूड़ ॥ ज० ॥ २ ॥ धूलतणी किम खांट वणेगा, गोमयको किम होवे गूड़ ॥ ज० ॥ ३ ॥ पदमणी कांमनी वने कहो कैसे, जिण घर शंखनी फर्कशा फूड़ ॥ ज० ॥ ४ ॥ लालको मूठियो हाथमें पैंनें, केम वने सोनेको चूड़ ॥ ज० ॥ ५ ॥ किसकी सिवाई निजर

न आई, उलटी ठगाई दीसे जरूड ॥ ज० ॥ ५ ॥ वह बूटे बळद कहे लूटे जोतसी, मंत्रवादी लूटे अरूड़ मरूड॥ज० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे मंत्र यंत्रके चाळे, मत पडियो जावोगा बूड़ ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति ॥

२३ पांच म्होर रोकड़ लेलो ॥ ए देशी ॥

जहां देखो जहां मुतलब बात, मुतलब विन कोई करत न साथ ॥ टेर ॥ पुत्र सपुत्र कुलमणि दीपक, स्वारथसें कहें मात रु तात ॥ ज० ॥ १ ॥ नारी भर्ता भर्ता नारी, सारी दुनियां मुतलब साथ ॥ ज० ॥ २ ॥ बांटो खवावे फेर बुचकारे, दूजती गायरी खावे लात ॥ ज० ॥ ३ ॥ श्रावण मासमें छाछ न घाले, नूंती ज्येष्ठमें क्षीर जिमात ॥ ज० ॥ ४ ॥ वैद्य बुलावे औषध खावे, सर्‍यूं काम दुश्मन हो जात ॥ ज० ॥ ५ ॥ पूंजी सूंप पिता हुवो वैरी, कृतदारा वैरण हुई मात ॥ ज० ॥ ६ ॥ थाके वैलकी सार न पूछै, पक्षी तरु फल क्षीण तजात ॥ ज० ॥ ७ ॥ चड़स भरे पर हाथ पसारे, खाली हुवां फेर मारे लात ॥ ज० ॥ ८ ॥ केती कहूं कबू पार न आवे, नारी स्वारथके गीतही गात ॥ ज० ॥ ९ ॥ उत्तम पंच महाव्रत धारी, पर उपगारी जगमें विख्यात ॥ ज० ॥ १० ॥ धर्मी नर विन सब स्वारथिया, मुनि रामचंद साची दरसात ॥ ज० ॥ ११ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ थारी फूलसी देह पलकमांहे पलटे ॥ ए देशी ॥

वार वार सत गुरु समझावे, सीख हीयामांही धारो

रे ॥ टेर ॥ नर भव पाय आय उत्तम कुल, पामीनें मत हारो रे ॥ हां रे पा० ॥ २ ॥ वार० ॥१॥ अलप आऊखा माटे प्राणी, बांधो मती पापनो भारो रे; बांधे हँसकर भुगतवो दोरो, चेते क्यूं न गिवाँरो रे ॥ हां० वा० ॥२॥ सहू कुटुंब विटंब कह्यौ जिन, जिनवर वच उर धारो रे; अंत समें चेतन एक तारे, नहीं चलसी थारे लारो रे॥ हां वा० ॥ ३ ॥ काम भोग विपाक सरीखा, क्षण सुख दुःख अपारो रे; इम जाणीनें कोई चेतन चेतो, आ छै वहती वारो रे ॥ हां० वा० ॥ ४ ॥ रामचंद्र कहे गुरु प्रसादे, आगमनें अधिकारो रे; पांचे शीळसातम हरसाळे, वडो धर्म न पगारो रे ॥ हां० वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

परम दुलभ श्रद्धा कही, विन श्रद्धा सब छार ।
जिण कारण भावियण सुणो, श्रद्धानो विस्तार ॥ १ ॥
मुनि श्राद्धपणो ग्रह्यो, नहीं समकित जो मांय ।
पाळे गोयम आणंद ज्यूं, तो न लेखे जिनराय ॥२॥
अनुतांन बंधी चौकडी४,समकित५मिश्र६मिथ्यात७।
ऐ सात क्षयोपशम कीयां, पीछे समकित आत ॥३॥
दश धर्यां श्रावकपणो, चवदे धर्यां अणगार ।
इण विन संजम अभव्यनो, लेखे नहीं नर नार ॥४॥
साधुपणो जो ना पळे, श्रावकना व्रत धार ।
पाळो शुद्ध मन भावसुं, हुवे ज खेवो पार ॥ ५ ॥

२ नवकार मंत्रनो ध्यांन धरो ॥ ए देशी ॥

प्रमाद मांहे बैस जावे, पछे समायकनें मोडो आवे;
फेर राग द्वेषनी लगि डोरी, शुद्ध समायक करणी दोरी

विषय विषै निजर जोवे, फेर मैल परायो ते धोवे; निज औगुननें ढकवो री ॥ सु० ॥ २ ॥ मूंडो बांधनें बैस जावे, पछै मैल उतारे खत्त जमावे; मुखसूं बोले जिम होरी ॥ सु०॥ ३ ॥ विकथा मांड रह्यौ चारे, विन कारन ओटो लियो लारे; श्रावक वाज रह्यौ धोरी ॥ सु० ॥ ४ ॥ सामायिकमांय करे झटको, सामायिकमांय करे मटको; हँसे हँसावे नर गोरी ॥ सु० ॥ ५ ॥ संतांसेती करे कजियो, कदे कजिया विना नहीं रंजियो; पर निंदा करणी सोरी ॥ सु० ॥ ६ ॥ विनय भक्तसूं रहे दूरो, पर निंदा करणनें सदा सूरो; दशमे अंग कही चोरी ॥ सु० ॥ ७ ॥ जीव अजीव नहीं ओळखिया, श्रावकमांहे वाजे मुखिया; ठाह नहीं श्रद्धाको री ॥ सु० ॥ ८ ॥ छळ छिद्र जोवे परका, औ गुण नहीं जोवे घरका; सावद्य भाषा बोले जोरी ॥ सु० ॥ ९ ॥ रामचंद्र कहे सुण लीजो, भाई शुद्ध सामायिक थे कीजो; ज्ञानी सकारे जिम तोरी ॥ सु० ॥ १० ॥ इति ॥

३ हमकों छोड चले वन माधो, राधा सोच करे ॥ ए देशी ॥

क्या परकूं परमोद लगावे, तूं पोते पिंड पाप भर्‍यौ रे ॥ अंदर कपटी बकवद्ध्यानी, तो तेरा काज कबू न सर्‍यौ रे ॥ क्या० ॥ १ ॥ परकूं कहे दया उर धारो, खारो वचन मत उच रो रे; तूं अविचार्‍यौ वदे महा कडवो, तूं हिंसक पापी दुष्ट खरो रे ॥ क्या० ॥ २ ॥ औरनकूं कहे मिथ्या मत भाखो, मिथ्या बरोबर पाप नहीं रे; तोनें झूठतणी नहीं सुग्या, पग पग झूठ बोले

यूं हीरे ॥ क्या० ॥ ३ ॥ मनकूं जीत महाव्रत पाळो, लोभ न करिये एक रती रे; तूं महा लोभी महा व्यभिचारी, तो तेरी सुधरे केम गती रे ॥ क्या० ॥ ४ ॥ क्रोधी १ लोभी २ तूं नहीं पढियो ३, श्रद्धा हीण ४ प्रवीण नहीं रे; सहू सदोष तूं निर्दोष; निज औगुन क्यूं न देखे तुं ही रे ॥ क्या० ॥ ५ ॥ जो पोते परमोद लगावे, तो रामचंद भव पार लहो रे; शिव जातां कोई पल्ला न पकडे, जो कहो जिण रीत वहो रे ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

४ प्यारो मोहणगारो राज मन म्हारो मुगत महलसूं लागो ॥ ए देशी ॥

कोइएक श्रावक नाम धरावे, जीवाजीव न जांणे; द्वेष वधावे भांता घलावै, रूढ आपणी तांणे ॥ श्रावक सुणजो, थे सुणनें हिरदे धरजो; थे आतम कारज करजो, थे शुद्ध कृत्य आचरजो ॥ टेर॥ १ ॥ कोइयक निर्धन धनवंत कहिये, हाते लावो लेवै; कोइयक धनवंत निजरां देखो देतां आडी देवै ॥ श्रा० ॥ २ ॥ केई वखांण सुणेवा आवै, वायां सांमो जोवै; पूंजी वंदणी रही कठेई, उलटी पूंजी खोवै ॥ श्रा० ॥ ३ ॥ केईयक तो प्रतिलेखन करता, अठी उठीनें झांखे, जयणां करणी रही जठेई, चुग चुग जूंवां नांखे ॥ श्रा० ॥ ४ ॥ केई उत्तम श्रावक शील ज पाळे, मन रोकीनें राखे; केइएक तो पर तिरिया काजे, ऊपरवाड़ा ताके ॥ श्रा० ॥ ५ ॥ केई लघु वयमें हरीकूं त्यागे, दुर्गति ताळा जडिया; केई बूढा मूळा कांदा भोटे, खावणलारे पडिया ॥ श्रा० ॥ ६ ॥ उत्तम श्रावक झूठ न बोले, झूठो लागै खारो; केई झूठसं खोवे

जमारो, अपजस होवे न्यारो ॥ आ० ॥ ७ ॥ केइयक सतियां शील ज पाळे, पती कन्हैया जोडै; केई व्यभिचारण पतिनें छोडी, पर नर नीच न छोडै ॥ आ० ॥ ८ ॥ रामचंद्र मुनी इम भाखै, राखो निरमल किरिया; कपट करी उत्सूत्र प्ररूपी, कोई पूरवे नहीं तिरिया ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति ॥

५ देशी नवरासानी ॥

विना विचारी तूं क्यूं बोले,तोल घटे छै थारो रे,पंचां मांहे पतळी होवे, तूं काज विगाडे छै म्हांरो रे; हूं तोनें वरजूं छूं, तूं विना विचारी मत बोल, रसना वरजूं छूं ॥१ ॥ टेर ॥ दोहा पहेली गीत ख्याल ते, विन सीख्यां तोने आवे रे; धर्मतणो अक्षर नहीं बैसे, जो बहुली बार बतावे रे ॥ हूं० ॥ २ ॥ विन पूंछ्यां ही पर निंदा तूं, छत्ती अछती गावे रे; गुणवंतना गुण पूछ्यां ढांके, ओ कांई थारो स्वभाव रे; रसना वरजूं छूं, वैरण वरजूं छूं ॥ वि० ॥ ३ ॥ च्यार इंद्र्यां तौ चौडे रे वे, रुखवाळो नहीं ज्यांरे रे; तूं विलवासी बहु रुखवाळा, तो पिण धस आवे बारे रे ॥ र० हूं० ॥ ४ ॥ शब्द रूप गंध फरस च्यारूंमें; एक एक औगुन होय रे; तूं खाय बिगाडे बोल बिगाडे, तोमें अवगुण दोय रे ॥ र० हूं० ॥ ५ ॥ तूं पोते रस्ते नहीं चाले, द्ये परनें उपदेश रे; जो तोनें प्रभु भजवा छेडूं, तो आलस करनें बैसे रे ॥ र० हूं० ॥ ६ ॥ रसना बोली सुण चेतनजी, जो नहीं पोखो मोय रे; तो पंजर सूके च्यारूं मुरझावे, देश ऊजड होय रे ॥ र० हूं० ॥७॥ चेतन बोले सुण जीभडली, म्हे देश वसास्यां और रे; रामचंद्र कहे छै मन म्हारो, ज्यां नहीं थारो जोर रे ॥ र हूं० ॥८॥

६ देशी सूवटानी ॥

बोल रे जगवासी जिवड़ा, जिन वरना गुण मुखसूं बोल ॥टेर॥सर्व जंजाल ख्यालसा जांणी, निज गुण आतम परगट खोल॥ बो०॥१॥ पुद्गल संग प्रसंगे रुळियो, सद्गुरु वचनसूं पडि अब तोल ॥ बो० ॥ २ ॥ मत कर जीव ममत्व तूं भोळा, क्यूं हारे नर भव रतन अमोल ॥ बो० ॥ ३ ॥ मात पिता घर कुटुंब कबीलो, कुंण छै थारा मुखसूं खोल ॥ बो० ॥ ४ ॥रंक राव सब कालको चारो, क्या बोलूं मैं बजाई ढोल ॥ बो० ॥५॥ मुनि राम कहै सुणजो सब भाई, मत राखीजो अबके पोल ॥ बो० ॥ ६ ॥ इति ॥

७ नाथ कैसे गजको फंद छुडायो ॥ ए देशी ॥

दश दूषण तो मनके जांणो, दश वच बारे काया; आणा प्रमाणे करो सुध भावे, श्री जिनराज सुणाया रे; श्रावक शुद्ध सामायिक करिये, दोष बतीस परिहरिये रे ॥ आ० ॥ १ ॥ विन अवसर १ जसकाजे दूजो २, तीजो लाभ ३ चिंते मन मांही; अहंकार ४ चौथो भय ५ मन आंणे, छठे निदान ६ कराही रे ॥ आ० ॥ २ ॥ संशय ७ धारे गुसो ८ मन राखे, वैगारी ९ परे लागे; दशमो दोष विनय कर हीणो १०, वचनके दश सुणो आगे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ कुवचन १ दूजो विना विचार्यो २, डिगतो डिगतो बोले ३; विषै वचन ४उंतावळो भाखे ५, वाद करे विन तोले ६ रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ अक्षर ओछो ७ हास्य मुख करतो ८, विकथा ९ नवमें बखांणो; आवो पधारो करे खुलेसूं १०, ऐ दश वचनका जांणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ बारे कायारा ठांसली मारे१, चंचल आसन

धारे २; विषै दृष्ट जोतो ३ घर काम करतो ४, विन हेतु ओठो लियो लारे ५ रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ अंग उघाडे अति अंग ढांके ६, सातमे आलस मोडे ७, मोडे कडका ८ खाज खिणे तन९, मैल उतारे चौडे रे१०आ०॥ ॥७॥चरण चंपावे११ नींद घुरावे१२, इम दोष बारे काया; मुनि राम कहे टाळणके तांई, दोष बतीस सुणाया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

८ हूं तो तोनें नहीं पिछांणूं रे वीरा ॥ ए देशी ॥

जीवा एक चित्त कर उर धरिये, साधू संगत नित करिये ॥ जी० ॥ १ ॥ पेले बोले परणाम जेहवा, कर्म हुवे पिण तेहवा ॥ जी० ॥ २ ॥ कर्म प्रमांणे गति पामीजे, बीजो बोल सुण लीजै ॥ जी० ॥ ३ ॥ तीजे बोले गत प्रमांणे, शरीरतणो उनमांन ॥ जी० ॥ ४ ॥ शरीर प्रमांणे इंद्री कहिये, इंद्रीसो विषय लहिये ॥ जी० ॥५॥ छठे बोले विषय कहिये, जेहवा भाव लहिये ॥ जी० ॥६॥ रामचंद्र कहै सुंण लीजो, समभीनें धर्म करीजो ॥जी०॥७॥इति॥

९ लालन लील करूंगी रे ॥ ए देशी ॥

नीठ नीठ नरनो भव लाधो, आर्य देशमें आयो; उत्तम कुल आउ लंबो इंद्रिय, शरीर निरोगो पायो; चेतन तूं किणरो कुंण थारो, चेतन कर रह्यौ म्हारो म्हारो ॥१॥ मुनि सामग्री सुणवो सिद्धांत, रुचिकर रहो जिन मतमें; श्रद्धा विना विना पराक्रम, भटक्यो च्यारूं गतमें ॥ चे० ॥ २ ॥ रे चेतन तूं पुद्गल राची, रुळियो काल अनादी; पर गुण राच्यो निज गुण भूल्यो, नहीं समकित तें लाधी ॥ चे० ॥ ३ ॥ भलो हुवो श्रीगुरु देवको, अब सम-

कित मैं पाई; सम्यक् दृष्टी जीव निरंतर चिंते, ते सुंणजो सहू भाई ॥ चे० ४ ॥ हूं एकाएकी कुंण नहीं म्हारो, हूं पिण किणरो नांई; ऐ संपदा सहू अध्रुव अनित्य, म्हारो नहीं है कांई ॥ चे० ॥ ५ ॥ जन्म जरा मरण व्याधीमें, धर्म विना नहीं शरण; माया कायानी ऐ रचना, सड़ण विध्वंस न पड़ण ॥ चे० ॥ ६ ॥ तात मरीनें बेटो होवे, बेटो मरीनें तात; नारी मर माता माता मर नारी, नहीं रही फरसी जात ॥ चे० ॥ ७ ॥ सुख दुख लाभ अलाभ ऐ च्यारूं, जिम होवा जिम होसी; रे चेतन तूं कर्म ज बांधे, घणा काल लग रोसी ॥ चे० ॥ ८ ॥ आप कीया आपही भुगते, जिणमें मीन न मेख; कीया कर्म छोडे नहीं किणनें, अनंत बलीनें देख ॥ चे० ॥ ९ ॥ इम चिंतन कर नित्य सम्यकदृष्टी, रामचंद इम भाखी, तिंवरी साते शुद्ध भाद्रवे सूत्र सिद्धांत है साखी ॥ चे० ॥ १० ॥ इति ॥

१० घाणेंद्रीके वश नहीं परिये ॥ ए देशी ॥

प्यारे मेरे एक कथन तौ करियो २, अनुभव चितमांहे धरियो ॥ प्या० ॥ टेर ॥ कोड़ बरष लग तपस्या कठिन करि, जेतो पातक भरियो; तेतो एक श्वासोश्वासमें सेजे, पूरब पातक टरियो ४ ॥ प्या० ॥ १ ॥ काहेंकों कष्ट सहै तूं इतनों, काहेकों वनमांहे परियो; वृथा ही मौनी वृथा ही त्यागी, वृथा ही पच पच मरियो ४ ॥ प्या०॥२॥ अनुभो मारग मोक्ष कहावे, चिंतामनि अनुभो उचरियो; मुनि राम कहे अनुभो धर्म साचो, इन विन नहीं भव तरियो ४ ॥ प्या० ॥ ३ ॥ इति ॥

११ ऊधोजी कर्मनकी गत न्यारी ॥ ए देशी ॥

जोबन धन पावना दिन च्यारा, यांको गर्व करे सो गिबाँ-

रा० ॥ जो० ॥ टेर ॥ जोवन रंग पतंग सो उडै, धन है धनुष विकारा ॥ जो० ॥ १ ॥ जो वन नदी वेग सो जांनो, धन है विजुरी उजारा ॥ जो० ॥ २ ॥ माया छाया जोवन जल अंजुलि, टप टप टपकत सारा ॥ जो० ३ ॥ जोवन खोवे रोग एक छिनमें, धन तो पुनांकी लारा ॥ ॥ जो० ॥ ४ ॥ जोवन चांदकी चांदनी सरीखो, सेवट घोर अंधारा ॥ जो० ॥ ५ ॥ माया किसीकी हुई न होवे, प्रगट कहे संसारा ॥ जो० ॥ ६ ॥ मेघनाद इंद्रजीत रावनसा, वल जल होय गये छारा ॥ जो० ॥ ७ ॥ द्वारका नगरी छिनमें जलगी, होते सो वनमय घर सारा ॥ जो० ॥ ८ ॥ कौरव पांडव झगड्या धरानें, अक्षौहिनी लेई अठारा ॥ जो० ॥ ९ ॥ दिन ठारामें सब कट मूई, ज्यूं लद गये ऊंठ कतारा ॥ जो० ॥ १० ॥ मुनि राम कहे कोई धन जोवनको, कोई गर्व न करियो प्यारा ॥ जो० ॥ ११ ॥

१२ विगड़ी कौन सुधारे नाथ विन, विग० ॥ ए देशी ॥

दिन जाते हैं नहीं आते हैं, क्यूं नाहक वात बनाते हैं ॥ दि० ॥ टेर ॥ लक्ष कोटि धन दे गत घटिका, कुंन जोरावर लाते हैं ॥ दि० ॥ १ ॥ इंद्र फणींद्र मुनींद्र नरेन्द्रा, काल सबीकूं खाते हैं ॥ दि० ॥ २ ॥ अवके भूल पडी जिय तो में, ज्यूं रतन खोय पिछताते हैं ॥ दि० ॥ ३ ॥ प्रभु चरणे चित्त घडी एक रक्खो, वा घडी तुम साथे है ॥ दि० ॥ ४ ॥ मुनि राम कहे जग झूठो सगरो, झूठे जगके नाते हैं ॥ दि० ॥ ५ ॥ इति ॥

१३ एक मुनिवर देख्या वनमें ॥ ए देशी ॥

आखर तेरे काम नहीं आई, तूं जोवेनी आंख झुकाई

॥ आ० ॥टेर॥ चुन चुन मटिया महल चुनाया, ऊंडी नींव लगाई; ॥ आ० ॥ १ ॥ नारी रूपा अपछर सरिखा, जोडी मिली मन चाई ॥ आ० ॥ २ ॥ सोना रूपा हीरा मोती, म्होरांकी थेली चुनाई ॥ आ०॥३॥ मात पिता भ्राता सुत भगिनी, ज्ञाती न्याती ने मित्राई ॥ आ० ॥ ४ ॥ वसन भूखन वाहन वहुते रे, और सहू ठकुराई ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र यंत्र ज्योतिप ने वैद्यक, इलम और पंडिताई ॥ आ० ॥६॥ राज काज हाथी ने घोडे, पलटण और सिपाई॥आ० ॥ ७ ॥ दान शील तप भावना भावो, ऐ छै साची कमाई ॥ आ० ॥ ८ ॥ धर्म ध्यान कर पर भव साधो, जद लेखे चतुराई ॥ आ० ॥९॥ मुनि राम कहे नहीं काया तेरी,क्या कहूं ढोल बजाई ॥ आ० ॥ १० ॥ इति ॥

राग ॥

१ गिरनारी सोरठ ॥

लेले क्यूंनी खरची रे,दूर मुकांम॥ले ले०॥कहांसे आयो कहां उठ जासी २, जहां नहीं जांने तेरा नाम ॥ले०॥ १ ॥ नांनीको घर छै नहीं आगे २, वहां नहीं तेरा धाम ॥ ले० ॥ २ ॥ बाप दादेको धारे कमायो २, एक न चाले दाम ॥ ले० ॥ ३ ॥ आ काया तेरे संग न आसी २, थल जल होसी निकाम ॥ ले० ॥ ४ ॥ राम कहे कछु सुकृत कर ले२, ज्यूं पांमेलो आराम ॥ ले० ॥ ५ ॥ इति ॥

२ राग मारू ॥

जीया तोनें मोह रूलाये हो ॥ जी० ॥ आठ कर्मको

राजियो, ज्ञानी पुरुष बतावे हो; शिव नगरीमें जावतां, ओही अटकावे हो ॥ जी० ॥ १ ॥ मोहरायनें जीतवा, कोई विरला पावे हो; नर सुर डूबा एहमें, नहीं ऊंचो आवे हो ॥ जी० ॥ २ ॥ अहि हरि करि अरि जीतवा, नर बहुला धावे हो; पिण राग द्वेषनूं जीतवा, कोई निजरां नावे हो॥जी०॥३॥जबर मोह जग जाळ छै, सब आगम गावे हो; पति वियोगा कामिनी, जीवत जल जावे हो॥जी०॥४॥ पशु पक्षी बच्चे पाळही, स्यो नरकी रीत दिखावे हो; सिंघ सन्मुख कर सींगडा, निज प्राण गमावे हो ॥ जी० ॥५॥ सुकर मोडे लोह सांकळां, दुक्कर एहनूं तुडावे हो; मुनि राम कहे निरमोहीडा, जियडा जियडा मोक्ष सिधावे हो ॥ जी० ॥ ६ ॥ इति ॥

३ राग मांच ॥

परकी हिंसा लागे तोय, मरन तेरा या विध भव भव होय ॥टेर॥ अजिया सुत कहे सुन मेरे अधमी,क्यूं मारत है मोय; जैसी पीडा तेरे होवे, तैसी मेरे होय; मेरा मांस तूं हँस कर खावे, ऐसे खावेगा जोय ॥ प० ॥ १ ॥ तृणां खाऊं शस्त्र न घाऊं, मैं छूं जात गरीब; मात हमारी दूधज देवे, मैं भी खुदाका जीव; साहिब पासे पल्ला पकडूं, विना गुन्हे लीया जीव ॥ प० ॥ २ ॥ मुजकूं होमे धर्म बतावे, क्यूं होमे न अपना बाप; चचे बच्चेकूं होमे नांहीं, ज्यूं मोचन हुवे तेरा पाप; रे हत्यारा मुझकूं होमे, ऐसे मरेगा तूं आप ॥ प० ॥ ३ ॥ मांसका गृधी मांस खात है, खातां करत वखांन; दुष्ट जीवांकूं सूग न आवे, थाली मांहे मसांन; कुंभीपाकमें मरकर जासी, मारेसी जम रांन ॥ प० ॥ ४ ॥ जीव उबारें पीड न देवे, झुठ

न बोले कोय; परचीज हरांम जांणे मनसें, शील वरत शुद्ध होय; ममता मारे समता धारे, रामपला न पकडे कोय ॥ प० ॥ ५ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ परदेशीरो कांई पतियारो ॥ ए देशी ॥

झूठा बोलो वचनको पोलो, नहीं वचनको बंध लिगारो; हाथो ताली कही नट जावे, धिक् धिक् तास जमारो, बांधे बहू पापको भारो; झूठा बोलाको कांई पतियारो, सदा तुम झूठ निवारो ॥ झू० ॥ १ ॥ क्रोध १ मान २ माया ३ लोभसें ४ बोले, राग ५ रु द्वेष ६ विचारो; हास्य ७ भय ८ विकथा ९ सूं बोले, दशमो भेद हिंसारो १०; बोले सो झूठ छै सारो ॥ झू० ॥ २ ॥ पैठ प्रतीत नेम सुंस धर्म, खोवे फुन लागे खारो; झूठ बरोबर पाप नहीं है, सुण्यो हेतु वसु राजारो; गयो सीधो नरक मझारो ॥ झू० ॥ ३ ॥ संजम आवे मुक्ति सिधावे, भंग जो व्रत चौथारो, मृपावादीकूं संजम न आवे, पर तन होवे सुधारो; हुवे परभव सुख कारो ॥ ॥ झू० ॥ ४ ॥ चोरी जारी सात व्यसनकूं, सेठ किया अंगीकारो; झूठको नाम सुणी चित चमक्यो, काढ्यो घरने बारो; नहीं विसवास झूठारो ॥ झू० ॥ ५ ॥ सावद्य निरवद्य निर्णय करीनें, पछे वचन उचारो; मुनि राम कहे ऐसो बोलीजे, सो लागे सहूनें प्यारो; करो सदा झूठको टारो ॥ झू० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ किण मास्यौ म्हांरो मोर वताय पापी ॥ कि० ॥ए देशी

किम भूलो रे चिदानंद चाल घरकी ॥ कि० ॥ टेर ॥ मृगतृष्णाये मृग वन ढूंढे, सिंघ भूलो चाल संग भेडरकी ॥ कि० ॥ १ ॥ परी जेवरी रात अंधेरी, मांनो सर्प नाठो छाती धरकी ॥ कि० ॥ २ ॥ नलिनीको सूवो उडन नहीं पावे, जैसे श्वान भुस्यो निज रूप निरखी ॥ कि० ॥ ३॥ कपि मुष्टि वांधि घट भींतर,नहीं छोडे मार खाय परकी ॥ कि० ॥ ४ ॥ रामचंद निज रूप निहारो, संग करो तुमे सतगुरुकी ॥ कि० ॥ ५ ॥ इति ॥

३ देशी पूर्ववत् ॥

ज्ञान दीपक जोती जगी हियमें रे ॥ ज० ज्ञा० ॥ टेर ॥ धूमको लेश न वात प्रवेश न, कर्म पतंग जरे जियमें॥ज्ञा० ॥ १ ॥ वाटको भोग न लोग सनेहको, मिथ्या अंधकार विध्वंस लियमें ॥ ज्ञा० ॥२॥ ज्ञान शिखा मुनि राम वँदत है, प्रगट दीसे मोख पंथ इयमें ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ इति ॥

---

१ रेखतो

किधर गये पापमें मन्ना रे ॥ कि० ॥ इधरकूं फेर नहीं जांना ॥ टेर ॥ गये तो होत नुकसांना रे ॥ ग० ॥ डुवो कोई रंक और रांना ॥डु०॥ विषय वीच सुख नहीं पाना रे॥वि०॥जांनो तुम नरककी खांना॥जां० कि०॥१॥ विषय सुख कस कसके दाना रे॥वि०॥ ताके दुःख मेरु परवांना रे ॥ ता०॥ मांनो तुमवीर परवांना रे ॥ मां० ॥ दूजो तुम कीजो वनमांना ॥ दू०कि०॥२॥रावनसे खोत निज प्राणा

रे ॥ रा० ॥ खोये गढ छिनही लंकाना ॥खो० ॥ कीचकके प्राण गये छांना रे ॥ की०॥ नरकमें कूटे जम रांना ॥ न० कि० ॥ ३ ॥ देखो फिर राजमें दंडे रे ॥दे०॥ दुनिया जगतमें भंडे ॥ दु० ॥ धन सहू खोत है घरनो रे ॥घ०॥आगे फेर नरकमें परनो ॥ आ० कि० ॥ ४ ॥ इस्कके पंथ मत जावो रे ॥ इ० ॥ जरा तुम दिलकूं समभावो ॥ ज० ॥ कहे राम मुनि संगतमें आयो रे ॥ क० ॥ सहि जे तुम स्वर्ग पद पावो ॥ स० कि० इ० कि० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

१ गजल ॥

शास्त्र प्रमाणे चौड़े बोलूं,नीचतणां पदंतर खोलूं; मोटो नीच किणनूं कहिये, पर निंदा सम नीच नहिये; पर निंदा करजो मत भाई, स्वमत पर मतमें ऐ गाई; जो थे निंदा करो पराई, तो विगडी सघली कीवी कमाई; लोभ थकी सब गुणही जावे, निंदासें सब धर्म गमावे; निंदा सम नहीं पातक मोटो, सब पातकमें एहीज खोटो; केई घोचामार बडा रुळिहार, गळियार गद्धानें अनुहार; संतां पासे दौड़ी आवे, कपट करीनें धात वणावे; बोल चाल सीखे गुरु पासे, रात दिवस वे करे अभ्यासे; सूंठ गांठे पसारी बण बैठा, महा कुपात्र मांणस धेठा; म्हांने आवे संजया नेठा, गमा दंडक आवे सैंठा; अब शास्त्रांमांहे मारे घोचा, नरक गामी वे मांणस पोचा; निंदाखोर घडा हरांमी, आतो पदवी चौडे पांमी; आप विगड्या और विगाड़े, निंदा करे वे लाची भाड़े; दोय च्यार तो दिये विगाड़, चौड़े मोले हेला पाड़; आपां

च्यारूं राखो एको, पछे करां सो निजरां देखो; काम पड़्यां तो रही जो पक्का, केई तरेका पड़सी धक्का; संतां सेती वरते वंका, केई तरेकी घाले शंका; नागा थावर वडा कंगाल, मुखसूं बोले आल पंपाल; संतांनें पिण देवे आल, ते निंदक तो खरा चंडाल; ऐ साधू अम जांण्यां वरते, जाणां छां पिण नहीं कहां डरते; ऐ छै ढीला ऐ छै तीखा, ऐ छै वैरागी ऐ छै फीका; ढाला पांणी थानक सेवे, भेषधारी द्रव्यलिंगी कैवे;छांने नहीं पिण चौड़े कांछां, आं साधांसूं आपे आछा; आं साधांने वंदना मत करो, तिक्खूंतो तौ ऊंचो धरो; पोते ज्ञानी वणनें बैठा, व्यवहार न रक्खे हुयगया धेठा;पखी छमछरी आदी आवे, संतांने नहीं सीस नमावे; नागांनें नहीं शर्म ज आवे, कंगला निकम्मो जन्म गमावे; संतांनें नहीं वंदना करे, तो कहोनी तोटो किण रे पड़े;दगड़ फैंक सिर नीचो धरे,अथवा भृष्टासें मुख भरे; पर्वत सेती फोडे माथा, जलती आग बुझावे हाथां; अक्खज खावानें भंड सूरा, निंदा करवा बडा ज सूरा; इसा मिनखको काळो मूंडो, सब पापीमें ऐहीज भूंडो; मैल परायो धोवे धापी, उत्सूत्र परूपे मोटा पापी; गुणवंत साधूनें तो निंदे, पख बंधिया निगुणांनें वंदे; सडियो पान विगाड़े चौळी, निंदक एक विगाड़े टौली; आगे ग्राम हूंतो सुढालो, अब निंदारो लागो चाळो; निंदक संग करै निरधार, ते तो डूबा काळी धार; निंदक संगत सूं नवि सुधऱ्या,शुद्ध हूंता ते निश्चै विगड्या; समकितरो नहीं ठाह ठिकांणो, गाठ नहीं पचखांणे जांणो; सामायिकमें दोष लगावे, अठी उठीरी वात बणावे; सूत्र सुणंतां निद्रा आवे, जो सुणे तो रुचही नावे; शुद्ध श्रद्धा

विन जन्म गमावे, सत्य कहां छां सुणजो भावे; निंदा कारण बांधी गाती, संतांनी पिण बाळे छाती; दयाहीण ने घणा कठोर, क्षुद्र नीच वळे गुण चोर; निंदासें भुगते बहु पीड़ा, विगडे डील ने पडे ज कीडा; पूत मरे घर वीखर जावे, निर्धन होय बहू दुख पावे; घणां निंदकनी विगडी देखी, निंदकनी विगडे सब शेखी; अंत समो तो निश्चै विगडे, मरनें नीची गतमें पडे; निंदासें विगडे इह लोक, किसां पुनां सुध रे पर लोक; स्वामी वृद्धिचंदजी गुरु हमारा, भेद बताया न्यारा न्यारा; रामचंद कहे सुण लो सारा, मत बांधो थे पापना भारा; निंदा फल सुगत्यां छूटेला, भोगवतां हीया फूटेला; इणरा फल खायां खूटेला, ज्यां जावो त्यां सिर तूटेला; इम जांणी निज निंदा करो, भव सागरथी वेगा तरो ॥ इति ॥

दुष्ट स्वभाव ॥

१ देशी ख्यालनी ॥

पापी जीव आवै, कोयला माटी खावै, ठीकरियां छोडे नहीं रे हां; फेर जंग मचावै, जमीकंद चावै, भावे जिम बोलै सही रे हां ॥ १ ॥ मोटो ओभर वधावै, पीड़ा उपजावै, काळो लगावै कोई वातसूं रे हां; दाम छिजावै, ऊंधी मत लावै, वैर वधावै सब साथसूं रे हां ॥ २ ॥ सासूजीसूं बोलै, लाज सारी खोलै, बोलै कड़वा बोलड़ा रे हां; छांने छांने खावै, वस्तु चुरावै, सूंस भंगावै वडा वडा रे

ां ॥ ३ ॥ भूंडो भावै, नींद घणी आवै, चिंत करावै बे-
कामरी रे हां; धर्म घटावै, पाप वधावै, रीस अणावै राम
ामरी रे हां ॥ ४ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे-
हितोपदेशनामकं षष्ठं प्रकरणम् ॥ ६ ॥

आचार ॥

दोहा ॥

साधू नाम धरायनें, छै अनरथना मूल ।
धूल करै जमवारनें, मनमें रह्या ज फूल ॥ १ ॥
वरतणसूं मालम पड़ै, नहिं समकितनो लेस ।
निश्चय जांणै केवली, लच्छ अभव्य विशेस ॥ २ ॥
ऊदाई नृपकों यथा, मारयौ ठगने वेस ।
तद्वत पापी भेष धर, वरते नीच विसेस ॥ ३ ॥

ढाळ ॥

१ निन्हव जांणो इण चलगतसूं ॥ ए देशी ॥

तटिनी तटे वृक्ष खड़ो है, निरंकुश होय नारजी; मं-
त्री हीन होय जो राजा, ज्यूं पूज्य विटल परवार जी;
साध न जांणो इण चलगतसूं ॥ १ ॥ पती निवळसूं नारी
विगड़ै, घोडो विन असवार जी; स्थान विगडै निबळ
धणीसूं, ज्यूं पूज्य विटल परवार जी ॥ सा० ॥ २ ॥ राज

विगड़े फूटफाटसूं, गृहस्थीनो घर थार जी; थारो म्हारो राग द्वेपसूं, केई संत गया परवार जी ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए मुज समणी ए मुज बाई, ए मुज चेलो होय जी; ज-रा न संके वीतरागसूं, जावे जमारो खोय जी ॥ सा० ॥ ४ ॥ पूज्य आचारे अधिको होवे, तो साधू मांने संक जी; सवसूं ढीलो पूज होय तो, साधु होय निसंक जी ॥ सा० ॥ ५ ॥ साधू साध्वी भेळा विचरे, साथे करे वि-हारजी; सर्व वातसूं विगड्या समझो, लोप्यो जिण व्य-वहारजी ॥ सा० ॥ ६ ॥ चेला चेली लेई नाठे, देवे भेप पैरायजी; करे चोरी सो चोर कहावे, किम बाजे मुनिराय जी ॥ सा० ॥ ७ ॥ गुरु चेला ने चेली गुरुणी, लडतां देखै लोग-जी; जिन मारगनें पूरो लजावे, इम किम मिलसी मोख जी ॥ सा० ॥ ८ ॥ तरुणी अजा काजल सारे, नहीं हीर हटक मरजादजी; पट झीणो ओढ़े तनु झांकै, करे सीख दीयां बकवाद जी ॥ सा० ॥ ९ ॥ पखी चौमासी संव-त्सरी आयां, गृही न रक्खै वैरभाव जी; काट क्रोधसूं जावै जमारो, वळी धारै साधू नांव जी ॥ सा० ॥ १० ॥ चंडाल चौकड़ी पासे रैवै, विकल विटल भंडसूर जी; कुमति देवैकूं सदा परायण, सुमतिथकी रहै दूरजी ॥ ॥ सा० ॥ ११ ॥ जूं भरिया कपड़ा धर देवै, सह्व जूंवां मर जायजी; खीरा लावै तगरा भरनें, लेई आदी रंधाय जी, पहिलो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १२ ॥ मिथ्या भाखै साद उथापै, पग पग बोलै झूठ जी; आल धुराधुर झूठो दवै, दूजो व्रत गयो ऊठ जी; दूजो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १३ ॥ चोरी मिनखतणी कर नाठै, वळी पुस्तक चोरे ओरजी; रात्री लेई करै विहार, ते सहूकार कै चोर जी;

तीजो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १४ ॥ चौथा व्रतनी वात घणी है, नवि करां एहनी तांण जी; जेहनी वात केवली जांणै, स्यूं विगड़ै व्याव वखांण जी; चौथो व्रत कहो किम कर रहियो ॥ १५ ॥ पंचमे व्रतमें परिग्रह त्यागै, ते कहिये अणगार जी; गृहस्थी मांहे जमा करावै, जद विगड्यौ सब व्यवहार जी; पंचमो महाव्रत पूरो पड़ियो ॥ १६ ॥ तृष्णा लोभ आग पलीता, क्रोधी महा चंडाल जी; कपड़ा पुस्तक संचे वहुला, जांणो वडा कंगाल जी; पंच महाव्रत कहो किम रहिया ॥ १७ ॥ छट्टा व्रतमें रात्री भोजन, वर्ज्यौ भंगे च्यार जी; वासी राखै गृही सारिखो, दशवें कालिक मभारजी; साध न जांणो इण चलगतसूं ॥१८॥दंडवाळेकों दंड विगरही,असणादिक करै अहारजी; श्वान गधेनो चाट्यौ मूंढो, कुंण होय न्यातनें बार जी ॥ सा० ॥ १९ ॥ आचार्य संपदा एक वतावो, वण्यो राग द्वेषनो पुंज जी; एकणसूं तो मुखै न वोलै, एकणसूं करै गुंज जी ॥ सा० ॥ २० ॥ पूज्य शिथिल तौ साधू शिथिला, सुद्धारे सुद्धार जी; वांद मूंढे जो लाळ पडै तौ, स्यूं करै जांनी लार जी ॥ सा० ॥ २१ ॥ नीचतणो तो कथन ज मांनै, शुद्ध साधांसूं वैर जी; इह लोके महिमा घट जावै, देवे समुदाय विखेर जी ॥ सा० ॥ २२ ॥ समभावे वरतै जव पूजै, तव मांनै समुदाय जी; नहींतर पूज्यभणी नहीं मांनै, एह सूधो छै न्याय जी ॥ सा० ॥ २३ ॥ पूज्य तौ वूझ करै नहीं तिल भर, खळ गुळ एकही भाव जी; हांजरिया श्रावक मिल जावै, झूठेनी पख कराय जी ॥ सा० ॥ २४ ॥ पूज्य विवेकी विरली ठौडे, विरलो शुद्ध परिवार जी; सब समुदाये भाव ए समझो, नहीं एक समुदाय विचार जी ॥ सा० ॥ २५ ॥ ए ढाळ सुणीनें चटको लागै,

जिणमें ओगुण जांण जी; राम मुनी ए समुचे भाखी, नहीं छै खांचातांण जी ॥ सा० ॥ २६ ॥ इति ॥

छंद ॥

काजल सारे तन सिणगारै, डारे दुर्गतिमें अप्पां, नितकी खावै फांद वधावै, आवै जिम मारै गप्पां। तन भीणो ओढे दिनकी पोढे, दौड़ी चाले थइ वंकं, केईक अज्जा ख्वरी निलज्जा, करै अकज्जा निःशंकं ॥ १ ॥ सवागण थोड़ी विधवा घोड़ी, दौड़ी दाड़ी लार फिरे, चेली अलबेली जिणरे थेली, ओळी दोली जास फिरे। नहीं रेहे धेठी हुइ गई सैंठी, बैठी रे वे निज अंकं ॥ के० ॥ २ ॥ थांनकमें लावै साधु बोलावै, वात वणावै प्रेमनकी, हसै हसावै दंत दिखलावै, लज्जा गमावै तन मनकी। मोह अळूझै कछु वन सूझै, अळुझै माखी जिम पंकं ॥के०॥३॥ साधू मांहे राखै थारै झांखै, रखै निगे सव वारनकूं, पाट विछावै साधु विठावै, अंग दिखावै जारनकूं। संघट्ट कर दै कुचादि मरदै,वाजै छिनमें व्रत भंगं ॥ के०॥४॥ साधू विगड्यौ साध्वी विगडी, रंडी विगड़ी भेषधरं, अब होय गई पकी भई निसंकी, रंगी चंगी थइ निडरं। पग ऐड़ी धोवै साधु विगोवै, खोल दिखावै निज अंगं ॥ के० ॥ ५ ॥ कोई छोरी मुंडावै जोवन आवै, गुरणी लावै भेषधरं, सुरभी जिम देखी संड विशेखी, केकी घन यूं नृत्यकरं। काती जिम श्वानं लगै ओपमानं, लगै न ज्ञानं द्रव्यलिंगं ॥ के० ॥ ६ ॥ अक्का जिम रैती चेली सेती, संदर बंदर सब करती, भूंडपापणो करती लज्जाहीणी, सीख न मांने एक रती। भेष धर भूंडो जासी ऊंडो काळो मूंडो कर संगं ॥ के० ॥ ७ ॥इति ॥

गीत ॥

१ नागजी सूतो खूंटी तांण रे, वैरी म्हारा, वतळायो बोले नहीं रे जी ॥ ए देशी ॥

साधजी बोलोनी बोल विचार रे, कांई, विन विचार्‍यूं बोलो मती रे ॥ सा० ॥ यती सरावै नार रै, कांई, साध सरावै सो सती रे ॥ १ ॥ सा० ॥ निरवद्य भाषा बोल रे, और, सावद्य कठिन नहीं भाखिये रे ॥ सा० ॥ रे तुं अमित अणतोल रे, छोड, पूरो विवेक राखिये रे ॥ २ ॥ सा० ॥ चंद्रपुर एक सेठ रे, तहां तपस्वी मुनि एक आवीयो रे ॥ सा० ॥ ऊभो गोखे हेठरे, मुनि, तपत करी दुख पावीयो रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ नहीं पडि मुनि की ठीक रे, तहां, गोखे बैठी नर्मदा रे ॥ सा० ॥ बाईजी थूक दीयो जहां पीक रे, तब, कोपभर्‍यो मुनिवर तदा रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ तूं तो पति वियोगी होय रे, इम, शाप दीयो छै मुनिवरू रे ॥ सा० ॥ शापन दीजै मोय रे, हूं, लुळ लुळनें लटका करूं रे ॥ ५ ॥ सा० ॥ बोले छै अमृत वैण रे, बाई, दीयो शाप टळै नहीं रे, बाईजी, मत भर डब डब नैंण रे, मैं संयम खोयो छै सही रे ॥ ६ ॥ सा० ॥ सो वाते एक बात रे, इम, सावद्य भूल न भाखणो रे ॥ सा० ॥ राम कहै दिन रात रे, मुनि पूरो विवेक राखणो रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

साधजी सीखोनी भाखा विचार रे, ओ, विन भाखा

संयम नहीं रे ॥ सा० ॥ तप संयम जावे हार रे, कांई, सावद्य भाखा जो कही रे ॥ १ ॥ सा० ॥ द्रव्य क्षेत्र काल भाव रे, ऐतो, भाखा च्यार प्रकारनी रे ॥ सा० ॥ सीखो मन धर चाव रे, कांई, पछै भाखा उच्चारनी रे ॥ २ ॥ सा० ॥ द्रव्यथकी भेद दोय रे, तुमे, सत्य व्यवहार दो बोलिये रे ॥ सा० ॥ टाळो जे सावज्ज होय रे, तुमे, बोलो पछै धुर तोलिये रे ॥ ३ ॥ सा० ॥ चलता न करणी बात रे, आतो, क्षेत्रथकी भाखा कथी रे ॥सा०॥ कालथकी पौर रात रे, जिण, उप्रंत थे बोलो मती रे ॥ ४ ॥ सा० ॥ भावथकी बोल आठ रे, कांई; क्रोध मान माया लोभ ही रे ॥ सा० ॥ भय हासो दो दाट रे, और, मुखारी कथा नहीं सोभही रे ॥ ५ ॥ भेख अनंतीवार रे, पिण भाखा भेद न जांणियो रे ॥ सा० ॥ रामचंद्र उच्चार रे, तुमे, मत कहो कांणांनें काणियो रे ॥ ६ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ तुम चलो सखी कुछ जेजन करिये ॥ ए देशी ॥

अष्टादश तौ दोष ही टाळो, पाळो मुनिवर व्रत चोखा; जोखा नहीं छै मुक्त जावतां, जरा नहीं इसमें धोखा ॥ अ० ॥ टेर ॥ व्रत षट् काय षट् ऐ बारै, अकल्प १३ गृह भाजन १४जानों;पल्यंक१५ गृहस्थ घर ही बैठन १६, स्नान १७ शोभा १८ ठारह मानों ॥ अ०॥ १ ॥ हिंसा १ झूठ २ अदत्त ३ मिथुन ४ ऐ, परिग्रह ५ निश भोजन टारो; वासी रखै सो गृहस्थ सरीखो, जिसका भंगा छै न्यारो ॥ अ० ॥ २ ॥ पृथिवी १ अप २ तेऊ ने ३ वायू ४,

वनस्पती ५ त्रसका कथना ६; वनस्पतीमें जीव अनंता, शेष असंख कग जतना ॥ अ० ॥ ३ ॥ द्वादश बोल तो हो गये ऐसें, अकल्प बोल कहीये च्यारं; वस्तर पातर आहार रु थानक, निर्दोष ग्रहे अनगारं ॥ अ० ॥ ४ ॥ गृहीका भाजन सब ही वरज्या, बोल भये चवदे ऐसें; पनरमे बोल पल्यंकासन ही, मुनिवरजी भोगे कैसें ॥ ॥ अ० ॥ ५ ॥ ग्रहस्थी घर नहीं बैसे मुनिवर, तपस्वी रोगी वृद्ध खरो; और भणी नहिं हुक्म दिया है, बोल सोलमे अमल करो ॥ अ० ॥ ६ ॥ स्नान देशनें सबही वरजी, जावज्जीव मुनि वरताई; सोभा वरजी बोल ठारमें, कज्जल पीठी करे नाई ॥ अ० ॥ ७ ॥ दशवें कालिक अध्येन छठेमें, सूत्र टीका विस्तार जहां; मुनि राम कहे एक बोल सेवे तो, जिस पदसें मुनि भ्रष्ट कहा ॥ ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनिश्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे आचारनामकं सप्तमं प्रकरणम् ॥ ७ ॥

चरचा

चरचा विपरीत प्ररूपक तथा तेना आचरणनी लावणी ॥

१ सदाशिव पारबती प्यारा ॥ ए देशी ॥

सदा मुज सूत्र लगै प्यारा, कुगुरुका करियो मुख कारा ॥ टेर ॥ अजी सूत्र सरीसो धर्म नहीं जग, उत्सूत्र

सम नहीं पाप; अडंग वडंगकी गप्पा मारे, करै कल्पना थाप; लोक गडरिया जांणे सचा, दीये सूत्र उत्थाप; नरकमें करसी डेरा, श्रावकनें लेसी लेरा, नंदी वैतरनी पासी, ऊंचा फेर कबू न आसी; सीधा वे निगोद जासी वे ॥ सदा मु० ॥ १ ॥ बत्रीस सूत्र मांना म्हे तो, ते पिण मांनां पाठ;आगम तीन प्रकार बराबर, निंदे गहली टाट; इस कहनीसें भ्रष्टी कहिये, ग्रही नरककी वाट; केवलीकूं भूत लगावे, तेरसकी पक्खी ठावे; निगोदकूं मारे हाथां, अभक्ष तो चौडे खाता; मूरख जांनें सरातावे ॥ स०॥२॥ उष्ण जल तो तपमें पीणां, कुगुरां थापी छास; सूत्र ठाणांगे परगट देखो, दीखे जैनाभास; लघुनीतसें जावे भाडे, करै धर्मका नास; चौडे छै भृष्टी पूरा, निगोदमें पटके फूंरा; मूत्रसें पात्र भराया, धर्मनें पूरा लजाया, गृहस्थका धर्म गमाया वे ॥ स० ॥ ३ ॥ साधू वंदन गृहस्थी जावे, तामें पाप वतावे; पुस्तक पड़ला धोवे मात्रे, मधु माखणनें चावे; टीका उथापे खरा अज्ञानी, जांनें शीश नमावे; भूलतो मोटी कहिये, दुष्टसें दूरा रहिये; लेखे नहीं करनी जेहनी, करो मत महिमा तेहनी; भूल संग करो न एहनी वे ॥ स० ॥ ४ ॥ गृहस्थकी आंठ खावे अरु थापे, जैनी सुन सरमावे; जनम मरनका सूतक वरज्या, ते पिण लावे खावे; रजस्वलादि मूल न टाळे, अकाले सूत्र सुनावे; सूत्रसें विरुद्ध आचरना, संवत्सरी चौथकी करना; मिथ्याती आज्ञा धारे, सूत्रकूं नांहि विचारे; भोलेकूं फंदमें डारे; राम कहे ते किम तारे वे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति विपरीत प्ररूपक तथा तेना आचरणनी चरचा समाप्त ॥

२ चरचा छाछनी–सवैया ॥

मासादि करावै तप छाछादि पिवावै और, घोलिया मह्रेकी जात पिब्बो ही वखांने हैं। ऊन्हो जल निंदे केई पीनेकर करावै त्याग, ऊन्हो जल वर्ज्यों कहां पूछ्यां ऊंधी तांने हैं ॥ वासमें अगार केते बोले हैं सूत्रके बीच, कद्सें सरू ए हुई कौन कौन मांने हैं। आधो टूक रक्खा पैली वास ही दोरो हुवां, खायेतैं बनेगो वास न्याय हून जांने हैं ॥ १ ॥ एक वात पूछां म्हे तो पच्चखांण कहे दस; नोकारसी आदी ऐतो कौनमें धसाये हैं। तेले उप्रांत देखो ठाणांगजी तीजे ठांणे, ऊन्हा जल विना मात्र दूजां न दिखाये हैं ॥ सूत्रमें वरज कीये तेई काम करे थापे, जिसो दूजो कौन पापी बोघे भरमाये हैं। मनहीसूं करे थाप मनसूं उथाप करे, सूत्रसेती नांही डरे राम कलु आये हैं ॥ २ ॥ ऊन्हा जलसेती अच्छी कहे छास वास मांहे. खरा है अजान जांनें सूत्र ज्ञान नांही है। हीयेंकूं ठंठोके नाह धर्म आज्ञामांहे कह्यो, दूध दही छाछ देखो कौन शास्त्रे गाई है ॥ मनसूं करे छै छांन छः कायको कूटो होवै, कच्चो जल अच्छो जदि ऐसे ही सुनाई है। राम कहे न्यातकेरा त्याग कीया कोई भाई, धरमांहे जीमे कैसें आरंभ कराई हैं ॥ ३ ॥ इति छाछनी चरचा ॥

३ चरचा थांनकरी ॥

दोहा ॥

थांनकमें रहना नहीं. कहते केइक एक।

सूत्र रहस्य जांनें नहीं, तांनें अपनी रूढ ॥ १ ॥
आधाकर्मी दोष है, भोळांनें कहे एम ।
तेहनों उत्तर हूं कहूं, सांभळजो धर प्रेम ॥ २ ॥
धर्मसाल थांनक कहो, कहो वा पोषधसाल ।
जिणमें उतरे साधु सुध, लीजो सूत्र निहाल ॥ ३ ॥
गृहस्थ रहे जिण जायगां, जिणमें रहे जो साध ।
भेषधारी द्रव्य साधु है, उपजे वहोत उपाध ॥ ४ ॥
भूत भविष्यत् वर्तते, निश्चय मुनिवर तेह ।
केवलि वचनांसें कहूं, जरा नहीं संदेह ॥ ५ ॥
थांनक उथप्यो खोडले, परथम तेरा पंथ ।
रतन हुकम पंथी अवर, निंद ही वाजे संत ॥ ६ ॥
थांनक शाला ऊतरे, जिणरो शासतर लेख ।
ऊंधमती चरचा करे, साधू नहिं ते भेख ॥ ७ ॥
छेले आरे लाधसी, उपाश्रम शुध साध ।
थांनक बाहिर साधु कुंण, कहे कोई करनें वाद ॥ ८ ॥
थांनक उतरे साधु है, देखो सूत्रकी राह ।
बाहिर उतरे साधु हे, सो जांनें जगनाह ॥ ९ ॥
थांनक उथापे पैल ही, थे साधूके नाह ।
मूढ मती समझे नहीं, नहीं समझणकी चाह ॥१०॥
दांन दया थांनक उथप, चलियो भीखम पंथ ।
एक उत्थपे तेहनें, किम जांणो शुध संत ॥ ११ ॥
आचारांगजु सूत्र मां, कह्यो साधु आचार ।
भिन भिन करनें ओळखो, जिम पांमो भव पार १२
जो करणी दुःकर करे, तो न करे पर *निंद ।
कर्म वधे निंदाथकी, कह्यो सिद्धांत जिनंद ॥ १३ ॥

---

*कंचन तजबो सैज है, सैज त्रियाको नेह । पर निंदा पर ईरखा, तुलसी दुर्लभ एह ॥ १ ॥

दुखमी आरो पांचमो, वधियो वेष अपार।
भेख देख भूलो मती, ओळखजो आचार ॥१४॥
जिनवर वचन उथापनें, थापे आपनो मत्त।
ते पाखंडी सारिसा, रुळसी च्यारू गत्त ॥१५॥

ढाळ ॥

१ सूरी जन कर्म समो नहीं कोई ॥ ए देशी ॥

दशवैकालिक सूत्र मांहि, चाल्या बोल च्यार; पिंड सिज्जा वस्त्र पात्र, भोगवे शुद्ध अणगार रे, प्रांणी,समझे आचारमें विरला ॥ १ ॥ असांण पांण खादम सादम, नहीं लगावे दोख; मुहादाइ मुहाजीवी, पांमे दोनूं मोख रे.॥प्रां०॥२॥ अठारे प्रकारे थांनक चाल्या, तिणमें साधू रेवे; इत्थि पशू पिंडग हुवे ते, मन करी नहीं सेवे रे ॥ प्रां० ॥ ३ ॥ केई केहे थांनक मांहे, साधूनें नहीं रहणो; कैसो दोष लागे साधूनें, पाछो तिणनें कहणो रे॥प्रां०॥४॥ आधाकर्मी दोष वतावे, थांनक साधां काजे; नींपे गूंपे आछो करावे, वळी साधांरे नांवे वाजे रे ॥ प्रां० ॥ ५ ॥ पाछो तिणनें प्रत्युत्तर देणो, साधू नांमे वाजे थांन; यथा दृष्टांत कोईयक नर, संजम लीधो बुद्धीवान् रे ॥ प्रां० ॥ ॥६॥ लारे जिणरी स्त्री जायगां, तिणरे नांवे वाजै; कांई दोष लागे साधूनें, कह्यांसुं भर्म भाजे रे ॥ प्रां० ॥ ७ ॥ अथवा साधू मुक्ति विराज्यो, आठ कर्मानें काप; ते शरीर मुनि वाजे प्रजाल्या, कांई सिद्धांनें लागे पाप रे, कुमति, क्यूं डूबो निंदा करनें ॥ ८ ॥ इण चरचामें चतुर समझे, नहीं समझे बोगा; निंदा करी करे आत

मा भारी,जांणो च्यारूं गति जोगा रे कु०॥ ९ ॥ आचा-
रांग दूजा श्रुतस्कंधे, अध्यायन पेहेलो वाचो; वाचीने तो
निंदा निवारो, अणूंता मति नाचो रे ॥ कु०॥ १० ॥ नोरा
दुकांनारा ताला खुलावो, उतरो मझमें देखी; नीपे गूंपे
आरंभ थावे, उतरो किम करो सेखी रे ॥ कु० ॥ ११ ॥
यत्र ममता तत्र दोप, कांई थांनक दुकांन; सूत्र वांचो
ने अर्थनें धारो, क्यूं करो कूडा तोफांन रे ॥ कु० ॥ १२ ॥
जिण जागामें अन्य साध हुवे तो, शहरमें नहीं आवो;
जो आवो तो बारे कढावो, थें चउफेर तंबू खंचावो
रे ॥ १३ ॥ तंबू खंचावे जिण जायगां, चौडे दोप लागे;
पछे गृही कांई तंबू खंचावे,थे करो रेवणरा त्याग रे॥ कु०
॥ १४ ॥ नित्य घरनो म्हे पांणी न लावां, भापा बोलो ऐ-
सी; वारी बंधियो पांणी लावो, ओ संजम किम रेसी रे
॥ कु० ॥ १५ ॥ पांणीनें म्हे एकांतरे आसां, मति थीजाने
यहिराजे; एक दिवस तो पांणी न देवे, एकांतेर थांरे
काजे रे ॥ कु० ॥ १६ ॥ नित्य पांणी थांयां भेळो कीयो
ते, लावो हांडा भर भर पांणी; कपटाई करी संजम खो-
वो, इण सोभामें कांई खांणी रे ॥ कु० ॥१७॥ अधिकाई
तो कांई न दीसे,दीसे अधिककपटाई;निंदा पिण ईजापे
दीसे, एह करी अधिकाई रे ॥ कु० ॥ १८ ॥ वाई जातसूं
परचो ईजापे, वखत कुवखत गिणे नांई; आधाकर्मी
आहार ईजापे, एह करी अधिकाई रे ॥ कु० ॥ १९ ॥ अंग
विभूषा पिण ईजापे, हीये विचारी जोवो; थापना थांन-
क परगट सेवो, तो थांनक थांनक स्यूं रोवो रे ॥ कु० ॥
॥२०॥इत्यादिक विचारी जोज्यो,जठे मूर्छा तठे दोख;राम-
चंद कहे निंदा निवारो,तो पामेस्यो मोख रे॥कु०॥ २१ ॥

स्वांमी वृद्धिचंदजी प्रसादे जोडी, लाभ अधिको जांणी; ढीला होसी सो रीसां बळसी, लेसी आपमें तांणी रे; कुमति क्यूं डूबो निंदा करनें ॥ २२ ॥ इति थांनकरी चरचा समाप्त ॥

४ चरचा तेरापंथियोंकी–सवैया ॥

उनिको अभाग पूरो गुरु किये तेरापंथी, दया दांन हीया सेती पूंछने मिटाहो है। कपटमें कपट जांके दुष्ट प्रणांमी पूरे, कूरे कूरे सूत्रकेरी शाख दरसायो है ॥ दया दान जावै जब लिलाडीको तेज मिटै, ऐ तो चौडे बात नहीं द्वेषसूं सुनायो है। बुद्धिवांन होवे प्रांणी इनकी श्रद्धाकूं त्यागै, जांको भाग जागै शुद्ध श्रद्धामांय आयो है ॥ १ ॥ पाठहीकों मौडे चौडे असंजती पोषणिया, ऐसो खोटो पाठ लिख सूत्रही सिखायो है। महावीर स्वामी चूका बतावै निशंक मूढ, रूढहीकों तांणै जांरे हीये तम छायो है ॥ साधूहीके फासी दई दयावंत खोलै कोई, दोनूंकूं बतावै तुल्य ऐसो तंत पायो है। जीवकूं बचावै कोई मारै सो सरीखा गिणै धिक धिक ऐसो पंथ दाय नहीं आयो है ॥ २ ॥ सौळमां शतक वीच उद्देशे तीजे कै मांह, अर्शी मुनीकी देख वैद्य काट डारी है। ध्यानारूढ ऋषी खडे़ दोपारां लौं त्याग्यो तन, नाक श्वास रुके मुनि वेदना तौ भारी है ॥ मुनी के क्रियाही नांह धर्म अंतराय विना, वैद्यके क्रिया छे शुभ बडो उपगारी है। सूत्रमें खुलास पाठ अर्थाकार किये अर्थ, मूरख उलटी कहै जाकी मति कारी है ॥३॥ आचारांग दूजै स्कंध अध्ययन तीजेके वीच, मुनी तौ विहार करै मृग यूथ देखा है। पारधी पूछै छे मुनी मृगादिक देखा तुम, जांन झूठ बोलै जांन्यूं

लाभ ही अलेखा है ॥ सूत्रहीके पाठ मौडे मौनहीकी करै थाप, मौन पाठ लारे और भगवती पेखा है। मूल सूत्र टीकाकार अर्थ नहीं मांने मूढ, पहाड उडाडे जहां पूछे पूंणी लेखा है ॥४॥ देव गुरु धर्म लोप मन मते पंथ काढ, अर्थ हीन जी जी कहै देखो ऊंधमती है। वीर चूका गुरु भूला लुंपक दयाके पूरा, तेरापंथी भेखधारी देखो नीच गती है ॥ तत्त्वकी खबर नांह वातां तौ जबर करै, दोष सूं भरे हैं पूरे कहै नहीं रत्ती है।पूछे प्रश्न दयाहीन भूला खावायां कांई हुवे, श्रावकको पेट आछो करै क्योंन जत्ती है ॥ ५ ॥ भगवती आदि सूत्रे श्रावक अभंग द्वार, अनुकंपा दान देखो कहां वरज किये हैं। प्रदेशी तौ भाग च्यार ज्यांमें दानशाला चल्लू,कीधी और प्रभू सारे वरसी दान दिये हैं ॥ तेरापंथी साधू विना सबीकों दियेमें पाप, ऐसी थाप करै दुष्ट जरा नहीं बिये हैं। भोळेकों भ्रमाय पापी खोटे पंथ मांहि राळे, अमृतकूं छोर दोर मूढ जैर पीये हैं ॥६॥ वृहत्कल्प पैलाध्ययन कँवाड़ साधूनें वरज्यो साध्वी उघाडे खोलै मूढ ऐसी गाई है। पैंतीसमाध्ययन उत्तराध्ययनजीकों नाम लेवै, खरा है अजांण जांमें ज्ञान रत्ती नांही है ॥ जिन कल्पी न खोलै स्थविर कल्पी खोले जडे, दिखावां म्हे सूत्र मांह देखो क्यूं न आई है। सूत्र रहस्य जांणे नांह शब्दको बोध नांह,परलोक डर नांह भुसै श्वान दाई है ॥ ७ ॥ मूंजी ने कठोर और कदाग्रही निरदयी, ऐसे जीव हुवे ताकूं श्रद्धा एह रुचे हैं।सूत्रके न्यायसेती मात्र ग्रंथ म्लेच्छ विना, विरुद्ध ओ कुपंथ ऐसो मांनें झूठे लुचे हैं॥ खोजी होई सूत्र रुची शास्त्रज्ञ विवेकी कोई,पुन्यधारी श्रद्धा पाप पाछी फेर मुचे है। इचर्ज आवै है एक होवे जे वि-

वेकवंत, देख अंध कूप परे मानो ग्रह कचे हैं ॥ ८ ॥ तेरा पंथी सेती मेरा द्वेष नहीं प्यारे भाई, उत्सूत्र कहन सेती द्वेष मेरा जांनजो । भीषमजीकी कीवी ढाळां सूत्र शास्त्र दीवी देखो, खोजी होई सूत्र जोई ज्ञान दृष्टी छांनजो ॥ चर्चाहीको कांम कांई पक्षपात विना देखो, ढाळियांकी वात पर श्रद्धा मत आंनजो । राम मुनी कहै प्यारे श्रद्धा शुद्ध करो सारे, सवैया सुनीनें नव रीस मत मांनजो ॥ ९ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ अगड़दं अगड़दं वजे दोकड़ा सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

क्या हमसें तूं करेगा चरचा, दान दया उठावत है; आगम आगे पता न लागै, बोधांकूं भरमावत है ॥ टेर ॥ प्रतिमाधारी उत्तम श्रावक, ग्यारमी प्रतिमा वहते हैं । ग्यारे ग्यारे उपवास पारणे, साधूकी पर रहते हैं ॥ क्या० ॥ १ ॥ दोष वयालीस टाळी वहिरे, श्रावक शुद्ध वहिराते हैं; उसमें मूरख पाप वतावै, मूं देख्या नहीं जाते हैं ॥ क्या० ॥ २ ॥ भगवती सूतर शतक अष्टमें, छठे उद्देशे गाते हैं; श्रमण शब्दे साधू बोले, श्रावक माहण कहाते हैं ॥ क्या० ॥ ३ ॥ श्रमणोपासक दोनुं जनेकूं, प्रासुक शुद्ध प्रतिलाभत है; गौतम गणधर पूछै प्रश्नकूं, दाता फल क्या पावत है ॥ क्या० ॥ ४ ॥ श्री वीर कहे छै सुण तूं गौतम, एकांत निर्जरा थाते हैं; पाप कर्म नहीं किंचित इसमें, परगट पाठ दिखाते हैं ॥ क्या० ॥ ५ ॥ श्रमण मा हण वा दोनुं शब्दमें, एक

साधू दरसाते हैं; सूत्र अरथको मरम न जानें, खोटा अर्थ लगाते हैं ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इन दोनुं शब्दके अर्थ पूर्वे, शतकादि उद्देशे साते हैं; दूजे शतक फुन उद्देश पंचमे, साधू श्रावक फुरमाते हैं ॥ क्या० ॥ ७ ॥ तथा रूप साधू श्रावककों, शुद्ध श्रावक प्रतिलाभत हैं; व्रत वारमो निपज्यो तेहनें, कुमती घोचा घालत हैं ॥ क्या० ॥ ८ ॥ शतक द्वादश प्रथमोद्देशे, शंख सावस्ति रहते हैं; प्रभु वंदीनें घरकों जावत, सवि श्रावककों कहते हैं ॥ क्या० ॥ ९ ॥ च्यार प्रकारे विपुल आहार कर, पाक्षिक पोसा करते हैं। शंख श्रावक को वचन प्रमाणे, तहत करी उचरते हैं ॥ क्या० ॥ १० ॥ माल खायके पाक्षिक पोसा, किम होते शंका धरते हैं; पोषध द्विविध वृत्ति खुलासे, सुन कर भरम निसरते हैं ॥ क्या० ॥ ११ ॥ इष्ट जन भोजन दान सोई पोसध, प्रथम भेद पुकारत हैं; आहार त्याग सो द्वितीय पोषध, शंख प्रथम विचारत हैं ॥ क्या० ॥ १२ ॥ प्रत्यय टीका वचन विचारो, क्यूं झूठे हमसें लरते हैं; मज्झम *पात्रे श्रावक भणिया, मूरख व्यर्थ झगरते हैं ॥ क्या० ॥ १३ ॥ भगवती सूत्र शतक तीसरे, प्रथम उद्देश वखानत हैं; शक्रेशानको वाद मिटावा, इंद्र तीजो समजावत हैं ॥ क्या० ॥ १४ ॥ द्वादश बोल भव्यादिक आदि, प्रभुकूं गौतम पूछत हैं; किन कारन जात्र चरम भयो छै, सुन कर भर्म ही गच्छत है ॥ क्या० ॥ १५ ॥ प्रभु भाखे सुण गौतम

---

* उत्तमपत्तं साहू, मज्झमपत्तं य सावया भणिया। जहन्नपत्तं इयरदि, तिविहं पत्तं मुणेयव्वं ॥ १ ॥

गणधर, चउविह संघ सुहावत है; हित सुख पथ्य कृपादिक कामुक, सनत्कुमार फल पावत है ॥क्या०॥१६॥ शतक आठमे छठे उद्देशे, तीजे पाठकों तांनत हैं। असंयती दान एकांते पाप, जिसकी रैस न जांनत हैं ॥ क्या० ॥ १७ ॥ मोक्षके अर्थ श्रावक देते, ताकूं पाप दिखावत हैं; *अनुकंपा नहीं दान निषेध्यो, जिण जागां अर्थ दृढावत हैं ॥ क्या० ॥ १८ ॥ प्रतिमाधारी तो दूर ही रहियो, अनुकंपा दानन उठते हैं; पापमती तौ पाप बतावे, सो मर नरकां पड़ते हैं ॥ क्या० ॥१९. ॥ इत्यादिक तौ पाठ घणा छै, मूरख भेद न पाते हैं; उत्सूत्र प्ररूपी नरकां जासी, श्रावक पिण जां साथे हैं ॥ क्या० ॥ २० ॥ प्रश्न दयाका दूजा चलत है, अभयदान अति मोटे हैं; जीव बचाये पाप बतावत, जिसके लक्षण खोटे हैं ॥क्या० ॥ २१ ॥ आचारांगजी दूजे श्रुत स्कंधे, अध्ययन तीसरे पठते हैं; जीव बंचावा परगट देखो, जानत मुनिवर नटते हैं ॥ क्या० ॥ २२ ॥ हरिणादिकको टोळो मुनिवर, रस्ते जावत पेखा है; पूछे पारधी क्या तुम देखा ? मुनि कहे हम नहीं देखा है ॥ क्या० ॥ २३ ॥ सूत्र भगवती शतक पंचमें, छठे उद्देशे लिखते हैं; मृगादिक द्रव्य झूठकों टाली, आलादि कटु फल लगते हैं ॥ क्या० ॥ २४ ॥ सूत्र भगवती शतक पनरमें, प्रभु गोशालो बंचायो है; उत्तर देनेकूं ठौर न लाधी, प्रभुको चूक बतायो है ॥ क्या० ॥ २५ ॥ जीव बंचाये नेम प्रभूजी, जिसमें गोते खाते हैं; गायां बळती दया करी काढे, जिसकूं पाप लगाते हैं ॥ क्या० ॥ २६ ॥

---

* मोक्खत्थं जं दाणं, तं पइ एसो विही समक्खाओ। अणुकंपा दाणं पुण जिणेहिं न कयाइ पडिसिद्धम् ॥ १ ॥

जीव बंचाये धर्म छै मोटो, टोटो कठै न दाखत हैं; दया दान उत्थापे दुष्टी, सूत्र विरुद्ध ही भाखत हैं ॥ क्या० ॥ २७ ॥ सूत्र पाठ और टीका शास्त्र, सबका वचन उठाते हैं;इसा दुष्टकी संग न करिये, रामचंद समझाते हैं॥क्या० ॥ २८ ॥ समत उगणीसे वरस सैंतीसे, फाल्गुन शुद्ध पख लगते हैं। ग्राम वकांणी मांहे प्रकाशी, सुन श्रावक श्रद्धा रखते हैं ॥ क्या० ॥ २९ ॥ इति सिद्धांतसूचानिका दान दयाप्रकाशिका कुमतमतखंडनिका संपूर्णा ॥

२ तुम चलो सखी ॥ ए देशी ॥

चउव्विह संघनें साता दीजै,जिणसूं शिवपुर थे जासो; पंचम अंगे वीरजी भाख्यो, गोतम कर दीयो परकासो ॥ टेर ॥ तीजै शतक अरु प्रथमोदेशे, गोतम पूछै सिर नांमी; सनत्कुमार ईशान शक्रको, वाद मिटावै किम स्वांमी ॥ च० ॥ १ ॥ जुवानतणे अनुसारे दोनुं, इंद्र तदा चुपचाप रहे; वडी पुन्याई तीजा इंद्रनी, हंता गोयम वीर कहे ॥ च०॥२॥ उत्तर सूत्रे गोयम इंद्र भव्य, सम्यक् दृष्टी परत खरो; सुलभबोधी आराधक चर्म, इक संशय प्रभु फेर हरो ॥ च० ॥ ३ ॥ किण अर्थे भव्यादिक कहिये, चरम शरीरी होय रह्यो;चउविह संघभणी हित कामुक, वीर प्रभूजी एम कह्यो ॥ च० ॥ ४ ॥ सुखकामुक पथ्यकामुक वर्ते, कृपादि वांछक संघकेरो; तिण कारण पद बोलही सुलटा, सूत्र पाठ परगट हेरो ॥ च० ॥ ५ ॥साधू श्रावक दो रत्नकी माला, धर्मपक्षमें दोनुं खडा; जैरको पटको कहे श्रावकनें, ते निगुरा महा मूर्ख घटा ॥ च० ॥ ॥६॥ प्रतिमाधारी श्रावक उत्तम, जिणनें निर्दोष आहार दीयो; देणवाळेकूं डूवो वतावे, जिणरो फूटगयो हीयो

॥ च० ॥ ७ ॥ चउव्विह संघनी वंदगी करतां, उत्तम फल सब जीव लहे; भगवतीसूत्रमें परगट देखो; रामचंद्र तो एम कहे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ सिद्धचक्र पद वंदो रे भविकां ॥ ए देशी ॥

क्यूं दया दान उथापो रे कुमति, क्यूं दया दान उथापो ॥टेर॥ प्रतिमाधारी श्राद्ध साधू सरिखो, दोष बयालीस टाळे; तिण उत्तमनें वैरावत डूबे, क्यूं बोलो झूठ पंपाळ रे ॥ कु० ॥ क्यूं० ॥ १ ॥ कौनसे सूत्रे पाठ दिखाडो, जदी प्रतीत ज आवै; आगम पैंताळीसें पाठ न लाधै, जो माथो फोड मर जावै रे ॥ कु० क्यूं० ॥ २ ॥ प्रतिमाधारीकूं दीसे एकांतपापं, तो दूजारो स्यूं केणो; इम सुणतां सब दान उथप्पो, एक ज साधूनें देणो रे ॥ कु० ॥ क्यूं० ॥ ३ ॥ दान दयाकी जडही काटी, जुक्त लगावै झूठी, वीर प्रभूनें चूका बतावै, ज्यांरे हीयारी फूटी रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ४ ॥ साधू श्रावक दोनूं रत्नांरी माला, सूत्रे कही जिनराज; श्रावकनें कहे जैरको वटको, कहता न नकटा लाजे रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ५ ॥ ढीला पासत्था हीणाचारी, कपटी कहिये पूरा; निगुरा अवगुण गावण सूरा, साध नहीं भंडसूरा रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ६ ॥ श्रावक साधू प्रतिमाधारीकूं, दोनूंनें शुद्ध वहिरावै; बारमो व्रत तो चौडे दिखायो, पिण मूरख भूला जावै रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ७ ॥ च्यार संघनै साता दीधां, सनत्कुमार अधिकार; तीजा शतकके पहिले उद्देशे, पिण मूढ न समझे लगार रे ॥कु०

क्यूं० ॥ ८ ॥ जीव वंचायेमें नफ्फो चौडे, गोशालो वीर वंचायो; जब बोलणको रस्तो न लाधो, तब वीरको चूक दिखायो रे ॥ कु० क्यूं० ॥ ९ ॥ हरिणादिक बहु जीव वंचावा, साधू पिण झूठ बोले; प्रथमांगे सुय खंध बीजे अध्ययन तीजे, चौडे पाठ अमोल रे ॥ कु० क्यूं० ॥१०॥ इत्यादिक दान दयाकी चरचा, पिण मूरख उलटी तांणे; मुनि राम कहे हठग्राही म होवो, कीजो सूत्र प्रमांण रे ॥ कु० क्यूं ॥ ११ ॥ इति दान दया थापन कुमति मुख चपेटिका स्वाध्याय संपूर्णा ॥

गीत ॥

१ घोड़ी तो आई थारा देशमें, मारूजी ॥ ए देशी ॥

साधू टाळी दांन सर्वमें, वारूजी, ऐ पाप वतावै मूढ हो, कुम तीड़ा; डूबे संसारमें, तारूजी, सूत्र रहस्य जांणे नहीं ॥ वा० ॥ तांणे आपणी रूढ हो, दुरमतिडा, डूबे संसारमें, तारूजी ॥१॥ अनुकंपा दान न वरजीयो ॥वा०॥ देखोनी आंख उघाड़ हो ॥ कु० ॥ सूत्र सिद्धांते देख लो ॥ वा० ॥ मत घोलो कुहाड़ाफाड़ हो ॥ दु० ॥ २ ॥ केई पुन्यपंथी पुन्य मांनही ॥ वा० ॥ ते पिण खरा है अजांण हो ॥ कु० ॥ अनुकंपा पुन्य कह्यां ना रहै ॥ वा० ॥ समझोनी चतुर सुजांण हो ॥ दु० ॥ ३ ॥ मिश्रपंथी मिश्र भाखही ॥ वा० ॥ नहीं जांणी तत्त्वनी वात हो ॥ कु० ॥ जिनवर वचन उथापिया ॥ वा० ॥ मौन खुलिपां थयो मिथ्यात हो ॥ दु० ॥ ४ ॥ मौन कहै उत्तम मुनि ॥ वा० ॥

देखो सूत्र कृत शाख हो ॥कु०॥ मुनि राम कहै सहू सांभळो ॥ वा० ॥ वीर गया इम भाख हो ॥ दु० ॥५॥ इति॥

गाळ ॥

१ रंग मांणो रे म्हांरा वेलियां ॥ ए देशी ॥

वात सुणो रे एक ज्ञानकी, छोडोनी रूढ अज्ञानकी ॥ वा० ॥टेर॥ शास्त्र प्रमांणे उच्चार करीजै, नहीं कीजै वात कछू मानकी ॥वा०॥१॥ स्याद्वाद मत श्रीजिनकेरो, न्याय सहित परमानकी ॥ वा० ॥२॥ रूढमती तो रूढकों तांनें, मांनें न सीख गुणवानकी ॥ वा० ॥ ३ ॥ केईतरेका घोचा घाले, खबर नहीं जांनें जांनकी ॥ वा० ॥ ४ ॥ उत्सर्ग अपवाद अपेक्षा, खबर ना वचन विधानकी ॥ वा० ॥५॥ उत्सूत्र तो मनसूं थापे, आज्ञा उथापे वर्धमानकी॥वा०॥६॥ जीव बंचायांमें पाप बतावै, वात उठावै दानकी ॥ वा० ॥ ७ ॥ कूड़ा चोज कुलिंगी दिखावै, भूल बतावै भगवानकी ॥ वा० ॥ ८ ॥ जांकी संगत भूल न करिये, जो चाह करो रे निरवानकी ॥ वा० ॥ ९ ॥ मुनि राम कहे छै सूत्रही तारे, कै तारे संगत गुणवानकी ॥ वा० ॥ १० ॥ इति तेरे पंथियांकी चरचा समाप्त ॥

---

५ चरचा कालादिकनी ।

॥ गाहा सम्मत्तिसूत्रम् ॥

कालो १ सहाव २ नियइ ३, पुव्वकयं ४ पुरिस ५कारणे पंच । समवाए संमत्तं, एगंत होई मित्थत्तम् ॥ १ ॥

ढाळ ॥

१ कळकळ करती बोले छै नारी ॥ ए देशी ॥

कालवादी तो कालकों मांनें, काल विना नहीं कोय जी; काल लब्धि पाके जीवा रे, सम्यक्त्वादिक सब होय जी ॥ १ ॥ पांच मांने सो ज्ञानी जगमें, एकांते अज्ञान जी; इसकी व्याख्या छै बहुतेरी, समझो तुमे बुद्धिमान् जी ॥ पां० ॥ २ ॥ काल पक्यां विन सम्यक्त्व नांहीं, कारण सबको काल जी; कार्य होवण हार बणे छै, काल विना नहीं बाल जी ॥ पां० ॥ ३ ॥ शिष्य पूछे छै काले नीपजे, क्यों अभव्य सम्यक्त्व नाह जी; बांझ नारी नहीं होय प्रसूता, इम समझो बोल अथाह जी ॥ पां ॥ ४ ॥ दूजो स्वभाव गुरु इम बोले, अभव्य भव्य स्वभावजी; बांझ स्वभावे पुत्र न होवे, जलमें तिरे छै नाव जी ॥ पां० ॥ ५ ॥ शिष्य कहे जो होय स्वभावे, सम्यक्ति होवे सब भव्य जी; बांझ विना नहीं सब त्रिय जणती, जांको उत्तर कहो अव्वजी ॥ पां० ॥ ६ ॥ तीजो नियति कारण चेला, देव गुरु धर्म योग जी; भव्य सम्यक्त्व लहे भावी कारण, पुत्र न होय संयोग जी ॥ पां० ॥ ७ ॥ शिष्य पूछे भावी जो कारण, देव गुरु धर्म होय जी; बहू भव्य तौ रस्ते न आवे, नहीं सके मिथ्यात्व खोयजी ॥ पां० ॥ ८ ॥ गुरु कहे पूर्व कृत छै चौथो, सात कर्मको जांणजी; दो से त्रीस कोडा कोडी सागर, स्थिति कही जग भाणजी ॥ पां० ॥ ९ ॥ यथा प्रवृत्ति करण आयो थो, अपूर्व करण नहीं आय जी; जिणसूं समकित भव्य न पांमें, किम धन्नो शिव नहीं जाय जी ॥ पां० ॥

॥ १० ॥ पुरुषाकार पंचमो चेला, पूर्ण थये निर्वाण जी; मुनि राम कहे पंच मांनें सो ज्ञानी, मूढ एकांत वखांण जी ॥ पां० ॥ ११ ॥ इति कालादिकनी चरचा समाप्त ॥

---

६ चरचा षट् मतनी–गीत ॥

१ देशी केरवानी ॥

चल जा कदर नहीं जांनी, कदर नहीं जांनी, धरलेनी ज्ञान निशांन ॥ च० ॥टेर॥ मत मिले नहीं एकसें रे॥मि० सब देखोनी वेद पुरांन ॥ च० ॥ १ ॥ शैवी तौ विष्णु मांनें नहीं रे ॥ वि० ॥ वैष्णव करैन शंभू वखांन ॥ च० ॥ ॥ २ ॥ शाक्त विष्णु शिव ना गिने रे ॥ वि० ॥ देखोनी खांचातांन ॥ ३ ॥ नैयायिक कर्ता मांनहीं रे ॥क०॥ वेद-पाठी न करत प्रमांन ॥ च० ॥४॥ मुनि राम कहे स्याद्वा-दकूं रे ॥ क० ॥ अंगी करो ज्यूं होय कल्यांन ॥ च० ॥५॥ इति षट् मतकी चरचा समाप्त ॥

७ चरचा मंदिरपंथीनी–सवैयो ॥

झट ही प्रवीन नर पटके बनाये कीर, ताही कीर देख कर विल्ली हू न मारे है । कागजके कोर कोर ठौर ठौर नाना रंगे, ताही फूल देख दूर मधुकर छारे है ॥ चित्र-हूका चीता देख श्वान तासें डरे नांह, वनावट ईंडा ता-सें पंछीहू न पारे है । असल औ नकलकों जांनें राम पशू पंछी, मूढ नर जांनें नहीं नकल कैसें तारे है ॥ १ ॥

लावणी ॥

जीव हणीनें धर्म प्ररूपे, जिसका मुख होसी काला; बगवत्‌वाणी सुनिये प्रांनी, हिंसा धर्मका कर टाला ॥ जी० ॥ १ ॥ जीव हणे अरू हणवावे, हणतेकूं जांणे भल्ला; जिसकूं साधू मूरख मांने, समझू नहीं भींटे पल्ला ॥ जी० ॥ २ ॥ श्रावक सात क्षेत्र धन खरचें, ऐसी झूठ कहे गल्लां, सूत्रकेरी शाख बतावै, खत प्रमांणे नहीं नकलां ॥ जी० ॥ ३ ॥ सात क्षेत्र धनकूं खरचो, भगवत इम नहीं फुरमावै; भृष्टाचारी परिग्रहाधारी, भोळा नरनें भरमावे ॥ जी० ॥ ४ ॥ कापडी ज्यूंयने राखे छड़िया, वळे ज राखे चपरासा; उण भृष्टीको संग न कीजै, संगतसें दुर्गति वासा ॥ जी० ॥ ५ ॥ रंडींकूं राखे पाखंडी, एकांते रेवे भेला; ऊंचा जांणेका हुकम नहीं है, उनकूं साधू कहे गेला ॥ जी० ॥ ६ ॥ साधू शुचि कुसाग्र जितनी, वायूकूं नहीं हणवावै; साधू नहीं वै भ्रष्टी कहिये, नोबत द्वारे बजवावै ॥ जी० ॥ ७ ॥ गृहस्थी साथे जल मंगवावै, उष्णोदक कही करवावै; दुर्गतिमांहे रुपसी झंडा, श्रावक पिण साथे जावै ॥ जी० ॥ ८ ॥ कनक कामिनीसे नहीं न्यारा, राम कहे सहु जांण लियो; फूटी नाव पर बैठे सूरख, जिणरो फूद गयो हीयो ॥ जी० ॥ ९ ॥ इति मंदिर पंथियांकी चरचा ॥

चरचा निश्चय व्यवहारनी—गाळ ॥

१ पांच म्होर रोकड़ लेलो ॥ ए देशी ॥

एही मत सारां सिरदार, मिटे न किणसूं होवनहार;

॥ टेर ॥ उत्थान कर्म बल वीर्य पुरपार्थ, नाहक उद्यम करे नर नार ॥ मि० ॥ १ ॥ पुरुषारथ करके केई प्रांनी, उलटी लेवे गलामें जाल ॥ मि० ॥ २ ॥ उद्यम कवि कीधो थो सर्प, मूषक भक्खके निकस्यो बार ॥ मि० ॥ ३ ॥ पुरुषाकार बलात्प्रयत्ने, भवितव्यनें कुंण धोवणवार ॥ मि० ॥ ४ ॥ नियति बलात् तें अवश्यही होवे, शुभ अशुभ अरु नानाकार ॥ मि० ॥ ५ ॥ महत्प्रयत्ने द्वारका दाहन, मेट न सक्यो कृष्ण मुरार ॥ मि० ॥ ६ ॥ कुंडरीक तपतो सहस वर्षको, खोय दीयो एक छिनक मझार ॥ मि० ॥ ७ ॥ मरुदेव्या कवि कीधो थो उद्यम, नर भव लही लह्यौ केवल सार ॥ मि० ॥ ८ ॥ नाहक उद्यम करे केई मूरख, अणहोणी कुंण करे रे जूंझार ॥ मि० ॥ ९ ॥ जोत्तसी अपनो इल्म दे आयो, लायो न सोवन सिद्धि प्रकार ॥ मि० ॥ १० ॥ रामचंद्र कहे एकांत ए मत, निश्चै नहीं छै तारणकार ॥ मि० ॥ ११ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

सब शास्त्रनको एही सार, निश्चैसूं मोटो व्यवहार ॥ टेर ॥ व्यवहार निश्चै गर्भित नय साते, प्रथम व्यवहार को कह्यो उच्चार ॥ नि० ॥ व्यवहार विना नहीं काज होत है, देखोनी तुमे आंख उघार ॥ नि० ॥ १ ॥ विद्या धन अरु गमन क्रियादि, उद्यम विना किम लहे फलसार ॥ नि० ॥ सर्प उद्यम भक्षनको कीधो, विन उद्यम किण कीधूं पार ॥ नि० ॥ २ ॥ कुंडरीक तप करत फल लगियो, नरक गयो व्यवहार बिगाड ॥ नि० ॥ मरुदेव्या पिण भावना भावी, मुक्त हुवा छै कर्म निवार ॥ नि० ॥ ३ ॥ सिद्धि न लायो इल्म दे आयो, पूरब

उद्यम फल्यो सहकार ॥ नि० ॥ तुं बोले छै लिखियो होसी, तो किम मांड रह्यो व्योपार ॥ नि० ॥ ४ ॥ ताला कूंठा क्यूं भूतल गाडे, धन आडा क्यूं जड़े किवाड़ ॥ नि० ॥ निश्चै लिखियो कहो कित जासी, थैल्यां धरदे घरके बार ॥ नि० ॥ ५ ॥ बादर करके मेघही वर्षे, ज्यूं निश्चै पिण उद्यमके लार ॥ नि० ॥ नियत बलात् पिण व्यवहार अग्रे, जिसमें सारा लेवो विचार ॥ नि० निकांचित रस मंद होत है, जो साचो उद्यम करे दिल धार॥नि०॥ निकांचित कर्म टले एक छिनमें, क्षपण श्रेणि जब चढे नरनार ॥ नि० ॥ ७ ॥ निश्चै लिखी जब मुक्ति होयगा, करे कुंण करणी विविध प्रकार॥नि०॥ एक निश्चै मांनें कोई मूरख, उलट पुलट सब होवे संसार ॥ नि० ॥ ॥ ८ ॥ सात प्रकारे आयु घटत है, जोवो ठाणांगसूत्र मझार ॥ नि०॥ गाय भैंसको नहिं घर धींणे, दुग्ध दहि घृत खावै मंजार ॥ नि० ॥९॥ वीर प्रभूजी ओपद लीधो, व्यवहारनें रखियो मुखत्यार ॥ नि० ॥ व्यवहार निश्चै दोय जैनी मांनें, स्थान प्रधान कथंचित् धार ॥नि०॥१०॥ वचन सापेक्षिक सब ही ठौरे, गौण मुख्यको करो निरधार ॥ नि० ॥ राम मुनि कहे गुरु गम धारो, नय प्रमांणे करोनी उचार ॥ नि० ॥ ११ ॥ इति व्यवहारस्य प्रधानत्व ख्यापनम् ॥ इति निश्चय व्यवहारनी चरचा समाप्ता ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे-
चरचानामकं अष्टमं प्रकरणम् ॥ ८ ॥

नेमनाथ-चरित्र ॥

१ सिलोको ॥

सद्गुरु कृपा करजो जी हमसें, नित नित पाये लागुं जी तमसें; कैसूं सिलोको नेमजीकेरो, सुणतांई होवे काज भलेरो; नगरी द्वारामती कृष्ण वसाई, जादवांकेरी चढती पुन्याई; सोनेकी नगरी अद्भुत दीपे, क्षिणमें तो वेंरी जादव जीपे ॥१॥ एक दिवस श्रीनेम कुमारो, आये शस्त्र शालामें साथीड़ा लारो; शंख वजवायो धनुष्य चढायो, सुणतांई शब्द कृष्ण थररायो; ओ राज लेवे जो नारी परणाउं, परणे नहीं परणे निश्चै करवाउं; राजिमतीनी कीधी सगाई, छपने कोड़सूं जांन वणाई ॥ २ ॥ हाथी पर शोभे नेम जिणंदो, अधिका तो शोभे तारांमें चंदो; नर नारीका मिलिया बहु वृंदो, घर घरमें होवे अधिक आनंदो; पशुवांसूं वाडो दीठो जी भरियो, छोडी पशुवांनें उपगार करियो; तोरणसूं पाछा प्रभुजी वळिया, राजिमतीरे आंसू जी ढळिया ॥ ३ ॥ सखियां थे जावो नेम मनावो, अध परणी छोड्यां शोभा नहीं पावो; सखियां तो बोले नेमजी काळा, दूजा थे परणो रूप रसाळा; राजिमती बोली सखियां थे गैली, इण भवमें म्हारे प्रभुजी वेली; संजम लेस्यां भवोदधि तरस्यां, निर्मल भावांसूं किरिया जी करस्यां ॥ ४ ॥ सातसो सखियां थई छै लारी, मारगमें वर्षा थई छै भारी; गुफा मध्य आई थई उघाड़ी, रहनेमि मुनिकों दिया सुधारी; प्रभुजी पासे संजम धारी, प्रभुजी पेली मुक्ति पधारी; समत उगणीसे इगतीसे साल, मेनसरमें जोड्यो शोभे

जीकाल ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे छे जेठ महीनो, वद पक्ष और एकादशी दीनो; सुणे सुणावे जे नर नारी; ज्यांरोतो होवे खेवो जी पारी ॥ ६ ॥ इति ॥

होरी ॥

१ मत ताको नार विरानी ॥ ए देशी ॥

सूरज वारमें सूरज पूजूं, जो मिले नेम दुलारी; जो नहीं नेम मिले इण भवमें, तो नहीं पूजूं दूजीवारी; स्यूं करे कहोनी पुजारी; सुणिये सखि वात हमारी, पिउ मिले सो सुधवारी ॥ सु० ॥ १ ॥ चंद्र वारमें चंद्रमुखि कहे, मेळो मुज भरतारी; थारी सेवा निश दिन करसुं, जो आवे नेम कुमारी ॥ सु० ॥ २ ॥ मंगल वारमें मंगल गासां, जो पूगे मन आसा री; नहींतर जंगल मंगल गासां, सुणसी बहु नर नारी; कहे इम राजुल हारी ॥ सु० ॥ ३ ॥ बुद्ध वार सखि बुध एक उपजे, जो आवे दिल तुम्हारी; अरजी लिख भेजां साहबकूं, विचमें रक्खो मुरारी; मिटे सखि वात मोसारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ गुरु वार सुर गुरु खरो जो, आवे प्राण आधारी; हिल मिल वात करूं दिल खोली, तेल चढी जिम छारी; सीखी ए रीत कठारी ॥ सु० ॥ ५ ॥ शुक्र वारमें वात करत हीं, संकत दुनिया सारी; म्हारी सार करे पिउ म्हारो, तो मानूं तुज उपगारी; जपूंला माला थारी ॥ सु० ॥ ६ ॥ थावर वारमें मन थिर कीयूं, धन धन राजुल नारी; रामचंद्र कहे नेम जिनेंदसुं, पेली मोक्ष पधारी; चळी रह नेम सूधारी ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥

गीत ॥

१ पनजी थांरो माथारो डुंमालो फूलांहंदो भारो जी ॥ ए देशी ॥

जिनजी थांरे दर्शनरी बलिहारी, वारी जाऊं थांरी जी, जिनवरजी वारी जाऊं थांरी जी प्रभू म्हांरा ॥ जि०॥ थे तो सेवादेजीरा नंदा, समुद्रविजय कुलचंदा जी ॥जि० १ ॥ जि० ॥ पशुवनकी करुणा कीधी, दीक्षा शुद्ध लीधी जी ॥ जि० ॥ जिनजी थांने राजीमति वंदन आवे, रह नेमि समजावे जी ॥ जि० र० प्र० ॥ २ ॥ जिनजी दोनूं शुद्ध मन कीधी किरिया, भव सागरथी तिरियाजी ॥ जि० भ० प्र० ॥ जिनजी थे तो भव्य जीवांनें ताऱ्या, आतम कारज साऱ्या जी ॥ जि० आ० प्र० ॥ ३ ॥ जिनजी थे तो राजीमतिनें तारी, अब छै म्हांरी वारी जी ॥ जि० ॥ जिनजी दीजो भव भव सेवा तोरी, मुनि राम कहे कर जोरी ॥ जि० मु० प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ देखो मोरी सहियां हे, राजा तखतसिंघजीरी गिणगोर ॥ ए देशी ॥

देखो मोरी सहियां हे, राजा समुद्रविजयजीरो नंद; देखो मोरी सहियां हे, बाई राजमतीजीरो कंत ॥ टेर ॥ सखि सोभे जादव मुख जिम चंद, देखो रूप सुरतरुनो जिम कंद ॥ दे० ॥ १ ॥ देखे थांनें नर नारीका वृंद, निरखे थांनें सोहम ईसाणेंद ॥ दे० ॥ २ ॥ प्रभुजी सोभे जिम तारांमें चंद, बाजू सोभे मुकुंद नें गोविंद ॥ दे० ॥ ३ ॥ तोरण देखे पशुवनकेरा बंध. मेल्या प्रभु सकल

जीवारा फंद ॥ दे० ॥ ४ ॥ मुनि राम वंदे धरनें आनंद, करुणानिधि तारो भव समंद ॥ दे० ॥ ५ ॥ इति ॥

३वांस मंगावो हो वगड़ीका च्यार गाघर घूंमेलो ॥ ए देशी ॥

आ नहीं जांणे हो जादवकी जांन, जादव रूसेलो; मैं नहीं जाण्या हो जांनी नादांन॥जा०॥नहीं जांणी हो क्यूं तोडी तांन ॥ जा० ॥ नहीं जाणी हो कीयो कूडो सामांन ॥ जा० ॥ १ ॥ जांनी वणिया हो गोपाल मुकुंद ॥ जा०॥ देखण आया हो नर सुरका वृंद ॥ जा० ॥ नहीं जांणी हो कूडो रचियो फंद ॥ जा० ॥ नहीं जांणी हो फिरे नेम जिणंद ॥ जा० ॥ २ ॥ जांन आई हो तोरणकी पोल ॥ जा० ॥ नहीं पाई हो जादव मन तोल ॥ जा० ॥ घर जावे हो क्यूं करणी ए रोळ ॥ जा० ॥ नहीं आवे हो पाछी एह छोळ ॥ जा० ॥ ३ ॥ ऐ कुंण कैसी हो जादवनें जाय ॥ जा० ॥ ऐ कुंण दीधा हो जादव भरमाय ॥ जा० ॥ म्हे लेसां हो संजम सुखदाय ॥ जा० ॥ नहीं रही हो म्हांरे तिल भर चाय ॥ जा० ॥ ४ ॥ सती लीधो हो संयम शुद्ध धार ॥ जा० ॥ सब सखियां हो थई जिणके लार ॥ जा० ॥मुनि राम हो वंदे वारंवार ॥ जा० ॥ धन्य प्रभुजी हो धन राजुल नार ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ बामणका नंद लाला, तुझे पिलाऊं रंग भर प्याला ॥ ए देशी ॥

जादवका नेमि लाला, मुझे पिलावो अनुभव प्याला; अनुभव पर झुकतो, मुक्ति पथ रमतो, लागी ताळी; तें

प्रीतम आंटी घाली; आंटीको नाम तो खोलो ख्याली; राजीमति वंदन चाली ॥ टेर ॥ जादवका नेमि लाला, रेखा हुवे तो धोय लूं ॥ जा० ॥ कर्म न धोया जाय ॥ जा० मु० जा० ॥ और रूठो तो मनाय लूं ॥ जा० ॥ पिण प्रभू न रूठो मनाय ॥जा०मु०अ०मु०ला०तें०आं०रा०॥१॥ जादवका नेमि लाला, गैणों तूटो तो घड़ाय लूं ॥ जा०॥ प्रीत न जोरे जुड़ाय ॥ जा० मु० जा० ॥ मन मोती तौ ना जुड़े ॥ जा० ॥ लाख जो करिये उपाय ॥ जा० मु० अ० मु० ला० तें० आं० रा० ॥ २ ॥ जादवका नेमि लाला, थे तो छोडी मुजभणी ॥ जा० ॥ मैं छोड्यो संसार ॥ जा० मु० जा० ॥ पंच मुष्टी लोचन कीधो ॥ जा० ॥ लीधो संयम भार ॥ जा० मु० अ० मु० ला० तें० आं० रा० ॥ ३ ॥ जादवका नेमि लाला वर्षा वरसी माणे ॥ जा० ॥ श्री नेम वंदननें जाय ॥ जा० मु० जा० ॥ रहनेमिनें तारियो ॥ जा० ॥ मुनि राम वंदे तोरा पाय॥जा० मु० अ० मु० ला० तें० आं० रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ बांमणका आठ कूवा नव बावड़ी ॥ ए देशी ॥

जादवका आठ भवांरी पीतड़ी, जादवका नवमे दी छिटकाय, जिनरायाजी, एकरसा घर आवजो रे ॥जा०॥ तेल चढी किम छोडीये ॥ जा० ॥ किण दीया थांनुं भरमाय ॥ जि० ॥ १ ॥ जा० ॥ इण भव थांसूं पीतड़ी ॥ जा० ॥ बांधी मैं एकतार ॥ जि० ॥ जा० ॥ मन कर अवर वंछूं नहीं ॥ जा० ॥ इण भव तूं भरतार ॥ जि० ॥ २ ॥ जा० ॥ सखी सहेली भेळी थई ॥ जा० ॥ कैसी मुं मचकोड़ ॥ जि० ॥ जा० ॥ राजुल तजी किम नेमजी

॥ जा० ॥ होसी कांई एक खोड़ ॥ जिं० ॥ ३ ॥ जा० ॥ कतवारीरा सूत ज्यूं ॥ जा० ॥ ज्यूं तूटे ज्यूं जोड़ ॥ जि० ॥ जा० ॥ विगर गुन्हे किम छोडिये ॥जा०॥ जूनी ममत मत तोड ॥जि०॥४॥जा०॥ एक पखी स्यो पीतड़ी ॥जा०॥ एक स्यो पूतमें पूत ॥ जि० ॥ जा० ॥ एक स्यो आंखमें आंखड़ी ॥ जा० ॥ इम मन कीधो थिरभूत ॥ जि० ॥५॥ जा०॥ लोच कीयो संवेगसूं रे ॥जा०॥ लीधो संयम भार ॥ जि० ॥ जा० ॥ रहनेमी प्रतिबोधनें ॥ जा० ॥ पहुंती गढ गिरनार ॥जि०॥६॥जा०॥ पिउ पेली गई मोखमें ॥ जा०॥ धन्य धन्य राजुल नार ॥ जि० ॥ जा० ॥ रामचंद्र आनंदसूं ॥ जा० ॥ वंदे वारंवार ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

६ हां रे लाला भाभी कहे सुंण सुंदरा रे, हां रे म्हारे आंगणिये होद खिणाय रे, हूं तो घर बैठी घड़ला भरूं रे; हां रे म्हारे पिण घटजाय रे वलाय, काजळियो कड़वा तेलको रे ॥ ए देशी ॥

हां रे लाला सखी कहे सुंण सांमनी रे, हां रे म्हारे नेमजी २, न आया कछु दाय रे; थानें और परणावसां रे, हां रे इण कपटी २, नें झुरे रे वलाय रे; सांवारियो कपटी नीसर्यो रे, हां रे थांरा भाई २, सहु दगादार रे; और काळी सूरत नेमकी रे ॥ सां० १ ॥ हां रे लाला राजीमति सती इम कहे रे; हां रे म्हारे इण भव २, नेमि भरतार रे; हूं और वर चाहूं नहीं रे, हां रे थे तो सखियां२, मूढ गिवाँर रे; सांवारियो हां रे सांवारियो मोरे मन वस्यो रे, हां रे जांरी सूरत देखण चाय रे; वांरी सूरतरो नहीं आदमी रे ॥ सां० ॥ २ ॥ हांरे लाला सखी

कहे आपां तेहनो रे, हांरे कांई गुन हो २, नहीं रे कराय रे; क्यूं गये तोरन आयने रे, हांरे म्हांरे मनको २, भर्म न जाय रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ हां रे लाला राजीमति पाछो कहे रे, हांरे सखी मत रखो २, भर्म लगार रे; सती संयम लीयो कर्म तोड़िया रे, हांरे मुनि राम २, वंदे वारंवार रे; सांवरियो मोरे मन वस्यो रे ॥ ४ ॥ इति ॥

७ गूजर आठ कूवा नव बावड़ी, हे गू० सोले से पणिहार, गूजर हे हवादार गूजर, म्हांरो मैहलांरो मेवासी, छैलो तैं मोह्यो; म्हांरो मैहलांरो कमधजियो, ढोलो तैं मोह्यो ॥ ए देशी

सखियां आठ भवांरी पीतड़ी हे ॥ स० ॥ नवमो भव थयो एह, नेमजी हे दगादार नेमजी, म्हांरो प्राणांरो पियारो, साहिब किम रूठो है; म्हांरो नव भवको प्यारो, किम रूठो॥ टेर ॥स०॥ वसु भवमें नहीं आंतरो हे॥स०॥ नवमे किम दीयो छेह ॥ ने० ॥ १ ॥ स० ॥ जाती सुमरन मुझ थयो हे ॥ स० ॥ जांणूं पूरब वात ॥ ने० स० ॥ मुझ मुख देखी जीमता हे ॥ स० ॥ रहता साथका साथ ॥ ने०॥२॥ स०॥ दोस देऊं किम औरनें हे ॥स०॥ म्हां रे पुन्नांरी वात ॥ ने०स० ॥ रतनाकर रतने भर्‍यो हे ॥स०॥ मींडक लागे हाथ ॥ ने० ॥३॥ स० ॥ नेमजी छोडी विन कारणे हे ॥ स० ॥ हूं तो रक्खूं ओही रंग ॥ ने० स० ॥ राम वंदे कर जोड़नें ॥ स० ॥ कीयो मुगतको संग ॥नेमजी हे दगादार, नेमजी म्हांरे प्राणांरो पीयारो साहिब; किम रूठो हे, म्हांरे नव भव० ॥ ४ ॥ इति ॥

८ देशी गूजर तथा अलवेल्यानो ॥

सरसत सारद विनवूं हे, गणधर लागूं पाय हे सहीहर, म्हे श्रीनेमजीनें वांदसांरे लाल; तोरण आय फिर क्यूं गये हे, दीना लोक हसाय हे सहीहर ॥ म्हे० ॥ १ ॥ वैर निकाल्यो कोई भवतणो रे लाल, जिणरी खबर न काय हे ॥ स० म्हे० ॥ २ ॥ वडा कुलके आदमी हे, करे विचारी काम हे ॥ स० ॥ विगर गुने मुजनें तजीरे लाल, क्यूं कीवी मुज वदनाम हे ॥ स० ॥ म्हे० ॥ ३ ॥ मेरा मनमें ए वसी हे, मैं क्यूं लीयो जग अवतार हे ॥ स० ॥ कलंक दीयो क्यूं मोभणी रे लाल, प्रभु गयो गढ गिरनार हे ॥ स० म्हे० ॥ ४ ॥ लेऊं फकीरी नेम नामकी हे, नां रहूं घरके मांय हे ॥ स० ॥ वन जाऊं व्रत लेयनें रे लाल, अब नहीं रखूं किसीकी चाय हे ॥ स० ॥ म्हे० ॥ ५ ॥ सखी कहे वाई सुणो हे, म्है पिण तजसां आथ हे ॥ स० ॥ मुनि राम कहे धन जेहनें रे लाल, करे धर्मको साथ हे ॥ स० म्हे० ॥ श्रीनेमजीनें वांदसां लाल, करसां सफल जमार हे ॥ स० म्हे० क० म्हे० ॥ ६ ॥ इति ॥

९ नैंणां छाई म्हांरा राज भांगड़ली, घुळ रही म्हांरा राज भांगड़ली, एक रुपैकी ढोला भांग मंगाऊं ॥ ए देशी ॥

तुम सुनो महाराज वीनतड़ी, म्हांरी मांनो महाराज वीनतड़ी, अवधारो म्हांरा राज वीनतड़ी, गिरनारी न पधारो म्हांरा राज वीनतडी, पाछा पधारो म्हांरा राज वीनतडी ॥ टेर ॥ तोरनथी क्यूं पाछा पधारे २, माखी

नहीं मुळको मारे, ॥ म्हा० ॥ मुझनें कीवी प्रभु आश निरासी, दूजूं सखी करै मोरी हासी ॥ म्हा० ॥ १ ॥इसो गुनो तो जांणां म्हे नहीं कीनो, क्यूं पशुवन शिर दोष दीनो ॥ म्हा० ॥ तोरन लग किम निकमा आये, क्यूं जग लोक हसाये ॥ म्हा० ॥ २ ॥ सखियां कहै वाई आंसूं क्यूं ढारो, अब तुम छोडोनी नेमको लारो ॥ म्हा० ॥ कपटी नरका क्या विसवासा, छिन छोड चले न गिने वनवासा ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ नव भवकेरी देखो प्रीत क्यूं तोडी, एक भली सो विन परणी छोडी ॥ म्हा० ॥ जनम निभाऊ रूपको साऊ २, वनडो आछेसें आछो वताऊं ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ राजीमती कहै सखी दूजो न वरसूं, प्रभुके लार लारो करसूं ॥ म्हा० ॥ संयम लेसां भव जल तरसां, प्रभुके लार विचरसां ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ राजीमती सती मुक्ति पधारी, मुनि राम कहे जाऊं वलिहारी ॥ म्हा० ॥ इण रीते धन्य प्रीत निभावे, सो क्यूं नहीं मुक्त सिधावे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति ॥

१० आवोजी मुसाफर, बैठोजी मुसाफर, को थांरे मनकी वातां है; सांवरी सूरत पर कांई कांई वारूं, जो वारूं सोई थोरा है; हीरा वारूं जुहारा वारूं, और मोतियनकी माला है ॥ ए देशी ॥

तुमे जावोजी सहेली, लावो जी जादवकूं, कहो जांके मनकी वातां है; जादव जांन तो खूब लजाई, मनमां हे राता माता है; सांवरियाजीनें देऊं उलंभा, ज्यूं देऊं ज्यूंई थोरा है; ओलंभा दे दे हूं तो हारी, प्रभुजी थये

कठोरा है ॥ टेर ॥ एक अचंभो आवे मोरी सजनी, क्यूं ए जांन वणाई है; लाजन आई फिर क्यूं भागे, नीचा जोवे जांके भाई है॥सां०॥२॥ थे तो मोरी वातां सुंणीजो प्रभु लीधा संजम भारा है; हूं पिण संजम धारूं मोरी सजनी, कहो स्यूं तोरा विचारा है ॥ सां० ॥ ३ ॥ सातसे सखियां थई तिण संगे, रहनेमी प्रतिबोध्या है; राम मुनी तो सीस नमावे, सती गई शिव जोग निरोध्या है ॥ सां० ॥ ४ ॥ इति ॥

११ देशी कुंजेरी ॥

लावो लावो नेमजी मनाय रे, हे म्हांरी सखी सहेली ॥ ला० ॥ तोरणिये आयोडो सायवो किम गयो रे, बुलवाय दे बुलवाय देरे; तेरा पग पूजूं रे बुलवाय दे; वावारे नेम प्रभु म्हांरो, हां है यादूपति म्हांरो, सांवरो रूठ चल्यो रे, किण काज चल्यो रे, वावारे ॥ टेर ॥ वांके म्हारे अष्ट भवरी प्रीतरे ॥ हे म्हां० वारे० ॥ नवमां भवमां छेह दीयो रे, नहीं जांणूं नहीं जांणूं, आंटो किम पड्यो रे; नहीं जांणूं वावारे ॥ ने० ॥ २ ॥ सोहे सोहे नेमजीरो रूप रे ॥ हे म्हां० सोहे० ॥ इण रे जोड़े तो जुगमें ना जुड़े रे; सारा जगमें,सारा जगमें, जोयो ना जुड़े रे, सारा जगमें ॥ वावारे ॥ ने० ॥३ ॥ आई आई चौमासारी रैण रे ॥ हे म्हा० आई० ॥ कंत विना कैसी कामनी रे; नहीं रैसूं नहीं रैसूं रे, न संजम लेवसूं रे; नहीं रैसूं वावारे ॥ ने० ॥ ४ ॥ लीधो लीधो संजम भार रे ॥ हे म्हा० ली० ॥ केवल लही नें शिव गई रे, थानें वंदे थानें वंदे रामचंद्र मुनि रे, थानें वंदे वावारे ॥ ने० ॥ ५ ॥इति ॥

१२ उदिया पुरसूं वीजड़लो मंगाय, हो म्हांरी जोड़ी राहो ढोलाजी, आंणने रे बुहावो आ कमधजियांरी कोटड़ी रे म्हांरा राज ॥ ए देशी ॥

हे द्वारा पुरीसूं जांनड़ली वणाय, हे म्हांरी जोड़ीरी हो सहियां; जांनी रे माधवसा आ कुमी नहीं किण वातरी रे म्हारा राज; प्रभुजी रे पासे, जलदी कुंण जाय, हे म्हांरी मन गमती हे सहियां, लावे दिलरी रे वातड़ली, आ आवे पत्री हाथरी रे म्हांरा राज ॥ १ ॥ हे जोसीड़ानें वेग बुलाय ॥ हे० ॥ टीपणियो रे फड़ावो, ओ खोटो मोरत क्यूं दीयो रे म्हांरा राज; जोसीड़ानें कैदड़ली कराय ॥ हे० ॥ भूंडो रे जोसीड़ो ओ जन्म म्हारो विगाड़ियो रे ॥ म्हा० २ ॥ पशुवांसूं वाड़ो जी भराय ॥ हे० ॥ पंथमें रे कुंण राख्या, भाख्या कुंण, ए मारसी रे म्हांरा राज; मिनखरी दया नहीं कांय ॥ हे०॥ परणीनें रे छिटकावे तो पावे शोभ अपारसी रे ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ नहीं तो म्हारो कछु प्रभु जोर ॥ हे० ॥ मुक्ति रे जावणसूं ओ दिल अब म्हारो ऊलस्यो रे ॥ म्हां०॥ मुनि राम वंदे कर जोर ॥ हे० ॥ प्रभुनारे गुणगातां, सीस नमावतां, दिल वस्यो रे म्हांरा राज ॥ ४ ॥ इति ॥

१३ चतुर गोरीनें माछर खायो जी राज ॥ ए देशी ॥

सहियां कहे राजुल सुणो, बाईजी, काळो नेम कुमार, बाईजी, काळो मोरा नेम कुमार, हठीला नेमजीनें पाछा लावो जी राज; वैरागी नेमजीनें जाय मनावो जी राज ॥ दाय न आयो मांहरे जी बाईजी, दूजो वरो भरतार, बाईजी मोरा ॥ दजो० ह० ॥ १ ॥ काळो का-

लो कांई करो हे सहियां, थे तो मूढ गिवाँर; सहेल्यां मोरी थे तो ॥ ह० ॥ अनंत रूप रळियामणो हे सहियां, तीन भवनमें सार; सहेल्यां मोरी ॥ ती० ॥ ह० ॥ २ ॥ जो परणूं तो नेमनें हे सहियां, नहीं तो अकन कँवार ॥ स० नही० ह० ॥ लो क्यूं आया ने क्यूं गया हे सहियां, इणरो कवन विचार सहियां ॥ इ० ह० ॥ ३ ॥ वार वार थे स्यूं कवो हो, बाईजी, पूछ कियो निरधार; बाईजी मोरा ॥ पू० ह ॥ वरसीदान देई करी हो, बाईजी; लेसी संजम भार ॥ बा० ले० ह० ॥ ४ ॥ नेम प्रभु संजम लीयो हे सहियां, सुणियो राजुल नार सहियां, ॥ सु० ह० ॥ सातसे सखी संग लेईनें हे सहियां, पौंती गढ गिरनार सहियां ॥ पौं० ह० ॥ ५ ॥ रहनेमी प्रतिबोधने हे सहियां, सारथा आतम काज सहियां ॥ सा० ॥ रामचंद्र मुनिवर कहे हे सहियां, पांम्यो त्रिभुवन राज सहियां ॥ पां०ह० ॥ ६ ॥

१४ देशी पन्नारी ॥

श्री नेम प्रभूजी, धोको एक मारे जी अपार, अरजी सुंण लीजै कांई रे दिल आई, हे जगत हसाई क्यूं करी रे, म्हांरा राज ॥ टेर ॥ गुणवंती राजुल, धोको मति राखो जी लिगार, म्हांने आंण गळारी मुगती रे जावासूं, मनसा दृढता म्है धरी रे ॥ म्हां० ॥ १ ॥ छेवा मुक्ति धूतारी नार ॥ अ० ॥ राखेला विलमाई, सो आऊं देखण तेहनें रे ॥ म्हां० गु० ॥ देखण आवो जी म्हांरी लार ॥ थानें० ॥ दोनूं रे देखस्यां, हे हिलमिल आपां जेहनें रे, म्हांरा राज ॥ २ ॥ श्रीने० ॥ थेईज चाल्या जी म्हांने छोड ॥ अ० ॥ म्हे पिण जी आवां छां, हे कां छां मन साचले रे ॥ म्हां० गु० ॥ राग द्वेष बंध तोड ॥ थां०॥

पीतडली रे निभास्यो, तो रेस्यो नहीं पाछले रे ॥ म्हां० ॥ ३ ॥ श्रीने० ॥ तारी तारी राजुल नार ॥ हे अ० ॥ जादवकुल रे उधारयौ, सारयौ कारज आपरो रे ॥ म्हां० गु० ॥ राम वंदे जी वारंवार ॥ हे थां० ॥ गैलो रे छुडावो, जलदी पैंडो पापरो रे म्हां० ॥ ४ ॥ इति ॥

१५ पाळ चढंतां जी राज, रावजी म्हांरो भरियो माट उठाय जी हो मेड़तिया जी राज, हो लशकरिया जी राज, नींबू थे लाज्यो राज, रस भरियो ॥ ए देशी ॥

प्रभु थे सुणजो जी राज, वीनती म्हारा मनका भर्म मिटाय, जीहो सांवरिया जी हो राज, हो के सरिया जी राज, पत्र थे दीज्यो राज, रंग भऱ्यो ॥ टेर ॥ चूकथे वतावोजी राज वेगसूं, नहीं तो जीया बहु घवराय जीहो सां० ॥ १ ॥ जीहो वाईजी राज क्यूं घवरावो जी राज, वाट क्यूं हेरो जी राज पत्रकी ॥ टेर ॥ सखियां तो बोले राज प्रेमसूं, किसा वैर कीया जादूनाथ जी हो ॥ बाई० ॥ ऐ तो जनमका कपटी जी नीकळया, गई जादवांकेरी वात, जी हो वा० ॥ २ ॥ जाणूं सासूजीरे पाये लागसूं, देखण सासरियेको कोड ॥ जी हो सां० ॥ जांणूं नणदी वाईसूं बोलसूं, आप कर दीवी तोडातोड ॥ जीहो सां० ॥ ३ ॥ जिसांरी जिसी होवे राज मायडी, जिसांरी जिसी होवे छै जी वैन ॥ जी हो वा० ॥ पिण विन परणीने छोडतां, वरत्या छै अधिका चैन ॥ जी हो वा० ॥ ४ ॥ सब प्रतिबोधी राज राजीमति, विन परणी संयम लेह

॥ जी हो सां०॥ मुनि राम वंदे जी राज प्रेमसूं, छूं उत्तम मुनि पग खेह ॥ जी हो सां० ॥ ५ ॥इति॥

१६ ढोला जी थांनें ढोलो जी कहूं क गाडा मारूजी; लशकरिये कै वतलाऊं राज वालम रसियो ॥ ए देशी ॥

प्रभुजी थांनें कपटी कहूं कै धूताराजी; कांई कह वतलाऊं, राज दिल वसियो; जादवजी थे तो दगाबाजीसें नहीं न्यारा जी, क्या दिलकी वात सुणाऊं राज ॥ प्र०॥ ॥ १ ॥ प्रभुजी थे तो कपट सीख्या किण साथे जी, क्यूं झूठो दोष दीनो राज ॥प्र०॥ थे तो पत्र दीजो लिख हाथे जी, कांई गुनो हम कीनो राज ॥ प्र० ॥ २॥ जादव देखो कपटसें कपट कीजे जी, विन कपटीसें कपट न आछो राज ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे मोह तजीजे जी, तो पुनरपि नावे पाछो राज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ कह गये राजन कह गये जी, कर गये आश निराश ॥ ए देशी ॥

फिर गये जादव फिर गये जी, कर गये आस निरास; सिर वदनांमी दे गये जी, कांई सखियां कर रही हास जी; नींद न आवेजी, लख भेजूं, ओळूं थांरी आवेजी, जायर कही जो वेगा घर आवेजी ॥ टेर ॥ ऐसा कपटी न जांणिया जी, निकले कपटके पूर; ऊपर प्रेम दिखायनें, कांई पछै उडावे धूर जी ॥ जा० ॥ १ ॥ क्यूं हँसाये लोकनें जी, क्यूं लाडा वण्या निशंक; क्यूं तोरण लग प्रभु आविया, क्यूं कूडो दीयो कलंक जी ॥ जा० ॥ २ ॥

जो जन्मके कपटी जांणती जी, तो कदेय न करती प्रीत; रीत न रक्खी प्रीतकी जी, निकमी करी फजीत जी ॥ जा० ॥ ३ ॥ मैं प्रीत करी छै आपसूं जी, जिणमें न पडजो भंग; मुनि राम कहे धन्य राजमती जी, राख्यो किरमची रंग जी ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

१८ कायथका म्हारी अरजी सुन लीजो, काढ कमरमें सूं द्वात कलम म्हारी सूरत लख लीजो ॥ ए देशी ॥

नेम म्हारी अरजी सुन लेना नाथ मे० ॥ श्याम मे० प्रभुजी मे० ॥ मुज औगुन जो कछू भी देखा सो, पत्री लिख देना ॥ टेर ॥ मुज औगुन जो देखिया स कांई; पत्री दीजो मांड ॥ प्र० ॥ तोरणसूं रथ फेरनें स कांई, क्यूं जगमें कीनी भांड ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ १ ॥ जरा औगुन मुज देखिया स कांई, पत्री दीजो अब्ब ॥ ॥ प्र० ॥ सो छाडूं एक श्वासमें स कांई, सुन लीजो कहूं सब्ब ॥ ने० ॥ २ ॥ निकलंक कलंक लगावसो स कांई, छो तुम दीन दयाल ॥ प्र० ॥ पूकारूं किण आगले स कांई, किसकूं काढूं गाळ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ३ ॥ पत्री न देवो हाथकी स कांई, वात सुणो एक नाथ ॥ प्र० ॥ तुम निर्मोही हो रहे स कांई, हम नहीं छोडां साथ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ४ ॥ साथे सखियां लेयनें स कांई, चाली छै गिरनार ॥ प्र० ॥ प्रीति निभावा कारणे स कांई लीधो संयम भार ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ५ ॥ एक पक्षी प्रीत रक्खूं स कांई, लखूं जु दिलकी बात ॥ प्र० ॥ राम मुनि वंदे चरणनें स कांई, कीया मुक्तिका साथ ॥ ने० ना० श्या० प्र० मु० ॥ ६ ॥ इति

॥ जी हो सां०॥ मुनि राम वंदे जी राज प्रेमसूं, छूं उत्तम मुनि पग खेह ॥ जी हो सां० ॥ ५ ॥इति॥

१६ ढोला जी थांनें ढोलो जी कहूं क गाडा मारूजी; लशकरिये कै वतलाऊं राज वालम रसियो ॥ ए देशी ॥

प्रभुजी थांनें कपटी कहूं के धूताराजी; कांई कह वतलाऊं, राज दिल वसियो; जादवजी थे तो दगाबाजीसें नहीं न्यारा जी, क्या दिलकी वात सुणाऊं राज ॥ प्र०॥ ॥ १ ॥ प्रभुजी थे तो कपट सीख्या किण साथे जी, क्यूं झूठो दोष दीनो राज ॥प्र०॥ थे तो पत्र दीजो लिख हाथे जी, कांई गुनो हम कीनो राज ॥ प्र० ॥ २ ॥ जादव देखो कपटसें कपट कीजे जी, विन कपटीसें कपट न आछो राज ॥ प्र० ॥ मुनि राम कहे मोह तजीजे जी, तो पुनरपि नावे पाछो राज ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

१७ कह गये राजन कह गये जी, कर गये आश निराश ॥ ए देशी ॥

फिर गये जादव फिर गये जी, कर गये आस निरास; सिर वदनांमी दे गये जी, कांई सखियां कर रही हास जी; नींद न आवेजी, लख भेजूं, ओळूं थांरी आवेजी, जायर कहो जो वेगा घर आवेजी ॥ टेर ॥ ऐसा कपटी न जांणिया जी, निकले कपटके पूर; ऊपर प्रेम दिखायनें, कांई पछै उडावे धूर जी ॥ जा० ॥ १ ॥ क्यूं हँसाये लोकनें जी, क्यूं लाडा यण्या निशंक; क्यूं तोरण लग प्रभु आविया, क्यूं कूडो दीयो कलंक जी ॥ जा० ॥ २ ॥

प्रभुजी, उलट्यौ अंतर प्रेम, तेम लोचन कीयो जी ॥जि० ते ०॥ १० ॥ हां० ॥ बहु सखियां परिवार, लार ले नीसरी जी ॥ जि० ला० ॥ हां०॥ चाली गढ गिरनार, तार लागी झरी जी ॥ जि० ता०॥११॥ हां०॥ वरसण लागो नीर, चीर भीजे गयो जी ॥ जि०ची०॥ हां०॥ गुफा नेम जिनंदनों वीर, धीर सती कीयो जी ॥ जि०धी० ॥ १२ ॥ हां०॥ राजुल वांद्या है नेम जिनंद, आनंद मनमें सती जी ॥ ॥ जि० आ० ॥ हां० ॥ काट कर्मना फंद, गई शिव राज मती जी ॥ जि० ग० ॥ १३ ॥ हां० ॥ उगणीसे निधि मधु मास, वास जालोरने जी ॥ जि०वा० ॥ हां० ॥ गाया जिन गुण ग्राम, राम कर जोरनें जी ॥ जि० रा० ॥ १४ ॥ इति ॥

२० हूं तोनें पूछूं सुणे रे वेटा माळीका, सड़क पर नींबूड़ो कुंण लगवायो ॥ ए देशी ॥

हूं तोनें पूछूं सुणरी मेरी सजनी, श्रीनेमीसर वनडानें किण भरमायो; तोरण पर हो जी हो,तोरण पर वनड़ानें कुंण भरमायो ॥ टेर ॥ राजा भरमायो, महाराजा भरमायो ॥ तो० ॥ १ ॥ मरमको वचनके साळे सुणवायो ॥ तो० ॥ २ ॥ जांनी रिसवायो के मांडी रिसवायो तो० ॥३॥ लेणे देणेको कोई रुकन रखायो ॥ तो०॥ ४ ॥ इति ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

हूं तोनें कूछूं सुणरी मेरी सजनी, तोरण पर हो जी हो, तोरण पर वनड़ानें नहीं भरमायो; श्रीनेमीसर वनड़ानें नहीं भरमायो॥ टेर ॥ न राजा भरमायो, महाराजा

१९ जवांई धोवे धोतियाजी ॥ ए देशी ॥

हांजी नेमजी बावीसमां जिनराज,आय रथ वालियोजी जिनराज॥आ०॥हां जी नेमजी,राजुल सखियांमांय,सुणी नेम सालियो जी॥जि०सु०जि०॥१॥हांरे वाला,राजुल कहे सखि केम, नेम पाछा रह्या जी ॥ जि० ने० ॥ हांजी प्रभुजी, पशु पंखिधन सिर दोष, देई पाछा गयाजी ॥ जि० दे० ॥ २ ॥ हां रे सजनी, वर्षे नैंणे जल धार, वार विना माछली जी ॥ जि० वा० ॥ हां रे सजनी, इण अवसर मुज छोड, तोड़ प्रीत पाछली जी ॥ जि० तो० ॥ ३ ॥ हांजी नेमजी, हूं तो मनमें हूंस, सारी मनमें रही जी ॥ जि० सा॥ ॥ हांजी नेमजी, सुख दुख दिलरी वात, नाथ मैं तो ना कही जी ॥ जि० ना० ॥ ४ ॥ हां० ॥ सी देखी मुजमें खोड़, तेल चढी छोड दीजी ॥ जि० ते० ॥ हां० ॥ नव भवकेरी प्रीत, छिनकमांहे तोड़ दीजी ॥जि० छि० ॥ ५ ॥ हां० निपट कपटरी खांन, राज थांनें जांणिया जी ॥ जि० रा० ॥ हां० क्षत्री वंश शिर ताज, आछां थांसूं वांणियां जी ॥ जि० आ० ॥ ६ ॥ हां० ॥ नैंणां नावे नींद, जादू जादव कीयो जी ॥ जि० जा० ॥ हां० ॥ जिम जिम आवो याद, फाटे तिम तिम होया जी ॥ जि० फा० ॥ ७ ॥ हां० ॥ मुक्त धुतारी नार, भरमाया थांने कोडसूं जी ॥ जि० भ०॥ हां०॥ हूं पिण आसूं लार, पलो नहीं छोडसूं जी ॥ जि० प० ॥ ८ ॥ हांजी हीवे, बावीसमा जिनराय, जाय गिरवर चढ्या जी ॥ जि० जा० ॥ हां जी जिनजी, लीयो संजम सुख दाय, धाय कमसूं अड्या जी ॥ जि० धा० ॥ ९ ॥ हां० ॥ सुणियो राजुल एम, नेम संजम लीयो जी ॥ जि० ने० ॥ हां जी

प्रभुजी, उलट्यो अंतर प्रेम, तेम लोचन कीयो जी ॥जि० ते ०॥ १० ॥ हां० ॥ बहु सखियां परिवार, लार ले नीसरी जी ॥ जि० ला० ॥ हां०॥ चाली गढ गिरनार, तार लागी भरी जी ॥ जि० ता०॥११॥ हां०॥ वरसण लागो नीर, चीर भीजे गयो जी ॥ जि०ची०॥ हां०॥ गुफा नेम जिनंदनों वीर, धीर सती कीयो जी ॥ जि०धी० ॥ १२ ॥ हां०॥ राजुल वांद्या है नेम जिनंद, आनंद मनमें सती जी ॥ ॥ जि० आ० ॥ हां० ॥ काट कर्मना फंद, गई शिव राजमती जी ॥ जि० ग० ॥ १३ ॥ हां० ॥ उगणीसे निधि मधु मास, वास जालोरने जी ॥ जि०वा० ॥ हां० ॥ गाया जिन गुण ग्राम, राम कर जोरनें जी ॥ जि० रा० ॥ १४ ॥ इति ॥

२० हूं तोनें पूछूं सुणे रे वेटा माळीका, सड़क पर नींबूड़ो कुंण लगवायो ॥ ए देशी ॥

हूं तोनें पूछूं सुणरी मेरी सजनी, श्रीनेमीसर वनडानें किण भरमायो; तोरण पर हो जी हो, तोरण पर वनड़ानें कुंण भरमायो ॥ टेर ॥ राजा भरमायो, महाराजा भरमायो ॥ तो० ॥ १ ॥ मरमको वचनके साळे सुणवायो ॥ तो० ॥ २ ॥ जांनी रिसवायो के मांडी रिसवायो तो० ॥३॥ लेणे देणेको कोई रुकन रखायो ॥ तो०॥ ४ ॥ इति ॥

२१ देशी पूर्ववत् ॥

हूं तोनें कूछूं सुणरी मेरी सजनी, तोरण पर हो जी हो, तोरण पर वनड़ानें नहीं भरमायो; श्रीनेमीसर वनडानें नहीं भरमायो॥ टेर ॥ न राजा भरमायो, महाराजा

भरमायो ॥ तो० ॥ १ ॥ न मरमको वचन साळे सुणवायो ॥ तो० ॥ २ ॥ न जांनी रिसवायो न मांडी रिसवायो ॥ तो० ॥ ३ ॥ लेणे देणेको नहीं रुकन रखायो ॥ तो० ॥ ४ ॥ पशुवांको वाड़ो प्रभुजी वंचायो ॥ तो० ॥५॥ मुनि राम कहे प्रभु धर्म दिपायो ॥ तो० ॥ ६ ॥ इति ॥

२२ जोसीड़ाकी हाटे विलंब रह्यो वनड़ो, लगन ऊपर रींझ रह्यो सिरदार बनो, आछी थांरी वोली, पीयारी लागे वनड़ा, आछी थांरी हाली, सवाई लागे वनड़ा ॥ ए देशी ॥

हाथी होदे छाजे, विराज रह्यो नेमी जिन, तोरण ऊपर देखे, रह्या पशु वृंद; आछी थांने दया, पीयारी लागे नेमी जिन; आछो थांनें शील, सुहायो सागे नेमी जिन; इंद्र ही तो आये, सुहाये प्रभु नेमी जिन, विमानमें खड़े, देखे कृष्णचंद ॥ आ० ॥ १ ॥ क्यूं इंद्र तुम आये, बुलाये बिन सुरपति, नेमी जिन परणे, नहीं जदुनाथ ॥ आ० ॥ म्हे पिण देखे स्यां, परणास्यो जदि नरपति, नहीं म्हे तो घोलां, देखेस्यां हुई वात ॥ आ० ॥२॥ हरिण सूर सूसा, आदि देखे जिन वर, सब बंधही तुड़ाये, बुडाये दयाल सिंधु ॥ आ० ॥ तोरणथी तो घिरिया, चढिया प्रभु गिरि वर, मुनि रामहीकूं तारो, उतारो पार जग वंधु ॥ आ० ॥ ३ ॥ इति ॥

२३ हस हस पूछुं वात गोरी, आंखड ल्यांरो काजळ फीको क्यूं पड्यो हो राज ॥ ए देशी ॥

हूं तोनें पूछूं वात सजनी ॥ हूं० ॥ नाथ क्यूं फिरिया

वे तो तोरण आयनें हो राज ॥ स० ना० ॥ वडी करी उत्पात ॥ स० व० ॥ केहनें तो हूं भाखूं दुखडो, जायनें हो राज ॥ स० के० ॥ थे जावो सासूजीके पास ॥ स० थे० स० ॥ आश निराशा मुजनें, तुज पुत्तर करी हो राज ॥ स० आ० ॥ २ ॥ एकसां करो समजास ॥ प्र० ए० स० ॥ परणीनें तो जाईजो वन भल संचरी हो राज ॥ स० प० ॥ २ ॥ क्यूं करी मुज वदनांम, प्रभुजी ॥ क्यूं स० ॥ किण भरमाया, आया क्यूं तोरण ऊपरे हो ॥ प्र० कि० ॥ ऐ तो ख्याली नरका काम ॥ प्र० ए० प्र० ॥ समरथनें नहीं दोष, जगत इम ऊचरे हो राज ॥ प्र० स० ॥ ३ ॥ देखी निरमोही थांरी प्रीत ॥ प्र०दे०प्र०॥ पिण देखोनी करणी, अबे मांहरी हो राज ॥ प्र०पि० ॥ मुनि राम वंदे थांनें नीत ॥ प्र० मु० प्र० ॥ राजीमतीनें तारी, बलिहारी ताहरी हो राज ॥ प्र० रा० ॥४॥ इति ॥

२४ लुहरकी देशी ॥

सखियां हूं तोनें पूछुं वारता, केम गये प्रभु आय; बाईजी म्हे पाई छै वारता, कांई हिंसा न आई दाय ॥ बा० ॥ रूप अनंतो घणो गुणवंतो सांवरो हे ॥१॥ स० ॥ आपे स्यूं करस्यां अबी, कांई जासी किम जमवार ॥ बा० ॥ अजू कछू नहीं बीगड्यो, कांई दूजो वरो भरतार बा० रू० घ० ॥ २ ॥ स० ॥दूजानें बांछूं नहीं, कांई लेस्यूं संयम भार ॥ बा०॥म्हे पिण संजम लेयस्या, कांई रैस्यां थांरी लार ॥ बा० रू० घ० ॥ ३ ॥ स० ॥ लोच कियो जिण महलमें, कांई चाली अनुमति लेह ॥ बा० ॥ श्याम घटा उमटी भली, कांई वरसण लागो मेह ॥ बा० रू० घ० ॥ ४ ॥ स० ॥ रहनेमीनें तारियो, कांई पौंती मुक्त

मझार ॥ बा० ॥ राम मुनि करे वंदना कांई दिनमें सो सो वार ॥ बा० रू० घ० ॥ ५ ॥ इति ॥

लावणी ॥

१ वर जोरी ना मिली सखी री मैं जवांन वालम छोटा ॥ ए देशी ॥

प्राणनाथ ना मिल्यो सखीरी, मुज दिलमें उपजे गोटा किसे दोष देऊं,पुरचलापाप कीया मैंने खोटा॥टेर॥वडी बरात वनी सखी री, जादव मिल सवही आये; हंसी कुसीसे, कुसीसे वाजा सवही वजवाये; उसी वखतमें इंद्रही आये, इम करतां तोरण आये; वाड़ामें देखकें, देखकें पशु बंध सव तुडवाये ॥ प्रां० ॥ १ ॥ तोरणथी फिर गये सखीरी, वडी खरावी कर मेरी; नहीं मांनी किसीकी, किसीकी एक न मांनी हुवो वैरी; वरसीदांन दे संजम धारयौ, जाय चढ्यो गढ गिरनारी; संग उसके जाऊं, जाऊं मुक्त मेल नहीं रहूं न्यारी ॥ प्रां० ॥ २ ॥ सवी सखी मिल करे मश्करी, नेमनाथ कैसे छोडी; कुछ औगुण होगा, होगा बराबरीकी नहीं जोडी; दिलकी वात कहा कहूं सखी री, सरमा मरती घवराऊं; अव कहा करीजे, करीजे जोगन वन वनमें जाऊं ॥ प्रां० ॥ ३ ॥ किसका माता पिता सखी री, कुंण भरता किसकी नारी; नहीं संग चलेगा, चलेगा शुभाशुभ करणी लारी; सालसे सखी संग संजम लीनो, भई रस्ते वरसा भारी, रहनेमी सुधारयौ, सुधारयौ मुनि राम कहे हूं वलिहारी ॥ प्रां० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ गौरी चली सासरे फेरतो कबी आंना ॥ ए देशी ॥

मैं जातीहूं गिरनार कहूं नहीं छांना, जी रख लेना धर्मकूं याद भूल मत जाना ॥ टेर ॥ मैं नहीं रहूं घरके मांय सबी सुन लेना, जी कुछ कहणे लायक हुवे सो अबी कह देना ॥ मैं० ॥ १ ॥ मैं नेमनाथका साथ कबी नहीं छोडूं, जी हम जिसके संगसें कठिन कर्मकू तोडूं ॥ मैं० ॥ २ ॥ श्रीनेम दयाल कृपाल तारेगो हमकूं, मुज देवो रजा मैं साच कहूं छूं तुमकूं ॥ मैं० ॥ ३ ॥ सब सखियनकी वात हिये नहीं भाती, मेरे नेम विना नहीं और जगतमें साथी ॥ मैं० ॥ ४ ॥ नहीं किसीके साथ नहीं कोई चलता, विन स्वारथ विन वात कोई नहीं करता ॥ मैं० ॥ ५ ॥ सती चली गिरनार मार निज मनकूं, जी किसका छै परिवार धूल है धनकूं॥ मैं० ॥ ६ ॥ कर सिर लोचन केश संकोची तनकूं, जी चली रस्ताके बीच लग्यो वरसनकूं॥ मैं० ॥ ७ ॥ रहनेमी प्रतिबोध सुधारी काया, जी मुनि राम कहे मैं शरण तुमारी आया ॥ मैं० ॥ ८ ॥ इति ॥

३ अगड़दं अगड़दं बाजे डंका सवाय डंका पारसका ॥ ए देशी ॥

तुम चलो सखी कुछ जेज न करिये, श्रीनेमीश्वरनें यूं कहना ॥ तुम विन अपराध छोडि राजुलकूं, जाय ओलंभा यूं देना ॥ तु० ॥ १ ॥ सब शृंगारी सज हुय त्यारी, सबही मुज संगे रहना; गढ गिरनार जाय स्वामिपें, दिलका दर्द कही देना ॥ तु० ॥ २ ॥ मुंह मचकोडी दे

कर ताली, मुं षिचमें अंगुली घाली; नेम गया सखि जावा देनी, उनकी छिय होती काळी ॥ तु० ॥ ३ ॥ अली बात किम करिये काली, क्या देऊं तुजकूं गाली; अनंत रूप श्रीनेम विराजे, उनकी छिय मुझकूं वाली ॥ तु० ॥ ४ ॥ पंच मुष्टि लोच करी आलोच, चलि सखियनका वृंदन में; कारी घटा उमठी घुमठ अंधेरा, विजुरी पसरी गगननमें ॥ तु० ॥ ५ ॥ मृगपति गाज ओगाज जिम मृगली, तिमही सब सखियन नाठी; जलधारा सारा भीना कपरा, दशो दिश सखियन नाठी ॥तु०॥६॥ राजुल गुप्फा मांहे पैठी, कपरा सारा सुकवाया; रहनेमी ज्ञान ध्यान सब भूलो, नगन रूप देखी काया ॥ तु० ॥ ७ ॥ रहनेमी बोले सुंण हे सुंदर, आपां रहसां घरवासे, दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, वार वार ए नहीं आसे ॥ तु० ॥ ८ ॥ राजुल बोले सुंण रहनेमी, इम किम बोल रह्यो मुजकूं; कहणो भलो न भलो तुज मरणो, धिक् धिक् रहनेमी तुजकूं ॥ तु० ॥ ९ ॥ दे उपदेश विशेष हुय दृढता, रहनेमी इन पर बोले; तूं गुरणी मात समांणी मोरे, तोरे जुगमें नहीं तोले ॥ तु० ॥ १० ॥ राजमती सती संजम लेकर, भव तरणी कीधी करणी, रहनेमी पिण केवल पांमी, दोनूं गये है शिव रमणी ॥ ॥ तु० ॥ ११ ॥ संवत उगणीसे वसुधा वरसे, मधुमासे विचरत आया; रामचंद मुनि मन आनंदे, उदियापुरमें गुण गाया ॥ तु० ॥ १२ ॥ इति ॥

४ अधबीच मोहोबत तोड़ी, वेदरदी रे दिवाना ॥

॥ ए देशी ॥

अध परनी मुजकूं छोड़ी, पिया करी तैं नादानी ॥

क० ॥ अच्छा पि० ॥ टेर ॥ प्रभु तेरी मेरी जोड़ी, मांनिक ज्यूं जड़ी थी ॥ अच्छा मां० ॥ चंदासें रजनी प्यारी, भादुकी झड़ी थी; सखि रंग रूप चतुराई, गुण करके भरी थी ॥ अच्छा गु० ॥ पिया विना परखतें त्यागी, खोटी के खरी थी, सखी वनमें कोईल बोले, लगे खोटी रे जब्बानी ॥ अच्छा ल० ॥ अध प० ॥ १ ॥ प्रभु तेरी सोबत करके, एक फंदमें जो पड़ी थी ॥ अच्छा ॥ १० ॥ ए सास वास रहे छाये, अरटोंकी घड़ी थी, वज घड़ी घड़ी घड़ियाले, क्या वक्त तो अड़ी थी,॥अच्छा क्या० ॥ चल दीये तोरनसें केम, असवारी खड़ी थी; सखि कौन तान तो तूटी, हमकों रे वतानी॥ अच्छा ह०॥अध०॥२॥ मैं असल फकीरी लूंगी रे जंगल में करूं वासा ॥ अच्छा जं०॥सब आशा तृष्णा मोडूं, अर छोडूं घरवासा, सखि कामदेवकूं मारूं, लगी प्यारेकी आशा ॥ अच्छा ल० ॥ गिरनारी पै जाऊं, अर तोडूं मोह पासा, सखि प्रभुके कारनमें तो, वन चलूं रे अगवानी ॥ अच्छा व०अध ॥३॥ कहे राम मुनि सुनों सारे, सती गई तो निर्वांना ॥ अच्छा स०॥ऐ भरी सभाके मांहि तुम तन मनसें गांना; सखि गुनवंतके गुन गाते, अरु सुनतें निज कांना ॥ अच्छा भला सु० ॥ एक जैन धर्मके मांही, मुक्तिका ठिकांना, सखि जिसका जीया लेखे, औ धरमी मर्दांनी॥ अच्छा ओधर्मी० अध प० ॥ ४ ॥ इति ॥

५ सखि पनिया भरन कैसे जांना, पनघट पै खड़ा है कांना ॥ ए देशी ॥

सखि रहा नहीं कछू छांना, तोरन पैं करा अपमांना

॥ तो० सखी० तो० ॥ टेर ॥ नहीं इधर उधर कछु सोचा, नहीं किसके संग आलोचाजी, किम तेल चढी छिटकांना ॥ तो० ॥ १ ॥ को किन विध मुं दिखलाऊं, मेरे मनकूं किम ठहराऊं जी; कीये मात पिता सरमांना तो० ॥२॥ सखि वात गमाकर जीना, जैसे गृहस्थी धन कर हीना जी; ए दोनूं है मृत्यु समांना ॥ तो० ॥ ३ ॥ गाली गुस्सा घर विच देना, कैना सो गुप चुप कैना जी, नहीं लोकनमें बुरा दिखाना ॥ तो० ॥ ४ ॥ कहा देखा मुजमें खोरी, क्यूं नव भव मोहबत तोरी जी; कीया दुश्मनका मन जांना ॥ तो० ॥ ५ ॥ सखि करी प्रभु नादांनी, हूं पाकूंगी प्रीत पुरांनी जी;जाय हेरूंगी मुक्ति ठिकांना॥ तो०॥ ॥ ६ ॥ पंच मुष्टि लोच कर डारा, हूंते लंबे केस सिर कारा जी; सती कहा न किसका मांना ॥ तो० ॥ ७ ॥ सातसे सखी संग लीना, रस्तेमें कपरा भीना जी; रहनेमीनुं लाये ठिकांना ॥ तो०॥ ८ ॥ सती नेम प्रभूने भेटी, सब मनकी भ्रमना मेटी जी; फेर पाया है केवल ज्ञाना ॥ तो० ॥ ९ ॥ मुनि रामचंद इम गावे, उत्तम इम प्रीत निभावे जी; इम गावत जैन पुरांना ॥ तो ॥१०॥इति ॥

६ तेरी किलंगीरे मारी लात सखी ॥ ए देशी ॥

प्रभु नेम नाथ, तज गये साथ, मैं कहूं कहां लग वात सखी २; कहे राजुल नार, मेरे प्रभुसें प्यार, मैं जाऊं नेमके साथ सखी २ ॥ टेर ॥ थे आठ भवांके सजन मेरे, कर गये गमन उतपात सखी २; ना आप आये, ना पाती लखी, ना रखी कछु लोकात सखी; भये बार मास, करे सबही हास, जां दिनसें चढी बरात सखी; फेरांकी

वार, मैं गुनेगार, मन मार मार पिछतात सखी; चुप कासें रहूं, दुख कासें कहूं, हुये दुश्मनके दिल चात सखी २; कहे राजुल नार मेरे ॥ प्र० ॥ १ ॥ मोहकी जडी, मैं सूती पडी, थी मगन खूब मिथ्यात सखी २; अब आपा सूझ्या, मैं दिलकूं बूझ्या, अब निसंक गिरिकूं जात सखी; रस्तेके वीच, मच रहे कीच, थी वैरन ऋतु वरसात सखी; भीजे हैं चीर, वरसे है नीर, सती चीर सुकांनें जात सखी; रहनेमी भूला, ज्ञान ध्यांन डूला, जां देख उघारा गात सखी २ ॥ कहे रा० प्र० २ ॥ रहनेमी बोले, नहीं तेरे तोले, अद्भूत रूप विख्यात सखी २; घर मांहि रहो, फिर कासूं चहो, सुख विलसो मेरे साथ सखी; कहे सती पहचांन, सुनहू सुजांन, तेरे दिलकूं तूं समझात सखी; संयमकूं धार, फिर वंछे नार, धिक्कार हुवो तुज सात सखी; सुन सती वैन, खुलगये नैन, रहनेम ठिकांने आत सखी २ ॥ कहे० प्र० ॥ ३ ॥ हुय गये धीर, रहनेमि वीर, तैं तार दिये मुज भ्रात सखी २; केवलकूं पाय, शिव पुरकूं जाय, कर गयेनाम अख्यात सखी; सती भव सुधार, रहनेमि तार, हुये ब्रह्मरूप सख्यात सखी; दाखिला दिया, धन्य उसका जीया, सुन समझे उत्तम जात सखी; वीकानेर, गुलजार सेर, मुनि रामचंद छंद गात सखी २ क० प्र० ॥ ४ ॥ इति ॥

बारमास्यो ॥

१ चैत मास वन केसर फूलो ॥ ए देशी ॥

मास श्रावण लग्यो डरावन. विजुरी पसरी बहुतेरी;

घरर घरर घराट करत हैं, झरर झरर वर्षा गैरी; मेरे श्याम जो हाजर होते, तो हूं कदेन डर लाती; पिउ विन जिवरा बहु घबरावे, थरर थरर कंपे छाती; ऐसी वैरण रैंन डरपावे, सखी मेरा करती हासा; नेम गये गिरनार सखी री,मिलणेकी लग रही आसा॥१॥भादू मास जादू घर नांहीं, पांनी न मावे परनाले, पापी पपीया पिउ पिउ बोले, इनकी पिण बोली साले; कारी घटाले उमटके आई, बरसाये जल थल करती; हरियाली महमंत बनी है, जोरदार दीसे धरती; श्रीश्याम विना सब सूनी माया, बुरा लगत है चउमासा ॥ ने० ॥ २ ॥ आसु मास सखि चल कर आयो, देखो तनकी पांसुरियां; झुर झुरनें हूं होगी पूनी, गिन गिन घस गई आंगुरियां; फूंख फली आ कली फूलनकी, आछी न लग्गे इन विरियां; ककड़ी मुठकचरे और मती रे, बुरे लगे मेवो गिरियां; दसरावो नहीं पूजूं सखीरी, झूठ न बोलूं एक मासा॥ने० ॥ ३ ॥ काती मासका महीना चौथा, रोता किम कर काढूंगी; कुलदेवी तूं पिया मिला दे, तोय सीरणी चाढूंगी; मैं छूं सरणे थारे माता, साता पियकी चाती हूं; रूठो मनावो पिउ घर लावो, अन्न पूरा नहीं खाती हूं; दीपमालिका लगे न अच्छी,नेम नहीं पाये पासा॥ने०॥४॥ मिगसर मास सखी ठंढ चमकी, धमकी तपकी चढ जावे; शरीर तपे विरह आग करीनें, वैरण निद्रा नहीं आवे; श्याम विना ऐ सांग सबीही, शरीर तपे दिन रात घणो; और दुःख सब हुवो सखी री, दुःख मोटो एक नाथतणो; त्रिया जातका जनम अक्यारथ, मालक विन धिक् घरवासा ॥ ने० ॥ ५ ॥ पोष मासकी वैरण रतियां

वतियां कर कर वरताऊं; पूरी न होवे लंबी हो रही, इधर उधर गोता खाऊं; जाऊं किसके शरणे सखीरी, जोगन हुय वन रळ जाऊं; पाऊं न पियड़ा जियड़ा तरसे, नितकी कगवा उडवाऊं; पिऊ मिले तौ ठंढ न लग्गे, रंग महल रहनें खासा ॥ ने० ॥ ६ ॥ माघ महीनो बहुत वुरो है, जिण घर पीतम नहीं होवे; पिऊं घरे तो बहुत भलेरो, ऊंडे पड़वेमें सोवे; खावे विध विध माल मसाला, साळां ऊंडी सोणेकी; सांवरियो नहीं आयो सखी री, रात न पूरी होणेकी; वसंत पंचमी घर घर मंगला, चंग डफ्फ वाजे तासा ॥ ने० ॥ ७ ॥ फाग मासमें फग रमत हैं, गम्मत इसकी बहु तेरी; पिऊं विना ए मास निकम्मो, इसो नहीं दूजो वैरी; टिप्पा दोहा ख्याल जहरसा, कांने मुझ जो भनक परे; गिर पर जाकर वस्यो सांवरियो, पशुवांके शिर दोष धरे; विरह आग कर जरूं सखीरी, मांनों जंगलका घासा ॥ ने० ॥ ८ ॥ चैत महीनें चैती फूली, झूली सखीय हींडोरनमें; मेरा जियरा एक न चाहे, हूं झूलूं सोच समुद्रनमें; हूं तोनें पूजूं हे म्हारी गवरल, क्यूं पिउ तजी मोय जोवनमें; वनमें जाकर वस्यो अकेलो, क्या वात वसी पियके मनमें; जिनकी खवर कछू वन पाई, सहे ताप शीत क्षुत् पीयासा॥ने०॥९॥ वैशाखांकी वात सुनो सखी, ऋतु गरमीकी झुक आई; चंदन घस घस और कपूरे, करूं टहल मनकी चाई; बीड़ी बांधकर पिउकूं देती, खड़ी खड़ी हाजर रहती; पंखा ढोलके पवन घालती, दे घूमर दुपटो गहती; घोट ठंढाई पियो मेरा पिवड़ा, पिउ विन होगई निःरासा ॥ ने० ॥ १० ॥ ज्येष्ठ महीनो महा गरमीको, चौंदिश ज्वा-

ला चलती है; विरह आग अर तपत दूसरी, लूसें छाती जलती है; मोनें पवन मत घालो सखीरी, दूनी तपती लगती है; श्याम मिलावो जावो सजनी, नहींतर जांन निकलती है; मनकी बात जो नाथ सुनेरी, ढरे जु मन चाये पासा ॥ने० ॥११॥ आषाढ मास आशा कर लीनी, अब तो साहब घर आवो; एक वेर मुझ मनकी सुंनलो, पछे भलां वनकूं जावो; अब मेरा मन पिण निश्चल हो गया, मुक्ति महिल देखन आऊं; संजम लेकर भव जल तरसुं, कर करणी शिव पद पाऊं; मुनि राम कहै धन्य राजीमति सती, केवल कीधा परकाशा ॥ नेम गये गिरनार सखीरी, मिलनेकी लग रही आशा॥१२॥ इति ॥

२ कहोरी सखी श्याम कब घर आसी ॥ ए देशी ॥

सांवण मासमें लूंवां वरसे, जी थानें जिम जिम राजुल तरसे; कहोरी सखी नेम कब घर आसी, कहो री सखी श्याम कब घर आसी; आसी जबही मिटसी उदासी ॥ क० ॥ १ ॥ जी भादू मासमें घटा चढी कारी, जी राजुलनें लग्गे डर भारी ॥ क० ॥ २ ॥ जी आसु मासमें मोटी छै आशा, जी तुमे आसो तो सखी तजे हासा ॥ क० ॥३॥ जी काती मासमें वहे जिम काती, जी इम तजतां चले किम छाती॥क०॥४॥जी मिगसर मासमें चमकी ठारी, जी थांने कह कहनें राजुल हारी ॥क०॥५॥ जी पौष मासको शीत अकारो, जी घर रैणेको भरोनी हूंकारो ॥ क० ॥ ६ ॥ जी माघ मासमें डांफर वाजे, जी वनराई वनमांहे दाजे ॥ क० ॥ ७ ॥ जी फाग मास तो बहुत सुहावे, जी सांवरियो जो महलां आवे ॥ क०॥८॥

जी चैत मासमें फूली चैती, जी इम जांणूं तो जांण न देती ॥ क० ॥ ९ ॥ जी वैशाख महीनो आयो, जी सांवरियानें किण भरमायो ॥ क० ॥१०॥ जी जेठ मासमें लूवां चलती, जी मेरी प्रभु विन जांन निकलती ॥ क० ॥ ११॥ जी आषाढ आशा कर लीनो, जी अजु नायो नेम नगीनो ॥ क० ॥ १२ ॥ जी श्रावण मास तो पाछो आयो, जी नेमीसर पूरो रिसायो ॥ क० ॥१३॥ जी सती राजुल संयम लीनो, जी वां तो उत्तम कारज कीनो ॥क०॥१४॥ जी केवल लहीनें मुक्त सिधाया, जी मुनि रामचंद गुण गाया ॥ क० ॥ १५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

बार मास आशा करी, निगमियां धर प्यार ।
होय निराश संवेग धर, लीधो संयम भार ॥ १ ॥

३ देशी ऊमूंणी दोहांमें ॥

श्याम क्यूं मुजकूं छोडी जी, राखो प्रतिज्ञा राजुल नारकी; महाराज नेमजी, राखो प्रतिज्ञा अबला नारकी ॥ टेर ॥ श्रावण मन भावन गयो स जी, नैंना नीर वरसायो; जांन वनावी आवियो स जी, तोरनसें फिर जायो; कुंन भरमायो झूठ न बोलूं जी, झूठो कलंक लगायो; सकल सखी तुम सांभलो, धरूं केम मन धीर; कुंणसूं ने किणनें कहूं स म्हारे, नैंणां वरसें नीर, पीर कुंण देखे पराई जी ॥ राखो० ॥ १ ॥ भादूमें जादू किम कर रूठो जी, झूठो दोष लगायो; हीयो भरायो बोल न आयो जी, नैंनां नीर झर लायो; पशुवनके शिर दोष देईनें, कीयो दुश्मनको चायो; लावो

पतियां नाथकी, केम गये छिटकाय; मीयांकी दाढी बले स देखो, लोक तापवा जाय; हाय किम जगत हंसायो जी ॥ राखो० ॥ २ ॥ आसोज आशा सबी गमाई जी, स्यूं आई दिल मायो; भाई सहू विलखा किया स जी, दुःख सहियो नहीं जायो; जनम डबोयो नाहक मेरो जी, सखियां हास्य करायो; कांई करूं म्हें वीनती, कांई सुणाऊं कूक; मूंक गयो मुझ नाथजी स कांई, जैसे बीडी थूक; चूक कोई नाथ बतावो जी ॥ राखो० ॥ ३ ॥ कातीमें कागळ नहीं स जी, समंचार पिण नायो; मास वरस आशा कढे स जी, आशा जन्म विहायो; आशा विन वासा किसा स जी, अमनें प्रभू बतायो; दीसे बाहिर निर्मला, मांही कठिन कठोर; ऊपर लाली झिल रही स देखो, जैसें झाटी बोर और कांई, फंद लगायो जी ॥ राखो० ॥ ४ ॥ मृगसरमें सी चमकियो स जी, कत गयो किम छोड; पशु पक्षी भेळा रहे स जी, क्या मुझमें थी खोड; और न चाहूं कंतनें स जी, नेम मुझे शिर मौड; एक वेर कंत आवजो, करजो मन की वात; निजरां का मेळा करो स मैं, चलूं तुमारी साथ नाथ एक, वेर पधारो जी ॥ राखो० ॥ ५ ॥ पोष मासकी वैरन रजनी, काटी कटे न कोय; कुंण मुझ राखे रोवती स जी, रही अंसु वन मुख धोय; सार न पूछी पाछली स जी, ऐसी रीस क्यूं होय; कुंण ही त्यारो माहरो, कंत दियो भरमाय; घाल्यो विछोहो पापिये सजी, जिणरो सुख हुवो श्याह दाह क्यूं, हीये लगायो जी ॥ रा० ॥ ६ ॥ माघ मास सखी आवियो स जी, लावो कंत मनाय; देऊं बधाई तेहनें सजी, पूंजूं तेहना पाय; जाय मनावो

नेमनें स जी, दूजी न मेरे चाय; कंत कंत करती फिरूं, हेरूं जिसकी वाट; फेरूं माला तेहनी स मेरे, किण विध मिटे उचाट; घाट मुझ थई पुन्याई जी ॥ रा० ॥ ७ ॥ फागुण वाजे वायरो स जी, वृछ पत्ते दिय खोय; दूजे मासमें आविया स जी, पाछा हरिया होय; हूं फूलूं किण आशसूं स जी, कह दो सखियां मोय; और पुरुष मुझ भ्रात है, अथवा बाप समांन; कांई भ्रांत छै नाथके स सखी, सो जांणे भगवान; प्राण कहो किस विध रक्खूं जी ॥ रा० ॥ ८ ॥ चैती फूली फूटरी स जी, तरू विलंबी वेल; बाग बगीचा फूलिया स जी, जाई जुई चंपेल; हूं मुरझी प्रीतम विना सजी, ज्यूं दीपक विन तेल; हेल करी मुझ नाथजी, तोरनसूं फिर जाय; मनमें आवे एहवी स हूं, मरूं कटारी खाय; हाय मुझ जळो जवांनी जी ॥ रा० ॥ ९ ॥ वैशाख मास छै आकरो स जी, वाजे झाळ दुझाळ; चंदन चरचे पद्मिनी स जी, पंखो हाथमें झाल; घाले शीतल वायरो स जी, करै प्रीतमसूं ख्याल; मनकी सब मनमें रही, कही कठा-लग जाय; तोरनसूं फिरजावतां स सखी, दीधो दाग लगाय; दाय किम हू नहीं आई जी ॥ रा० ॥ १० ॥ जेठ मास सखी आवियो स जी, धूप पड़े असराल; दूजो तप विरहतणो स जी, सखी पवन मत घाल; क्यूं आये थे परणवा स जी, कीधो बालक ख्याल; दुख पाऊं जाऊं कहां, कीधी खोटी कंत; मांगी न आवे मोतडी स सखी, दुख जांणे भगवंत; दंत सब लोक दिखावे जी ॥ रा० ॥ ११ ॥ आषाढ आशा कर लीयो स जी, विध विध करी उपाय; क्यं रूठो छै सांवरो स जी, रही छूं

मनाय मनाय; इण मास नहीं आवसी स तो, देसूं घर छिटकाय; राम मुनी वंदना करे,धरे चरनमें शीश; राजीमति संयम लीयो स जी, जाय मिली जगदीश; शीश तुम सदा नमावो जी ॥ रा० ॥ १२ ॥ चमालीस उगणीसको स जी, मिगसर शुक्रवार; तीज चौथ सुद भेळी तिथ छै, जसरासर सुखकार; बारमास्यो जोड़ियो स जी, लागी थोडी वार; वृद्धीचंदजी गुरुतणो, वरते सदा प्रताप; रामचंद्र शिष्य तेहनो सजी, जोडकरी धर छाप; जाप तुम प्रभुनो करो जी ॥ रा० ॥१३॥इति

४ कहोरी सखी श्याम कब घर आसी ॥ ए देशी ॥

कहो री सखी नेम कब घर आसी, कहो री सखी सांवरियो कब आसी ॥ टेर ॥ सूरज वारमें सूरज ऊगो, जी गिरनार सांवरियो पूगो ॥ क०॥१॥ सोमवारमें चंद्रवदनी, जी किम परणोनी कंचन वरनी ॥ क० ॥ २ ॥ मंगल वारमें मंगल करना, जी जाय जादवनें देवो धरना ॥ क० ॥३॥ बुद्ध वारमें बुध एक करणी, जी मंत्र जपवा वैसाचो वरणी ॥ क० ॥ ४ ॥ गुरुवारमें गुरु मनावो, जी सांवरियानें वेग मिलावो ॥ क०॥५॥ शुक्रवारमें घर नहीं तजणा, जी घर वैठां ही ईश्वर भजणा ॥क० ॥६॥शनीवारमें दीक्षा नहीं लीजे, जी घर वैठां ही सिमरण कीजे क०॥७॥नहीं नव भवनी प्रीत विचारी, जी थांनें झुर रही राजुल नारी ॥ क० ॥ ८ ॥ संयम लीधो राजुल नारी, जी थांनें राम वंदे वारं वारी ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

चौमासो ॥

१ देशी गुजराती गरबाना गीतनी ॥

जात्रीड़ा जात्रा निनांणू करियेरे ॥ ए देशी ॥

जादवजी, चौमासो निज घर करियेजी, पर घर सांमुं पगला न भरिये ॥ जा० ॥ टेर ॥ श्रावण वीजुरी हुय खिडे खिनमें रे, भादू रंग करे बहू दिनमें रे, श्रासू डंबर फीका गगनमें रे, बहु विघ्न भरा कातन में ॥ जा०॥ १ ॥ श्रावण विद्युत्‌वत् संसारा रे, भादू रंग ज्यूं विविध प्रकारा रे; श्रासू डंबर होत अपारा रे काती वाती तो करत उचारा ॥ जा० ॥ २ ॥ श्रावण मास तो हरिया छाया रे, भादू दीसे सब कुम्हलाया रे; आसूमें जल वल थाया रे, कार्तिक मास पता नहीं पाया ॥ जा० ॥ ३ ॥ श्रावण मासमें संजम लीजे रे, भादू भावना निर्मल कीजे रे; आसू श्रासन दृढ धर दीजे रे, कार्तिक काज सारा सिध कीजै ॥ जा० ॥ ४ ॥ रामचंदनी एह छै वाणी रे, कोई समझे उत्तम प्राणी रे; इम गूढ श्ररथ निरवांणी रे, कोई लेसी चतुर पिछांणी ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ ओ पंखो किसरि नगरसूं आयो रे ॥ ए देशी ॥

को सखी किसारे मोरातिये आया रे, जोर कांई जांनीको; को सखी निकमा रे लोक हसाया रे, गयो मोती पानीको; को सखी किणरे सुकन वंदाया रे ॥ जो० ॥ को सखी कुणरे पशुवांनें वताया रे ॥ ग० ॥

॥ १ ॥ को सखी मुजनें रे कलंक चढाया रे॥जो०॥को सखी तोरणिये लग आयारे ॥ ग०॥ को सखी तेल चढी छिटकाया रे ॥ जो० ॥ को सखी किण रे पापीड़े भरमाये रे ॥ ग० ॥ २ ॥ को सखी नेमजी गये किस दावे रे॥ जो० ॥ को सखी साची रे वात कोई लावे रे ॥ ग० ॥ को सखी किसी रे गिणत मुज राखी रे ॥ जो० ॥ को सखी धरती रे झेली आभे नांखी रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ को सखी कांई रे उपाय अब कीजे रे ॥ जो० ॥ सुण सखी किणनें रे दोष नहीं दीजे रे ॥ ग० ॥ को सखी राम मुनि गुण गाया रे ॥ जो० ॥ को सखी पूर्ण पद सती पाया रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ व्हालो हे लागे गाघरो ॥ ए देशी ॥

हे म्हारे नेम कुमर दिलमें वसियो, अबे दूजो न आवे दाय; हे म्हारे रतन चिंतामणि कर चढियो, म्हारे कंकर लेवे हे वलाय ॥ हे० ॥ १ ॥ हे सखी सासूजी सूं जइ कहो, थे तो देवोनी पुत्र समझाय; हे आई तेल चढी अध परणीनें, हे आई कहो किण दीवि छिटकाय ॥ हे म्हारे ॥ ने० ॥ २ ॥ हे सखी सासू कहे वहुयर सुणो, थे तो कही लाखीणी वात; हे म्हारे सरस्वतीनें कुंण सीखवे, ओ तो गगन मावे भर वाथ ॥ हे० ॥ ३ ॥ तीन ज्ञान लेई आवियो, ओ तो जागे सो आवे नींद; हे सखी संजम लेसी वरसीदान दे, सांवरो वणियो शिव वधू बींद ॥ हे ॥ ४ ॥ राजी मती संयम लीधो, ओ तो की धो उत्तम काम; ओ तो धन्य राजुल धन्य नेम जी, ओ तो नित नित वंदे मुनि राम ॥ हे० ॥ ५ ॥ इति ॥

३ गवरल ईसरजी कवे तो हस बोलणा हे ॥ ए देशी ॥

सखियां क्यूं आया, क्यूं फिर चल्या हे॥स०॥जिणरी खबर न काय ॥ स०॥ तोरनथी फिर जाय ॥ स० ॥ स्यौं आई दिलमांय, आपां नेम जिनंदजीनें वांदसां हे, आपां गिरवर जिनवर वांदसां हे, आपां नेम प्रभुजीनें वांदसां हे ॥ १ ॥ बाईजी दगाबाजी करी सांवरे हे २, बाईजी झूठो चोज लगाय ॥ बा० ॥ तोरणसूं फिरजाय ॥ बा० ॥ दीनी जांन लजाय ॥ आ० ॥ २ ॥ स० ॥ नेम प्रभू संयम लीयो हे २ ॥ स० ॥ चढिया गढ गिरनार ॥ स० ॥ जांसां प्रभुके लार ॥ स० ॥ लेसां संयम भार ॥ आ० ॥ ३ ॥ बा० ॥ म्हे पिण साथे चालसां हे २ ॥ बा० ॥ रैसा थांरी लार ॥ बा० ॥ लेसां संयम भार ॥ बा० ॥ जासां गढ गिरनार ॥ आ० ॥ ४ ॥ बा० ॥ राजीमती संयम लीयो हे २ ॥ स० ॥ कीधो मस्तक लोच ॥ स० ॥ चाली तन संकोच ॥ स० ॥ छोड्या सगळा सोच ॥ आ० ॥ ५ ॥ बा० ॥ मारगमें वर्षा भई हे २॥बा०॥वर्षे मूसल धार॥बा० रहनेमीनें तार ॥ बा० ॥ राम चंदे चरणार॥आ०॥६॥इति॥

४ हांक जिणरो तनें कांई ॥ ए देशी ॥

काळो तो वींद किसी कामरो, भूंडो ही जग लागे रे, हसे बहु लोग लुगाई; हांक जिणरो तनें कांई ॥ १ ॥ काळो मांहे बारे काळो, कपटीनें धूतारो रे; जादवकी जांन लजाई॥ हां०॥ २॥ क्यूं वींद बणीनें तोरण आयो, क्यूं आडंबर लायो रे, गयो फिर शरम न आई ॥ हां० ॥ ३ ॥ परण छोडतो मुश्कल होतो, देतो अधविच गोतो

रे; हूंती तूं दुखणी बाई ॥ हां० ॥ ४ ॥ विन कारण वो करे रूसणों, किम कहिये कंतो श्याणों रे, गयो सुम वैचो वधाई ॥ हां० ॥ ५ ॥ गोरो वींद घणो रूपाळो, जोवो वड भूपाळो रे; मालिक वो रक्खे लुगाई ॥ हां० ॥ ६ ॥ वो नहीं चाहे थे क्यूं चाहो, क्यूं थे लारे जावो रे; रहो थे घरके मांही ॥ हां० ॥ ७ ॥ मुनि राम कहे सती एक न धारे, जावे प्रभुके लारे रे; मिलेगा मुक्तिके मांई ॥ हां० ॥ हांक वंदो शीश नमाई ॥ ८ ॥ इति ॥

५ थारी आकड़ारी झूंपड़ीमें कौन सोवे, हूं तो मेलांमें पोढणवाळी रे वालमा, ओ हो रे वालमा, आयो रे बावो लंगोटियो ॥ ए देशी ॥

थांरी सांवरीसी सूरत देख मोही, मैं तो जोऊं छूं वाट तुमारी रे सांवरा, ओ हो रे सांवरा, आछो तो लागे सांवरियो, प्यारो तो लागे डूंगरियो ॥ १ ॥ थांरे विना मेलांमें कौन रेवे, ए तो कलंक देवे संसारी रे ॥ ॥ सां० ओहो० आछो० प्यारो० ॥ २ ॥ थारी रे सूरतके कुंण जोडे, थारी आख्यां छै कामणगारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे सूंनारे जंगलमें कुंण दौडे, हूं तो चलूंगी लार तुमारी रे ॥ सां० ॥३॥ थारे रूप बराबर कुंण आवे, मोनें सखी संतावे सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे उज्जड रस्ते कुंण जावे, मैं तो मुक्तीमें जावण हारी रे ॥ सां० ॥ ४ ॥ म्हारे नवसर हारनें कुंण पेनें, कुंण पेनें गोटेकी सारी रे ॥ सां० ॥ म्हारे शिरका केश तो कुंण गूंथे, मैं तो लोच करूं सुखकारी रे ॥ सां० ॥५॥ चार महाव्रत शिर पर धारूं, मारूं मैं ममता सारी रे ॥ सां० ॥ संयम ले सती मोक्ष पधारी, मुनि राम जावे बलिहारी रे ॥ सां० ॥ ६ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

वर पायो हे सहीयर वड भागसूं,तोय वखांणी हे तूं भई पूज्य त्रय लोकरी॥टेर॥थारो भाग उदय हुय आयो हे, तें लोक त्रय पति वर पायो है; थारो सुजस जगमें छायो हे, थारे लागे इंद्रांणी पायो हे ॥ व० ॥ १ ॥ तें तो करी तपस्या सरसी हे,ऐसी करी न फेर कोई करसी हे; थारो नाम लीयो दुख टरसी हे,थारा दर्शनसूं जग ठरसी हे ॥ व० ॥ २ ॥ तोनें इंद्र निरखण आयो हे, तोनें इंद्राणी सीस नमायो हे; थारो वींद तोरनपर आयो है, थारो दिन दिन भाग सवायो है ॥ व० ३ ॥ तें तो दान सुपातर करियो हे, थारो सुकृत तरुवर फरियो हे;तें तो धन्य जनम जग धरियो हे, तोरो वींद देखि राम ठरियो हे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ आवो रंजा मिल म्हेल करावां बे, वीचमें रखावां, दोय वारियां ॥ ए देशी ॥

वारियां वारियां वारियां, हां म्हांरो नेम मिले तो वारियां हो ॥ टेर ॥ आवो सखि मिल नेम मनावां बे, वे तो पुरुष आपे नारियां ॥वा०॥ १ ॥ आवो सखि मिल पत्र भेजावां बे,आपां बी चालां ज्यांरी लारियां ॥वा०॥ ॥ २ ॥ आवो सखि मिल संयम धारां बे, चालो चढां गिरनारियां ॥ वा० ॥ ३ ॥ सातसे सखी मिल रस्ते चालो बे, फेर रहनेमीनें सुधारियां ॥ वा० ॥ ४ ॥ राम कहे

सती केवल धार्यौ थे, ज्ञान करी मन मारियां ॥ चा० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥

२ देशी ख्यालनी ॥

चालो बाई जी आपां देखवा, जादूपति आवे है; जादूपति आवे, ओ तो जगत सुहावे बाई, ओपे इंद्र समांन; ऐसो वर कोउ निजर न आयो याई, खुली थांरे सुकृत खांन ॥ चा० ॥ १ ॥ छत्र धरावे ओ तो चमर दुळावे याई, पड़े नगांरारी ठोड़; सूरत प्यारी आ तो मोहनगारी बाई, तपे सूरज ज्यूं मोड़॥ चा०॥ २ ॥ राजी मती कहे हे सहू साचूं बाई, पिण फुरके जीमणो नैंण; होसी उदासी कोई विघन ज धासी बाई, ओ मिले नहीं सुख दैंण ॥ चा० ॥ ३ ॥ तोरण आये ऐ तो मंगल गाये याई, पशुवांनें दीयो अभै दान; जांन लजाई आंतो वात गमाई बाई, भली कीवी भगवांन ॥ चा० ॥ ४ ॥ नेमजी साथे सती संयम लीनो, ओ तो कीनो उत्तम काम; आतम तार्यौ ओ तो काज सुधार्यौ, थांनें वंदे नित नित राम ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥

राग ॥

१ राग मारू ॥

भोजाई व्याव मनावे रे, व्याव मनावे नेमको, बहु घात बनावे रे ॥ भो० ॥ टेर ॥ देवरियो टरतो रहे, जांणे लाटी संतावे रे; लाटी विना किसो लाटलो, वृथा जन्म गमावे रे ॥ भो० ॥ १ ॥ नेम्युवाच ॥ वृथा जनम छै जेहनो, ते धर्म न जांणे है; पाप मूल नारी तजे, जांको जन्म

प्रमांणे है; सयांनी क्यूं झूंठ वखांणे है, झूठ न प्यारो सांइयां, झूठ तौ पनरै ठिकाणे है ॥ स० टेर ॥ २ ॥ पूर्वज परण्यां ताहरा, जे शास्त्रांमें गावे रे; जो परणनमें पाप थो, तो क्यूं मुक्त सिधावे रे ॥ भो० ॥ ३ ॥ पूर्वज परण्या मांहरा, मुक्त भोग प्रमांणे हे; मुक्त गये त्यागन करी, सो शास्त्र वखांणे हे ॥ स० ॥ ४ ॥ देवर नारी परण जो, क्यूं लोक हंसावे रे; व्याव करी त्यागन करो, माईत सुख पावे रे ॥ भो० ॥ ५ ॥ भावज म्हे नहीं परणसां, मो मत ना पिछांणे हे; अभुक्तभोगी संयम ग्रही, राम जासी निरवाणे हे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ राग पूर्ववत् ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ भाई तूं लोक हंसावे रे, तोरनसें फिर जावतां, तोनें लाज न आवे रे ॥ भा०॥ टेर ॥ जो तूं परणे न चावतो, तो क्यूं जांन वणावे रे; म्हांने संग क्यूं लांवणां, सहू वात गमावे रे॥भा०॥१॥भाईजी ऐसो चोज लगावो रे, माडां व्याव मंडावियो, फेर अवगुण गावो रे ॥भा०॥टेर॥कहो कुंण पल्ला पाथरया, मुझ घरहि मंडावो रे; विना मन ग्रामे जाइबो, विना मन परणावो रे ॥भा०॥२॥ जादव जगमें दीपता, जांनी सरमावे रे; अपणी मांग कोई परणतां, नाकी नहीं रहावे रे ॥ भा० ॥ ३ ॥ जांनी शरमावे संजम ग्रहो, मांग चाहे जां जावो रे; म्हांनें जीव वंचावियवा, राम चाहे ज्यूं गावो रे ॥भा०ऐसो०॥४॥

३ राग मांच ॥

नेमजी केम गये छिटकाय, सखी हूं तो नहीं सकूं मूंढो देखाय ॥ प्रभुजी केम०॥ टेर ॥ तीर ज्ञान ले गर्भमें आये,

वाजे त्रिभुवननाथ;वात जिणांसूं नहीं रही छांनी, जांनी लाये बहु साथ; दगावाजीकी वात करी छै, ऐसी जुगोजुग अखियात ॥ ने० ॥ १ ॥ बाईजी आंखे आंसूं मत मूक; नहीं छै तिल भर थांमें चूक ॥ बा० ॥ टेर ॥ ज्ञानी हुय कर वात गमाई, जांनी दिये लजाय; तिल भर बात नहीं गई थांरी, क्यूं सोचो मन मांय; सरमां मरतो गढ गिरनारे, बैठो मूंढो छिपाय ॥ बा० ॥ २ ॥ कोई कैसी आ छै विषकन्या, कोई कैसी अंग हीन; कोई कैसी आ रूप कुरूपा,कोई कैसी नहीं प्रवीन;कोई कैसी आ खुरड़पगी छै, मो सकलंकी कीन ॥ ने०॥ ३ ॥ कूड़ो पिण नहीं कहे विषकन्या, नीच न कहे अंग हीन; अंधो नहीं कहे रूप कुरूपा, अज्ञ न कहे अप्रवीन; कोई खुरड़पगो कहे खुरडपगी छै, सो होसी तेरेतीन ॥ बा० ॥ ४ ॥ आठ भवांमें प्रीत वधाई, नवमे दी छिटकाय; पशुवनके शिर दोष देईनें, तोरणथी फिर जाय; माखी नहीं ओ मुळको मारे, आय वण्यो छै न्याय ॥ ने० ॥ ५ ॥ लगी प्रीत विन अवगुण तोड़े; ते किम महिमा जोग; राजीमती कहे प्रीत न तोड़ूं, सुधारूं पर लोक; मुनि राम कहे धन्य नेम राजुल छै, जाय विराज्या मोख ॥ बा० ॥ ६ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे नेमनाथचरित्रनामकं नवमं प्रकरणम् ॥ ९ ॥

रामचरित–लावणी ॥

१ तुम चलो सखी कछु जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

सहस्र विद्या त्रिखंडको भोक्ता, रावन मनमें गरभा-

यो, सुर नर पाय परे सब मेरे, कुंन मुजसें साम्हो थायो ॥ टेर ॥ १ ॥ सूर देव ओ तपै रसाई, चंद्र आप दीपक थायो; वेमाता मुज दले कोद्रवा, यम राजा पांणी लायो ॥ स० ॥ २ ॥ नव ग्रह खाट तले नित रहते, दुर्गा आरती उतरायो; पवन देव नित महल वुहारे, पार नहीं कोई पायो ॥ स० ॥ ३ ॥ मो सरीखो विरलो होगो, नामथकी जग थर्रायो; कुंण मुज आज अड़े हुय सांमो, किनकी मा अजमो खायो ॥ स० ॥ ४ ॥ अव मुज मनमें ऐसी आवे, वार सदा मुज औ रैसी; केवल ज्ञानी वात न छांनी, पिण निमित्ती कैवे कैसी ॥ स० ॥ ५ ॥ रावनके मन ऐसी भासी, नैमित्तिक तद बुलवायो; रामचंद्र कहे गर्व न कीजो, गर्व न कोई ठहरायो ॥ स० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ वेसर सोनाकी देशी ॥

नगरी रामकी या तो देवता कीधी त्यार ॥ न० ॥ पगे पगे प्रगटे नव निधांन, सुर नर किंकर समांन ॥ न० ॥ १ ॥ जहां जावे जहां होवे आनंद, काटे पराया फंद ॥ न० ॥ ॥ २ ॥ सुवन कोट विराजै ऐन, पुन्यवंत करता चैन ॥ ॥ न० ॥ ३ ॥ रामपुरी नगरीका नाम, यां राज करै श्री-राम ॥ न० ॥ ४ ॥ परम जैनी परम दयाल, गउ ब्राम्हण प्रतिपाल ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

लिछमन मन्न विलक्खियो, लखियो नहीं लिगार ।
पकियो फल पूरो पर्यो, रखियो नहिं रखवार ॥ १ ॥

३ असी रुपीया लो कलदार ॥ ए देशी ॥

कोई नर मरियो शिर धर परियो, करियो लिछमन

हाहाकार; भावीनें कुंण टालणहार, टाळी नहीं टळै लाख प्रकार ॥ टेर ॥ १ ॥ शरीर सुगंधो ते जदि नंदो, चंदो लज्जित हुवै वदन निहार ॥ भा०॥२॥ राज कुमर वर, उत्तम नरवर, दिनकर कर सम तेज अपार ॥ भा०॥३॥ क्यूं इहां आऊं खड्ग उठाऊं, क्यूं वाऊं मैं विना विचार ॥ भा० ॥ ४ ॥ आयो हूं भटक्यो क्यूं इहां अटक्यो, झटक्यो खड्ग मुज लग्यो अनाचार ॥ भा० ॥ ५ ॥ विन अपराध धन विद्या साधन, आराधन करतो लीयो मार ॥ भा० ॥ ६ ॥ इम पिछतावे शीस धुनावे, आवे न पाछो फल तरु डार ॥ भा० ॥ ७ ॥ खड्ग ले वळियो रस्ते चलियो, मळियो रामनें कथूं विचार ॥ भा० ॥ ८ ॥ जिनको खांडो सो नर चांडो, धांडो होसी इनको परिवार ॥ भा० ॥ ९ ॥ सीय कहे देवर वहे धीज तरवर, फर लगेंगे रहो हुसियार ॥ भा० ॥ १० ॥ राम कहे भाई टरै नहीं राई,पिछताई रहै उत्तमआचार ॥भा०॥११॥इति॥

४ देशी वीरानी ॥

वीरा, हूं आई तुज पास हो, वीरा, वर्त्ते भूचर जोरावरी जी; वीरा, शंबूक कुमर विणास हो, वीरा, वीर विराध थयूं अनुचरी जी ॥ १ ॥ वीरा, मुज वल बलिया दोय हो, वीरा, निशचरसूं बंधु एक लड़े जी; वीरा, हूं रही दुखणी रोय हो, वीरा, रखे मुज खूंणे बैसण पड़े जी ॥ २ ॥ वीरा, तीजी नारी जारे संग हो, वीरा, इंद्राणी रूप वांछा करे जी; वीरा, देखी जिणरो अंग हो, वीरा, रति पिण गर्व नवि धरे जी ॥ ३ ॥ वीरा,नाक सूवेकी चांच हो, वीरा, मुख पूनम चंद सारिखो जी; वीरा, पीन पयोधर साच हो, वीरा, कटी तटी केसरी

पारखो जी ॥ ४ ॥ वीरा, नख चख वर्णवे कौन हो, वीरा, त्रिया त्रिलोकी जोई ना मळे जी; वीरा, फरसी सुगंध होय पौन हो, वीरा, नारी अद्वितीया भूतले जी ॥५॥ वीरा, काग गळे नोळी जांण हो, वीरा, थांरे जोडे ए फावही जी; वीरा, थांरी त्रिखंडमें आंण हो, वीरा, इण विन राज न फावही जी ॥ ६ ॥ वीरा, वैर भांणेजको लेण हो, वीरा कैवा आई छूं भाजने जी; वीरा, कुंण देवेला रैण हो, वीरा, कुंण देसी करवा राजनें जी ॥ ७ ॥ बेनड, जावो पयाळे लंक हो, बेनड, स्यो गावे रंक कंगालनें जी; बेनड, रैजो मन निःशंक हो, बेनड़,तुं जांणे नहीं मुज चालनें जी ॥८॥वीरा, लाख वातको सार हो, वीरा, राम मुनि साची कहे जी; वीरा, जावे पुन्य परवार हो, वीरा, जो काची वातनें सरद है जी ॥ ९ ॥ इति ॥

५ सिलोको ॥

सुणजो महाराजा वचन हमारो, भलोचावांछां राज तुमारो;वेना तट पासे मोटो एक ग्राम, विनेदत व्यौपारी व‍ेे तिण ठाम; तिणरे तो घरमें सुंदर नारी, रूप अनोपम नहीं कोई पारी॥ १ ॥ वौपार मांड्यो पल्लिपत साथे, दूणा तिगुणा वधे हाथो जी हाथे; वरजे सजन तो ते नहीं मांनें, आवे जावे ने खावे जी छांनें; इण पर करतां बीता बहुमास, पूंजी तो रही चौरा जी पास ॥ २ ॥ पल्लिपत बोले सुणजो प्रकासां, देसां मिजमांनि दांम चुकासां; करने विभूषा आजो नारीनें लीधां; तिमहीज हुवो पालतां विदा; आव्यो पल्लिमें चोरां विचार्यो, लीधी नारी ने उणनें जी मार्यो; उणरी रीते तो वाद न कीजे, आले माटेमें केम मरीजे ॥ ३ ॥

दोहा ॥

पछि समांणी लंक है, पछिपत रांवण जांण।
नार समांणी सीत है, राज हो वणिक समांण॥१॥
रावण नाम डरावणो, लड़ता न रहै लाज।
तिण कारण सीतातणी, गई करो महाराज॥२॥
लिछमण सुणनें कोपियो, बोले मूंछ मरोड़।
लावां वेगी सीतनें, दश मस्तक शिर तोड़॥३॥

सुणनें तो लिछमण सिंघ ज्यूं गूंज्यो, विद्याधरांनो हीयो ज धूज्यो; सुणजो विद्याधर वात हमारी, सुणनें तो चुपका जोवे एकतारी; नगर कुसुमपुर धनो बोपारी, ताके तो जमुना सुंदर प्यारी; पांच पुत्रांमें नहीं एक कमाऊ, तनमें तो रोग अपमांनें जांऊं ॥ ४ ॥ अटवीमें मिलियो पुरुष जी सिद्ध, कृपा करीने लोहकड़ो दिद्ध; इणसूं तो रोग मोटका जावे, लेई कड़ो ने. रोग गमावे; चलियो तो आयो निज पुर धार, मुई नृप कन्या हुवो हाहाकार; नागनो जहर गयो कड़ानी करणी, नृप हुकमसूं कन्या जी परणी; मात पिता सहु मिलिया हुलासे, सुख भोगवे लील विलासे ॥ ५ ॥ एक दिन मंजन नदीं तट आयो, वड़ विकट ने पांनां जी छायो; तिणमें तो रैवे गोह जलांठी, कड़ो अंबरमें लेईनें नाठी; वडतां तो दीठी आतमसेण, सगळा सुभट नहीं कडो जी लेण; आतमसेण तो कीधो उपायो, नांखि लकड ने गडनें फूंफायो; गोह मारीनें कडो जी लीधो, आतमसेणरो कारज सिद्धो; मनमें हरख्यो ज्यूं अमृत पीधो, एह [illegible] कीधो ॥ ६ ॥ इति ॥

दोहा ॥

मोह रावण सीता कह्यो, आतमसेण सु रांम ।
लंका गढ़ वड चूरकै, लिये रत्न बहु दांम ॥ १ ॥
नभचर अति विस्मय भये, सुन लिछमनकी वात ।
कही अनोपम तुम कथा, महा सुभट अवदात ॥ २ ॥
एह भूंचर अति जोर है, नहीं किसीके हात ।
कोटिशिलाकी वात कहो, ज्यूं संशय मिट जात ॥३॥
श्री मुनिवर परमारथे, वोले वचन रसाल ।
कठिन व्यर्थ वदे न कदि, ऐसे दीनदयाल ॥ ४ ॥
अयन मुनी यक्षदत्तनें, माता याद कराय ।
तार्यौ भव भय सिंधुथी, नहींतर डूवो जाय ॥ ५ ॥

५ लशकरियानी देशी ॥

सव सुनिये लिछमन, कहे हो नरवरजी, एक क्रौंचपुरी अभिधान, सुणिये वारता हो नरवरजी, यक्ष नृप राणी राजिला हो ॥ न० ॥ यक्षदत्त कुमर प्रधान ॥ सु० ॥ १ ॥ पुर वाहिर एक कुटीरिका हो ॥ न० ॥ ज्यां सुंदर देखी नार ॥ सु० ॥ काम वाण पीडित भयो हो ॥ न० ॥ यक्षदत्त नाम कुमार ॥ सु० ॥ २ ॥ निशिभर आयो एकलो हो ॥ न० ॥ तव अयन नाम मुनिंद ॥ सु० ॥ मा कही टोक्यो कुमरनें हो ॥ न० ॥ तव कोप्यो जांणे फुणेंद ॥ सु० ॥ ३ ॥ विजुरी चमके ओळख्या हो ॥ न० ॥ मा किम कह्यो मुणंद ॥ सु० ॥ इण भव जननी ताहरी हो ॥ न० ॥ जिण देख तूं थयुं कामंद ॥ सु० ॥ ४ ॥ निशि भर यदि नवि बोलणो हो ॥ न० ॥ तदपि देख्यूं अकाज ॥ सु० ॥ इण भव जननी किम भई हो ॥ न० ॥ थे सहु भाखो मुनि राज ॥ सु० ॥ ५ ॥

दोहा ॥

आगम ज्ञानी मुनि वदे, सुण तूं राज कुमार।
इण भवनी या मात है, शील शिरोमन नार ॥ १ ॥

ढाळ ॥

७ तो पर मुगल मया करे ॥ ए देशी ॥

अमृतकावती नगरी भली, कांई वणिक हो एक कनक उदार; बंधुदत्त पुत्र ज दीप तो, मित्रवती हो ए शीलवंती नार; सुणजो जी वात सुहामणी ॥ १ ॥ गोप्य आधान पति नवि धरे, सासू सुसरो हो जांणी माठी नार घर बारे काढी परी, उत्पलिका हो एक दासी लार ॥ सु० ॥ इण क्रौंचपुरे लतादत्त पिता, पीर आवै हो इण सैर उद्यान; दासी मुई नंदन थयुं, सर तीरे हो गई करण सीनान ॥ सु० ॥ ३ ॥ रत्न कंबली सुत वींटियो, लेई नाठो हो एक श्वान तिवार, काढू छुडाय नृप सूंपियो, सो तूं भयो हो यक्षदत्त कुमार ॥ सु० ॥ वस्त्र परवाल जननी थारी नहीं, देखे हो तुज कीध विलाप; देव पूजा रे दया करी, इण कुटीये हो रखी भगनी थाप ॥ सु० ॥ ५ ॥ लज्जा करी नहीं पितु घरे, आई हो रहै कुटीये मझार; मैं वर्ज्यो इण कारणे, तूं पूछी हो करजे निरधार ॥ सु० ॥ ६ ॥ रत्न कंबली खंड देखियो, सुणीयो हो सहू धर विरतंत; माता निज मानी खरी, मुनि मांन्यो हो उपगार अनंत ॥ सु० ॥ ७ ॥

दोहा ॥

कहे लिछमण सुग्रीव तूं, मानें मो उपगार।
वचन गयो जिण पुरुपनो, धिक्क धिक्क तास जमार ॥ १ ॥

विद्याधर कहे क्षुद्र जिम, मयूर पत्र हठ कीन ।
मूढ थई चूको भला, आप सदा परवीन ॥ २ ॥

ढाळ ॥

८ आंगण वाऊं एळची रे ॥ ए देशी ॥

वेणा तट एक ग्राम छे रे, सर्वरुची ग्रही नाम; स्वामी सुणजो विनयदत्त नामें, भलो रे पुत्रको धाम ॥ स्वा० ॥ १ ॥ विशाल भूपति कुमित्र छे रे, थयूं लुब्ध विनयदत्त नार ॥ स्वा० ॥ स्त्रीकेणे वन ले गयो रे, बांध्यूं एक वृच्छनी डार ॥ स्वा० ॥ २ ॥ मिथ्या उत्तर देते रहे रे, स्त्री कहे कीयो भल काम ॥ स्वा० ॥ क्षुद्र नाम एक मारगू रे, लीयो जिण तरु विश्राम ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ विनयदत्तकूं दया करी रे, खोली कीयो उपगार ॥ स्वा० ॥ क्षुद्रभणी घर लावियो रे, घरमांहे द्रव्य अपार ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ विशालभूति नासीगयो रे, क्षुद्रकों रक्खे करि प्राण ॥ स्वा० ॥ क्षुद्रनो मयूर छे पत्रनो रे, क्रीडा करै परम कल्याण ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ पवनथी उड नृप महिलमें रे, पड्यो लीयो राज कुमार ॥ स्वा० ॥ क्षुद्रभणे मयूरदत्तनें रे, मयूर देकर प्रति उपकार ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ विनयदत्त कहे मित्रजी रे, रत्नांरो कराद्यूं मोर ॥ स्वा० ॥ अथवा साचेलो लायद्यूं रे, गयो नावे विषमी ठोर ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ रत्नांको ल्यूं न साचलो रे, लेऊं तो सागे ही मोर ॥ स्वा० ॥ मैं उपगार मोटो कीयो रे, तूं थयो गुणनो चोर ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ जांबवान कहे सुणो स्वामजी रे, वो तो चूको मूढ गिवाँर ॥ स्वा० ॥ आप नरोत्तम हट किम करो रे, परणो राज कुमार ॥ स्वा० ॥ ९ ॥

दोहा ॥

लिछमण सुण कोप्यो अधिक, सुणो विद्याधर साथ।
सीतानें किम छोडसां, भली कही तुम वात ॥ १ ॥

९ देशी कुंजेनी।

मंदोदरी वाक्य ॥

मत करो हठ शठ जेम रे, हो, सुन प्रानपति जी ॥ म० ॥ १ ॥ ए पिछतावो पछे मारसी रे, नवि सूझै, नहीं सूझै कहूं छूं हित भणी रे ॥ न० ॥ २ ॥ छोडो सीतासूं प्रेम रे ॥ सु० ॥ नहीं पतिपणे तुज धारसी रे; क्यूं तांणो; तांणो नहीं तो हुवे भली रे ॥ क्यूं० ॥ १ ॥ अपकीरत जगमांय रे ॥ सु० ॥ पर भव नहीं सुधरे जरा रे, दिष्ट जोवो; जोवो विचारी ज्ञानसूं रे २; ए छै बळती लाय रे ॥ सु० ॥ शीघ्र निकाळो सुख पावसो रे, सहू विगड्या २, राम सुर नर मानसूं रे ॥ ३ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१० सीता वाक्य ॥

हूं तोनें नहीं पिछांणूं रे वीरा, तूं छै अमोलक हीरा ॥ हूं० ॥ टेर ॥ लघु वय धारी सूरत प्यारी, बलधारी तूं धीरा ॥ हूं० ॥ १ ॥ कुंण तुज मात तात कुंण जात, किम आयो लंघी नीरा ॥ हूं० ॥ २ ॥ दुर्लंघ लंक मांय किम आव्यो, नहीं आई तुझ तन पीरा ॥ हूं० ॥ ३ ॥ अंजन मात पवन जय तात, हनुमत नाम हमीरा ॥ हूं० ॥ ४ ॥ हूं चाकर छूं सुग्रीवजीनो, श्रीराम ठाकुर सधीरा ॥ हूं० ॥ ५ ॥ राम लिछमनके तेज प्रतापे, हूं आयो लंघी नीरा ॥ हूं ॥ ६ ॥ असालिका विद्या तोड़ दीधी है, जैसे जीरण लीरा ॥ हूं० ॥ ७ ॥ इति ॥

दोहा ॥

सीतानें समझायवा, प्रगट थयो तिण ठाम ।
हूं लायो छूं मुद्रिका, हणुमत म्हारो नाम ॥ १ ॥
आवत देखी मंदोदरी, छिपियो विद्या प्रभाव ।
देख्यांसूं बोले वचन, करस्यूं पछे जताव ॥ २ ॥
सुन सीता मुज वातडी, तो सम नहीं जग नार ।
राजा रावण भोगवो, सफल करो अवतार ॥ ३ ॥
प्रगटाणो निजरूपसूं, देखी हणुमत नैण ।
मंदोदरी पुलकित कहै, कठीन कडवा वैण ॥ ४ ॥

११ ढाळ ॥

मंदोदरी वाक्य–मंदोदरी कहे सुणो जमाई, या क्या भूंडी कीधी; सायरसूं तोडी बेकाजे, भली गलेमें लीधी; म्हांने भूंडो लागे जी, रंकतणी तो सेवा करतां, भूख न भागे जी ॥ १ ॥ सहु राजांमें कीयो शिरोमनि, कांई विगाड्यो मैं तो; म्हांनें छोडी भूंचर सेवे; दूतपणेमें रेतो ॥ म्हा० ॥ २ ॥ नीच काम तो दूतपणाको, करतां लाज न आवे; सात पीडीने कलंक लगावे, थां सम पूत ज थावे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ हणुमत बोले सुणो सासूजी, म्हे तो आछो कीधो;छोड अन्याई न्याई झेल्या,राघव शरणो लीधो; म्हे तो साचूं बोल्याजी, झूठतणो पखपात तजीनें, श्रीरामनें झेल्याजी ॥ ४ ॥ दूतपणो करतां स्यूं म्हैणी, भड़वापणे छै म्हैणी; तुज भड़वी कहूं कै कहूं तुज दूती, देख लीवी तुज रैणी ॥ म्हे० ॥५॥ थांसरीखी नीच जगतमें, दूजी नहीं कोई होसी; पति लंपट घरनारी दूती, तुज पति बहुलो रोसी ॥ म्हे० ॥ ६ ॥ राम कहे इस हण

मंत बोले, राम भक्ति संग रातो; सासू कड़वा वैण सुणीनें, मनमें हुय गयो तातो ॥ म्हे० ॥ ७ ॥ इति ॥

लावणी ॥

कहे मंदोदरी वात नाथ मुज मांनो ॥ ना० ॥ छोडो सीताकी गैल आधी मत तांनो, रघुवरको महातेज जगत नहीं छांनो ॥ ज० ॥ घर फूटो महाराज भाई लीयो कांनो; नौकर सव इन ठौर दौर गये भाजी ॥दो०॥ दिन वदले महाराज लड़त है पाजी; तुमकूं को सिखवत्त नहीं कोइ स्यांनो ॥ व० ॥ १ ॥ कुंन जांनी हस्त प्रहस्त सबी घट जासी ॥ स० ॥ कुंन जांनी रन वीच राक्षस हट जासी; कुंन जांनी जंबूमाली नंद कट जासी ॥ नं० ॥ कुंन जांनी सुग्रीव आदि छुट जासी, कुंन जांनी कपि रींछ जंगे अड जासी ॥ जं० ॥ कुंन जांनी गढ़ लंक वंक धुड जासी;अठा आगे क्या होसी जांने भगवांनो॥जां० क० ॥२॥ कुंन जानी थी शक्ति खालि चल जासी ॥खा० कुंन जांनी इंद्रजीत जोधा बंध जासी; कुंन जांनी लिछमन वीर सहस परणेसी ॥ स० ॥ कुंन जांनी वैरी फोज घेरो आय देसी,नंदन बंधन बीच देवर पिण जांनो ॥दे०॥ राम मुनी कह वातनाथ मत तांनो; कोई कहैसी ऐसी वात नहीं थो दांनो ॥ न० क० ॥ ३ ॥ इति॥

१३ हो पिउ पंखीडा ॥ ए देशी॥

हो पिउ मतवाला, हजेयन समजो कांय जो, भाई अरु नंदन सगला बांधिया रे लो ॥हो०॥ सहू थाका समझाय जो,शक्ति रे पर मुख शस्त्र शर नहीं संधिया रे लो ॥१ ॥ हो० ॥ पवन देव गयो आज जो, धूवां फूंका पिण

कीधा हमे हाथसूं रे लो॥हो०॥दुरगा पिण गई भाज जो, आरती पिण नहीं हुई छै आज प्रभातसूं रे लो०॥२॥हो० सूर देव गयो रूठ जो, बेमाता पिण कोद्रव आज नां दले रे लो ॥ हो० ॥ पुनां पिण दीवी पूठ जो, दिन दिन निज दल राम अरि दलसें मिले रे लो ॥ ३ ॥ इति ॥

१४ गैरो जी फूल गुलाबरो ॥ ए देशी ॥

थे मांनो जी सीख सुहामणी,थे तो मांनो मांनो नंणदीरा वीरा,म्हारा साहिवा,मैं निरखी परखी एक वातमें; शील रखनें रखे शरीरा ॥ म्हा० थे०॥ टेर ॥ ए रामचंद्रकी भारजा, आ तो सतियांमें सिरताज ॥ म्हा० ॥ केवली आगू भावियो, कांई भूल गया महाराज ॥ म्हा० थे०॥१ थे जानकी लाया घर जान की,आ तो प्रांनकी लेवणहारा ॥ म्हा० ॥ क्यूं सूंपोनी पाछी एहनें, सहू वरते मंगलाचारा ॥ म्हा० ॥ २ ॥ आ पिण निश्चय होय रही, नहीं मांने वचन तुमारा ॥ म्हा० ॥ भाई बंधव सब बदलिया, कुल मैणी देवे संसारा ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ कुमी नहीं किण वातरी, थांरे नारी सहस अठारा ॥ म्हा० ॥ वळी जोवोनी वखत विचारनें, रही थोडीसी घणी गई लारा ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ एक हणुमंत दूत आयनें, करयूं लंका मध्य हाहाकारा ॥ म्हा० ॥ खर दूषण हण वस गया, हण्या राक्षस चवदे हजारा ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ स्वप्न हुवो एक रातरो, मैं तो शिर धड देख्या तुम न्यारा ॥ म्हा०॥ क्यूं समजोनी इण वातमें, मैं तो कहि कहिनें सब हारया ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ हठीला हठनें छोडिये, थांने साच वचन लागे खारा ॥ म्हा० ॥ मुनि राम कहे स्यो भाखीये, कुंण टाळे होवणहारा ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ इति ॥

१५ हां सगीजीनें पेड़ा भावे ॥ ए देशी ॥

थे किम भूला राजवी, आ घर जावणकी वात; मंदोदरी यूं समजावे, मनमें सोचो साहिवा, वो गृध्र लडियो तुम साथ ॥ मं० ॥ हां पतिनें यूं समजावे ॥ टेर ॥ १ ॥ वा नहीं वांछे साहिवा, थे किम खोवो राज ॥ मं० ॥ वंदर राजा वदलियो, और रघुवर आयो गाज ॥ मं० हां० ॥ २ ॥ पद प्रणमीनें वीनऊं, आप स्यूं कीयो सीता लाय ॥ मं० ॥ करणी देखी दूतकी, सव लंका दीवी धुजाय ॥ मं० हां ॥ ३ ॥ अव राम आये चमू लेईनें, सो करसी कौन हवाल ॥ मं० ॥ सीता लीये विन ना फिरे, कुंण छोडे अपणी नार ॥ मं० म्हां० ॥ ४ ॥ शीत निशा सम जानकी, और तव कुल कमल विनास ॥ मं० ॥ निज सचिव संग देईनें, आ मेलो रघुवर पास ॥ मं० म्हां० ॥ ५ ॥ राम वाण अहिगण सारिखा, निकर निशाचर भेक ॥ मं० ॥ जां लग ग्रसत न तां लगे, जतन करो तज टेक ॥ मं० म्हां० ॥ ६ ॥ हस कर रावण वोलियो, सत्य डरकण नारी जात ॥ मं० ॥ त्रिलोक डरे ताकी त्रिया, क्यूं निडर न रहै दिन रात ॥ मं० म्हां० ॥ ७ ॥ दिन फिरियो रावणतणो, सो अमृत पीये नाय ॥ मं० ॥ राम दिवस छै एहवो, मनु मट्टी सोवन थाय ॥ मं० म्हां० ॥ ८ ॥ इति ॥

१६ सुंदर क्या नैंनां झगकावे ॥ ए देशी ॥

अव हूं नहीं रहूं रे अटक्यो, म्हारो मन लागो लिछमनसूं ॥ अ० ॥ १ ॥ क्या जानी थी क्या हुय आई, धंधव धरा पटक्यो ॥ अ० ॥ २ ॥ सीया हूतो दुश्मन घर वैठी, धिक् धिक् जीवत घटक्यो ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुज संगे मुज

बंधव निकस्यो, मुज संगे वनमें भटक्यो ॥ अ० ॥४॥जाओ जावो रे भीर सब छारो, बांह बल मोरो घटग्यो॥अ०॥५॥ राम बंधवनो होत है विरहो, फिट हीया तूं नहीं फटग्यो ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

१७ लावणी ॥

नहीं मांन्यो विभीषण बोल, हिवे पिछतायो ॥ हि०॥ सतीभणी दीयो दुःख हाथ नहीं आयो; भाई बेटा बंधवाय घरे हूं आयो ॥ घ० ॥ मुजलगि कुमतकी संग यूंही भरमायो; मैं कीयो नहीं जिन धर्म कर्म बंधवायो ॥ क० न० ॥ लंकासो मुज राज काज नहीं सुधरयो ॥ का० ॥ गुरु ज्ञानीका वचन जानत हूं विसरयो;निमित्तीको बोल अमोल जावे किम खाली ॥ जा० ॥ सहू संपतको खोय आपदा घाली; आंख मींच होय अंध सती हर लायो ॥ स० न० ॥ २ ॥ अब आवे न पाछी बात हालसें खोई ॥ हा० ॥ म्हां जैसो महानीच भयो नहीं कोई; मंदोदरीको सुपन साच दरसावे ॥ सा० ॥ इण पर रावण राय बहो पिछतावे; सूर्पणखा मुज बैन मुजे भरमायो ॥ मु० न० ॥ ३ ॥ कछू न विगरयो हाल सीता जो सौंपूं॥सी०॥ सब सुधरे मनका काज झंड जस रोपूं; घाल विमानके मांहि सैन्यके बारे ॥ सै० ॥ सती जावे रामके पास हुवे जस सारे; रावण एम विमास सती संग आयो ॥ स० न० ॥ ४ ॥ हे सीता चल लार रामनें देऊं ॥ रा० ॥ अब अळ्यो वचन मुखमांय तुझे नहीं केऊं; इम कही सीता लेइ गयो दिल गाढे ॥ ग० ॥ पिण सूर्पणखा तो वैर पूर्व तो काढे; मुनि राम कहे संग नीच तणी दुखदायो ॥ त० न० ॥ ५ ॥ इति ॥

दोहा ॥

रूप धरी मोह पुत्रको, आय धसी दरीमांय ।
रोवे पीटे आरडे, सुणियो रावण राय ॥ १ ॥
रावण आयो गिरि गुहा, देखे मांहे बाल ।
क्यूं रोवे आक्रंद करे, कहिये थारो व्हाल ॥ २ ॥

१८ किण मारयो मारो मोर वताय पापी किण मारयो ॥ ए देशी ॥

किम धारयो विन पोंछ, मुजे प्यारा, रे मुजे प्यारा, किम धारयो रे; तीन लोक अवलोक करीनें, मैं तो चरण ग्रह्या थारा रे ॥ ग्र० कि० ॥ १ ॥ मोह महीपत तात ह-मारो, मो मांनभणी जाणेसारा ॥ जा० कि० ॥ २ ॥ मु-जकूं राखण विरला जगमें, मोय छांडिसे जाते है जम-वारा रे ॥ ज० कि० ॥ ३ ॥ तुम जैसा जो मुजकूं छोडे, तो कैतव करसी जग न्यारा रे ॥ ज० कि० ॥ ४ ॥ राम कहे होतव छै वलियो, कोइ न पाई सक्यो पारा रे ॥स० कि० ॥ ५ ॥ इति ॥

१९ लावणी ॥

बिभीषणकी वात सुणो वड भाई ॥ सु० ॥ श्रीराम-थकी करो मेळ वखत ए आई ॥ टेर ॥ तोनें देख कपटकी वात मरन सुख दीयों म० ॥ अपनो मरन बचांय तुजे सुख कीयों, तूं भाई मापेट पुत्रसें प्यारो ॥ पु० ॥ जिनसूं लेऊं वुलाय भलो चहुं थारो, घर हांण हुवे जग हास्य समज नहीं पाई ॥ स० व० ॥ १ ॥ जरा न जिसके कपट वडे बुधवंता ॥ व० ॥ देखो जी जिस-का तेज देखो बलवंता; रूप अनोपम क्रांति देखो दुर्दंता

॥ दे० ॥ देखो जी जिसकी चाल देखो पुन्यवंता; जरा न जिसके झूठ बडे है न्याई ॥ व० व० ॥ २ ॥ श्रीराम दयाल कृपाल शाल दुश्मनका ॥ शा० ॥ कुंन झेले महाराज जोर लिछमनका; म्हे चढसां महाराज मुझे फुरमायो ॥ मु० ॥ पिण हट कर अरज मनाय मिलण मिस आयो; हस्त प्रहस्तादि योध कटे छिनमांई ॥ क० व० ॥ ॥ ३ ॥ धररर धरा धसकाय पाय जब धरसी ॥ पा० ॥ सररर चलसी बांण बहोत नर मरसी; अररर करसी लोक एक नहीं अरसी ॥ ए० ॥ थररर हीयो थरांय कायर पाय परसी; ऐसे लिछमनका जंग होसे रन मांई ॥ हो० व० ॥ ४ ॥ मैं हितकी बोलूं वात इसीमें सोचो ॥ इ० ॥ माथे पडियो पेच वखत है पोचो; भामंडल सुग्रीव बंधे थे पासे ॥ बं० ॥ छिनमें छूटा तेह हजे नवि मासे; उलटी पडे सब वात सीता जब आई ॥ सी० व० ॥ ५ ॥ गरुडाधिप सुर आय साय थयो भारी ॥ सा० ॥ दीधी अमोलक चीज उभो फुन त्यारी; दोय बंधव शुद्ध रीति दीसे अवतारी ॥ दी० ॥ पर रमणीके बंधु बडे उपगारी; अजे न विगडी वात देवो फुरमाई ॥ दे० व० ॥ ॥ ६ ॥ कर विसटाळो वात ठिकांणे लाऊं ॥ ठि० ॥ आप सर्व वातका जांण कांई समजाऊं; अबके विगरी वात लगे नहीं कारी ॥ ल० ॥ सो वातांकी वात मांनो ए म्हारी; रत्नश्रवाजी तात केकसी माई ॥ के० व० ॥ ७ ॥ तरक भरक लाय रीस पीस दांतांनें ॥ पी० ॥ तैं लंकनें धोयो मुक्ख, खबर है म्हांने; पिण देख जमिनके छेह काढ सारांनें ॥ का० ॥ वनवासीकूं मार सेऊं सीतानें; मुनि राम कहै सत्य वात टरे किम आई ॥ ट० व० ॥ ८ ॥

अन उचित कर वात फते कुंन पाई ॥ फ० ॥ उचित करत विमास जगत जस धाई; उगणीसे दोय तीस फलोधि चउमासे ॥ फ० ॥ शुद्ध तेरस बुधवार आसोजके मासे; करो मुनी चउमास फलोधि सुखदाई ॥ फ० व० ॥ ९ ॥ इति ॥

२० लावनी

तुम चलो सखी कछु जेज न करिये ॥ ए देशी ॥

विभीषनकी अरज सुनीजे, वखत नहीं है आनेकी; सीता दीजे ढील न कीजे, वात नहीं है छांनेकी ॥ व० ॥ शक्ती गई गई वहु विद्या, सुत बंधु बंधवांनेकी; पाँच नहीं भई सव जगकेसी, मैणी देसी नृप रानेकी ॥ व० ॥ २ ॥ राज्यधानी सव रानी हारी, नहीं मांनी कोई दानेकी; चक्र गये तुज दुश्मन हाथे, वखत आई जिय जांनेकी ॥ व० ॥ ३ ॥ वार वार ए अर्जी साहिव, किम रहे वस्तु विरांनेकी; सीता सूंपूं वनी सव रक्खूं, रजा देवो पहुंचानेकी ॥ व० ॥ ४ ॥ हूं चाकर तूं ठाकर मेरो, मोज करो लंक थांनेकी; श्रीरघुवर भाखे नेक कहे छे, वखत नहीं छे तांनेकी ॥ व० ॥ ५ ॥ गुन्हो माफ कीयो सव तोनुं, मत चूको अवसानेकी; लिछमन भाखे ओछ न राखे, राम, कहे परमानेकी ॥ व० ॥ ६ ॥ इति ॥

२१ देशी ख्यालनी ॥

गढ लंका मांयनें, आई रे असवारी राजा रामकी; राम लिछमन तो दीपे अधिका, हाथी होदे बैठा; सारा लोक लुगाई देखे, नगरी मांहे पैठा; दरवाजामें धङ्ता ऊंचा, मोती लूंवक दीठा रे ॥ ग० ॥ १ ॥ सवा मणको

मोती सोभे,बाजू सोभे और;रामचंद्रजी दिलमें सोचे,इसो न दूजी ठोड़; अजोध्यामें सोभे ओ तो,लेवां इसीकूं तोड़ जी ॥ ग० ॥ २ ॥ मनोगत भाव जाण्या कविवरनें, बोले समस्या बोल; वसी चीजकूं वंछै न उत्तम, या क्या और अमोल; एक एकसें अधिकाधिक है, देखो आगली पोलजी ॥ ग० ॥ ३ ॥ सुनकर राम विचारे दिलमें, साच कहे छै एह; ए सब चीज विरानी इनसें, भूल न करना नेह; अजबतरेकी वस्तू देखत, कहतां न आवे छेह जी ॥ ग० ॥ ४ ॥ लोकतणे मुख शोभा सुनते, सीता पास पधारे; सीता देखनकी अभिलाषा, सो जांणे किरतार; पग पग लाखपसाव ज देते, इन पर राम पधारे जी ॥ ग० ॥ ५॥

२२ विभीषण प्रति भामंडल वाक्य ॥

दोहा ॥

पर शोच् तज निज काज कर, ज्यूं सुधरे जमवार ।
अरिंदम नृपनी सुन कथा, समझो सहु नर नार॥१॥

ढाळ ॥

लश्करियानी देशी.

अक्षपुर नामा एक पुरी हो, राजेंद्रजी, जां अरिंदम नामे राय; सुणिये वारता हो,राजेंद्रजी,एक दिन काहूक तर्फसें हो, राजेंद्रजी, आयो अचिंतित अश्व दवाय॥सु॥१॥ रानी शृंगार त्यारी महलकी हो, ॥ रा०॥ तव पूछे रानीनें नरेंद्र ॥ सु० ॥ मुज आगम किम जाणियो हो ॥ रा० ॥ जव रांनी कहे कह्यो मुनींद्र ॥ सु० ॥ कीर्तिधर नामे मुनी हो ॥ रा० ॥ आज आये आहारके काज ॥ सु० ॥ तिनकूं हम पूछ्या इसें हो ॥ रा० ॥ कब आसी कहो

नरराज ॥ सु० ॥३॥ आज अचानक आवसी हो ॥ रा०॥ तातें जांणूंछूं महीपाल ॥ सु० ॥ नृप सुणी मुनि पैं गयो हो ॥ रा० ॥ पूछै ईर्खा धर कर ख्याल ॥ सु० ॥ ४ ॥ हे मुनि तुमकूं ज्ञान छै हो, मुनिवरजी, मुज दिल क्या छै वात ॥ सु० ॥ मैं कब मरूंगा तुज दिले हो ॥ रा० ॥ सो सातमे दिन वज्रपात ॥ सु० ॥ ५ ॥ मर कीटक होगा विष्टा विषै हो ॥ रा० ॥ सुण अरिंदम निज घर जाय ॥ सु० ॥ प्रीति कर निज कुमरनें हो ॥ रा० ॥ दीयो वृत्तांत सुणाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ विष्टा घर कीट कहूंगा हो ॥ रा०॥ वळे स्थूल इसें रंग रूप ॥ सु० ॥ सो तूं मुजनें मारजे हो ॥ रा० ॥ इम बोले कुमरनें भूप ॥ सु० ॥ ७ ॥ सप्तमे दिन कीडा भया हो ॥ रा० ॥ जब मारण गयो कुमार॥सु०॥ कीडो धस्यो विष्टा मध्ये हो ॥ रा० ॥ तब पूछ्यो मुनिनें विचार ॥ सु० ॥ ८ ॥ मुनिवर कहे तूं मति हणे हो ॥ रा० ॥ सब जीवनें जीतब प्यार ॥ सु० ॥ जिण गतिमें जावे जीवडो हो ॥ रा० ॥ तिण गतिमें करै विहार ॥ सु० ॥ ९ ॥ प्रीति कर संयम लीयो हो ॥ रा० ॥ कहे भामंडल अधिकार ॥ सु० ॥ विभीषण सुण समझियो हो ॥ रा० ॥ छै निपट कचो संसार ॥ सु० ॥ १० ॥ एह कथामें समजसी हो॥ रा०॥ ते पुरुषोत्तम नर देह ॥सु०॥ रामचंद्र मुनिवर भणे हो ॥ रा० ॥ कह्युं पद्मपुराणसूं एह ॥ सु ॥ ११ ॥ इति रावण मरणसमये विभीषणमरण निवृत्त्यर्थं भामंडलकथानकम् ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे रामचरित्रनामकं दशमं प्रकरणम् ॥ १० ॥

ढाळ सागर ॥

दोहा ॥

कंस घरे वधावणा, हुवे घणा गहघाट ।
कुमी नहीं किण वातरी, लाग रह्या छे थाट ॥ १ ॥
जीवयशाके दिल बहू, गर्वही किधूं प्रवेश ।
गीत गावे मिल गोरड़ी, पहिरी नवला वेश ॥ २ ॥
तिण समै चले आवियो, ऐमंतो ऋषिराय ।
जीवजसा मद मस्त हुइ, इण पर बोली वाय ॥ ३ ॥

१ ढंढणकरी देशी ॥

देवरजी भल आविया हूं, वारी, इण अंवसरके मांय हो; देवर, थे तो म्हांने लजाविया हूं, वारी, थे लीयो माथो मूंडाय हो ॥ दे०॥ जीवजसा हासो कीयो हूं, वारी ॥ १ ॥ थे घर घर टुकड़ा मांगता ॥ हूं० ॥ थे लाजो नहीं तिलमात हो ॥ दे० ॥ थांरा भाईनी देखो साहिवी ॥ हूं० ॥ छै कोड़ां नरनानाथ हो ॥ दे० जी० ॥ २ ॥ देखो पुन्याई एक ताहरी ॥ हूं० ॥ थांनें देख्यां आवे म्हांने लाज हो ॥ दे० ॥ आवो उरा म्हांरा राजमें ॥ हूं० ॥ तो सुधरे थांरा काज हो ॥ दे० जी० ॥ ३ ॥ नणदी बाईनो व्याह छै ॥ हूं० ॥ मण लक्ष पिस्ता दीया भांग हो ॥दे०॥ और वस्तुको लेखो नहीं, जिणमें भूंडो दीसे थांरो सांग हो ॥ दे० ॥ ४ ॥ गीत गावो तो आवो पातमें ॥ हूं० ॥ कूडा मा भाखो निमित्त हो ॥दे०॥ क्यूं भिड़कावो भोळा लोकनें ॥ हूं० ॥ थांरा दोनूं लोक फजीत हो ॥ दे० जी० ॥ ५ ॥ तड़क भड़क ऋषि बोलियो ॥ हूं० ॥ तूं कांई गर्वी गिवांर है, वाभी, साधूपणो चक्री धारियो ॥ हूं ॥ मैं ली-

यो जन्म सुधार हे, बाभी, आ थोड़ा दिनांरी थांरी साहिबी हूं, वारी ॥ ६ ॥ इति ॥

२ गहरा वाजा वाजे नोवत घुरियां ॥ ए देशी ॥

थारो नंदन लागे जगत नीको ॥ था० ॥ पभणे रांणी वांणी हरखांणी, तो नंदन त्रिभवन टीको ॥ थां० ॥ तुंबड खता जसोमती बाई, जायो थे नंदन सुंदर कीको ॥ थां० ॥ १ ॥ सुरनरको मन मोहनगारो, प्यारो लागै बाई हम जीको ॥ थां० ॥ अद्भुत रूप अनूप विराजे, मदन कर दीयो इन फीको ॥ थां० ॥ २ ॥ मान महा मद छिनमां हे मारे, मूल उछेद डारे सहु वैरीको ॥ थां० ॥ आनन चंद पूनम सम छाजे, व्हालो लागै सब तीको ॥ थां० ॥ ॥ ३ ॥ सज्जन जननी मन लागै, वल्लभ ज्यूं हार छातीको ॥ थां० ॥ दुर्जन जन मन खारो लागे, जैसे घाव कातीको ॥ था० ॥ ४ ॥ दही दूध शुद्ध खवावे धेनड, श्याम अरमातीको ॥ था० ॥ हम तुम कुल मंडन छै एही, चित्त हरत नित्त इंद्रानीको ॥ था० ॥ ५ ॥ नख सिख तांई श्याम सलूनो, वरन न होवे रोम राजीको ॥ था० ॥ जोतां तृपत न उपजै दिलमें, धन्य जन्म मानुं माजीको ॥ था० ॥ ६ ॥ दरस परसकूं तरस तरस है, जोगी करै जस गिरधारीको ॥ था० ॥ पूत कहावे जसोदा थारो, है अच रज अवतारीको ॥ था० ॥ ७ ॥ ढाळ भली बत्तीसमी गाई, गुणसागर कहै जस धारीको ॥ थां० ॥ खान पान अरु अमृत होजो, पूरो मनोरथ उर धारीको ॥ था० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥

३ अनोखा भंवरजी हो मारुजी झालो देउं घर आव ॥ ए देशी ॥

काळी नागनें नाथने हो,कनांजी,लीधी गोकुलकी वाट; जावे मथुरा गूजरी हो, कांनजी, रोक्यो जमुनाको घाट; रंगीला कानजी हो, लालजी, छोड जमुनाको घाट ॥ टेर ॥ दाण लेण सारू खडा हे, गुजरी, क्यूं करो तांणोतांण; विन दीना नहीं जावसो हे, गुजरी, नंदरायकी आंण ॥ रं० ॥ २ ॥

२३ सवैयो ॥

मैं तो नई निकसी नहीं मोहन, या अब रीत नई तुम कीनी; आज अनोज अंकोज ग्रहे हरि, या अंगियां जु नई तुम छीनी; मैं तो सदा व्रजमें मही वेचती, दांन मिसे दमरी नहीं दीनी; नंद ददाजीकों पूछही देखो, कबे तुम ग्वालकी गागरी लीनी ॥ १ ॥ [कृष्णवाक्यम्–काहेको पूछहि देखों ददाजीकों, छाडि गुमांन गुवाल हठीली, या व्रजमें सब जानत हैं इक, नंदको लाल दधीको जु दांनी; इंद्रके लोक महेशके लोकमें, आंन हमारी कीने नहीं भांनी; बेरहीबेर कहो व्रज नागरी, जाती है जोबन जोर जोरानी ॥ २ ॥ [गूजरीवाक्यम्–एतो कहा अभिमांन धरो हरि, वात वडी वडी मोहिसों तांनो, मात तिहारी सदा महि वेचत, साची कहेतें बुरो जिन मांनो; काहेकों गाय चरावत हो हरि, तातें कहावत घोषको रांनो; जात अहीरकी एक सबे हरि, को दश गायनको अधिकांनो ॥ ३ ॥ [कृष्णवाक्यम्–वात विचारके बोलरी भामनी, एकही जातमें भांत घनी

है; नांहि तरु सब चंदनके सखि, ठौरहीठौर कहा लाल मनी है; पांडके पहार बहोत हैं आली री, मेरु विना कउ हेम कनी है; गोप वडे वडे गोकुलमें, नंदराय विना कहा और धनी है ॥ ४ ॥

ढाळ ॥

(गूजरीवाक्यम्–दांण न लागो आज लौं हो ॥ ला०॥ मती लरनज्यो हाथ; क्यूं जोरावर वण रह्या हो ॥ला०॥ हुय गूजरकी जात ॥ रं० ॥ ३ ॥ थांरे बाप ज दांण लीयो होसी हो ॥ कां० ॥ कैतां न आवे लाज; थोड़ा कूदो मति इतरो हो ॥ ला० ॥ सिर पर कंस महाराज ॥ रं० ॥ ४ ॥ कृष्णवाक्यम्–कंसरो नाम सुणि करी हो ॥ का० ॥ ठीकर दीधा फोड़, जाय पुकारो कंस पै हो ॥ गु० ॥ कंसको सिर लेऊं तोड़ ॥ रं० ॥ ५ ॥ ठीकर फूटा लेईने हो ॥ का० ॥ गोपी एकठी थाय; माता जसोदा आगले हो ॥ गु० ॥ बोली चटक लगाय ॥ रं० ॥ ६ ॥

३१ सवैया ॥

मेरो सब दूध दधी सखी देख नंद तेरो, ओंठ ओंठ खायो और सबही ढुरायो है । गूजरकी जात राम वात ऐसे मोठी करै, फारै चीर वीर क्यूं इतरो इतरायो है ॥ तनहीकूं मोर सारे करसहीकूं फोर और, दांनी भये ठौर ठौर जोरही दिखायो है । पुतकूं न वरजो सांझ और सब नार बांझ, जग बीच देख एक तैंही पूत जायो है॥१॥

४ देशी ख्यालनी ॥

आयो आयो रे भामानें नारद देखवा ॥ टेर ॥ भामा देखण आयो मुनीश्वर, मनमें हरष अपार; आगे भामा

बेठी मदमें, नहीं पूछी कोई सार ॥ आ० ॥ १ ॥ आदर भामा कीयो न आगे, उलटी कर रही हासी; भामा कहे वाई डाकी आयो, एक दोयनें खासी ॥ आ० ॥ २ ॥ भखडो देखो आयो आली, देख्यां आवे लाज; गोत्ता देवो एहनें जलदी, म्हेलांमें आयो आज ॥ आ० ॥ ३ ॥ नारद सुणनें मनमें चमक्यो, हूं आयो हकनाख; वचन सुणीनें कोप ज करियो, बल जल हूगयो राख ॥ आ० ॥ ४ ॥ जिण घर आव आदर नहीं पावे, जिण घर भूल न जांणो; इम जाणूं तो कदे न आऊं, मांडी खांचातांणो ॥ आ० ॥ ५ ॥ कुंण ए कुंण ए धक्का लगावो, काढो महिलां वार; ततखिण दासी करती हासी, आई हुय हुसियार ॥ आ० ॥ ६ ॥ कोई तो दाढो पकड़ी ताण्यो, कोई लंगोटकूं तांणे; कोई तो लटियां खैंचण लागी, धक्का दे कीयो हैरांन ॥ आ० ॥ ७ ॥ करी खराबी नारदकेरी, कहतां न आवे पार; इसका फल तो आगे लागसी, कहै राम अणगार ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥

५ राग मारु ॥

भूवाजी कृष्ण मिलावे रे, कृष्ण मिलावे प्रेमसूं, नारद भरमावे रे ॥ भू० ॥ टेर ॥ नारद भाखे वाईजी, कुंण कन्या कहावे रे; करी दंडवत मुज प्रेमसूं, तन मनही सुहावे रे ॥ भू० ॥ १ ॥ भतीजी गुरुदेवजी, ग्रै रुखमणी नांवे रे; रुखमिये कुमरकी बैन छे, रूपे सूरी सरमावे रे ॥ भू० ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण वरे पटरागनी, मो आसीसे थावे रे; सरीखा सरीखो जो मळे, असरीखे जगत हसावे रे ॥ भू० ॥ ३ ॥ इति ॥

६ जवांई दाय न आवे रे ॥ ए देशी ॥

भूवाजी अब किम करसूं हो, किणविध जासूं बागमें; किण विध हरि वरसूं हो ॥ भू० ॥ टेर ॥ कहां द्वारापुरी साहिवो, मिलियां विन मरसूं हो; बागमांहे किम जावसूं, डरूं शिशुपाल नरसूं हो ॥ भू० ॥ १ ॥ सयानी हरि नहीं न्यारो हे, धरियो रैसी जावतो; झक मारे शिशुपारो हे ॥ स० ॥ टेर ॥ द्वारापुरीको साहिवो, आयो बाग मझारो हे; हूं काढूं अणियां वीचसूं, स्यूं शिशुपाल विचारो हे ॥ स० ॥ १ ॥ शिशुपालनें त्यागीयो, कीयो हेत हरसूं हो; जो इण भव नहीं पावसूं, तो पावकमें जरसूं हो ॥ भू० ॥ २ ॥ दूजा नर सब त्यागीया, हरि मोहन गारो हे; तोय मिलाऊं एक वातमें, धीं धीं वजत नगारो हे ॥ स० ॥ २ ॥ भाई बाप तौ व्यावसी, हूं तो कूवे परसूं हो; आफू पिऊं भर वाटको, नहीं शिशुपाल वरसूं हो ॥ भू ॥ ३ ॥ बाप भाई मुख जोवसी, स्यूं शिशुपाल पींजारो हे; क्यूं मरन विचारे ताहरो, तोरो हरि भरतारो हे ॥स०॥ ३ ॥ इति॥

७ सोकडलनी साल म्हांने भूंडो लागेजी ॥ ए देशी ॥

भूंडा घरांकी जाई भूंडी, मोडेकी परणाई; भीपमको घर भांडी भूंडी, ओ घर भांडण आई; अमनें दौरो लागे जी, सोकडलीको साल;म्हांने दौरो लागेजी ॥टेर॥ लाखां मिनखांनें इण खाया, भाईनें यंधाई; चौडी वणने करै वडाई, आ किसो दायजो लाई ॥ म्हा० ॥ २ ॥ गीदे बैठी हुकम हलावे, सतरे करती सांग; वापलीयेके घरमें फिरती, यारे हाथकी टांग ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ मांन पाय माडै

वण बैठी, गैणे गांठे रहे लदि; थोडा दिनांमें देखो इण नें, माती होय गई गद्दि ॥ म्हा ॥ ४ ॥ गोलो वणनें एह गवाल्यो, अमथी चाले आडो; इण धींगीनें कर धणियांणी, लाल वण्यो छै लाडो ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ राजनीत नहीं जांणे गवाळयो, काळयो वण रह्यो पाड्यो; गायां चराई माय जसोदा, कद्को राज जमाड्यो ॥ म्हा० ॥ ॥ ६ ॥ उणरे मैलां नितको जावे, सारी रात जगावे, म्हारे मैलामें भूलनें आवे, तो नैणां नींद घुरावे ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ मुजकूं पलभर नहीं जो देखे, तो जक नहीं पडती लारे; अब नैणोंमें प्रीत न सागे, माखी न मुळको मारे ॥ म्हा० ॥ ८ ॥ इति ढाळ सागर ॥

पांडव चरित्र–लावणी ॥

१ लाज मोरी रखले भव्वानी ॥ ए देशी ॥

च्यारके उत्तर सुन लैना, मैं तुज देताहूं मैना ॥ टेर ॥ मोद जुत देह कौन कहिये, जगतमें आश्चर्य को लहिये; को पंथका वात सरदहीये, च्यार ए उत्तरही चहिये, उत्तर च्यार कह दीजिये, तो जीवे बंधु एक तोय; मोय सुनेबा चाय हे, सुनता आनंद होय; धोय पीछे मुंहमें जल देना २ ॥ च्या० ॥ १ ॥ पंच वा छट्ठे वासर जाई, साक घा पचते घर मांई; किसीका देना सिर नाई, नौकरी विन मोज करे थाई; राई भर परवश नहीं, करज किसीका नाह; नींद आपकी ऊठही, वो मोद जुक्त जग मांह; जांह कछु लेना नादनो २ ॥ च्या० ॥ २ ॥ वात ना जगमें कछु छांनी, दिन दिन मरता है प्रांनी, पाव रुप्प रहते अज्ञा-

नी, पापमें हो रहे अगवानी; मानी नर जग एहवा, म्हे कदे न मरसां कोय, आंख्यां मरता देखही, क्या इनसें इचरज होय; कोय तो अमरं नहीं रैना २ ॥ क्या० ॥ ३ ॥ पंथ नहीं एकसा सारे, मुनीका मत पिण है न्यारे; ग्रंथ मत एक नहीं प्यारे, पंथ खरा एक कौन धारे; पंथ कौन है साचलो, कौन साचलो संत; महंत गये जिण मारगे, सो साचो है पंथ; तंत तो पंथ उसे चैना २ ॥ क्या०॥४॥ मोहको कटाह जग भारी, रात दिन रूप इंधन जारी; रवी जां अगनी छै न्यारी, पचावे कालही अधिकारी; पचै प्राणी मात्र जे, क्या वात इसीसें और; मुनि राम कहे धर्म ना करै, ते नर जंगली ढोर; और क्या इधक इससे कैना २ ॥ क्या० ॥ ५ ॥ कहे सो बंधू जियलाऊं, नृप कहे नकुल जीयो चाऊं; भीमार्जुन मांगो समझाऊं, माद्रीको वंश ही रखवाऊं; कुंती नाम मैं राख हूं, माद्री नकुल रखाय; सुर कहे धन्य तुम धीरतां, महिमा करी सुर राय, आय मैं देखी निज नैना ॥ २ ॥ क्या० ॥ ६ ॥ इति ॥

राग मांच ॥

पत्तर आयो, मांनो मांनो जी, पत्तर लायो, काकाजीको जी, वांचो प्रेमसूं ॥ टेर ॥ म्हे पूछां तोय वारता, किम जाणया इण ठाय; कारन किन तूं आवियो, सहू कहो विगताय जी ॥ प० ॥ १ ॥ अरज करूं मैं वीनती हूं आयो शुभ काज विदुरसा मुज भेजियो, कारन सुनो महाराज जी ॥ प० ॥ २ ॥ छांनें मुजनें भेजियो, कोईय न जांणे मोय; अवश्य काज हूं भेजियो, सुणतां आनंद होय जी ॥ प० ॥ ३ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

बाहुबल खड़ा जोग वन धरियो ॥ ए देशी ॥

प्रियंवद आई मिलियो वनमें, औ तो पांडव हर्ष्या मनमें ॥ प्रि० ॥ टेर ॥ वारणावत मुज विदुरजी भेज्यो, सुणिया बळिया तुमनें ॥ प्रि० ॥ आगे देखूं तो लोग पुकारे, देवे धिक्कार सुयोधननें ॥ प्रि० पां० ॥ १ ॥ सांभळनें हूं मूर्छित हूयो, सुद्ध नहीं कछू तनमें ॥ प्रि० ॥ षद् पुरुषनें नारी दोई, भस्म हुवा एक छिनमें ॥ प्रि० ॥ २ ॥ मैं विदुर पंडवकूं जई भाखी, दुःख न आवे कछू कहवनमें ॥ प्रि० ॥ छांनें वखाने विदुर पंडवसें, नहीं दुःख तेरा नंदनमें ॥ प्रि०॥ ३ ॥ दुर्योधन मन भयो कुश्याली, अबि राज करूंगा आनँदमें ॥ प्रि० ॥ एक दिन एक चक्रापुर सेती, नर एक कह्यो जन जनमें ॥ प्रि० ॥ ४ ॥ इति ॥

इति श्रीमन्महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे
ढाळसागर तथा पाण्डवचरित्रान्तर्गतं फुटकरनामकं
एकादशं प्रकरणम् ॥ ११ ॥

व्याख्यान ॥

१ अथ विजय कुमरनो चौढाळियो प्रारंभ ॥

दोहा ॥

आदिनाथ आदेश्वरू, सकल विदारण कर्म ।
उपगारी भवि तारवा, कह्यौ च्यार प्रकारे धर्म ॥ १ ॥
दान शील तप भावना, इन विन मुक्ति न होय ।
तो पिण सब व्रत देखतां, शील समो नहीं कोय २॥

शील भागां भागा सवे, इम कहै श्रीजगचंद।
शीलवंत जे पुरुपनें, सेवे सुर नर वृंद ॥ ३ ॥
जस कीर्ति फैलै इला, जे ब्रह्म व्रतमें लील।
जो सुख चावो जीवनें, तो पाळो शुध मन शील॥४॥
विजय कुमर विजया वळी, शील पाळ्यो खग धार।
तेहतणां गुण वर्णवुं, लिखित कथा अनुसार ॥ ५ ॥
निसुणी करो सारी सभा, पर नारी पच खांण।
पंचपर्वि दिन आंखड़ी, करो यथाशक्ति प्रमांण ॥६॥
यौवन वय छति योगमें, नारि रहै जिण पास।
ब्रह्मचारी त्रिहुं योगसुं, दुकर दुकर परकाश ॥ ७ ॥

ढाल ॥

१ मेड़तिया भँवरजीरो करहलो ॥ ए देशी ॥

जंबू द्वीपना भरतमें, दक्षिणे कछ देशो जी; नगर कौशंबी तेहमें, अमरापुरी कहे सोजी;शीलतणों महिमा सुणो ॥ १ ॥ धनावो सेठ तिहां वसै, तिणरे विजय कुमारोजी; रूप कला गुण आगलो, यौवन वय हुंसियारो जी ॥ सी० ॥ २ ॥ तिण अवसर मुनि पांगुर्‌या, सुमति गुप्ति प्रति पन्नो जी; आपातिरे पर तारता, लोक कहै धन धन्नो जी ॥ सी० ॥ ३ ॥ लोक आया मुनि वांदवा, तिम ही विजय कुमारो जी; धर्म कथा मुनिवर कहै, ए संसार असारो जी ॥ सी० ॥ ४ ॥ जनम जरा दुख मरणनो, कहतां नावै पारो जी; नर भव पामतां दोहिलो, चेतो सहू नर नारो जी ॥ सी० ॥ ५ ॥ उत्कृष्टो बंध कर्मनो, विपय विप विचारो जी; नव लाख सनि मनुष्यनो, श्रीजिन कह्यो संहारो जी ॥ सी० ॥ ६ ॥दुःख अनेक इण

जोग सूं, पर नारी दुख खांनो जी; फल किंपाकनी ओपमा, इम भाख्यो भगवांनो जी ॥ सी० ॥ ७ ॥ इम सुणि सहू थरहऱ्या, विजय कुमर जोड़ी हाथो जी; हे मुनि संयम लेइवा, हूं समरथ नहीं किरपानाथो जी ॥ सी० ॥ ॥ ८ ॥ जावज्जीव पर नारनो, मोनें मुनि पचखांणो जी; स्वदारा पिण जावज्जीव, कृष्ण पक्ष नां जांणो जी ॥ ॥ सी० ॥ ९ ॥ दुष्कर काम कुमर कीयो, मुनिवर कीध विहारोजी; रामचंद्र कहै शीलनें, धन्य पाळे नर नारो जी ॥ सी० ॥ १० ॥ इति ॥

दोहा ॥

तिण नगरी मांहे वसै, अपर सेठ धनसार ।
विजया कुमरी जेहनें, अद्भुत रूप उदार ॥ १ ॥
सयणी चतुरा बहु लजा, चौसठ कला भंडार ।
भर यौवन आई तदा, सादी विजय कुमार ॥ २ ॥
आरण कारण सहु करी, कियो व्याव तिणवार ।
जेहवी विजया सुंदरी, ते हवो विजय कुमार ॥ ३ ॥

ढाळ ॥

२ मैंदुलाना गीतनी देशी ॥ मोटी जुगमें मोहनी ॥

सोळे शृंगार सझी भला, कांई आईहो रंगमहल मझार; नयन वयन प्रिय मोहती, आय उभीहो जिहां विजय कुमार; सुण जो जी शील सुहामणो ॥ १ ॥ कंत कहै भल आविया, दिन तीनेहो नहीं आवण काज; स्यूं कारण कहै सुंदरी, किम वरजी हो इण अवसर आज ॥ सु० ॥ २ ॥ कृष्ण पक्ष व्रत मैं लीयो, इण सुणनें हो आ थई है उदास; शुक्ल पक्ष व्रत मैं कीयो, दूजी परणी हो

मांडो घरवास ॥ सु० ॥ ३ ॥ विजय कुमर कहै है प्रिया, सहिजे दुळियो हो अनरथको मूल; जावज्जीव व्रत पाळसां, नर मूरख हो रह्या छै भूल ॥ सु० ॥ ४ ॥ कहै प्यारी प्रीतम सुणो जी कांई कहै, किम रहसी हो आ छांनी वात; प्रगट हुवां संयम लेसां, कांई लड़सांहो कर्मारी साथ ॥ सु० ॥ ५ ॥ काम भोग बहु भोगव्या, केईवार हो अनंत विचार; तोई तृप्त न हुवो जीवड़ो, कांई बोलेहो इम विजय कुमार ॥ सु० ॥ ६ ॥ करै सामाई पोसा भेळा, कांई सोवेहो एक सेज मंझार; जोवै भगिनी भ्रात ज्यूं, शील पाळेहो खांडारी धार ॥ सु० ॥ ७ ॥ मन वचन काया करी, नहीं व्यापेहो कदी काम विकार; सार धर्म जांणे जिनतणों, कांई बीजो हो सहू जांणे असार ॥ सु० ॥ ८ ॥ नहीं रुचि पुद्गल ऊपरे, कांई लेखेहो जेहनो अवतार; राम कहै ढाळ दूसरी, धन्य पाळे हो जे नर ब्रह्मचार ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥

दोहा ॥

धर्म ध्यांन करतां थकां, द्वादश वर्ष ज थाय ॥
किम कर वात परगट हुवै, ते सुणजो चित लाय॥१॥
लक्ष्मि भाग्यनें रागता, दाता सूर सुवास।
एता छांनां किम रहै, विद्वत् कवी प्रकास ॥ २ ॥

ढाळ ॥

३ जल्हानी देशी ॥

तिण अवसर तिण काळे दक्षिण देशेहो सुखकारी मुनिराज ॥ ति०॥ मुनिंद ॥ विमल केवलि नांमे मुनि शुभ वेशे हो ॥ सु० वि० मु० ॥ १ ॥ चंपा पुरीना बागमांहे

ऊतरिया हो ॥ सु० चं० मु० ॥ बहु नर नारी मुनि वंदन परवरीया हो ॥ सु० ब० मु० ॥ २ ॥ ऐ संसार असार मुनि दिखलावे हो ॥ सु० ए० मु० ॥ तन धन यौवन जातां वार न लावे हो ॥ सु० त० मु० ॥ ३ ॥ मात पिता सुत भामिनी संग न आवे हो ॥ सु० मा० मु० ॥ सहू संग छोडी चेतन पर भव जावे हो ॥ सु० स० मु० ॥४॥ विषय विकार प्रमादे नर भव हारे हो० ॥ सु० वि० मु०॥ मूरख चेतन रतन अमोलिक डारे हो ॥ सु० मू० मु० ॥५॥ इत्यादिक मुनि धर्म देशना दीधी हो ॥ सु० इ० मु० ॥ श्रोता श्रवणे अमृत रस कर पीधी हो ॥ सु० श्रो० मु० ॥ ६ ॥ जिनदास श्रावक विनये सीस नमायो हो ॥ सु० जि० मु० ॥ हे प्रभुजी मुज रयणि सुपनो आयो हो ॥ सु० हे० मु० ॥ ७ ॥ सहस्र चौरासी मास खमण मुनिराज हो ॥ सु० ॥स० मु० ॥ मैं प्रतिलाभ्या निर्दोषण प्रभू आज हो ॥ सु० मैं० मु० ॥ ८ ॥ तेहनो स्यूं फल दाखो कृपा करनें हो ॥ सु० ते० मु० ॥ भाखै मुनिवर सेठ सुणो चित धरनें हो ॥ सु० भा० मु० ॥ ९ ॥ नगर कौशांबी विजय कुमर गुणधारी हो ॥ सु० न० मु० ॥ त्रिकरण योगे दंपती बाल ब्रह्मचारी हो ॥ सु० त्रि० मु०॥१०॥ राम कहै शुध शील पाळै नर नारी हो ॥ सु०रा०मु०॥धन धन जे नर तेहनी हूं बलिहारी हो ॥ सु० थ०मु० ॥ ११ ॥ इति ॥

दोहा ॥

इक सेज्या सोवै विन्हें, शुध पाळै ब्रह्मचार ।
द्वादश वर्ष ज नीकळ्या, धन तेहनो अवतार ॥ १ ॥
चर्म शरीरी महा उत्तम, किया ज्ञानि गुणग्राम ।
सुणनें सहु विस्मय थया, सहुको कियो प्रणाम ॥ २ ॥

जिनदास मनमें चिंतवै, जाय करूं दरसन्न ।
तुम मिलिया संयम लेवसी,मुनिवर कियो प्रसन्न॥३॥

ढाळ ॥

४ अनोखा भँवरजी हो साहिबा झालो देऊं घर आव॥ ए देशी ॥

जिनदास मुनिवर वांदनें हो, भवियण, नगर कौशांबी जाय; बहु परिवारे परिवर्यौ हो ॥ भ० ॥ दरसन की मनमांय; धन भन जेहनें हो भवियण जे पाळै ब्रह्मचार ॥ ॥ १ ॥ नगर कौशांबीना बागमें हो ॥भ० ॥ सेठजी डेरो करेह; विजय कुमरना तातसूं हो॥भ०॥मिलियो हर्ष धरेह ॥ध०॥२॥ स्यौं कारण पधारिया हो, सेठजी, दाखो सुजनें राज; धर्म सगपण आविया हो ॥से०॥ तुज सुत दर्शन काज ॥ध०॥३॥ विमल केवली गुण कीया हो ॥से०॥ बाल ब्रह्मचारी तेह, मुज दर्शन मनमें लगी हो॥से०॥ज्यूं चातकनूं मेह ॥ध०॥४॥ सेठ सुणि अचरज थयो हो ॥ से० ॥ लीयो कुमर बुलाय; किसी भांत सोगन कीया हो, लालजी, स्यूं थांरे मन मांय ॥ ध ॥ ५ ॥ कुमर कहै कर जोड़ने हो ॥ से० ॥ मैं लीयो अभिग्रह धार; आज्ञा दीजै मुजभणी हो ॥ से०॥ लेस्यूं संयम भार ॥ ध०॥ ६ ॥ तात कहै नंदन सुणो हो ॥ ला० ॥ कठिन मुनि आचार; कर अग्रे कहो किम रहे हो ॥ ला० ॥ मेरु जितरो भार ॥ ॥ ध० ॥ ७ ॥ लाख प्रकारे नहीं रहूं हो ॥ से० ॥ संयम सुख दातार; वैरागी कहो किम रहे हो कुमरजी, लीधो संयम भार ॥ ध० ॥ ८ ॥ विजया कुमरी पिण लीयो हो, मुनिवर, पाळै शुध आचार; जप तप खप क्रिया करी

हो, दोनूं, पाम्यां केवल सार॥ ध०॥९॥ कर्म खपाय मुक्ति गया हो, ॥ मु० ॥ प्रथम तीर्थंकर वार; ब्रह्मचारी विरला इसा हो ॥ भ० ॥ सुणजो सहू नरनार ॥ ॥ ध० ॥ १० ॥ उगणीसे दशे समै हो ॥ भ०॥ नागौर शेषे काल; फागण शुध पूनम दिने हो ॥ भ० ॥ जुक्तसूं जोड़ी ढाळ ॥ ध० ॥ ११ ॥ स्वामी वृद्धि चंदजी प्रसादसूं हो ॥ भ० ॥ रामचंद कही जोय; ओछो अधिको जे हुवे हो ॥ भ० ॥ मिथ्या दुःकृत मोय ॥ ध० ॥ १२ ॥ इति ॥

कलश ॥

शीलवंत प्रभूनी गादी, स्वमुख जिनवर भाखियो; शीलव्रत सम अवर जगमें, नहीं पदारथ दाखियो; चौसठ सहस वरस सुर आयु पांमें,लोक लज व्रत राखियो; दुर्धर व्रत जे सधर राखै, धन धन ए इस चाखियो ॥ १ ॥ विजय सेठ सेठांणी विजया, जैसा विरला जगतमें; धन धन मनुष्य जनम पायो, जाय विराज्या मुगतमें; जेहतणां गुण मुक्ख गातां, जन्म सफलो होय है; गुणवंतना गुण सुणत कांनें, भव भव पातक खोय है ॥ २ ॥ सुणवानों गुण एही कहिये, कछूक हिरदे धारिये; लीधा व्रतमें कायम रहिये, नर भव अफल न हारिये; ज्ञान वृद्धना चरण पकड़ो, अगाध भवो दधि तारिये; रामचंद आनंद धरनें, ज्ञानादिक विचारिये ॥ ३ ॥ इति विजय कुमरनो चौढाळियो संपूर्ण॥

अखाड़ भूत ॥

दोहा ॥

सांग कियो साधूतणो, पेट भरी गुण हीन ।
भेख लजावे लोकमें; धिक् तुजनें मत हीन ॥ १ ॥

महाव्रतधारी वाज है, लाजे नहीं लिगार ।
धर्म लजावा कारणे, तैं छोड्यो संसार ॥ २ ॥

१ चौकनी देशी ॥

सुण महासती, यां लखणांसूं जैन धर्म अति लाजै, गुण नहीं रती, लोकांमांहे निर्ग्रंथणी तूं वाजे ॥ आंकडी ॥ तूं चाले छे चाळा करती सुधईर्या समति नहीं धरती । लोक लाजसूं नहीं डरती, तूं लावे गोचरी भरभरती ॥ सु० ॥ १ ॥ एकली तूं फिरती दीसे, दोयनुं वरजी जग दीसे । शुद्ध सीख दीयां दांतज पीसे, तैं नहीं छोडी तिलभर रीसे ॥ सु० ॥ २ ॥ तूं मेळे खेळे देखण आवे, न्याव ओसरसूं वैरी लावे । रवि ऊगां विन पांणी जावे, तूं क्यूं जिन मारग लजवावे ॥ सु० ॥ ३ ॥ थारे घेरदार पैरण साडी, रंगी चंगी छे देह थारी । तप करणसूं तूं हारी, तूं तूट पडी खावण लारी ॥ सु० ॥ ४ ॥ तूं भीणो पट ओढण राखे, अंग अंग सारो भांखे । लोक निंदा करी इम भाखे, इण भेख लीयो छे हकनाखे ॥ सु० ॥ ५ ॥ परालब्धी बाल खिलावे छे, मांहो मांहे जंग मचावे छे । गृहस्थी आय छुडावे छे, जिन मारग पूरो लजावे छे ॥ सु० ॥ ६ ॥ जगमांहे वाजे तूं गुरणी, विगड़ गई थारी करणी । लंपट नरना चित हरणी, तूं लाजे नहीं उदर भरणी ॥ सु० ॥ ७ ॥ केई कपट करी जग डहकावे, मलिन श्याम धोवण लावे । शुद्ध दशा ते नहीं पावे, ते पिण शिवपुर नहीं जावे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कंचन चूडो खळके है, लिलवट चिंदली चिलके है । मंजनसूं देही भिलके है, पीजल ज्यूं

तुज तन पळके है ॥ सु० ॥ ९ ॥ एक भागां सब ही भागे, थारी वंदना दाय नहीं लागे । हूं आषाढाचार्य मुनि सागे, मति ऊभी रहे तूं मुख आगे ॥ सु० ॥ १० ॥ रामचंद्र कह सुण लीजो, सुणने सतियां मत खीजो । जो खीजो तो तप कीजो, सुध संजमनी खप कीजो ॥ सु० ॥ ११ ॥ इति ॥

२ चौकनी देशी ॥

सुणो मुनिवरजी, मत देखो पर दोष विचारी वोलो, गुणो जिनवरजी, तन उज्जल मन कपट हिया का खोलो ॥ सु० ॥ टेक ॥ परोपदेशी घणा जगमें, पर ओगण देखे पग पगमें । अरु आप तो झूल रह्या अघ में ॥ सु० ॥१॥ पूंज पूंज पग देवो छो, इण रीते विहारमें वेवो छो । किम लंवा तडाका देवो छो ॥ सु० ॥ २ ॥ मलिन धोवण चौडे धर दो, निर्मल जल गुपचुप कर दो । निंदा करि गृही कांन भर दो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पडिलेहण विधि नहीं जाणो छो, शुद्ध श्रद्धा न पिछांणो छो, उत्सूत्र प्ररूपी रूढ तांणो छो ॥ सु० ॥ ४ ॥ कपट क्रियासें नहीं तारिया, वाज आचारी पेट भरिया । इसा सांग तो वहु करिया ॥ सु० ॥ ५ ॥ उजड़ वस्तिमें सम रैणो, कैणो जिण रीते वैणो । घर औगुण देख पर गुण लैणो ॥ सु० ॥ ६ ॥ महिमा कारण करि माया, भोळा नरने भरमाया । स्यूं कपट धरम प्रभु फुरमाया ॥सु०॥७॥ आप सासेर नहीं जावे, परनें सीख सुध फुरमावे । ज्यांरी प्रतीत कहो किम आवे ॥ सु० ॥ ८ ॥ हाथ थकी फेरे माळा, भरे पेटमें कुद्दाळा । ऐसे मुनिका मुख करना काळा ॥ सु० ॥ ९ ॥ आप पोते निग्रंथ वाजो, थोथे

चिणे ज्यूं मत गाजो । घर जातां मनमें नहीं लाजो ॥ ॥ सु० ॥ १० ॥ मनुष्य मारनें धन लावो, अबे पेलानें समजावो । झोळी पातरा दिखलावो ॥ सु० ॥११॥ वात सुणी अचरज पाया, या किम जांणे म्हारी माया । राम तत्क्षण दोड़ आगे आया ॥ सु० ॥ १२ ॥ इति ॥

३ दिवाळी ॥

१ ढाळ ॥ पर भवकी खरची ले लो ॥ ए देशी॥

दीवालीकी उत्तम रात, मोक्ष पधारे श्रीजगनाथ, यो तम केवल भयो परभात ॥ टेर ॥ दीवालीको शीलज पाळो, खरची ले लो गैरी साथ ॥ दी० ॥ रात्री भोजन करिये टाळो, ज्यूं रोग रहित रहे तेरो गात ॥ दी० ॥१॥ पडिकमणो करणो इण वासर, गुणणो करणो शुद्ध विख्यात ॥ दी०॥ गहिणा कपड़ा चोप दिखावो, ज्यूं श्रद्धा उजाळो छोड मिथ्यात ॥ दी० ॥ २ ॥ च्यार जाप करतां रहे आनंद, फंद टळे मिले सज्जन साथ ॥ दी० ॥ ऐसो अवसर मिले न मूरख, मान लीजो थे सतगुरु वात ॥ दी० ॥ ३ ॥ पर निंदा मत करियो भाई, वैर मिटावो टाळो घात ॥ दी० ॥ पाप ठिकांणे लक्ष्मी खरचे, जिणकी कहिये लक्ष्मी खात॥दी०॥४॥लक्ष्मी लेखे जिस्की जांणो, दान सुपातर करियो भ्रात॥दी०॥मुनि रामचंद्र कहे भाव दिवाळी, तारे झूठ नहीं तिल मात ॥ दी० ॥ ५ ॥ इति ॥

४ डोसी ॥

दोहा ॥

पूरब कृत फल पापना, भुगते आपो आप ।
सुकृत फल जब उदय हुए, दूर पलाये पाप ॥ १ ॥

ज्यूं ज्यूं पडेज आपदा, त्यूं त्यूं धर्म करंत ।
पूर्व पाप आपद पड़े, इम भाखे भगवंत ॥ २ ॥
भांग पिये लहरां दिये, पिये न आगे लैर ।
अथवा डोसी वारता, सुणिये अंदर हेर ॥ ३ ॥

१ ढाळ ॥ संकर वसेरे कैलासमें ॥ ए देशी ॥

करिये धर्म शुद्ध चालसूं, अंदर कपट निवारजो ॥ कपटतणा फळ पाडुवा, नहिं तरिये संसार, थारो जनम सुधार, साधु वचन तूं धार, ज्ञान दृष्टि संभारजो ॥ क० ॥ १ ॥ धर्मी दुःखी सुखी पापियो, सहूकार सीदायजो ॥ धर्म फल्यो नहीं देखियो, ऐसी न लावो दिलमांय, धर्म अफलो नहीं जाय, बंध्या करम भुगतायजो ॥ क० ॥२॥ एक डोसी वर्ष साठनी, मार्यो पाडोसी बाळजो ॥ गहिणा उतारी गाडियो, पछे गई धर्मशाल, उपवास कीयो तत्काल, दया लेसूं पिण पालजो ॥ क०॥ ३ ॥ सामायिक कर तिष्ठहि, लारे भईहे पुकार जो । राज सुभट फिरे हेरता, जडिया डोसीना द्वार; कहां गई तालो मार, नहीं छोडे घरबार जो ॥ क० ॥ ४ ॥ घरमें बालक पग आविया, पाछा गया नहीं केम जो । आया उपाश्रय पाधरा, सुभट बोले छे एम, थारे धर्मसूं प्रेम, तेरा देख्या सूंस नेम जो ॥ क० ॥ ५ ॥ करै तगादो चल डोसली, वीरा हूं छूं पोसा मांय जो । भाखा चलितथी ओळखी, लाया घींसी घरमांय, थारो घरही जोवाय, म्हांने बाल दिखवाय जो ॥ क० ॥ ६ ॥ मूवो बालक निकस्यो धन लाधियो, देवे जराजर मार जो । अज्ञ कहे धर्म ना फल्यो, लीजो चतुर विचार, कीजो सुधी निरधार, डोसी लंघे किम पार जो ॥ क० ॥ ७ ॥ पापना फल

लागे पाडुवा, इणमें मीन न मेल जो । कहो धर्म फले किण रीतसूं, चतुर कीजो विवेक, लीजो हिंसानुं देख, फल भुगते विशेष जो ॥ क० ॥ ८ ॥ उगणीसे चौतीस अर्ध माघमें सोभत शहर मझार जो । मुनि रामचंद्र इण पर कहे, कीजो धर्मसूं प्यार, राखो पापसूं खार, लेवो खरची थे लार जो ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

५ डोसो—ढाळ ॥

१ हिंवे राणी पदमावती, जीव रास खमावे॥ए देशी॥

देखो गत संसारनी, स्वारथ जग सारा, प्यारा लगे स्वारथथकी, विन स्वारथ तेई खारा ॥ दे० ॥ १ ॥ मात पिता सुत भारज्या, मित्र स्वांमी भरतारा; भाई बैन और संबंधी, निःस्वारथ सब न्यारा ॥ दे०॥ २ ॥ लक्ष कमाया कृत्य गूंधिया, प्रेमसूं परण्यो प्यारी; पुत्र हुवो तेई व्याइयो, अंते मर गई नारी ॥ दे० ॥ ३ ॥ वृद्धकाले मरे भारज्या, गत धन पुत्रके हाथ; वधू हस्ते भोजन हुवे, विडंबन तीन कहात ॥ दे० ॥ ४ ॥ कर सिर कंपे वृद्धना, थयो पोळमें डेरो; गृहमें मारो वधू पुत्रनो, डोकर भयो रे अने रो ॥ दे० ॥ ५ ॥ एक दिन कहे सेठ पुत्रनें, धन तो म्हारो कमायो; अवसर भोजन नावहि, सुणनें सुत सरमायो ॥ दे० ॥ ६ ॥ ठोकर रक्खो बापजी, एहनो शब्द करावो; भांणो ततक्षण आवसी, मति थे दुख डो पावो ॥ दे० ॥ ७ ॥ इम करतां एकण दिनें, सप्त वर्षनो पोतो; सेवा सेठनी सांचवै, ठोकर ले गयो ओ तो ॥ ॥ दे० ॥ ८ ॥ठोकर नहीं डोकर कहे, छोकर कीध कमाई; तात कहे क्यूं तूं ले गयो, सो कहे थांरे तांई ॥दे०॥ ९ ॥

एक दिन दशा तुम होवसी, हूं होसूं घरनो स्वांमी; जब ढोकर तुम देवसूं, नहीं रहे रती एक खांमी ॥ दे० ॥ १० ॥ एम सुणी दिल चमकियो, कही वात तो साची; जैसो करे तैसो पावही, पंडित शास्त्रे वाची ॥दे०॥११॥ ढोल्यो लीयो रंग महलमें, कीयो डोकर सुखियो; राम कहे पुन्य संचिये, कदे न होवे दुखियो ॥ दे० ॥ १२ ॥ इति ॥

---

६ द्रौपदी ॥

१ वांसरलीनी देशी ॥

अहो नरवरजी, हुकम करो महाराज द्रौपदी लाऊं, सुणो गिरधरजी, पद्मनाथ परिवार सहित बंध लाऊं ॥ ॥टेर॥ कहोतो सातसे रांणी हर लाऊं, कहो तो नगरभणी सब उठवाऊं; कहो तो छिनभरमें पांणी पाऊं, कहो तो सर्वभणी सिंधु डबकाऊं ॥ अ० ॥ १ ॥ लंपटको नाक काट आंख्यां काढूं, कहो तो हाथ पांव जिभ्या वाढूं;करि श्याम वदन रासभ चाढूं, कहो तो खाड खोद भूमी गाडूं ॥ अ० ॥ २ ॥ अहो सुरवरजी, लवण समुद्र कर पार द्रौपदी लाऊं, सुणो दिल धरजी, काम करीनें जलदी पाछो आऊं ॥ टेर ॥ २ ॥ समर्थ सब वात करवा थे तो, पिण सूंपूं हाथोहाथ कही म्हेतो; करदो पार दरियो वहतो, छै असी कोड़ कोसतणो छेतो ॥ अ० ॥ ३ ॥ नहीं नगरभणी उठाई लेणों, नहीं राजा रांणीनें दुख देणों; जिणसें सुरवर तुज केणों, राम समुद्र वीच मारग वेणों ॥ ॥ अहो० ॥ ४ ॥ इति ॥

---

७ सुभद्रा-गाळ ॥

१ नाड़ेके छुरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन धर्म सबधी सिरे, तोय केती हूं, थे समजो ज्ञान विचार,बाईजी तोय केती हूं;जिन धर्मदी निंदा करो मती, हणे नहीं कोई जीवनें ॥तो०॥ बोले न झूठ लिगार ॥ १ ॥ बाईजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा करो मती, पक्ष दूर धरो, न्याय पक्ष करो, मुनि संगसें उतरो पार ॥बा० जि०॥ टेर ॥ तृण न लेवे विनु दीयो ॥ तो० ॥ पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ बा० जि० ॥ धन धूल गिण त्यागीयो ॥ तो० ॥ ऐ तनकी न रक्खै सार ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ २ ॥ रात्रि भोजन नवि करे ॥ तो० ॥ धरे पग सूत्रके न्याय ॥ बा० जि० ॥ डरे सदाई पापसूं ॥ तो० ॥ मुनि मुक्त नगर ले जाय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ ३ ॥ परस्पर मीठो धर्मनें ॥ तो० ॥ मत पक्षकूं करिये दूर ॥ बा० जि० ॥ दुग्ध दुग्ध सब सारीखे॥तो०॥ गिणो न केसर सम धूर ॥ बा० जि० प० न्या० मु० बा० जि० ॥ ४ ॥ जिन मारग कोई निंदसी ॥ तो० ॥ स्यो जिन मारग जाय ॥ बा० जि० ॥ मुनि राम कहे धन्य मानयो ॥ तो० ॥ जे समजे न्याय अन्याय ॥ बा० जि० प० न्या० मु० ॥ ५ ॥ इति ॥

गीत ॥

१ चालो चालो हो रंग रसोडे मांय, जीमाऊं तोनें सीरो ने पूड़ी ॥ ए देशी ॥

छोडो छोडो हो भोजाई थांरो भर्म, कर्म कांई बांध रया; थांरे नहीं है सासूजीकी शर्म, परमं फळो घालि

रह्या ॥ १ ॥ नहीं न्हांणे धोणेकी थांरे रीत, न प्रीत शिव शक्तिकी; थे हुय गया शर्म जीत, न रीत थांरे भक्तिकी ॥ २ ॥ जिन धर्म छै पूरो मलीन, थे कांई नहीं जांणता; थे दीसो पूरा पुन्य हीन, झूठी रूढ तांणता ॥ ३ ॥ लेस्यां गहणा गांठा खोस, दोष नहीं मांहरो; थे निकम्मा करोगा रोस, राम म्हे भलो चावां तांहरो ॥ ४ ॥ इति ॥

ढाळ ॥

१ वर पायो हे कैलास निवासी प्रीतसूं ॥ ए देशी ॥

धर्म पायो हे नणदल भल भावसूं, छूटे न छुडायो हे रतन चिंतामणि सारिखो ॥ टेर ॥ ए तो दया धर्म जग मोटो हे, म्हे तो लीयो जिसीको ओठो हे; जाणूं हिंसा धर्मनें खोटो हे, ए वचन गिणो मत छोटो हे ॥ ध० ॥ १ ॥ जिन धर्मसूं कारज सरसी हे, जाकी होड करी नहीं करसी हे; जिन धर्मसूं दुःख सख टरसी हे, इण धर्मसूं तरचा केई फेर तरसी हे ॥ ध० ॥ २ ॥ म्हे तो भाग्य उदय धर्म पायो हे, म्हे तो भव भव ए धर्म चायो हे; मोनें सद्गुरु ज्ञान सुणायो हे,, राम दूजो दाय न आयो हे ॥ ध० ॥ ३ ॥ इति ॥

---

८ शालिभद्र ॥

१ राजन मोरा किण विध रैसूं रे ॥ ए देशी ॥

बालम मोरा आज्ञा किण परे देऊं रे, देऊंने फिर किम रेऊं रे; हूं पिण संयम लेऊं रे ॥ बा० ॥ टेर ॥ मोनें बाई कांई केसी रे, ए बात जुगो जुग रेसी रे; मोनें मोसा सारा देसी रे ॥ बा० ॥ १ ॥ म्हांनें छोड मती थे

जावो रे, म्हांरो गुन्हो माफ करावो रे, थे जुगमें केम हंसावो रे ॥ वा० ॥ २ ॥ मोनें वहन किन विध बोलो रे, कांई आवे आपनें भोलो रे, ज्यूं दोरो ज्ञानीको ढोलो रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ इम करता हीं जासो रे, तो जगमें होसी हासो रे, पिण हूं छोडूं घरवासो रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ कंत नारी कियो साध रे, अब शालिभद्रकी वात रे, जांरा राम मुनि गुण गात रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

नंदन मोरा आज्ञा किन विध देसूं रे, हां रे हूं लारे किण विध रेसूं रे, हूं नंदन किणनें केसूं रे ॥ नं० ॥ टेर ॥ तूं एकाएकी लालन रे, तूं छै दुखको टालन रे, तूं छै घर संभालन रे ॥ नं० ॥ १ ॥ ए वहुवां देखो दुमनी रे, फेर दया न देखो अमनी रे, मोटी आशा तमनी रे ॥ नं० ॥ २ ॥ वले वत छै नंदन दोरा रे, तूं जांणे कांई सोरा रे, तातें करूं निहोरा रे ॥ नं० ॥ ३ ॥ त्रस स्थावर नहीं हनही रे, जो जावे तो तनही रे, झूठ मात्र नहीं भनही रे ॥ नं० ॥ ४ ॥ तृण नहीं लेवे उठाई रे, वले जगमें मात्र लुगाई रे, जांने जांणे माता वाई रे ॥ नं० ॥ ५ ॥ परिग्रह धूलही लक्खे रे, ए तन पर ममत न रक्खे रे, एक समता रसही चक्खे रे ॥ नं० ॥ ६ ॥ कायरनें छै दोरो रे, माता सूरवीरनें सोरो रे, लग्यो शिव रमणी मन मोरो रे ॥ नं० ॥७॥ मुनि राम वंदे वैरागी रे, जांरी सुरत मुगतसूं लागी रे, ज्यां छती रिद्धनें त्यागी रे ॥ नं० ॥ ८ ॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ बाहु वल खड़ा जोग वन धरियो ॥ ए देशी ॥

सेठांणी, नहीं खुले मालकी गांठ, म्हे किसा जंगलका जाट, सेठांणी ॥ न० ॥ टेर ॥ इण नगरमें घर घर फिरिया, भटक्या हाटोहाट ॥ से० ॥१॥ तूं वडी सेठांणी म्हे पिण जांणी, लिवी न हींडे हींडोरे खाट ॥ से० ॥२॥ मारु धावला जे नर पहरे, कुंण हेरे रेसमका पाट ॥ से० ॥ ३ ॥ राजा बाबू पिण एक न लीधी, नहीं माल विकणरो घाट ॥ से० ॥ ४ ॥ माल विक्यां विन जीव उदासी, लग रह्यो मनमें उचाट ॥ से० ॥ ५ ॥ इन बरोबर माल न न लागै, राम अंतर चंदन काठ ॥ से० ॥ ६ ॥ इति ॥

२ देशी ख्यालनी ॥

लेस्यां लेस्यां जी वोपारी थांरे मालनें ॥ ले० ॥ टेर ॥ माल दिखावो शंक न लावो, झूठ नहीं इन ठौर; इन उप्रंत जो माल होय तो, डेरेसें लावो और ॥ ले० ॥ १ ॥ इण घर हाथी धापे सेठां, बकरीरो स्यूं कैणो; इण घरकी नहीं वाकवी थांनें, थांरो दिसावर रेणो ॥ ले० ॥ २ ॥ ए सेठांणी लिछमी जांणी माल तुमारो लेसी; उधारतणो नहीं नाम इसीके, रोक दोकड़ा देसी ॥ ले० ॥३ ॥ छाती धड़को न राखो सेठां, मुं मांग्या लो दांम; इन सिरकारकी वात है न्यारी, खरीदे मुलक तमांम ॥ ले० ॥ ४ ॥ सुंण वोपारी चमक्या भारी भलो थे वचन सुणायो; एक कंबल जो लेवे सेठांणी, राम सहू भरपायो ॥ ले० ॥ ५ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ बोल्यो हे बोल्यो, गाळ्यांरे खातर बोल्यो ॥ ए देशी ॥

बोल्यो हे बोल्यो, ओ राजा श्रेणिक बोल्यो; स्वर्ग साचो हे साचो, ओ रति न दीसे काचो; अभा किण रीते जी घड़िया, किण रीते हीरा जड़िया; महक सुगंधी जी आवे, ओ जीव बहु सुख पावे; पावे सुख पिण चक्र चढि यो, अबके नहीं पिण अबके पड़ियो; अभो कहै छै साची वात, स्वर्गपुरी दीसे साक्षात; अंगण देखां कि देखा छात, इण घरकी तो अद्भुत वात ॥ बो० ॥१॥इति॥

२ नाथूरामजीवाळी जेळू सोख कीयो के वा वा ॥ ए देशी ॥

संगम मुनिजीनें दान दीयो के वा वा, हे दान दीयो मास खमणको, उलट शुद्ध परिणाम, हे निज खावाको लोभ न रक्ख्यो, कीयो छै उत्तम काम, हे दान दीयो नहीं जहार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ १ ॥ खाली थाल अंबा देख लीयो के वा वा, हे जीम लीयो पय भोजन सगरो; माता निजरसूं भरियो, हे गोभद्रके घर जन्म लीयो छै, शालिभद्र नाम धरियो, हे नार बतीससूं ब्याव कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ २ ॥ राजा श्रेणिक नाथ कांन सुण्यो के वा वा, हे आजलों नाथ सुण्यो नहीं कानें, पूरा पुन्य कीया मांह; हे संयम धारूं धन छिटकाऊं, रहूं न घरके मांह; हे धन्नाजी पिण साथ कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ३ ॥ मास मास तप दो मुनिजी कीयो

के वा वा, हे वारे वरसलों संयम प्राळ्यो, कीयो मास संथार; हे सर्वार्थसिद्धे जाय विराज्या, मुनि राम वंदे धर प्यार; हे धन धन नर अवतार कीयो के वा वा ॥ सं० ॥ ४ ॥ इति शालिभद्रव्याख्यान संपूर्ण ॥

---

९ सत्यघोष ॥

१ दोय नारंगी दोय अनार ॥ ए देशी ॥

धरी वीजकूं लोभी नटही, लगे कलेजे दाह अपार; मोटका झूठ तजो नर नार ॥ ल०॥ टेर ॥ कद तेरे पूंजी धरी कुंण देखी, कुंण छै तेरे साईदार ॥मो०॥१॥ करो पुकार चल राज कचेरी, मेरी पैठ जानें दरबार ॥मो०॥२॥ भरे शाख सारे जग मोरी, तोरी कुंण मांनें संसार ॥ मो० ॥ ३ ॥ जगा फिराये नेत्र गमाये, जमा पचाये नानाकार॥मो०॥ ॥ ४ ॥ परभव विगड़े स्यान ज जावे, दुःख पावे खावे जमकी मार ॥ मो० ॥ ५ ॥ लक्ष पुंज हार आतके छांनें, मर कर जिण घर लीयो अवतार ॥ मो० ॥ ६ ॥ झूठी साक्षी भरी थई नारी, छाती पर देवळी रही जमवार ॥ ॥ मो० ॥ ७ ॥ केवली भाखी सहूको साखी, ले वदळो गयो सेठ कुमार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुनि राम कहे थापण रख नटसी, ते मर रूळसी बहुल संसार॥मो०॥ ९ ॥इति॥

---

१० चन्दनबाला ॥

दोहा ॥

शील वरत राखणभणी, करिये सकल उपाय ।
पिण व्रत सद्धर राखिये, देणा प्राण गमाय ॥ १ ।

सती शिरोमणि धारणी, वरणी कहांलग जाय।
करणी भवतरणी करी, श्रीमुख जिन गुण गाय॥ २॥
पालक पापी ले गयो, मा वेटीनुं उजार।
लाज लोप लंपट मुखे, कहे छूं तुज भरतार॥ ३॥

१ देशी वीरानी॥

वीरा, अलगो २, रहीजे मोय हो, वीरा, प्राण त्याग करसूं अवी जी; वीरा, प्रभूजी २, सांमो जोय हो, वीरा, सुपनामें वंछूं नहीं कवी जी॥ १॥ वीरा, अहिसुख २, देणो हात हो, वीरा, अगन झंपा करणी भली जी; वीरा, करणी २, आतमघात हो, वीरा, कौन विसात धारी चली जी॥ २॥ वीरा, अलगो २, रहीजे दूर हो, वीरा, क्रूर दृष्टे जो जोवसूं जी; वीरा, चढ़सी २, कोप जो पूर हो, वीरा, थारा प्राण खोवसूं जी॥ ३॥ वीरा, सतियां २, संताणि न भूल हो, वीरा, इंद्रभणी वंछूं नहीं रति जी; वीरा, रही छूं २, शील सरोवर झूल हो, वीरा, नीच वचन कहिजे मतीजी॥ ४॥ वीरा, जोतूं २, छेड़सी मोय हो, वीरा, जीऊं नहीं हूं अदघडी जी; वीरा, रैसी २, पछै तूं रोय हो, वीरा, शील वरत मुज जीवन जड़ी जी॥ ५॥ धारणी, जीभ २, खंडन करी तेथ हो, धारणी, ततक्षण प्राण त्यागियाजी; मुनि राम २, कहे छै एथ हो, वीरा, शील पाळे सो सोभागियाजी॥ ६॥ इति॥

---

११ सुलसा रेवती संवाद ॥

१ थारे मनाई नहीं मनूं रुणझुणियो ले ॥ ए देशी ॥

म्हे म्हांरी समकित आदरी, तुं समकित लै, कहूं तोय मनरी वात, वारूं समकित लै; हूं पिण हूंती अज्ञानमें ॥ ॥ तुं० ॥ अब मैं जांण्यो जगनाथ ॥ वा० ॥ १ ॥ मैं सुध आचारी ओळख्या ॥ तुं० ॥ आया छै श्रीवर्धमान ॥वा० ॥ सुलसा कहे सुण वायली ॥ तु० ॥सुण रेवंती बुधवांन ॥ वा० ॥ २ ॥ क्यूं उदास आज एवडी ॥ तुं०॥ सुण सुळसा कहे वांण ॥ वा० ॥ मास षट हुवा वीरनें ॥ तुं० ॥ थंभे नहीं लोहीठांण ॥वा॥३ ॥ मैं उपचार जाणूं भलो ॥ ॥ तुं० ॥ तुरत होय समाध ॥ वा० ॥ तो तुम जैसी वायली ॥ तुं० ॥ तुम गुण गाऊं अगाध ॥ वा० ॥ ४ ॥ मेल दीजे मुज घरभणी ॥ तुं० ॥ तुम गुरु शिष्य एक ॥ वा० प्रभु निमित्त ओषध कीयो ॥ तुं० ॥ रखे कोई लेवे देख ॥ ॥वा० ॥ ५ ॥ सिंहाभणी प्रभू भेजीयो ॥ तुं० ॥ सुलसा लाई वेनके पास ॥वा०॥ अश्व ओषधि दे श्राविका॥तुं०॥ नहीं लां प्रभू निमित्त जास ॥ वा० ॥ ६ ॥ धन धन साधू ज्ञांनी जी ॥ तुं० ॥ धन धन थारो ज्ञान ॥ वा० ॥ मुनि राम कहे इण दानसूं ॥ तुं० ॥ होसी सुलसा भगवान ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

---

१२ जयंती ॥

१ गोरल ईसरजी कवै तो हसकर बोलणा हे ॥ ए देशी॥

ऐ तो जवदे सुपन देखावियां जी २, वळी चौसठ इंद्रही आवे, ऐ तो मेरुपर झुलवावे, जां तो रंभा घूमर

लगावे,भल आया हो प्रभूजी जग तारवानें,ऐ तो शिव-पुर पंथ दरसायवानें ॥ भ० ॥ टेर ॥ कोटानकोटी सुर आविया जी २, जां तो गीत इंद्राणी गावे वां तो कल-सा इंद्र ढळावे, सहूको जलही आंख लगावे, जब तो सहूके हाथ न आवे ॥ भल० ॥ २ ॥ पाछा माता पास पोढावीया जी २, जांरी बाललीला सुखकारी, जांरे सूरतकी बलिहारी, जांरी मोहनी मूरति प्यारी ॥ भल० ॥ ३ ॥ चार अतिशय लेई जनमीया जी २, और केवल सैंथ इग्यारा, उगणी सुरवर कीधि सुखकारा, तारे चौ-तीस अतिशयवारा ॥ भ० ॥ ४ ॥ प्रभू आया छै नगरी आपणी जी२, जांरे गौतम स्वांमी लारे, और मुनिवर चौद हजारे, ऐ तो चरण कमल पग धारे ॥ भ० ॥ ५ ॥ जांरो नाम सुणी शिव सुख लहे जी २, जांरो एक वच-न हीये धारे, जांरे फळरो अंत न पारे, जांनें पुन्यवंत नयन निहारे ॥ भ० ॥ ६ ॥ आपे चालो भोजाई प्रभु वां-दसां जी २, जांरा दर्शनसूं सुख पासां, आपे मनका-भर्म मिटासां, आपे जन्म कृतारथ थासां ॥ भ० ॥ ७ ॥ ऐ तो एम सुणी आनंद लह्योजी २, जारे हीये हर्ष न मायो, मृगावती वांसें सीस नमायो, जांरो रोम रोम हुलसायो ॥ भ० ॥ ८ ॥ बाईजी खुब वधाई दीवी आय-नें जी२,आप वडो कीयो उपकार, म्हांसूं रख्यो अधिको प्यार, थांसूं नहीं वडो संसार ॥ भ० ॥ ९ ॥ न्हाया नें वळी कम्मा कीया जी २, ऐ तो सकल कीया सिंणगार; ऐ तो पैन्या नवसर हार बोले, रामचंद्र अनगार ॥ भ० ॥ १० ॥ इति ॥

---

१३ भ्रम निवर्तन-लावणी ॥

१ गौरी चली सासरे फेर तो कबी आंना ॥ ए देशी ॥

गत वस्तूका सोच कबी नहीं करना; सुख दुख किसके हात मेटे कुंन मरना ॥ टेर ॥ एक धनवंत नरका पुत्र वडा गुणवंता, कृतांत पकडे आंन प्रांन किय अंता; अब रोवे पीटे बाप अती अरडंता, रोक्या न रुके तेह मोह दुर्दंता; माता झुरे अरे पुत्र त्रिया कह कंता, था पूरब भवका वैर अहो भगवंता, इम बाप रोवे विललाट अरे पुनवंता, दुर्लभ तुज दरसन्न ऐसे विलपंता; तूं छिनमें गया छिटकाय विध्वंस कर घरना ॥ ग० ॥ १ ॥ इणरीत वीते षट मास वास भये सूना, वस्यो श्मशाने बाप रोवे तिहां दूना; दिवान गये समभांय एक नहीं मांना, लोक हास्य घर हानि कहे कफखाना; घरके कहे दुख पाय करे जो सयाना, जिसका उत्तम उपगार जनम भर मांना; एक चतुर विचक्षण पुरुष सुणी इम कांना, कहे एक रात्री वीच मिटाऊं तांना; यह उत्तम आचार टारे दुख परना ॥ ग० ॥ २ ॥ दक्ष आयो पूनमकी रात बावु जहां होता, रुदन किये इण भांत सकल सुंण रोता; सुनत हीया फटजाय भेद नहीं पाया, कुंण रोवे तूं केम बावु बतलाया; मेरे तो पुत्रका दुःख कलेजा जलता, तूं रोवे छे किण काज कायर हिय गलता; मैं रोऊं चंद्रमा काज साच मैं बोलूं, बावू कहे मैं तोय मूरख संग तोलूं; करे लोक उपहास उसीसें डरना ॥ ग० ॥ ३ ॥ आवे न चंद्रमा हाथ प्राण जो खोवे, तुज सरीखा मूढ होवा नहीं होवे; मैं प्रत्यक्ष देखूं आंख इसीकूं रोता, तुज दीसे न

तेरा पुत्र प्राण क्यूं खोता; चंद्र मिले नहीं मोय पुत्र किम तेरा, दोनूं झूंठी बात ज्ञान कर हेरा; सुण बावूकूं आया ज्ञान अज्ञान सब हटिया, आया अपने गेह प्रभूकूं रटिया; मुनि राम कहे सत्य बात्त हियामें धरना ॥ ग० ॥ ॥ ४ ॥ इति ॥

२ म्हांने व्हालो हे लागे गाघरो ॥ ए देशी ॥

हां हे ओ तो भरम मिटे दिन पाधरो, नां तो मिटे न लाख प्रकार, हे मन फादो मीटे छे सैजमें, तुम देखोनी बुद्धि विचार, हे ओ तो भर्म मिटे दिन पाधरो ॥ टेर ॥ हां ए एक बाला थी नव यौवना, जांसुं, मिल्यो प्रथम भरतार, हे बहु रत निपुनता देखनें, आ तो दीसे माठी नार ॥ हे ओ भ० ॥ १ ॥ हां ए आ तो शंका पति चित्त ऊपनी, इण भोगव्या केई भरतार, हे ओ तो सुतो पूठ देईनें, आ तो आई नींद अपार, हे ओ भ०॥ २ ॥ हां ए चंद्रमुखि लखि बारता, एक भींत चित्र्यो गजाकार, हे एक सन्मुख लिखी सिंघनी, जिणरे गर्भ छूटो अर्भ बार ॥ हे ओ भ० ॥३॥ हां ए जिण गज देखी जोर मारीयो, इम पति देख्यो विरतंत, हे मुनि राम स्वभाव छे जातरो, इम समझ्यो जिणरो कंत ॥ हे ओ भ० ॥४॥इति ॥

---

१४ चेलणा–गाळ ॥

१ नाडेके छरियां बांध मती ॥ ए देशी ॥

जैन निंदा तुम कांई करो, नृप कहती हूं, म करो कूड़ पक्षपात, राजाजी तोय केती हूं; जिन धर्मकी निंदा करो मती; पीत पीत सोवन नहीं ॥ तो० ॥ है अंतर दियसनें रात, राजाजी तोय केती हूं, जिन धर्मकी निंदा

करो मती, न्याय पक्ष धरो, पक्षपात हरो, लरो मत पक्ष लगाय ॥रा० जि० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत मेरू सा, नृप कहती हूं, पाळे शुद्ध ब्रह्मचार ॥ रा० ॥ टाळे दूषन जिन वचनसूं ॥ नृ० ॥ ऐ चाले खांडा धार ॥ रा० ॥ २ ॥ जीव घाती छै तोय गुरु ॥ नृ० ॥ नहीं बोले वचन विचार ॥ रा० ॥ अदत त्याग जिनके नहीं ॥ नृ० ॥ ते पाळे नहीं ब्रह्मचार ॥ रा० ॥ ३ ॥ कळ्या परिग्रह कीचमें ॥ नृ० ॥ है संसारके वीच ॥ रा जोगी नहीं वै रोगी छै ॥ नृ० ॥ ते अंध थया दृग मीच ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिरे सो तारे और नें ॥ नृ० ॥ नृप कीजो ज्ञान विचार ॥ रा मुनि राम कहै निंदो मती ॥ नृ० ॥ छै साधू धन्य संसार ॥रा०॥५॥ इति ॥

ख्याल ॥

१ ख्याली आयो मुलतांनसें ॥ ए देशी ॥

रांणी भाखे मुनिराजसें, म्हारे वाद भयो छै महाराजसें ॥ रा० ॥ अवधू मतमें छै महाराजा, मुज प्रेम लग्यो जिनराजसें ॥ रा०॥ १ ॥ जो करामात तो अबही दिखावो, नहींतर जावो आजसें ॥ रा० ॥ २ ॥ धर्म दीपावा आया अलगसें, डरां नहीं अमे राजसें ॥ रा० ॥ ३ ॥ धर्म दीपाजो लब्धि दिखाजो, मुज मोटी करो गिरराजसें ॥ रा० ॥ ४ ॥ चक्री सेना मुनिवर चूरे, राम श्रीसंघ रक्षा काजसें ॥ रा० ॥ ५ ॥इति ॥

१५ अरणक ॥

१ घरभी छूटे धन भी छूटे, और कहो तो सबि छूटे, पिण संग न छूटे ॥ ए देशी ॥

धन भी छोडूं घर भी छोडूं, मान कहो तो अबि

छोड़ूं, पिण धर्म न छोड़ूं; ओ हो मेरी जांन, धर्म न छोड़ूं ॥ टेर ॥ जाभ डूबे तो जोर किसीका, मैं क्या जाभभणी थोडूं, धर्म न छोड़ूं ॥ सु० ॥ १ ॥ लाखों लोक मुझे संतावे, किनसें लड़ मोवत तोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ २ ॥ धर्म हारेसें जन्म न सुधरे, हीरा पथरसें किम फोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ३ ॥ धर्म विना तो पशू बराबर, सूना जंगलमें किम दोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ४ ॥ वीतरागके धर्मका सरना, दूजा धर्मसें मन मोड़ूं ॥ ध० सु० ॥ ५ ॥ मुनि राम कहे धन अरणक श्रावक, जिनकी महिमा किम जोड़ूं ॥ ध० सु० धन० घर० प्रा० ॥ पिण धर्म न छोड़ूं, सुनो मेरी जांन, धर्म न छोड़ूं ॥ इति ॥

१६ विद्या विलास ॥

सवैयो ॥

खेतीसें रेती में सीर नीर मनमांन्यो होत, नीपजै धरामें धन जहांनकों जिवावे है। रसाल जे जगत बीच पूंख फळी कचरे, ककड़ी मतीरे मीठे दुनियां सरावे है ॥ गाय भैंस ऊंठ घोरे दांम विना धीना होत, चीरी कीरी लोंकी मृग सारे सुख पावे है । और सब ठीकाठीक पूरो धन कह्यो धांन, खेती विना और मेरे दाय नहीं आवे है ॥ १ ॥

१ असी रुपीया लो कलदार ॥ ए देशी ॥

मोनें सखि मिलियो तुज भरतार, कुशल क्षेमका कहुं समाचार ॥ टेर ॥ तेरो सखी कंत बहु पुन्यवंत, बहो मतिवंत अनंत गुणधार ॥ मो० ॥ १ ॥ इण पुर ठाम गणिका भाम, कामलता के रहे घर द्वार ॥ मो० ॥ २ ॥ जिण कीयो रूड़ो रूपे रूड़ो, नहीं छै कूड़ो कहुं धर प्यार ॥

॥ मो० ॥ ३ ॥ थये मास वार नहीं समाचार, करी कमलावती बहु हुंसियार ॥ मो० ॥ ४ ॥ ते कीर उडतो चलतो रे आयो, मुज मन भायो करतो उच्चार ॥ मो० ॥ ॥ ५ ॥ दूहा गूढा गाथा पहेली, क्या क्या सहेली कह्या तिणवार ॥ मो० ॥ ६ ॥ मुज कर आयो मेवा खवायो, स्नान करायो खोल्यो पग तार ॥ मो० ॥ ७ ॥ विद्याविलास थयुं परकास, मैं पूछयुं किम भयूं अवतार ॥ मो० ॥ ८ ॥ मुदंडी लेण गयो फिर आयो, नाग खायो थयो विष अनपार ॥ मो० ॥ ९ ॥ वेश्या द्वार पड्यो तिणवार, कऱ्यूं उपचार थयूं उपकार ॥ मो० ॥ १० ॥ बेटी भणावो कला सिखावो,मत जावो विन कहे किणवार॥मो०॥११॥ पींजरे रक्खे,कोई न लक्खे, मिनख करे रात्रे भण सार ॥ मो०॥१२ ॥डोरो बंधायो वचन निभायो, गयो वेश्याके पाछो द्वार ॥ मो० ॥१३॥कुशल क्षेमकं कहो समाचार, दुखणी होसी मुज घरनार ॥ मो० ॥ १४ ॥ जिणसूं आई कहूं तुज बाई, राजा बुलाई करसी ज्हार ॥ मो० ॥ १५ ॥कहे मुनि राम हुवे सहू काम, पुन्य अभिराम हुवे जो लार ॥ मो० ॥ १६ ॥ इति ॥

१७चंद चरित्र ॥

१ मारूजीनें राखो समझाय, दासी मोरा ॥ मा० ॥ ए देशी ॥

सखी मोरा पिउजीनें राखो बिलमाय ॥ पि० ॥ सखी मोरा पिउजीनें राखो भरमाय ॥टेर ॥ कांई कुमती मुज ऊपनी जी, कुंण मुज दीवि भरमाय अबके बिछड्यो वालहो जी, फेर मिले कब आय ॥ स० ॥ १ ॥ सासूजीनें

जीवती जी, क्यूं राखी किरतार; क्यूं न गई खर सींग ज्यूं जी, क्यूं न मरो इण वार ॥ स० ॥ २ ॥ मुज प्यारो न्यारो कीयो जी, फिट तोनें किरतार; फिट् जीव्यो अब मांहरो जी, कुंण मुज सुणे पुकार ॥ स० ॥ ३ ॥ पाछो लावो वेगसूं जी, जिण विन निकसे प्रांण; जग सूनो सय माहरो जी, किम कर रखूं कुल कांण ॥ स० ॥ ४ ॥ कुंण जांणे दुख माहरो जी, कुंण दुख मेटे अधार; हूं दुखणी महापापणी जी, कीधा मैं पाप अपार ॥ स० ॥ ५ ॥ अनिमिषे हूं जोवती जी, प्रीतमनो मुख नित्त; अब देखण सांसो पड्यो जी, लाख खरचूं जो वित्त ॥ स० ॥ ६ ॥ क्षण क्षण पांख समारती जी, क्षण क्षण जोती मुक्ख; हूं जाणेती नर थसे जी, उलटो हुय गयो दुःख ॥ स० ॥७॥ मोत न आवे आपणी जी, हीयो न फाटे हजेस; मुनि राम कहे जो जांणसे जी, जिणरो कंत जावे पर देश ॥ ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

गाळ ॥

१ जिनवर पास पियारो ॥ ए देशी ॥

कुर्कट प्रांन पियारा, प्रांन पियारा लागै प्यारा, नहीं रक्खूं न्याराऱे॥कु०हां०कु०प्रा०॥आभावारा रे॥कु०हां०॥ देरा॥तूं मुज प्रांन आंन शिर तेरी,चेरी हूं खिजमतदारा रे॥ कु०॥१॥क्यूं धरी मनसा धण त्यागनकी,क्यूं फिरो नटवी लारा रे कु०॥२॥हम निर्भागी जद तुम त्यागी,रागी किम थया यारा रे॥ कु०॥३॥ शिवमाला तो रूप रसाला, कर लिपा पित वश म्हारा रे ॥ कु०॥४ ॥ धन नटवाला वचन रसाला, धन तोय रागनवारा रे ॥ कु० ॥ ५ ॥ रे छोगा-

ला, मोहनगारा, रे यौवन सिंणागारा रे ॥ कु० ॥ ६ ॥ सासू फासू ईर्खा रक्खे, लखेन समय विचारा रे ॥ कु० ॥ ७ ॥ कुंण विश्वास आस जीऊं कैसें, देऊं रखूं किसूं लारा रे ॥ कु० ॥ ८ ॥ कुंन भरोसे किम मुझ छोडो, क्यूं छोडो मो निरधारा रे ॥ कु० ॥ ९ ॥ वचन रसाला नैन अनियारा, मेटो विरहनी झाला रे ॥ कु० ॥ १० ॥ ईश्वर पिण मुज लारे पडियो, कीयो पंखी फेर करे न्यारा रे ॥ कु० ॥ ११ ॥ किणरो दोष नहीं सही जांणूं, है सहू दोष करमांरा रे ॥ कु० ॥ १२ ॥ वेदरदी कछु मूल न जांनें, राम जांनें जांननहारा रे ॥ कु० ॥ १३ ॥ इति ॥

१८ पंचक सेठ ॥

॥ देशी गरबेकी ॥

सुपातर दांन ज रे दीजो, वर्धमान प्रणाम शुद्ध कीजो; पंचक सेठ ज रे सुन लीजो, हीये मांन प्रणाम तजीजो ॥ सु० ॥ १ ॥ टेर ॥ कोल्लर ग्राम ज रे कहिये, पंचक श्रावक तिहां रहिये; एक मुनि ज्ञान ज रे संयुता, आया सेठ घरे गुणवंता ॥ सु० ॥ २ ॥ समुल्लस सेठ ज रे उदारा, प्रतिलाभे अखंडित घृतधारा; नहीं करयूं ऋषजी रे नाकारा, जाण्यूं सेठ रे लाभ अपारा ॥ सु० ॥ ३ ॥ मत हुवो भंग प्रणाम भव तरियो, तिनसें नाकारो नवि करियो; पिण सेठ चंचल चित्त ज रे फिरियो, अहो मुनि लोभी पात्र ज भरियो ॥ सु० ॥ ४ ॥ एकाकी मुनिवर रे दरसे, एता घृतसूं कांई करसे; शनै शनै घृत धारा हे नांखे, तदा ज्ञानी मुनि इम भाखे ॥ सु० ॥ ५ ॥

मापत मापत ऋषिजी रे बोले, सेठ तदा चित इम डम डोले; हूं थिर पणे ऊभो जी स्वामी, ना पडूं झूठ न बोलो निकामी ॥ सु० ॥ ६ ॥ द्रव्यसूं पतत न दीसो रे भाई, पिण भावसूं पतन हुवो क्षिणमांई; द्वादश स्वर्ग ज रे चडियो, तूं प्रथम कल्पे आतो पडियो ॥ सु० ॥ ७ ॥ सेठ हुवो चित्त ज रे उदास, मुनि राम कहे सुणो मन विमास; बत्तीसे फळोधी रे चौमासे, ज्ञान पंचमी करो ज्ञानाभ्यास ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति दान विषयः ॥

१९ आर्द्रकुमार ॥

१ किण मारी पिचकारी रे ॥ ए देशी ॥

क्रोध लोभका तांतारे, कोई विरला छेदे २ ॥ टेर ॥ कोड़ वरसनी तपस्या करमें २, छिनमें क्रोधसूं भेदे रे, तप खेरूं करदे ॥ क्रो० ॥१॥ क्षमा करतां कछुवन लागे २, भागे सब उदवेग रे, मन वांछित फल दे ॥ क्रो० ॥ २ ॥ लोभथकी श्रेणिकनो बेटो २, कीयो बापनें कैद रे, धन्य लोभनें निंदे ॥ क्रो० ॥ ३ ॥ मुनि राम कहे क्रोध लोभनें जीतण २, राखो भव्य उमेद रे, टाळो तनकी खेद ॥ क्रो० ॥ ४ ॥ इति ॥

२ देशी पूर्ववत् ॥

राग द्वेषका तांता रे, कोई विरला तोडे २ ॥ टेर ॥ भ्रमरसूं कमल दल नवि तूटे २, कठिन काठकूं फोडे रे, बाजे लोहकूं मोडे ॥ रा० ॥ १ ॥ आर्द्रकुमार मुनि शिव गत गामी, शिशु बांध्यो काचे दोरे रे, जांणे जड दीया छोड़े ॥ रा० ॥ २ ॥ तनसूं राग रू धनसूं राग, मनें आगेसूं आगे दोड़े रे, वस्तु नवि नवि जोड़े ॥ रा० ॥

॥ ३ ॥ राम कहे राग द्वेषनें जीते, ते छै जग शिर मोड़े रे, नित्य वंदूं कर जोड़े ॥ रा० ॥ ४ ॥ इति ॥

---

२० मुंजभोज

दोहा

विजयनंदके नंदनह्, एक दिन जंगल मांय ।
किसी दर्खत एक मूंजमें, शिशु सुंदर चमकाय ॥१ ॥
ले आये उज्जीनमें, मुंज नाम दिये ताह ।
बेटेकी तर पाळियो, और भोज जनम्याह ॥ २ ॥
सब विधि सुंदर सांवळो, व्होत बाहुरी देख ।
मरन समय महिपति कहै, सुनिये लोक अशेख ॥३॥

लावणी ॥

१ गौरी चली सासरे फेर कबी तो आंना ॥ ए देशी ॥

मेरा दीया मुंजकूं राज भोज अधिकारी, तुम सुनियो सारे साथ वात एक म्हारी; मुंजकूं तख्त बैठाय राय तनु छारी, फेर मुंजनें सोचा एम भोज अधिकारी; अकलको सागर जेम दीसे अवतारी, विद्या चवदे निधांन औलाद राजारी; जो लौं जिंदा भोज राज नहीं मेरा, इसलिये भोजकूं मारके करिये निवेरा; दिवानकूं जल्दी बुलाय कहे भोज मारो, जो करी क्षन भर ढील तो मरन तुमारो; दिवान् डरा दिलबीच लगै नहीं कारी, मेरा दीया मुंजकूं राज भोज अधिकारी ॥ १ ॥ दिवान कर तदबीर छांनें छिपवायो, भोजभणी कीयो कतल भूप दरसायो; मार डाला सुन वैन भूप फुरमायो, मरती वक्त कछु कहा कै अबोल रहायो; दिवान् बोला कुछ

घोल कहा नहीं तमकूं, वडके पत्ते एक श्लोक दिये लिख हमकूं; कहा लिखा उसबीच खबर नहीं जारी ॥ मे० ॥२॥

श्लोक ॥

मांधाता स महीपतिः कृतयुगालंकारभूतो गतः
सेतुर्येन महोदधौ विरचितः क्वासौ दशास्यान्तकृत् ।
अन्ये चापि युधिष्ठिरप्रभृतयो यावद्भवान्भूपति-
र्नैकेनापि समं गता वसुमती मुंज! त्वया यास्यति॥१॥

दोहा ॥

मांधाता पुनि रघुपति, कौरव पांडव होय ।
वसुमति कोइय न ले गये, तूं ले जातो जोय ॥ १ ॥

मांधाता एक भूप इंद्र धवरायो, सत युगमें थयो जेह जगत जस छायो; जेवर था भूतिलक भूमि छिटकायो, और रामचंद्र प्रसिद्ध शास्त्र मध्य गायो; जिण दशास्य-को कीयो अंत सिंधु बंधवायो, युधिष्ठिर तो तलक वडे महारायो; संग ले गयो एक न भूमि तुजे संग आयो, इण पर पढ़कर श्लोक मुंज धवरायो; लघु भाईकूं मार कुयश लीयो भारी ॥ मे० ॥ ३ ॥ पढ़ पढ़ श्लोक अवलोक मुंज बहु रोया, जिंदा नर हूं जग बीच अयश बीच बोया; धिक् धिक् है जग मोय हीरासा खोया, भोज जैसा मेरा बंधु मिले नहीं जोया; तब दिवान कहै कर अरज भोज है जंदा, तूं भोजकूं वेग दिखाय साहिबका बंदा; दिवान लायो छै भोज अकल धन्य थारी ॥ मे० ॥ ४ ॥ तखत उपर बैठाय भोज नृप कीधो, करै तावेदारी आप जगत जस लीधो; सुनो जमीन किसीके संग गई नहीं

जासी, और मूंजी रहै धन पाय देखत आवै *हासी; मुनि राम कहै सत्य बात झूठी सब माया, तेरे चले न काया संग खाख मिल जाया; बोवो सुकृतकी बेल अमृतफलवारी ॥ मे० ॥ ५ ॥ इति ॥

---

२१ ऐवंती सुकुमाल—लावणी ॥

तुम चलो सखी कछु जेज न करिये॥ ए देशी॥

ऐवंती सुकुमाल मुनीश्वर, धन्य धन्य जगमें जन्म लीयो; स्वस्तिक सूरि गुरु पद भेटी, नार बतीसको त्याग कीयो ॥ टेर ॥ उज्जयनी नगरी भद्रा सेठांणी, धन तो जिण घर वास कीयो; पूठ शालामें सूरि विराजे, रात्रि स्वाध्याय अभ्यास कीयो ॥ ऐ० ॥ १ ॥ जाति सुमरन सुनकर पायो, नंदन आके नमन कीयो; किम मुने नलनि गुल्मकूं जांणो, जिण ठौड़े मैं रमन कीयो ॥ ऐ० ॥ २ ॥ श्रुत बलि ज्ञान तणे अनुसारे,मैं जांणां तुम साच कह्यो; किम कर स्थान पाऊं कहो स्वामी, संयमसें नहीं दूर रह्यो ॥ ऐ० ॥ ३ ॥ मातभणी कह आज्ञा दीजे, लेसूं संजम तुझे कह्यो; कहे नार बतीसे अंसु झरती, क्षन भर बिछवो नांहि सह्यो ॥ ऐ० ॥ ४ ॥ रे कंता कोई ठौड़ बतावो, किम कर ज्वानी ए जावे, मात कहे नंदन क्यूं

---

* किवणं हसई लच्छी, इत्थिओ हसइ रक्खअं भत्तारं । वेजं हसई कालो, पुहमी णिच्चं हसई नरवईणं ॥ १ ॥

सवैयो–आरतू गुमांन करै दारदी व्है सेत्रै घर, सुखी और अनुसरै ऐसे मूढ और है । ज्ञानी व्है परपंच राचे संसारी गिनै न पांचे, राजा व्है कृपन ताके सूम शिर मोर है। गनिका कुरूप धनवान व्है फकीरी घर, बांधके शिथिल भये रात दिन जोर है। जगमें जो बसिये तो हसिये न काहू देवी, हस्यो ही जो चाहे तो ए हसवेकी ठोर है ॥ १ ॥

मारे, किम कर आज्ञा दी जावै ॥ ऐ० ॥ ५ ॥ एकाएकी नंदन म्हारे, तो विन किम म्हें प्रांन धरां; नारी कहै कतल कर जावो, धन मायानें कांई करां ॥ ऐ० ॥ ६ ॥ ऐ आज्ञा नहीं देवे मुझकूं,जद लोच कियो निज हाथ करी; वेष पैरनें मुनिवर बैठो, नैंन देखनें धरनि ढरी ॥ऐ०॥७॥ कहणा थी सो सबही कहिया, पिण हार खाय आज्ञा दीधी;नलनि गुल्म हूं जाऊं जलदी, गुरुसेती विनती कीधी ॥ऐ०॥८॥श्मशान भूमि तुम जावो जल्दी, काम पड्यां सैंठा रैना; सहै सैल धमका लहै जागिरि, पांव नहीं पाछा देना ॥ ऐ० ॥ ९ ॥ सूरीकूं वंदी जाये मसाणें, वंवलकी पग सूल भगी; एक काढतां दूजी तीजी,चौथी अति वेदन जगी॥ऐ०॥१०॥पग भर खिस्स सके नहीं जासें,पादपोप गमन अनशन ठावे; बहु बचांसें आई जंबूकी, भूखी अति मुनिकूं खावे ॥ ऐ० ॥ ११ ॥ घुट घुट करती पीवे रुधिरकूं, त्रट त्रट त्रट नाडी तूटे; चट चट चट चट चावे चांवड़ी, मुनी तहां लाहो लूटै ॥ ऐ० ॥ १२ ॥ चौथे पौर तो घोड़े चढ़ियां, नलिनिगुल्म छिनमें लीधो; नार वतीसे सासू संगे, रुदन करी दुखड़ो कीधो ॥ ऐ० ॥ १३ ॥ रुदन सुणी नर लाखां रोवे, पछी चुगो पिण ना लेवे; बंदर दोलन करते रहिया, प्रांण पड़े कायर जेवे ॥ ऐ ० ॥ १४ ॥ मुनि उपदेशे समता लीधी, नंदन हुवो एक लार थकी; ऐवंती पार्श्वनाथको मंदिर, कर जिणमें पितु शिवि रक्खी ॥ ऐ० ॥ १५ ॥ राजा विक्रमनें प्रतिबोध्यो, सिद्धसेन नाम दिवाकरो; महाकालको लिंगही फोड़्यो, कल्याणमंदिर तहां स्तव उचर्यो ॥ ॥ ऐ० ॥ १६ ॥ पंचम आरे एवा मुनिवर, धन्य माता उर

जन्म लीया; मुनि राम कहे धन्य धन्य छै जेहनें, जिन मारग उद्योत कीया ॥ ऐ० ॥ १७ ॥ संवत उगणीसे एक चालीसे, जो धांणे फागुण मासे; वृद्धिचंदजी गुरु प्रसादे, ज्ञानतणो कीयो अभ्यासे ॥ ऐ० ॥ १८ ॥ इति ॥

---

२२ पार्श्वनाथ कमठ संवाद

१ चांदा थारी चांदनीसी रातरे, कोई नणदल रे भोजायां पाणी नीसरी ॥ ए देशी ॥

काशी देशमें नगर वणारसी सार रे, कोई राजा रे अश्वसेन नृप गुणभऱ्यो; वामा रांणी जिण घर छै पट नार रे, कोई कुमरज रे पार्श्व प्रभूजी अवतऱ्यो ॥ ॥ १ ॥ गंगा ऊपर आयो तपसी एक रे, कोई दुनियां रे दरसन करवा जाय छै; माजी पधारे सब दुनियांनें देख रे, कोई दरसन रे करवा दिलमें चाय छै ॥ २ ॥ कुमरजी लीधी साथे आया आप रे, कोई आप ज पधाऱ्या गंगा ऊपरे; क्यूं जाले अज्ञानी लक्कड़ मांहनें साप रे, कोई ऐसो रे तपतो ज्ञानी नवि करै ॥ ३ ॥ दिन मरे भूखां रात पड्यां केई खाय रे, कोई व्रत ज रे करनें कंद मूल खाय छै; कोई रगड़े मट्टी अंदर मैल भराय रे;कोई जाले रे लक्कड़ जीव जलाय छै ॥ ४ ॥ क्या तुम देखा मुज तपस्यामें पाप रे, कोई क्या तुम जी छेडे मुज बेफायदे; दिखा तौ जलता लक्कडमें अबि साप रे, कोई नहीं तौ जी जावो तुमचे कायदे ॥ ५ ॥ लक्कड़ फाड़ी काढ दिखाये नाग जी, कोई मंत्र ज रे देईने सुर पद अहि दीयो; भयो कीसांनो झूटो तपसी भाग जी, कोई तप फल रे

होतो दुखदाहूईजीयो ॥ ६ ॥ कमठ भयो छे मेघमाली सुर जात रे, कोई अरिहंत रे दीक्षा ले वन संचरे; दीना प्रभूनें उपसर्ग दिन सात रे, कोई निश्चल रे मेरुवत् तनकूं करे ॥ ७ ॥ सणणणणण चलतो वाउल सणणाट रे, कोई भणणण रे करतो वरते वायरो; भललललल् विजली धररर करे घरराट रे, कोई झररर रे वरसे जल विन चायरो ॥ ८ ॥ नासा लग प्रभू जल जोरो विन पार रे, कोई धरणेंद रे पद्मावती आसन कंपिया; अधर उठाया रचिया फणहीं हजार रे, कोई नाटक रे करनें प्रभु गुण जंपिया ॥ ९ ॥ कमठ पडियो प्रभु चरणांके मांय रे, कोई अवगुण रे माफ करो जगदीश्वरू; कमठ तरीयो प्रभु गुण मुखसूं गाय रे, कोई मुनि राम ज रे कहे तारो मुज परमेश्वरू ॥ १० ॥ इति ॥

स्वस्तिश्रीजयमल्लपूज्यचरणाम्भोजानुरक्तो मुनिः
पूज्योऽभूत्परमार्थदेशनपरः श्रीवृद्धिचन्द्रो गुरुः ।
तच्छिष्यो जिनपादपङ्कजरतः श्रीरामचन्द्राभिध-
स्तेनायं विहितः प्रसन्नशशिनः शिष्यस्य संप्रेरणात् १
गुणशरनवचन्द्रेब्दे १९५३ भाद्रे मासे सिते दले सम्यक् ।
प्रतिपदि भूमिजवारे ग्रन्थसमाप्तिर्व्यधायि बोधार्थम् ॥२॥

इतिश्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्रीजयमल्लजीमहाराज संप्रदायानुयायि पूज्य श्री सवलदासजी शिष्य श्री स्वामि वृद्धिचन्द्रजी शिष्य महामुनि श्रीरामचन्द्रविरचिते अमृतरससंग्रहे व्याख्याननामकं द्वादशं प्रकरणम् ॥ १२ ॥

समाप्तोयं ग्रन्थः ।

शुद्धिपत्रम्

सामायिकप्रतिक्रमणयोः

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	४	स्तेवीस	सत्तेवीस
१	१९	(३)	०
२	२	ठाणाउ	ठाणाओ
२	३	जीविधाउ	जीविधाओ
२	३	दुकडं	दुक्कडं
२	१६	अरि ११ ंताण	अरिहं ११ ताणं
२	१७	२५ झाणेण	२५ झाणेणं
२	२५	मभिणं	मभिणंदणं
४	१९	वत्तीसं	वत्तीस
६	१२	पाटी	पाटो
६	१५	दुज्झाओ	दुज्झाओ
६	१७	सुण	सुय
७	१६	अतिच्चार	अतिचार
८	२	जावज्जीवाण	जावज्जीवाए
८	२४	विरमणा	विरमण
९	२२	दुपद	दुपद
११	२५	दुक्कड	दुक्कडं
१२	१६	वर्णविलेपण	वन्नगविलेपण
१३	१	अवसही	आवसही
१४	१२	काइं	कोहं
१५	४	संसप्पउगे.	संसप्पओगे
१६	१०	इग्यारमो.	इग्यारमो
१६	२३	अत्ता	जत्ता
१६	२४-२५	खा-मि	खामेमि
१८	१०	खमाउ	खमाउं
१९	२१	आचर	आचार
२१	११	आपजी. आप.	आप आप.
२३	४	अन	अथ
२३	२५	साढा	साढ
२४	१	चडव्विहं	चउव्विहं
२४	२१	अतिच्चार.	अतिचार.
२५	१४	इणं	इणां
२६	१७	आगमें	आगमे
२६	१९	कहाणां	कहणां
२६	२२	नवककार	नवक्कार
२६	२६	आंगमें	आगमे
२८	६	वंदनो	वंदना
२८	२४	मोहलो	मांहिलो
२९	२४	अदेय	अद्वेष
२९	२५	चउदो	चउगो
३१	८	ढाणेणं	ढाणेणं
३१	११	सुरे	सूरे
३१	१९	पारिठाविया	पारिठावणिया
३१	२४	पारिठाविया	पारिठावणिया
३२	२	असिच्छेण	असित्थेण
३२	१२	सत्समाहि	सव्वसमाहि
३२	१८	मुक्खिणण	मक्खिएणं
३२	१८	पोरिठाविया	पारिठावणिया.

अमृतरससंग्रहस्य.

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	१८	सु नकेरे	सुन केरे.
७	६	कीयो चानणो	कीयो जग चाँनणो
८	६	षट् २ द्रव्यमें	षट् द्रव्यमें
८	१४	दुण्णिये	दुण्णिय
८	१४	तिये एगं	तिय एग
१५	१२	विचारां रे	विचारा रे.
१७	५	स्याद्वादकूं	स्याद्वादको
१९	४	पडिया	पढिया
२१	अंक १२		२१
२१	२३	मोक	मोक्ष
२२	२	तखा	तरवा.
२३	२४	नुमायो	उमायो
२४	१९	दरजियां	दरजिया
२७	२४	तांहरी	ताहरी
३३	८	पारसे	पारस

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	११	तुमचो	तुमचो
३५	१८	तारिय	टारिये
४०	११	अगीजी	आगेजी
४०	२४	तहीं सागो	नहीं सागो
४१	२०	एमो अरिहंताणं	णमो अरिहं-ताणं
४२	२	नमो नुव	नमो उव
४३	५	स्वट मसाताई	स्वट मासांताई
४६	६	सदा तुन	सदा तुम
४७	१७	जोड़	ओड़.
६८	६	घपगाधा छा	घपरावो छा.
७१	४	ए केहनो	ए केहने
७४	१	पाघो रे	पागे रे.
७४	१३	तारो रे	सुधारो रे.
७४	१७	मुकड़ो	मुखड़ो
७५	५	तनु	तउ
७५	२५	दसवें कालिक	दस वैकालिक
७९	२५	इम थदे	इम थदे.
८४	५	गभावासमे ऊपनो	गर्भावाससूं नीसरी
८४	१७	कम्या	कन्या
८५	२	दूणों को रे	दोनूं करी रे
८६	१०	धेठ	धेठो
८७	१५	कृत अनृत	कृत अकृत
९०	७	गांडिये	घांडिये
९३	१४	आछो	आछो.
९७	१५	पलक	पलका
९९	६	रच नहीं	रचन नहीं
१०२	२	आद	अरद
१०६	७	सरभाई	लाल भाई; सोवनलका राज जिसीका समुंदरसीभाई, सीता हरता स-वही भोई, गु-णसो सबभाई;
१११	११	मदा	मद्रा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११२	१८	कथा	कंथा
११५	३	जिण रुप	जिण रूप
११७	३	कमसुं	क्रमसुं
१२०	१९	प्रतिमाक	प्रतिमाका
१२१	१०	मोड़	मोड़
१३१	२५	लंग्यो	लग्यो
१४१	१	घूटे	छूटे
१४२	११	धर्म न पगारो	धर्म उपगारो
१५१	११	जियडा	०
१५३	१३	लोग	जोग
१५८	२३	साद	साच
१५८	२४	दवे	देवे.
१५९	११	दसवें कालिक	दस वैकालिक
१५९	२३	भावजी	भायजी
१६३	११	दशवें कालिक	दस वैकालिक
१६५	४	पीनेकर	पीनेका
१६५	२०	धर	घर
१७४	२२	सुंलटा	सुलटा
१८३	२२	थई छे.	भई छे.
१८५	२	दुमालो	दूमालो
१८७	१३	माणे	मारगे
१९२	१३	रुद	रुड़
१९३	२२	पाईजी कालो मोग.	पाईजी मोग कालो.
२१२	२३	सजी	सजी
२१७	१८	चंदे	वंदे
२२१	२५	तीर	तीन
२२४	१५	उत्तम	उत्तम
२२९	६	पुनकोधाम.	पुन्न गुणको धाम
२३३	११	भाग्यिो	भागियो.
२४१	१०	अवसर	अवसर.
२४२	१२	भवम	भवभ.
२४३	१६	आश्चर्य	आश्चर्य
२४७	२४	नाईनो	ना हैना
२५९	८	धर्म सामाई पोसामेला	धर्मद सामा-यिक सगईवे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५८	८	योतम	गौतम
२६०	१७	मारो	सारो
२६६	१८	गोभद्दके	गोभद्रके
२७३	९	हगू	हग्
२७६	१३	आपणीजी	पापणीजी
२७६	२४	पित	पीतम

इति